"जानिये-ब्राहमांड के परोपकारक को"

Know Your

Rahmatul-lil-Aalamin

(Mercy for the Universe)

Muhammad T. Kaifi

‘बिस्मिल्लाह’ उच्चारण करने के वरदान

1. कोई भी कार्य शुरू करने से पहले ‘बिस्मिल्लाह’ उच्चारण करें, अल्लाह उस कार्य से अच्छा परिणाम मिलने का वरदान देगा ।
2. अपने कठिन दौर के समय ‘बिस्मिल्लाह’ से शुरू करें तो शैतान सामने नहीं टिक पाएगा ।
3. किसी घर में प्रवेश करने से पहले तथा घर से बाहर निकलते समय ‘बिस्मिल्लाह’ उच्चारण करें तो बुरी आत्मा (शैतान) से सुरक्षा प्राप्त होगी ।
4. यदि खाना खाने से पहले ‘बिस्मिल्लाह’ पढ़ोगे तो शैतान आपके साथ नहीं खायेगा ।

The Blessings of Reciting “Bismillah”

1. Recite before every action and Allah will bless goodness in that action.
2. Recite at times of hardship and shaitan will flee (defeat shaitan)
3. Recite before entering the house and out home will be protected from the entering shaitan.
4. Recite before eating and shaitan will have no space next to you.

- All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying or any information storage without written permission from its compiler.
- Any dispute arising shall be under the purview of Delhi Jurisdiction only.
- Please be a part of this noble work by conveying your comments via e-mail or by post to its publisher.

Kaifi4u2002@yahoo.co.in / mdpf2007@gmail.com

Minority Development and Protection Foundation

E-33,1ST Floor, Street No- 06, Abul Fazal Enclave-2
Shaheen Bagh, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Note:- The Publication of this volume which costs Rs. 1050/- is for free distribution, but a Hadiya (donation) of any amount will be most welcome as it will contribute to monetary resources of "Minority Development & Protection Foundation (MDPF)" in helping the weaker sections of the minority in various ways, particularly in making the infrastructure of the educational institutions running under the aegis of the foundation for their children more effective.

First edition printed in May 2016
Second revised edition printed in October 2017
by
Wonders India Enterprises
2074, 2nd Floor, Nahar Khan Street, Daryaganj
New Delhi, Mob: 9811200621
Email: wondersindiaenterprises@gmail.com

- जब वह किसी महिला के दरवाज़े के सामने से गुज़रते थे तो वह उनके ऊपर कूड़ा फेंका करती थी। एक दिन जब वह महिला बीमार पड़ी तो मुहम्मद (सल्ल०) उसको देखने उसके घर गए।

- अल्लाह ने हर पैग़म्बर को एक दुआ कुबूल करने का वचन दिया है। और हर पैग़म्बर ने इस दुआ को दुनिया में ही अपने लिए मांग लिया है, सिवाए मेरे, मैंने इसे बचा कर रखा है अपनी उम्मत के लिए। और मैं इसे आख़िरत के दिन मांगूंगा और मेरी दुआ होगी "ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को माफ़ कर दे"।

- उनके साथी सताए गए, परिवार के सदस्यों की हत्या हुई, उनके ख़िलाफ बहिष्कार, दुश्मनों की एकजुटता उनसे लड़ाई के लिए और अनगिनत अन्य आज़माइश.............

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)......कौन हैं?

Who is Prophet Muhammad (pbuh) ?

- A woman used to throw trash at him when he passed by her house. He went To visit her when she got ill.

- Allah has given one Dua to every single Prophet. That HE has guaranteed that HE will respond to. And every single Prophet has used up this Dua for himself in this world, except for me. I have saved it and I will not use it in this life. I have Kept it for my Ummah and I will use it for them on the day of judgment. And my Dua will be, O Allah, forgive my entire Ummah.

- His companions were persecuted, Family members murdered, boycotts sanctioned against him, His enemies united to fight Him, Faced countless other trials.

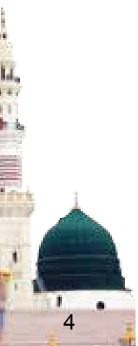

leil.k

मैं अपने स्वर्गीय पिता और शिक्षक **l;n egEen tghj vkye** को यह पुस्तक समर्पित करके गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ जिनका धार्मिक विचार से भरा जीवन हमेशा ही मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है।

Dedicated

I feel honored to dedicate this book to my late father and spiritual teacher **Syed Mohammad Zaheer Alam** whose righteous life has always been a source of inspiration for me.

I hope you are in heaven in the company of angels showering your blessings on your beloved ones here and waiting to be in their company once again on the day of judgement.

ALLAH'S BOOK

Allah has revealed His Books to various Prophets for the guidance of their nations. As Muslims we Must Believe in all these Holy Books.

The four main Books that were revealed are:

Arabic Name	English Name	Prophets (Pbut)
Tauraat	Torah	Musa
Zabur	Psalms	Dawood
Injeel	Gospel	Isa
Quran	Quran	Muhammad

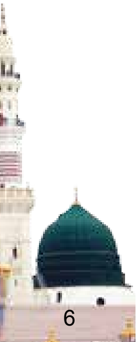

Chapter's Index

Chapter	Title
Chapter- I	A Chronology of the life of Prophet Muhammad (pbuh)
Chapter-II	What the Quran says about Prophet Muhammad ?
Chapter- III -IV	Jigsaw of Jihad; Women's Status And Rights In Islam
Chapter-V	Prophecies of Prophet Muhammad (pbuh)
Chapter-VI	Thoughts of the (Eminent Non- Muslim Scholars about Prophet Muhammad (pbuh)
Chapter-VII	Quran and Environmental Pollution
Chapter- VIII- IX	Holy Quran: - A brief introduction; What is the hadiths?
Chapter-X	Maiden Constitutional Document of Islam (Charter of Madina)
Chapter-XI	What Are the Five Foundations of Islam?
Chapter-XII-XIII	The pact of Hilful Fuzul; Prophet Muhammad's (pbuh) Charter of Privilage to Christians
Chapter-XIV-XV	Last Sermon of Prophet Muhammad (pbuh); Comments of eminent personalities about the book

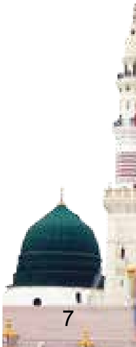

Contents

The following are a few very useful pages containing very authentic information that must be read by all truth seekers to preserve unbrainwashed devotion to Islam.

आमुख	11
Preface	19
प्राक्कथन	27
Forward	29
Chapter – I	
प्रस्तावना	33
पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की संक्षिप्त जीवनी	35
Introduction	51
A Chronology of the life of Prophet Muhammad	53
Chapter – II	
प्रस्तावना	79
पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में जो कुछ कहा गया	81
Introduction	93
What the Quran says about Prophet Muhammad ?	95
What the Hindu Scriptures say about Prophet Muhammad ?	97
What the Bible says about Prophet Muhammad ?	105
Chapter – III	
प्रस्तावना	113
जिहाद का संक्षिप्त वर्णन	115
Introduction	125
Jigsaw of Jihad	127
Chapter – IV	
प्रस्तावना	139
इस्लाम में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकार	141
Introduction	149
Women’s Status And Rights In Islam	151
Chapter – V	
प्रस्तावना	161
पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की भविश्यवाणियाँ	163
Introduction	175
Prophecies of Prophet Muhammad	177
Chapter – VI	
प्रस्तावना	193
Introduction	195

Thoughts of the (Eminent Non- Muslim Scholars
about Prophet Muhammad) 197

प्रसिद्ध गैर–मुस्लिम विद्वानों द्वारा पैग़म्बर मुहम्मद 205

Tribute Paid To Prophet Muhammad (pbuh)
and the holy Quran By Various Luminaries 209

Chapter – VII

प्रस्तावना 351

कुरान और पर्यावरणीय प्रदूषण 353

Introduction 359

Quran and Environmental Pollution 361

Chapter – VIII

पवित्र कुरानः– एक संक्षिप्त परिचय 369

Holy Quran: - A brief introduction 377

Chapter – IX

हदीस क्या है? 387

What is the hadiths? 391

Chapter – X

प्रस्तावना इस्लाम का प्रथम संवैधानिक दस्तावेज (मदीने का चार्टर) 395

Introduction Maiden Constitutional Document of Islam (Charter of Madina) 403

Chapter – XI

इस्लाम की पाँच मुख्य बातें क्या क्या हैं ? 409

What Are the Five Foundations of Islam? 419

Chapter – XII

हिलफुल–फुजूल का समझौता 427

The pact of Hilful Fuzul 433

Chapter – XIII

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का ईसाइयों के लिए विशेषाधिकार का चार्टर 435

Prophet Muhammad's (pbuh) Charter of Privilage to Christians 437

Chapter – XIV

ख़ुत्बा ए हज्जतुल विदा 438

Last Sermon of Prophet Muhammad 439

Chapter – XV

क्या आप जानते हैं ? 442

Do you know 443

किताब के बारे में बुद्धिजीवियों की टिप्पिणियां 446

Comments of eminent personalities about the book 447

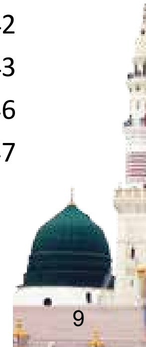

"वे कहते हैं न्यू यॉर्क शहर कभी नहीं सोता है, शायद उन्होंने मक्का (काबा) अभी तक नहीं देखा है"

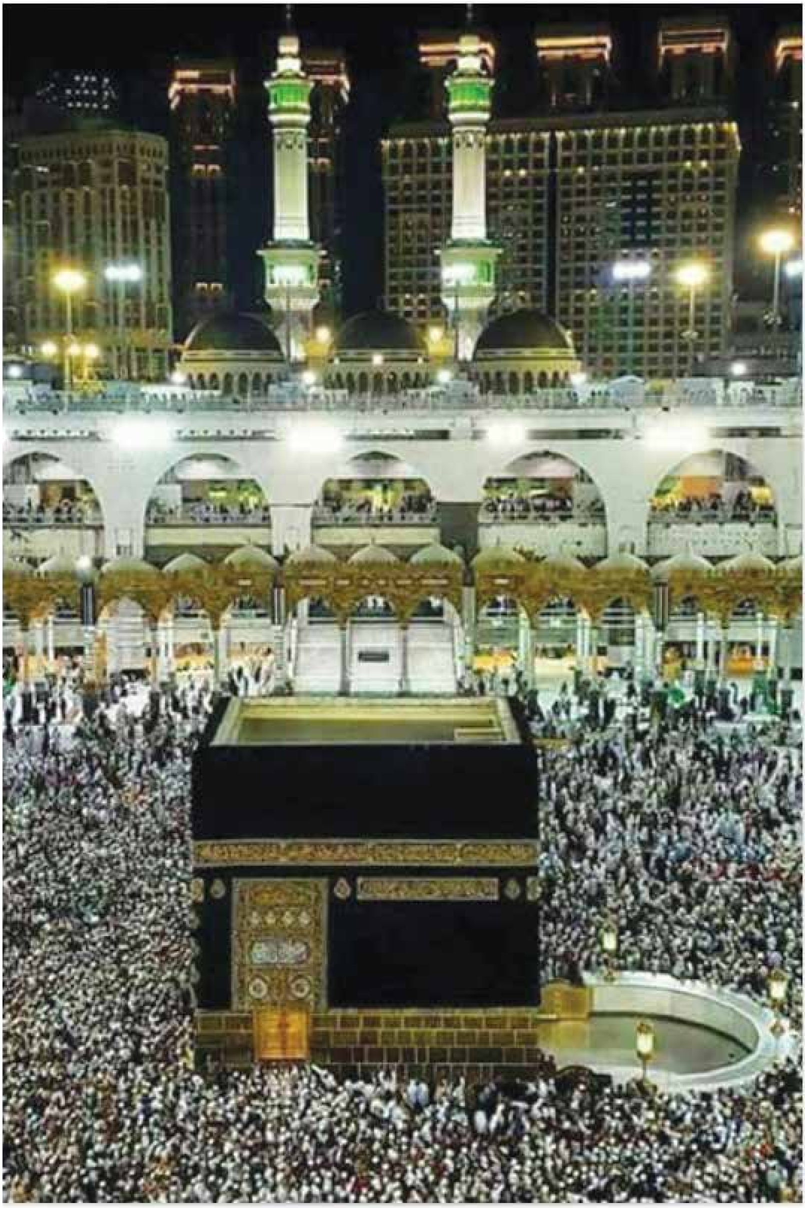

"They say New York city never sleep, perhaps they have not seen the Makkah (Kabah) yet"

आमुख

अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपालु, अत्यन्त दयावान् है।

इस पुस्तक के माध्यम से मैंने पाठकों को पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के उस अदि़तीय व्यकितत्व से परिचित कराने का प्रयास किया हैं। जिसके सभी मतों के मानने वाले और उनके कट्टर विरोधी भी गवाह हैं। निष्ठा भाव से टेलीवीजन, गूगल, पत्रिकाओं में छपी हुई कहानियों और इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)के विरोधियों के किस्सों और उनकी कथाओं से प्रभावित होकर मैंने इस पुस्तक में यह सब एकत्रित किया है। कुछ ऐसे व्यक्ति है (जैसे विंस्टन चर्चिल, सलमान रूश्दी, मार्को पोलो, जॉन क्विंसी एडमस, प्रो० बी रसल, ब्रिगिट गौबिएल, जिलन्डस पोस्टन, चार्ली हेबड़ो, खुशवंत सिंह, डा० बी० आर० अम्बेडकर) जिनके दृष्टिकोण और विचार अत्यन्त अदभुत असत्य और तथ्यों से परे हैं, जैसा कि निम्नलिखित ने पाया हैः–

पंडित ज्ञानेन्द्र देव शर्मा, गोरखपुर (भारत) में 1928 की एक बैठक में

''वे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों की बजाय अवगुणों को देखते हैं, अच्छाई की बजाय बदसूरती को निहारते हैं, उल्टे सीधी तस्वीरें पेश करते हैं और प्रत्येक अच्छाई को एक बड़ी बुराई के रूप में प्रस्तुत करते हैं, स्वयं अपनी अनैतिकता को दर्शाते हैं, आलोचना करने वाले व्यक्ति अंधों के समान व्यवहार करते हैं, वे यह नहीं देख सकते कि मुहम्मद (सल्ल०)ने सिर्फ ऐसी तलवार का उपयोग किया जो दया, अनुकम्पा, मैत्री और क्षमा से युक्त थी, वह ऐसी तलवार थी जो शत्रुओं पर विजय पाती थी और उनके हृदय को पवित्र बनाती थी, उनकी तलवार लोहे की बनी किसी तलवार से अधिक पैनी थी''

दि जेनुइन इस्लाम खण्ड 1, सं 08, 1936

''वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अभी तक धरती पर जन्मे किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने धर्म का पाठ पढ़ाया, सत्य की नींव रखी, एक राष्ट्र का निर्माण किया, (मोरल कोड बुक) का निर्माण किया, कई सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की शुरूआत की, उन्होंने अपनी शिक्षाओं को व्यवहार में लाने और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए एक शक्तिशाली और गतिशील समाज की स्थापना की और मानवीय सोच समझ और व्यवहार में आने वाले सभी काल के लिए पूर्ण तथा क्रान्तिकारी मार्ग दिखाया''

बलबीर सिंह, पत्रकार, "नवान हिन्दुस्तान" दिल्ली, नवम्बर 1947

''पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने ही व्यक्तियों के साथ संघर्ष करने की बजाय विस्थापित होने को प्राथमिकता प्रदान की, किन्तु जब विरोध सहनशक्ति से काफी अधिक होने लगा तो आत्मरक्षा के लिए तलवार का सहारा लिया, जो व्यक्ति इस बात में विश्वास करता है कि धर्म का बलपूर्वक प्रचार–प्रसार किया जा सकता है, वह व्यक्ति मूर्ख होता है, न तो धर्म को जीने का मार्ग समझता है और न ही इस दुनिया के मार्ग को समझता है। उन्हें अपने विश्वास पर गर्व होता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति सच्चाई से काफी परे होते हैं''

"मुझे मत बताओ कि तुम कितने शिक्षित हो, मुझे बताओ कि तुमने शिक्षा का कितना उपयोग किया है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Don’t tell me how educated you are, tell me how much you travelled”

ज्यूल्स मैसामैन, टाइम्स पत्रिका जुलाई 1974

“नेता ऐसा होना चाहिए जो तीन प्रकार के कार्य करें – अपने अधीन चलने वाले लोगों का कल्याण करे, ऐसा सामाजिक संगठन उन्हें उपलब्ध कराये जिसमें जनता तुलनात्मक रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस करे तथा उन्हें विश्वास का एक केंद्र उपलब्ध कराये। पाश्चर और साल्क जैसे व्यक्ति पहले साक्ष्य से नेता थे, दूसरी तरफ गांधी और कन्फयूशियस जैसे व्यक्ति थे। इसके अलावा एलेक्जेन्डर सीजर और हिटलर जैसे दूसरी और शायद तीसरी सोच के नेता थे। जिसस और गौतम बुद्व सिर्फ तीसरी श्रेणी के नेता थे, “शायद सभी काल समयों में मुहम्मद (सल्ल०) सबसे बड़े महान नेता रहे जिन्होंने तीनों प्रकार के कार्य किये”

राष्ट्रपति क्लिंटन, जनवरी 2000

“इस्लाम में ऐसा बहुत कुछ है जिससे विश्व सीख ले सकता है। अब विश्व का प्रत्येक चौथा व्यक्ति इस्लाम धर्म का पालन कर रहा है”

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 12वां प्रकाशन

“पहले के स्रोतों में दिए गए व्यापक ब्योरे यह दर्शाते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) एक ईमानदार और धार्मिक व्यक्ति थे जिन्होंने उन अन्य व्यक्तियों से आदर और सम्मान पाया जो उन्हीं की तरह ईमानदार और धार्मिक व्यक्ति थे”

सभी धर्म विश्वास और मानवता को शान्तिपूर्वक, मेलमिलाप और दोस्ताना जीवन यापन करने का संदेश देते है

बाइबिल में कहा गया है :–

“तुम अपने पड़ोसी से उतना प्रेम करो जितना तुम उससे चाहते हो। इससे अच्छा कोई संदेश नहीं हो सकता हैं”

ekd! 12%29&31

तोरा कहता है :–

“तू लोगों के बच्चों से प्रतिकार नहीं करेगा और न ही उनसे ईर्ष्या करेगा किन्तु अपने पड़ोसियों से उतना ही प्रेम करेगा जितना कि उससे चाहते हो”

yfcLVhd l 19%18

गीता में आया है :–

“मैं सभी जीवों में एक समान हूँ। मैं न तो बैर मानता हूँ और न ही किसी का पक्षधर हूँ। किन्तु जो प्रेम से मेरी सेवा करते हैं वे मेरे मन में बसते है और मैं उनके हदय में वास करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति पूरी निष्ठा से अत्यन्त मंगलमय तरीके से भी मेरी आराधना करता है तो उसे सदाचारी समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही पवित्र आत्मा बन जाता है और शाश्वत आनन्द को प्राप्त होता है”

xhrk IX

सिक्ख धर्म में कहा गया है :–

“सिक्खों के सदाचार के भंडार में प्रेम अत्यन्त शक्तिशाली यंत्र है। गुरबानी हमको बताती है कि वाहेगुरू ‘प्रेम का भगवान’ है” और वह हमें अनुकंपा और दयाकृपा से परिपूर्ण होने और उसके हुकुम और इच्छा से जीवन निर्वाह करने और अनुकम्पा और मानवता के धर्म का पालन करने की शिक्षा देता है”।

“जिन प्रेम कियो तिन ही प्रब पायो” (केवल वे ही ईश्वर को प्राप्त करेंगे जो प्रेम करते हैं)

गुरू गोविन्द सिंह

"मत सोचो लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं क्योंकि फैसले के दिन अल्लाह इसका फैसला करेगा"

मुहम्मद टी कैफ़ी

"Don't worry what others think about you because on the day of resurrection, Allah will be judging you"

Muhammad T Kaifi

कन्फयूशियस कहता है :–

''कन्फयूशियस ने कहा कि केवल कोई अच्छा आदमी ही अपने हृदय से जानता है कि किस प्रकार के लोगों को पसन्द किया जाता है, किस प्रकार से उनसे घृणा की जाती है, और जिस प्रकार के हृदय में थोड़ी सी भी अच्छाई है वह किसी से भी घृणा नहीं करेगा''

कन्फयुशियस एनालेक्ट (**4.3-4**)

कुरान **में कहा गया है** :–

"तुम्हें उन व्यक्तियों को माफ कर देना चाहिए और उनकी बुराई पर ध्यान नहीं देना चाहिए। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करें ? अल्लाह ही है जो दयालु है और माफ करता है'' ।

कुरान सूरा (**24:22**)

सभी धर्म यह शिक्षा देते हैं कि व्यक्तियों को अपने अनुयाइयों से प्रेम करना चाहिए। अच्छा बनो, अच्छा देखो और अच्छा करो ।

आम भाषा में नास्तिक व्यक्ति भी शान्ति, मेलमिलाप और दोस्ती करने में विश्वास करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना इसी विश्वास का परिणाम है।

इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के आलोचक इसलिए आलोचक हैं क्योंकि वास्तव में उन्हें इस बात का भय है कि इस्लाम उस झूठ को पकड़ सकता है जिसका पोषण और प्रचार ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जो कामुकता, भौतिक और भौतिकवादी सुख के पाश में जकड़े हुए हैं।

मेरा धर्म मेरे लिए बहुमूल्य है अतः मैंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के आदर्शों और विभिन्न तथ्यों को सच्चाई पूर्वक तथा आदरपूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अतः मैंने अन्तर्राष्ट्रीय विशेषकर मुस्लिम देशों की यात्राएं की और इस्लामिक पुस्तकों के माध्यम से जीवन, विश्वास और दर्शन शास्त्र के क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों के विचारों का अध्ययन करके विस्तार से खोजबीन की।

इस पुस्तक का उद्देश्य इस्लाम में जिहाद की अवधारणा, इस्लाम में महिलाओं का उद्धार और स्थिति, कुरान और पर्यावरणीय प्रदूषण, कुरान और हदीस का संक्षिप्त विवरण, मानवाधिकार की घोषणा, जिसका इस्लाम में वास्तव में आशय है, मदीना का चार्टर, (जिसमें इस्लाम का संवैधानिक दस्तावेज अंतर्निहित है) ईसाइयों को विशेषाधिकार प्रदान करने वाला चार्टर और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की ऐसी भविष्यवाणियों को प्रस्तुत करना है जो परीक्षण में खरी उतरी हैं और त्रुटिहीन हैं।

यदि मैं अपनी पत्नी श्रीमती जौली सबीना को धन्यवाद ज्ञापित न करूं तो मेरा आभार प्रकट करना अधूरा रह जायेगा। मैं अपनी पत्नी के सहयोग के बिना इस कार्य को पूरा नहीं कर पाता।

मैं अपने उपदेशक श्री मोहम्मद शकीलुल्लाह खान का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने केवल इस पुस्तक को संकलित करने में अपनी रूचि दिखाई बल्कि कठिन मुद्दों पर बहुमूल्य सूचनाएं उपलब्ध कराई और इस पुस्तक के संकलन में मद्द की।

मैं अपने बड़े भाई श्री मोहम्मद टी सैफ़ी को भी आदरपूर्वक धन्यवाद कहना चाहूँगा जिन्होंने न केवल इस पुस्तक के प्रथम प्रारूप का आलोचानात्मक दृष्टि से अध्ययन किया बल्कि इस पुस्तक को पूरा करने के लिए मेरी इच्छा की सरहाना की।

मैं अपने सहयोगियों, मित्रों, भाई – बहनों एवं उनके बच्चों और सहोदरों का भी घन्यवाद करता हूँ जिनका इसमें कहीं नाम नहीं है परन्तु उनके निरन्तर और सार्थक प्रोत्साहन से यह पुस्तक लिख पाना सम्भव हो पाया है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

बीमार को देखने जाएँ
Visit the sick

भूखे को खाना खिलाए
Feed the hungry

बंदी को मुक्त कराएं
Free the captive

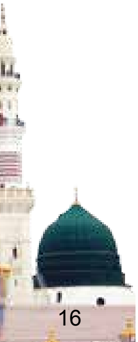

यदि मैं अपनी स्वर्गीय नानी बीबी उमत्तुल फातिमा को असीम धन्यवाद न दूं तो यह नाइंसाफी होगी क्योंकि मेरे प्रारम्भिक पढाई लिखाई के समय में उनकी सहायता के बिना मेरे लिए इस्लाम के उत्कृष्ट नियमों का निंरतर ज्ञान प्राप्त करना और उन्हें बड़े पैमाने पर मानवता के कल्याण के लिए अपनी पूरी शक्ति भर प्रचारित करने के सपने को पूरा कर पाना सम्भव नहीं था।

अंत में मैं अपनी माता जी बीबी नूरजहाँ आलम से आशीर्वाद की कामना करता हुँ क्योंकि उनकी शुभकामनाओं और अल्लाह की मर्जी के बिना मैं इस पुस्तक की रचना नहीं कर पाता। अल्लाह इस अच्छी पुस्तक को स्वीकार करें।

एक विश्वविख्यात यू एल सी ए (ULCA) समाजशास्त्री और भौतिक विज्ञान शास्त्री जेयर्ड डायमंड जिन्होंने अपनी पुस्तक 'गन्स, जर्म्स एंड स्टील' के लिए पुलित्जर पुरस्कार प्राप्त किया था, उनके मूल्यांकन के अनुसार मध्यकालीन इस्लाम तकनीकी तौर पर उन्नत था तथा नई नई खोज के लिए जाना जाता था। इस्लाम ने समसामयिक यूरोप की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक उच्च साक्षरता दर प्राप्त की थी। इसने परम्परागत ग्रीक सभ्यता की परम्परा को उस सीमा तक आत्मसात किया कि कई परम्परागत पुस्तकें केवल अरबी में लिखी गई प्रतियों के माध्यम से अब हमें ज्ञात है । इस्लाम ने पवनचक्कियों, त्रिकोणमिति, तिकोणपाल जलयानों की खोज की और धातुकर्म विज्ञान, यांत्रिकी, रसायन अभियांत्रिकी और सिंचाई की विधियों की खोज की दिशा में अगुवाई की। मध्यकाल के समय यूरोप से इस्लाम की ओर के बजाय इस्लाम से यूरोप की ओर तकनीकी का प्रभाव उल्लेखनीय था। केवल 1500 वर्ष पश्चात यह प्रवाह विपरीत दिशा में हो गया । यदि हम इस विश्व का नागरिक बनने के बारे में सोचें तो यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस महान धर्म और विचारधारा के बारे में जानने का थोड़ा प्रयास करें जिसने इस मानवता पर राज किया। शायद विश्व में कोई अन्य ऐसी पुस्तक नहीं है जो 12 शताब्दियों तक मूल पाठ में कोई बदलाव किए बिना क़ायम रही हो। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) एक ऐतिहासिक हस्ती हैं और उनके जीवन और उनके कार्यों को रहस्य में छिपा कर नहीं रखा गया है।

सच यह है कि आज के समय की सभी प्रकार की समस्याएं , कुरान और उसकी व्याख्या में अपनी मनमानी करने (इस्लाम के मतावलबियों सहित) के कारण हैं। पवित्र कुरान मानवता का एक मात्र विधान है, जिसमें किसी प्रकार का संशोधन नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक विधान में समय के साथ–साथ कुछ न कुछ जोड़ने या उसमें से कुछ न कुछ हटाने की आवश्यकता पड़ती है । परन्तु पवित्र कुरान हर समय के लिए सटीक है और अंत तक ऐसी ही रहेगी।

या अल्लाह मरते वक़्त कलमा तैय्यबा पढ़ना नसीब फरमाना

मुहम्मद टी कैफ़ी

"ग़ुलामी और भुखमरी दोनों ही प्रकृति के हिस्से हैं। ग़ुलामी से हिंसा उत्त्पन्न होती है, और जो ग़ुलामी और भुखमरी को समाप्त करने की बात करते हैं वो विद्वान नहीं बल्कि अपनी अल्पसोच को दर्शाते हुए ग़ुलामी और भुखमरी के शिकार लोगों का मज़ाक़ उड़ाकर दूसरे को मुर्ख बनाते हैं। ये दोनों चीज़ें दुनिया रहने तक समाप्त होने वाली नहीं है। इसमें समयनुसार कमी / बढ़ोतरी आ सकती है"

मुहम्मद टी कैफ़ी / Muhammad T Kaifi

"Slavery and famine both are there since ever; slavery breeds violence. And those who talk of doing away with these are not intellectuals. Instead, because of their unfounded thinking, they make fun of the victims of slavery and famine and befool others. These two are there since ever and will remain for ever"

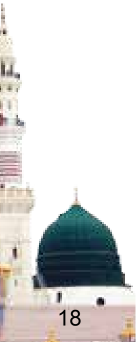

Preface

In the name of Allah the great beneficent and most merciful

Through this book I have made a humble effort to acquaint its readers with the incomparable personality of Prophet Muhammad (pbuh) to which the followers of all faiths and even his staunch opponents bear testimony. To be candid enough what inspired me for a compilation like this are the myths floated by such instruments as TV, Google, magazines and the antagonists of Islam and the prophet (pbuh) which depict Islam and the prophet Muhammad (pbuh) quite contrary to the truth and facts as observed by:

Pandit Gyanandra Dev Sharma Shastri, at a meeting in Gorakhpur, India. 1928) "They (Muhammad's critics) see fire instead of light, ugliness instead of good. They distort and present every good quality as a great vice. It reflects their own depravity… the critics are blind. They cannot see that the only 'sword' Muhammad wielded was the sword of mercy, compassion, friendship and forgiveness – the sword that conquers enemies and purifies their hearts. His sword was sharper than the sword of steel"

The Genuine Islam, Singapore, Vol.1, No.8, 1936 "He was by far the most remarkable man that ever set foot on this earth. He preached a religion, founded a state, built a nation, laid down a moral code, initiated numerous social and political reforms, established a powerful and dynamic society to practice and represent his teachings and completely revolutionized thoughts and behaviour for all times to come"

Balbir Singh, a journalist in "Nawan Hindustan," Delhi, November 1947 "He (Prophet Muhammad, pbuh) preferred migration to fighting his own people, but when oppression went beyond the pale of tolerance he took up his sword in self-defense. Those who believe religion can be spread by force are fools, they neither know the ways of religion nor the ways of the world. They are proud of their belief because they are a long, long way away from the truth"

Jules Masserman, in the Times Magazine, July 1974, "A leader must fulfill three functions-provide for the well-being of the led, provide a social organization in which people feel relatively secure, and provide them with one set of beliefs. People like Pasteur and Salk are leaders in the first sense. People like Gandhi and Confucius, on one hand and Alexander, Caesar and Hitler on the other, are leaders in the second and perhaps the third sense. Jesus and Buddha belong to the third category alone.

"किसी की कमी को तलाश करने वाले की मिसाल उस मक्खी की तरह है जो सारा खूबसूरत जिस्म छोड़ कर सिर्फ ज़ख्म पर ही बैठती है"

हज़रत अली / Hazrat Ali

"One who takes delight in finding fault of others in like that fly which looks for the wound in a healthy bod "

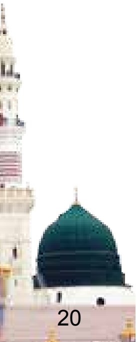

Perhaps the greatest leader of all times was Mohammad, who combined all three functions. To a lesser degree, Moses did the same.

Hillary Clinton, Los Angeles Times, May, 1996

"Islam is the fastest growing religion in America, a guide and pillar of stability for many of our people"

President Clinton, January 2000

"There is much that the world can learn from Islam. It is now practiced by one of every four people on earth"

The Encyclopedia Britannica (12th edition)

"A mass of detail in the early sources show that (Mohammad) was an honest and upright man who had gained the respect and loyalty of others who were like-wise honest and upright men"

All the religious and the faiths command humanity to live in peace, harmony and friendship.

The Bible says:

Thou shalt love thy neighbor as thyself. There is none other commandment greater than This. (Mark 12:29-31 Bible)

The Torah says:

Thou shalt not avenge, nor bear any grudge against the Children of the people, But Thou shalt love thy neighbor as thyself. (Leviticus 19:18 Torah)

The Gita says:

I am the same to all creatures; I know not hatred nor favour; but those who serve me with love dwell in me and I in them. Even if the man of most evil ways worship me with exclusive devotion, he is to be considered as righteous. Such a man soon becomes a righteous soul and obtains perpetual happiness. (Gita-ix)

The Sikhism says:

Love is a very powerful tool in the Sikh arsenal of virtues. Gurbani tells us that Waheguru is a "Loving God" and exhorts us to be full of compassion and kindness and to live in His Hukam, "Will", and to practice compassion and humanity.

"Jin prem keyo tin hee prab paeyo" (Only those who have love, will attain God) (Guru Govind Singh Ji)

The Confucianism says

" Of the edage, only a Good man knows how to like people, knows how to dislike them, Confucius said, He whose heart is in the smallest degree set upon goodness will dislike no one." (Analects , 4.3-4)

The Quran says:

And you should forgive and Overlook: do you not like Allah to forgive you? And Allah is The Merciful Forgiving. (Surah 24:22 Quran)

"हज़रत आयशा ने कहा की तुम से अगर कोई आदमी यह कहे की मुहम्मद (सल्ल०) ने अल्लाह को देखा है और आप ग़ैब (अनदेखी) की ख़बर जानते है तो वह झूठा है। अल्लाह फ़रमाता है की ग़ैब (अनदेखी) का इल्म अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है"

हज़रत आयशा / Hazrat Aisha

“Hazrat Aish asaid, if anyone tells you that Prophet Muhammad (pbuh) has seen his lord, he is a liar, for Allah says‘ no vision can grasp him and if anyone tells you that Prophet Muhammad (pbuh) has seen the unseen, he is aliar, for Allah says: none has the knowledge of the unseen but Allah”

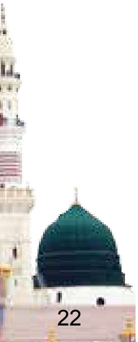

All religions preach that man should love his fellow beings and all the creation. All religions exhort the people to, "BE GOOD, SEE GOOD AND DO GOOD.”

As a matter of fact even an atheist believes in peace, harmony and friendship. The establishments of bodies like the UNO are an outcome of this belief.

The criticism of Islam & Prophet Muhammad (pbuh) and everything related to it is actually based on the fear that it may overtake the falsehood which is being nourished and propagated by the people who have been overtaken by carnal, physical and material pleasures.

It may not the out of place to mention here that the present hue and cry about beef is also an off shoot of this very situation. Pork and wine are forbidden in all the religions emphatically whereas there are no such specific instructions about beef. Then why only the issue of beef should be highlighted so loudly, particularly in our country.

My religion being precious to me, I decided to present the Prophet Mohammad (pbuh) and various facts in a true and respectable manner. Hence I made international tours especially to Muslim world and did a thorough research going through a number of Islamic books, and studying the observations of various luminaries from various walks of life, faith and philosophy. **This book aims at presenting that Islamic concept of Jihad, Women’s emancipation and status, Quran and environmental pollution & UN human rights declaration which Islam really means along with such prophecies of the Prophet Muhammad (pbuh) as may testify and vindicate it.**

I shall be lacking in gratitude if I don’t extend a word of thanks to my better half, **Jolly Sabina**, without whose care it would not have been possible for me to remain well while burning the midnight oil for this work.

I am grateful to my mentor **Mr. Mohammad Shakeelullah Khan** not only for his interest in compiling this book but also for sharing valuable information and elucidation of different points and help in framing this book.

As a mark of respect, I would like to extend my sincere thanks to my elder brother, **Mr. Mohammad T Saifi,** not only for reading the first draft of this book with a critical eye but also for motivating my passion to complete this book.

I also owe thanks to my colleagues, friends, siblings and their children who remain nameless, but whose constant and appreciative encouragement has made this book possible.

It would amount to injustice and thanklessness if I do not extend my gargantuan thanks to my late maternal grandmother, **Bibi Ummatul**

"ऐ अल्लाह! अगर मैं दूसरों को चोट पहुंचाऊं तो मुझे माफ़ी मांगने की हिम्मत दे और अगर कोई मुझे चोट पहुंचाए तो मुझे माफ़ करने की हिम्मत दे"

मुहम्मद टी कैफ़ी

" 'O' Allah, if I hurt others, give me the Strength to apologize. If people hurt me, give me the strength to forgive"

Muhammad T Kaifi

Fatima, without whose support, during my early educational phase, it would not have been possible for me to achieve my dream of remaining a perpetual learner of the exalted rules of Islam and propagating them all my life for the welfare of the humanity at large.

As per the evaluation of Jared Dimond, a renowned UCLA sociologist and physiologist who won the Pulitzer prize for his book **"Guns, Germs, and Steel"**, Medieval Islam was technologically advanced and open to innovation. It achieved far higher literacy rates than in contemporary Europe; it assimilated the legacy of classical Greek civilization to such a degree that many classical books are now known to us only through Arabic copies. It invented windmills, trigonometry, lateen sails and made major advances in metallurgy, mechanical and chemical engineering and irrigation methods. In the middle- ages the flow of technology was overwhelmingly from Islam to Europe rather from Europe to Islam. It is only after 1500 years did the flow began to reverse.

The truth is that all kinds of present day problems can be attributed to our waywardness (including the followers of Islam) from the universal constitution, the holy Quran and its elucidation, the Hadith. The holy Quran is the only constitution for the humanity which has never been subjected to any kind of amendment. Every constitution, due to change of time, needs some additions or deletions but the holy Quran has stood perfect for all times and shall remain the same till the end.

There are persons (Winston Churchill, Salman Rushdie, Marco Polo, John Quincy Adams, Prof. B Russell, Briggite Gabriel, Jyllands-Posten, Charlie Hebdo, Khushwant Singh, B R Ambedkar) whose views and ideas are quite surprising and different from the truth and facts.

Lastly, but not in the least I am fortunate to have the blessings of my mother, **Bibi Noor Jahan Alam,** without whose good wishes and the will of Almighty Allah I could not have produced this book.

'O' Allah make my last words
La Ilaha Illallah Muhamadur Rasulullah

Muhammad T Kaifi

"वह व्यक्ति मुस्लिम नहीं हो सकता जो इस्लाम को महान बनाता है यह इस्लाम ही है जो किसी व्यक्ति को महान बनाता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"It is not Muslim who have made Islam great. It is Islam that has made the Muslim Great"

प्राक्कथन

मुहम्मद तशकील कैफ़ी के जीवन की कहानी किसी रंक से राजा बनने जैसी ही है। वह वैशाली जिला (बिहार) के महुआ नामक दूरवर्ती गांव में अपने दस भाइ–बहनों में तीसरे बच्चे के रूप में वह जन्मे। उनका जन्म एक ख़्याती प्राप्त विज्ञान के अध्यापक के घर में हुआ। उनकी माता एक सीधी साधी धरेलू महिला हैं। मुहम्मद कैफ़ी के जीवन की शुरूआत बहुत ही साधारण रूप में हुई। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गांव में प्राप्त की, और अपने सीनियर सेकेंड्री स्कूल से शिक्षा ग्रहण करने के बाद देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग के उपरांत बाहर निकल गए ताकि अपने सपनों को साकार कर सकें। कुछ प्रारंभिक समय की बेरोज़गारी के उपरांत उन्होनें एक कंस्ट्रकशन कंपनी में नौकरी हासिल की और उसके बाद से उन्होनें कभी पीछे पलट कर नहीं देखा। उन्होंने बहुत जल्द अपनी ख़ुद की कंस्ट्रकशन कंपनी शुरू की और बड़ी मेंहनत और ईमानदारी के साथ अपने काम में लगे रहे। इस दौरान उन्होने मुख्य रूप से अल्पसंख्यक समाज के कमज़ोर वर्ग से जुड़े लोगों के उत्थान के लिए भी बराबर काम में जुटे रहे।

यह ग्रन्थ जानिये ब्रह्माण्ड के परोपकारक को उनके निरंतर कोशिशों का एक नतीजा है, जिसमें उन्होंने गहरा शोध किया ताकि लोगों को इस्लाम से संबन्धित विचारधारा से अवगत कराया जायें जिसे गलत राय और मिथ्यावादी सोच में छुपा दिया गया है।

इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं है कि श्री कैफ़ी ने इस ग्रन्थ को संकलित करके बहुत से गुमराह और पूर्वाग्रही पश्चिम एवं पूर्व के देशों के उन बुद्विजीवियों के ग़लत विचारों का खंडन किया है जो अज्ञानी और ज़िद्दी हैं। शिक्षा में उनका असाधारण और विशिष्ठ अधिकार के कारण आधुनिक युग में उन्होंने मुस्लिम बुद्विजीवियों में मान्यता प्राप्त कर ली एवं यश अर्जित कर लिया है।

मैं इस आशय से आश्वस्त हूं कि यह ग्रन्थ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन की सत्यपरक, प्रामाणिक,यथार्थ, परिशुद्व व्याख़्याा करेगा जो माइकल हर्ट के शब्दों में अपने समय से आज तक धार्मिक एवं धर्म निरपेक्ष स्तरों पर अत्याधिक सर्वश्रेष्ठ रूप से सफल हुए है।

सच्ची बात यह है कि यह ग्रन्थ एक अमूल्य शब्द कोष है उन पुष्पांजलियों का जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को ग़ैर–मुस्लिम जगत के ख्याति प्राप्त एवं सत्यवादी विचार धारा रखने वाले महानुभावों ने प्रस्तुत की है।

प्रो० मुहम्मद ज़ियाउद्दीन शम्सी तेहरानी
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

"मुझे लगता है कि महिलाओं का पुरुष के बराबर मानना मूर्खता है, वो तो श्रेष्ट हैं और हमेशा पुरुषो से श्रेष्ट रहेंगी"

विलियम गोल्डिंग

"I think women are foolish to pretend they are equal to men, they are far superior and always been"

William Golding

Foreword

Mohammad T Kaifi's life trajectory is nothing less than rags to riches stories. Born as a third child among ten of his siblings in a remote village called Mahuwa, dist- Vaishali in the state Bihar (India) to a father, a reputed science teacher and mother, a simple home maker, Mohammad Kaifi had very humble beginning. He received his early education in the village itself and moved out after passing his senior secondary school to pursue his dream. After an initial period of straggling and being jobless, he finally secured a job in a construction company and since then there was no looking back for him. He soon started his own construction business and has been actively involved in the welfare and development programs for the weakers particularly Muslims. This book is the result of his relentless efforts by in- depth research to make the public aware of many Islamic concepts which are overcast with misconceptions and uniformed opinions.

There is not an iota of doubt that Mr. Kaifi, by compiling this book, has wiped the ideas of misguided and prejudiced intellectuals of east and west which were crude, dismissive and arrogant. Based on his exceptional and extra-ordinary skills in learning and focused self-study, he has earned the recognition of all his peers of Muslim luminaries in modern times. I hope that this book will provide an accurate and authentic knowledge of the life of the Prophet Muhammad (pubh), who, in the words of Michael H Hart, "has been supremely successful on all religious and secular levels" from his times till today.

Truly speaking, this book is an invaluable thesaurus of the floral tributes paid to Prophet Muhammad (pubh) based on the rightful thinking of the renowned personalities of the non Muslim world.

Prof. Hafiz Syed Ziauddin Shamsi Tehrani
A.M.U, Aligarh

"कुछ पथभ्रष्ट मुस्लिमों, जिन्हें मीडिया में हमेशा दिखाया जाता है, के व्यवहार को देखते हुए इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कोई धारणा बनाना गलत होगा । ऐसा किसी ऐसी कार को ख़राब कहने के समान है जिसके चालक ने शराब पीकर उस कार को कुएं में धकेल दिया हो"

अज्ञात

"It will be wrong to judge Islam & Prophet Muhammad (pbuh) in the light of the behaviour of some bad Muslim who are always shown on the world media. It is like judging a car as a bad one if the driver of the car is drunk and he bangs it into the wall"

Anonymous

अध्याय–1

Chapter – I

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की संक्षिप्त जीवनी

A Chronology of the life of Prophet Muhammad (pbuh)

"अगर तुम अच्छी तरह जान जाओ कि पैगम्बर (सल्ल०) ने तुम्हारे लिए क्या किया, तो तुम ज़रूर उनके प्यार में घिर जाओगे, उन्होंने न सिर्फ तुम्हारे लिए बल्कि पूरी मानवता के लिए काम किया"

शेख हमज़ा

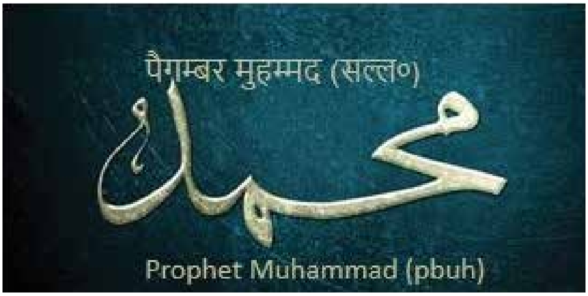

"If you knew what the prophet (pbuh) did For you, You would fall in love with him. Not just for yourself, But for humanity"

Shaikh Hamza

प्रस्तावना

श्रेष्ठ ऐतिहासिक व्यक्ति पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

क्या आप उस व्यक्ति के नाम का अनुमान लगा सकते हैं जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, जी हाँ, वह व्यक्ति जो अत्यन्त बचपन में ही अनाथ हो गए थे, किन्तु उन्होंने कभी भी स्वयं को अनाथ नहीं माना, इस व्यक्ति को एक अधेड़ उम्र की एक अमीर महिला, जो कि उनसे उम्र में 15 साल बड़ी थी, ने अपने पति के रूप में वरण किया और वह व्यक्ति उस महिला की मृत्यु हो जाने तक उसके प्रति निष्ठावान और विश्वास पात्र बना रहा। यह वह व्यक्ति थे जिसने बिना किसी भेदभाव के सुंदरता, साहस निडरता और प्यार पर बल दिया और सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

अग्रणी भूमिका में भी वह उन व्यक्तियों के प्रति भी दया का भाव रखते थे जिनके हाथों उनका सबसे अधिक नुकसान हुआ। यह उस व्यक्ति की प्रतिभा, चतुराई और परिश्रम का फल था जि. सने वहशी अरब वासियों को धर्म भीरु व्यक्ति और अनुकरणीय व्यक्तियों के रूप में बदल डाला। यह वह व्यक्ति थे जिसने महिलाओं को नारकीय जीवन से बाहर निकाला और स्वर्ग को उनके चरणों मे ला खड़ा किया। जी हाँ उनमें सभी दैवीय गुण मौजूद थे – वह है पूरी मानवता के लिए ज्ञान से पूर्ण पैग़म्बर, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पिता अब्दुल्ला पिता अब्दुल मुत्तलिब पिता हाशिम पिता अब्दुल मुनाफ पिता कुसैइ पिता किलाब पिता मुर्रा पिता काअब पिता लुवई पिता ग़ालिब पिता फहार पिता मलिक पिता नादिर पिता कनाना पिता ख़ुज़ैमा पिता मुदरकाह पिता इलियास पिता मुदार पिता निज़ार पिता मआद पिता अदनान"। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया उसका एक मात्र उद्देश्य संहिता और नैतिक उत्कृष्टता के आधार पर एक ईश्वर की आराधना के लिए पूरी मानवता को एक सूत्र में लाना है।

इस धरती पर मानवीय जीवन के आगमन के समय से पैग़म्बरों ने पवित्र पुस्तकों के साथ आना शुरू किया और अपने व्यक्तियों का पथ प्रदर्शन किया। आदम से लेकर मोसेस और जीसस तक वे सभी अपने अनुयायिओं के लिए फिरौन और उसके जैसे अन्य व्यक्तियों के ख़िलाफ़ थे। किन्तु हमारे प्रिय पैग़म्बर सम्पूर्ण मानवता और जिन्न की भलाई के लिए अवतरित हुए। मानवता के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके जीवन को इतना व्यापक तरीक़े से और सतर्कता पूर्वक प्रदर्शित किया गया हो।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पर लाखों पुस्तकें लिखी गई हैं और निर्णय के दिन तक लगातार लिखी जाती रहेंगी।

वह ऐसे व्यक्ति थे जिहोंने जीवन की पवित्रता, विश्वास और न्याय, सार्वभौमिक समानता और मनुष्यों के वैश्विक भाईचारे के लिए अविचल होकर इस्लाम को धारण करके अपने विरोधियों के सामने डटे रहे। यहां तक कि अपने धुर विरोधियों को भी इस बात के लिए विवश किया कि वे उसे पूर्ण व्यक्ति के रूप में मान्यता दें।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) सम्पूर्ण मानवता के लिए दया का सूचक (रेहमत–उल–लील–आलमीन) थे। दैत्य (शैतान) के कुप्रभाव में हमारी स्वार्थ परायणता ही है जो मानवता के कुछ वर्ग को उसके द्वारा दिखाए गये मार्ग, इस्लाम (शांति) का मार्ग पर चलने से रोकती है और बाधित करती है।

"मुझसे पहले के पैग़म्बर और मैं उस व्यक्ति के समान हैं जिसने एक खूबसूरत भवन का निर्माण किया और उसे प्रसिद्धि दिलाई। इस भवन में पत्थर के एक कार्नर ब्लाक की कमी थी जिसके ईद गिर्द लोग चलते हैं, घूमते हैं। मैं पत्थर का वही ब्लाक हूँ, और मैं आख़िरी पैग़म्बर हूँ"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

''All the Prophets before me and I, are like a man who built a beautiful building and made it great, only it was missing a corner block of stone that made people walk around it and wonder. I am that block of stone, and I am the last prophet"

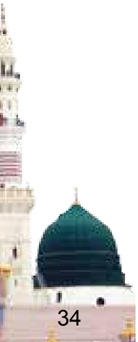

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की संक्षिप्त जीवनी

अल्लाह मुझे माफ़ करे कि मैंने कुरान और हदीस को सीखने और समझने के पड़ाव पर ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) जैसे महान इन्सान का इतिहास लिखने का जोखिम उठाया और किसी तरह मुझे अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का वर्णन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिनका अनुसरण पूरी दुनिया में फैले करोड़ों लोग करते हैं। हर दिन करोड़ों बार उनका नाम बड़ी निष्ठा के साथ दुआओं में दोहरया जाता है। और न्याय के दिन तक (जिसे खड़े होने का दिन, अलग होने का दिन, पहचान होने का दिन और जागने का दिन भी कहा जाता है।) दोहराया जाता रहेगा।

जब उनका प्रादुर्भाव हुआ, अरब देश में मरुस्थल के सिवाए कुछ नहीं था। उस माहौल में एक नया विश्व उमड़ कर आया जिसे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दृढ़ भावना, एक नए जीवन, एक नई संस्कृति, एक नई सभ्यता, एक नए साम्राज्य द्वारा घोषित किया गया, जो मोरक्को से लेकर भारत तक फलाफूला और जिसने तीन महादेश–एशिया–अफ्रीका–और यूरोप की विचारधारा और जीवनधारा को प्रभावित किया ।

सातवीं शताब्दी से वर्तमान समय तक वे पश्चिमी इतिहासकारों के सबसे सम्मानित व्यक्तित्व रहे हैं, वे अल्लाह के आखिरी पैग़म्बर और पवित्र ग्रन्थ "कुरान" के लाने वाले हैं, उनका नाम मुहम्मद का अर्थ "अत्यधिक प्रशंसित" है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म मक्का (सऊदी अरब) नगर में 571 ई० में हुआ था। मक्का में सीरिया (शाम) का एक यहूदी दार्शनिक (फिलोस्फर) रहता था जो पुराने धर्म ग्रंथों का जाननेवाला था। वह कहा करता था कि "ऐ मक्का वालों बहुत जल्द यहाँ एक ऐसा बच्चा पैदा होगा, जो भी उसका साथ देगा और उसकी बात मानेगा वह कामयाब होगा जबकि उसके दुश्मन नाकाम होंगे" ।

धार्मिक किताबों से पता चलता है कि दुनिया में जितने भी पैग़म्बर आए, वे सभी अत्यधिक सम्मा. नित घरानों में पैदा हुए हैं। इसी तरह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अब्दुल्लाह–बिन–अब्दुल–मुत्तलिब के बेटे थे जो मक्का के बहुत ही सम्मानित व्यक्ति थे, अरब के सबसे बुद्धिमान लोगों में से एक तथा "कुरैश" कबीले की एक शाखा बनू –हाशिम के सरदार थे ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का बचपन बड़े दुःख में गुज़रा, उनके जन्म से कुछ हफ्ते पहले ही उनके पिता अब्दुल्लाह–बिन–अब्दुल–मुत्तलिब का देहांत हो गया, अरब के रीति–रिवाजों के अनुसार बच्चों को रेगिस्तान के खुले माहौल में परवरिश पाने के लिए देहाती इलाकों में भेज दिया जाता था। अतः जब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) बहुत छोटे थे तभी देहात से कुछ औरतें "पालन पोषण के लिए" बच्चे लेने मक्का में आईं, उन्हीं में से एक औरत जिनका नाम हलीमा था जो हारिस–बिन–जुवैब की पत्नी और बनू–सअद कबीले से संबंधित थीं, उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को परवरिश करने के लिए ले लिया था। उनके साथ वाली औरतें भी बहुत खुश थीं कि उन्हें बहुत मालदार घराने का बच्चा मिला है। लेकिन कौन जानता था कि जो बच्चा हलीमा ले जा रही है, वह मानव इतिहास का सबसे महान व्यक्ति बनने वाला है। अचानक हलीमा के पास दूध की मात्रा बहुत बढ़ गई। उनकी ऊँटनी जो देखने में बहुत कमज़ोर थी, तेज़ चलने लगी। जब हलीमा घर पहुंचीं तो उनकी बकरियों ने खूब दूध दिया। तब हलीमा यह बात समझ गईं जो बच्चा वह लाई हैं, वह मामूली नहीं बल्कि बहुत बरकतों (समृद्धि) वाला है। करीब 2 साल की परवरिश के बाद हलीमा को इस बच्चे पैग़म्बर मुहम्मद

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"जिस आदमी (मुस्लिम) की प्यारी चीज, मैंने (अल्लाह) इस दुनिया से उठा ली और उसने उस पर सब्र (धैर्य) रखा तो उसका बदला अल्लाह के यहाँ सिवाए जन्नत (स्वर्ग) के और कुछ नहीं है"

(सल्ल०) को उनके घर वापस भेजना था। शैमा, हलीमा की बेटी और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दूध शरीक बहन (पोषिता बहन) उनको जाता हुआ देखकर बहुत दुखी हुई और हलीमा पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को उनकी माँ हज़रत आमिना (रजि०)–बिनते–वहब–बिन–मनाफ़–बिन–जोहरा के पास ले आईं। मगर वापस जाते समय पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से अलग होने के ग़म में रोने लगी। हलीमा की इस बच्चे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति मुहब्बत देख कर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की माँ हज़रत आमिना (रजि०) को उन पर दया आई, उन्होंने बच्चे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को दोबारा ले जाने की इजाज़त दे दी। हलीमा पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) को वापस अपने कबीले बनू–सअद में ले आईं जो 'ताइफ़' के पास था। सीरत (पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी की किताबों) से पता चलता है कि लगभग पाँच साल की उम्र में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) वापस मक्का आए और वहाँ एक साल तक अपनी प्यारी माँ हज़रत आमिना (रजि०) की मुहब्बत के साए में परवरिश पायी।

इसके बाद हज़रत आमिना पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को अपने खानदान व रिश्तेदारों से मिलवाने के लिए मदीना ले गईं और वहाँ से लौटते समय "अल–अबवा" नामक स्थान पर हज़रत आमिना (रजि०) का देहांत हो गया।

अब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पूरी तरह से अनाथ हो गए। इसके बाद आपकी परवरिश आपके दादा अब्दुल–मुत्तलिब ने की, लेकिन दो साल बाद दादा अब्दुल–मुत्तलिब का भी देहांत हो गया। फिर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की परवरिश उनके चचा अबु–तालिब ने की।

बचपन में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने बकरियाँ चराने का काम भी किया, नौ या बारह साल की उम्र में आप अपने चचा के साथ सीरिया के तिजारती सफर पर भी गए। इसके बाद जवानी के दिनों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अरब व सीरिया के बीच रास्ता बताने वाले (गाइड) के रूप में काम किया। जल्द ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने तिजारती काफिलों को रास्ता बताने और प्रबंध का काम शुरू कर दिया जिसके नतीजे में विभिन्न देशों एवं धर्मों के लोगों जैसे यहूदी, ईसाई आदि से उनके संबंध कायम हो गए।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की वैवाहिक जीवन और उनकी बीवियों की संख्या एक ऐसा विषय है जिस पर बहुत ही गलत और दुस्साहिक तरीक़े से आलोचना एवं टिप्पणियाँ की जाती रही हैं। यह बात पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के आलोचकों को हैरान करने वाली है कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की कई बीवियाँ आर्थिक रूप से मजबूत थीं। लेकिन औरतों का सम्मान करने और उनके प्रति ऊंचे एवं शुद्ध विचार रखने की वजह से वे गौरव और सम्मान की बात समझती थीं। उनके आलोचकों में से कितने लोग ऐसा कर सकते हैं? जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने किया, उन्होंने 25 साल की उम्र में अपनी पहली शादी खुद से 15 साल बड़ी एक विधवा औरत से की और 25 साल तक केवल उन्हीं के वफादार पति बनकर कामयाब वैवाहिक ज़िन्दगी गुज़ारी और पहली बीवी की ज़िन्दगी में दूसरी शादी नहीं की। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हम दूसरों को अपनी सोच की खास छवि के अनुसार देखते हैं, ये वे लोग हैं जिनकी सोच कामुक अभिलाषाओं की तरफ आकर्षित होती है अतः वे औरत और मर्द के आपसी संबंध का आधार केवल भौतिक इच्छाओं को मानते हैं। 25 साल की उम्र में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्का की एक मालदार विधवा औरत के यहाँ नौकरी करना शुरू की, जिनका नाम खदीजा–बिनते–खुवायलिद था जो मक्के की एक मुख्य कारोबारी महिला और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) से उम्र में 15 साल बड़ी थीं, उन्होंने ज़िन्दगी भर एक **CEO** के तौर पर तिजारती काफिलों का संचालन किया। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अपने अच्छे आचरण के लिए "अल–अमीन" (विश्वासपात्र) के नाम से भी जाने जाते थे। उन्होंने खुद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पास शादी का पैग़ाम भेजा, और दोनों की शादी हो गई।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"क़्यामत के दिन ईमानदार के तराज़ू में उसके अच्छे व्यवहार से ज्यादा कोई चीज़ वज़नी नहीं होगी। अच्छे व्यवहार वाला आदमी अपने व्यवहार की वजह से ही रोज़ेदार और नमाज़ी के दर्जे को पहुँच जाता है"

उन्होंने अपनी वैवाहिक ज़िन्दगी हर पहलू से बहुत कामयाबी और ख़ुशी से गुज़ारी। हज़रत ख़दीजा से पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के छः बच्चे हुए जिनमें दो बेटे और चार बेटियाँ थीं। सीरत (पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी की बुनियादी किताबों) से पता चलता है कि अल्लाह ने हज़रत खदीजा (रजि०) के ज़रिए से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की ज़िन्दगी को आगे बढ़ाया और हर पहलू से उनके भार को कम किया। हालाँकि उस समय बहु–विवाह करना एक आम बात थी फ़िर भी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत ख़दीजा (रजि०) की ज़िन्दगी में दूसरी शादी नहीं की। हज़रत ख़दीजा (रजि०) शादी के 24 साल बाद तक ज़िंदा रहीं। एक बार हज़रत ख़दीजा की मृत्यु के बाद उनका नैकलेस (गले का हार) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को दिखाई पड़ा, उसे देखकर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को हज़रत खदीजा (रजि०) की याद आ गई और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) बहुत उदास हुए, तो उनकी दूसरी बीवी हज़रत आइशा (रजि०) ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा की क्या हज़रत ख़दीजा ही आपकी सबसे ज़्यादा मुहब्बत की हक़दार थीं ? पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जवाब दिया, "उन्होंने मुझपर उस समय विश्वास किया जब किसी और ने नहीं किया, जब लोग मुझे झुठला रहे थे तब उन्होंने इस्लाम को अपनाया और मुझे सहारा दिया जब कोई सहारा देने वाला न था" जानकारी के अभाव के कारण लोग गलत एवं पक्षपात–पूर्ण बातें पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शादियों के मामले से जोड़ते हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जैसा कहा वैसा ही किया। वे अपने मानने वालों से बहु–विवाह के इसी नमूने के अनुसरण की उम्मीद करते थे। हज़रत आईशा (रजि०) को छोड़कर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सभी बीवियाँ या तो उम्र में उनसे बड़ी थी या विधवा थीं। औरत को अनावश्यक सामाजिक बंधनों से आज़ाद करने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा किए गए कामों में से यह सबसे महत्वपूर्ण काम था क्योंकि औरत को विधवा के तौर पर बहुत ही कमतर, शर्मनाक और मुसीबत भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए मज़बूर किया जाता था। इसके विपरीत सामाजिक दर्जे, क्षेत्र और धर्म की परवाह किये बगैर समाज के विभिन्न तबकों से अच्छे संबंध बनाने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की एक बीवी ईसाई और एक यहुदी भी थी जो बाद में अपनी इच्छा से मुसलमान हो गई थी। इस तरह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने हमारे लिए अपनी इन शादियों के ज़रिए से भले तरीके से औरतों और उनके सम्मान की हिफाज़त और दूसरे खानदानों और जातियों से अच्छे रिश्ते कायम करने का नमूना भी पेश किया। इस्लाम हमें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इस दुनिया और आख़िरत (परलोक) की भलाई के काम शांतिपूर्ण तरीक़े से करने का आदेश देता है क्योंकि इस्लाम चाहता है कि सब शांति और न्याय के साथ रहें। मुसलमानों को जंग की शुरुआत करने से रोका गया है, इन्हें केवल अल्लाह के रास्ते में कमजोरों, ग़ुलामों, औरतों और बच्चों को जुल्म से बचाने और इन्साफ दिलवाने के लिए सुरक्षात्मक जंग करने की इजाज़त दी गई है।

मुसलमानों को जंग के दौरान कुछ विशेष नियमों का पालन करने का आदेश भी दिया गया है जिन्हें किसी भी सूरत में तोड़ा नहीं जा सकता हैः–

1. मुसलमानों को आदेश दिया गया है की वे शोहरत, दौलत, जाति, और धर्म की भिन्नता के आधार पर जंग न करें।

2. वे किसी भी सूरत में औरतों, बच्चों, बूढ़ों और घायलों पर हाथ न उठाएं।

3. वे दुश्मन फौजियों को अपमानित न करें, उनके शरीर के अंग नाक, कान, आँख इत्यादि न काटें, फसल व पेड़–पौधों और खाने–पीने की चीज़ों को बर्बाद न करें, अन्याय और बेरहमी के किसी भी काम में संलिप्त न हों।

अब यह सवाल उठता है कि शांति के रखवाले इन मुसलमानों ने बहुत सी लड़ाइयाँ क्यों लड़ीं तो हमें इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि ये लड़ाइयाँ क्यों लड़ी गयीं ? इन जंगों और लड़ाइयाँ

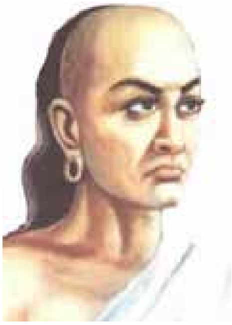

"अच्छे काम जीवन को महान बनाते है। यह मत भूलो कि यह जीवन अस्थायी है। इसलिए जीवन के हर क्षण का उपयोग किया जाना जरूरी है। मौत आ जायेगी तो फिर कुछ भी नहीं रहेगा। न यह शरीर, न कल्पना, न आशा। हर चीज मौत के साथ दम तोड़ देगी"

आचार्य चाणक्य

वैयक्तिक एवं सामूहिक भलाई, शांति व न्याय और कमज़ोर व मजबूर लोगों की रक्षा के लिए लड़ी गयीं।

बद्र की जंग : मदीने में जब मुसलमान ताकतवर होने लगे तब मक्का में कुरैश वालों को अपने व्यापार मार्ग की फ़िक्र हुई जो मदीने के पास से गुज़र कर सीरिया को जाता था। अब उन्होंने मदीना वालों को धमकी देना शुरू किया और मदीना वालों को मक्का में उमरा (Minor Pilgrimage) अदा करने से रोक दिया। इस तरह की घटनाओं ने मुसलमानों को सीरिया जाने वाले व्यापार मार्ग पर कब्ज़ा करने और कुरैश और दूसरे दुश्मन कबीलों को अपनी चेतावनी दी। एक बार अबु–सुफ़यान के नेतृत्व में एक बड़ा काफ़िला, हिजरत करने वाले मुसलमानों के घरों से लूटा हुआ माल लेकर सीरिया से वापस आ रहा था, तो उन्हें डर हुआ की मुसलमान अपना माल छीनने की कोशिश करेंगे अतः उन्होंने मक्के से मदद माँगी, इस तरह के मुश्किल व चुनौती भरे हालात ने जंग की आग भड़का दी।

उहद की जंग : यह लड़ाई बद्र की जंग का नतीजा था, क्योंकि कुरैश अपनी पराजय से अभी तक तिलमिलाए हुए थे।

खंदक की जंग : कुरैश वालों और मदीने के यहूदियों ने मिलकर मुसलमानों के खिलाफ एक साज़िश की जिसके नतीजे में यह जंग हुई। इन दोनों ने मिलकर मुसलमानों को ख़त्म करने के मक़सद से मदीने पर चढ़ाई कर दी। इस्लाम और मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए कुरैश की तरफ से यह आखिरी हमला था।

मोताअ की जंग : यह जंग इसलिए लड़ी गयी की बसरा के राजा शुहराबील ने (जो अरब ईसाई था) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के दूत हारिस इब्ने–उमैर को क़त्ल कर दिया था जो इस्लाम कुबूल करने का निमंत्रण लेकर उसके पास गए थे।

हुनैन की जंग : मक्का की विजय के बाद सारे अरब में तेज़ी से इस्लाम फैलने लगा लेकिन मक्का के पूर्व और दक्षिण–पूर्व की दिशाओं में कुछ ऐसे कबीले थे जो बुतपरस्ती को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। वे इस्लाम की इस तरक्की से भयभीत हो गए। उन्होंने सोचा की अगर इस्लाम इसी रफ़्तार से फैलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब वे मुसलमानों के घेरे में होंगे और उनके जैसे विचार रखने वाले दूसरे कबीलों से भी कटकर रह जाएंगे। उनके सरदारों ने अनुमान लगाया की मुसलमानों को अपनी ताक़त एकत्रित करने और अपनी स्थिति को मजबूत करने का मौका देना बड़ी बेवकूफी होगी। तब उन्होंने मक्का में मुसलमानों पर अचानक हमला करके उन्हें खत्म कर डालने का फैसला किया।

तमाम छोटी बड़ी जंगे जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के समय में मुसलमानों ने लड़ीं वे सारी की सारी आत्म रक्षा और संभावित रक्षा में लड़ी गईं। उनमें से किसी की भी शुरुआत मुसलमानों ने नहीं की और ये लड़ाइयाँ इस्लाम के प्रचार–इस्लाम की महानता का एहसास हुआ। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की फौज या उनके कमांडरों ने अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए कभी कोई गलत तरीक़ा नहीं अपनाया और जिन इलाकों को जीता वहाँ के लोगों और अपने कैदियों के साथ बहुत अच्छा और सभ्य व्यवहार किया। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने हमेशा अमन, भाईचारे और हमदर्दी का पैग़ाम दिया। और कभी किसी पर इस्लाम क़बूल करने के लिए किसी तरह का दबाव नहीं डाला। इन जंगों से इस्लाम के प्रसार में बहुत मदद मिली; तलवार के बल पर नहीं बल्कि जंग के दौरान मुसलमानों की इंसानियत की वजह से। क्या यह तलवार की ताक़त का इस्तेमाल था कि दूसरे इस्लामी ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ (रजि०) का ईसाई ग़ुलाम उनके देहांत होने तक ईसाई ही रहा।

मौजूदा दौर में विशेषतयाः अमेरिका और दूसरे यूरोपीय देशों में तेज़ी से इस्लाम फैल रहा है, यह कौनसी तलवार के बल पर हो रहा है ? मक्के की विजय में एक भी व्यक्ति नहीं मारा गया जब कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के साथ 10000 लड़ाके थे। यह इस बात का असर था कि पैग़म्बर

“हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) हज़रत अबू सलमा के इंतेक़ाल के बाद तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू सलमा की आंखें खुली हुई थी, आप (सल्ल०) ने उनकी आंखें बंद की और फ़रमाया: जब रूह (आत्मा) क़ब्ज़ की जाती है तो निगाह जाती हुई रूह को देखने की वजह से उपर उठी रह जाती है, इसी वजह से आप (सल्ल०) ने उनकी आंखों को बंद किया”

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Hazrat Umme Salma narrates when Prophet Muhammad (pbuh) visited her after the demise of Hazrat Abu Salma, his eyes were open. The Prophet (pbuh) closed his eyes and said “ when the soul departs from the body, the eyes are left open gagging upwards at the departing soul” . He (pbuh) closed his eyes.

मुहम्मद (सल्ल०) में अपने साथियों को आदेश दे रखा था कि पवित्र शहर मक्का में किसी का खून न बहाया जाए। जंगे हुनेने में 70, खैबर में 93, बनू–मुस्तलिक की जंग में 10 व्यक्ति मारे गए और उहद में 22 लोग मारे गए। मिस्र के एक विद्वान मुहम्मद अमरा कहते हैं कि इन सारी जंगों में मरने वालों की कुल संख्या केवल 202 है। इन सभी जंगों में मारे जाने वाले लोगों की संख्या में मुस्लिम और गैर–मुस्लिम दोनों शामिल हैं।

वैश्विक भ्रातृत्व का सिद्धान्त और मानवीय समानता का सिद्धान्त जिसकी उद्‌घोषणा मुहम्मद (सल्ल०) ने की थी, वह मानवता के सामाजिक उत्थान में एक महायोगदान है। सभी महान धर्मों में इस सिद्धान्त की रक्षा की गई है किन्तु इस्लाम धर्म के पैग़म्बर ने इस सिद्धान्त को वास्तव में परिवर्तित किया और शायद सदियों तक उसके मूल्यों को उस समय पूरी तरह से अभिज्ञान किया जाएगा जब अंतर्राष्ट्रीय चेतना जागृत हो रही है, नस्लभेदी पूर्वाग्रह ग़ायब होंगें और मानवता में अपेक्षाकृत और अधिक भ्रातृभाव पनपेगा।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा ग़ांधी अपनी अनुकरणीय शैली में कहते थे कि "दक्षिणी अफ्रीका में यूरोपवासी उस इस्लाम के आगमन का कारक हैं जिसने स्पेन को सभ्य बनाया, इस्लाम जिसने मोरक्को में रोशनी का अलख जगाया और जिसने विश्व को भाईचारे का व्यवहार करने की शिक्षा प्रदान की। यदि भाईचारा कोई पाप है तो इसका कारक हैं।

पैग़म्बर (सल्ल०) ने रोम, पर्शिया, चीन या भारत के किसी स्कूल में दर्शनशास्त्र का अध्ययन नहीं किया किन्तु फिर भी वह मानवता को आंतरिक मूल्यों की सर्वोच्च सच्चाई बनाने का दावा कर सकते हैं। वह स्वयं अनपढ़ थे, फिर भी वह अर्थपूर्ण ढंग से बोल सकते थे जिनको सुनकर लोग आँसू बहाते थे, वे आँसू हर्षोन्माद से परिपूर्ण होते थे। इस्लाम के पैग़म्बर की हस्ती में विश्व ने इस धरती पर दुर्लभ चमत्कार देखा जो हाड़ और मांस का बना था। अब यह संसार कह सकता है कि वह एक वरदान युक्त व्यक्ति थे और वह शिक्षा देने का दुर्लभ गुण से युक्त थे ।

610 ई० में 40 साल की उम्र में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को धार्मिक दृष्टि से बहुत ही गहराई और बारीकी का अनुभव हुआ, जिसने उनकी ज़िन्दगी में नई रोशनी ला दी। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) और उनका घराना हर साल मक्का के पास "हिरा" नामक गुफा पर इबादत के लिए जाया करते थे। रमज़ान के महीने में यह क्रम बढ़ जाता था। रमज़ान अरबों के लिए "हराम" (प्रतिष्ठित महीना) है, जिनमें किसी भी तरह की छोटी या बड़ी हिंसा पर पुर्ण रूप से रोक है। रमज़ान के मुबारक महीने की एक रात जब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) हिरा नामक गुफ़ा में इबादत कर रहे थे तब कुछ गुनूदगी की हालत (Semi-Conscious) में एक अदभुत घटना हुई। एक फरिशता (ईवरीय दूत) ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से कहा। "पढ़ो"! दो बार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने पूछा, क्या पढ़ूं ? तीसरी बार फ़रिशते ने जवाब दिया : "पढ़ो", अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पढ़ो कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है, जिसने कलम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह ज्ञान दिया जिसे वह पहले नहीं जानता था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसे (कुरान – सूरह : 96 – आयत–1–5) ही दोहराया फिर आपकी हालत सामान्य हो गई और आपने महसूस किया "जैसे ये शब्द उनके दिल पर लिख दिए गए हों"! इसके बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) आसमान को देखते हुए तेज़ी से पहाड़ से उतरे तो आपने जिब्राइल (दिव्य दूत) को उनकी असल सूरत में देखा जिन्होंने गुफा के अंदर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) से बात की थी। जिब्राइल अपने आकार के हिसाब से इतने बड़े थे कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) आसमान में जहाँ भी नज़र दौड़ाते हर तरफ उनके वुजूद से आसमान को हरे रंग से घिरा हुआ पाते। कहते हैं यहीं से हरे रंग को इस्लाम का प्रतीक रंग माना गया। इसके बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पर लगातार वह क़ुरान (दिव्य संदेश) आते रहे जिसे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अपनी बीवी ख़दीजा (रजि०) और अपने मानने वालों को सुनाते, इस समय मक्का

"पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर झुक जाने से तुम्हारी इज्जत घट जाती है तो क़यामत के दिन मुझ से ले लेना"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"If submission belittles your honour, said the Prophet Muhammad (pbuh), "then get it from me on the day of resurrection"

में मुसलमानों का एक छोटा सा समूह बन गया था। हज़रत ख़दीजा के पूर्ण समर्थन और फ़रिश्ते (दिव्य दूत) के लगातार आने से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का हौसला बढ़ा और उन्हें यह यकीन हो गया कि अल्लाह ने उन्हें अपने पैग़म्बर के रूप में चुन लिया है। अतः आपने उस बात का ऐलान करना शुरू कर दिया जिसका आपको आदेश दिया जाता था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों को सन्देश दिया कि वे "उनके खुदाओं की इबादत छोड़कर केवल एक अल्लाह (ईश्वर) की इबादत करें" जैसा कि मक्के में 360 बुतों की पूजा की जाती थी"। आपने (सल्ल०) हमेशा सिर्फ अल्लाह (ईश्वर) की इबादत की और अल्लाह के काम में अपना किरदार (Role) बताते हुए कहा कि उनका काम केवल (अल्लाह का) सन्देश पहुँचाना है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत (Prophet hood) के पहले तीन सालों में केवल 40 लोगों ने इस्लाम कुबूल किया।

शब्द मेराज (ऊचाइयों की तरफ सफर करना) के ज़रिए से उस अदभुत घटना की जानकारी मिलती है जिसमें अल्लाह ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को आसमानों की सैर करने का सौभाग्य दिया। आसमानों के इस सफ़र के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को जो सवारी दी गई उसे बुर्राक (एक सफेद जानवर जो देखने में खच्चर से छोटा और गधे से बड़ा था, अपने किनारों पर पंखों के साथ) कहा जाता है। मेराज से संबंधित यह बात "भविष्य पुराण" में भी मिलती है, जिसमें "कल्कि अवतार" का ज़िक्र करते हुए कहा गया है कि वह महान उचाइयों पर जाएगा, यह बात पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की तरफ इशारा करती है जिनको अदभुत शक्ति वाला बुर्राक दिया गया जो जबरदस्त रफ़्तार से ब्राहमांड के हर कोने तक जा सकता था।

622 ई० में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) और उनके मानने वालों ने मक्का से मदीना प्रस्थान किया। यह घटना "हिज़रत" के रूप में जानी जाती है। यहाँ से आदर्श इस्लामी समाज के निर्माण की शुरुआत हुई और बाद में इसी को मुस्लिम कैलेंडर का आधार माना गया। 630 ई० में कुरैश वालों ने वह समझौता तोड़ा डाला जो मुसलमानों और कुरैश के बीच "हुदैबिया" नामक स्थान पर 628 ई० में हुआ था। इस घटना ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को मक्का में दाखिल होने का मौका दे दिया। अतः आप बड़ी संख्या में मुसलमानों के साथ मक्के में दाखिल हो गए। कई सालों तक बहुत कठिन और निर्वासित जीवन गुज़ारने के बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) मक्का में दाखिल हुए और आदेश दिया की मक्का वालों से किसी भी जुल्म का बदला न लिया जाए। इसके बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) सीधे "काबा" में दाखिल हुए और हज़रत बिलाल को अज़ान (Call to Prayer) देने को कहा और काबे को उसी हालात में जिसमें पहले था, में किया, जैसा कि मुसलमान मानते हैं कि इसे हज़रत इब्राहिम ने अल्लाह के घर के तौर पर बनाया था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने काबा को फिर से केवल अल्लाह के लिए समर्पित किया, मक्के की लगभग सारी आबादी मुसलमान हो गई, इसके बाद आप पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) मदीना लौट गए।

इसके बाद 632 ई० में उत्तर की तरफ इस्लाम के प्रचार–प्रसार पर विचार कर रहे थे कि अचानक बीमार पड़ गए। और तीन दिन बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का देहांत हो गया। औस–इब्ने–औस से रिवायत (Narrated) है कि एक बार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों से फ़रमाया कि तुम जुमे के दिन मुझपर और ज़्यादा सलामती और बरकतें भेजा करो, इस दिन तुम्हारी तरफ से भेजी जाने वाली सलामती और बरकतें मुझ तक पुहचाई जाती हैं।

लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल हमारी सलामती व बरकतें आप तक किस तरह पहुँचेगी जब कि आपका जिस्म कब्र में मिट्टी में मिल चुका होगा। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह ने ज़मीन को पैग़म्बर के जिस्म खाने से रोक दिया है। (हदीस, नसाई – 1374)

"शिक्षा सभी का जन्मसिद्ध अधिकार है जो विद्यार्थियों को, चाहे वह कही भी हो नयापन करने और नया बनाने, ज्ञान व कुशलता प्राप्ति, उत्तरदायित्व एवं आचरण के अनुशरण के योग्य बनाती है"

शेख़ हमाद बिन खलीफ़ा अल थानी,क़तर

"Education is a universal right, and enables students, wherever they might be, to have access to the means of innovation and creativity, the acquisition of knowledge and expertise, and the practice of responsibility"

Sheikh Hamad bin khalifa al Thani, Qatar

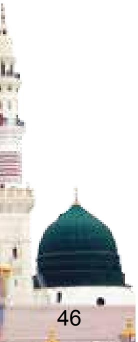

1162 ई० में यह सच्चाई दुनिया के सामने आ गई, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के देहांत के लगभग 500 साल बाद जब दो यहूदियों ने ख़ुफ़िया सुरंगों के ज़रिये से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की कब्र तक पहुँचकर उनके जिस्म (Body) का अपहरण करने की कोशिश की। इससे यह बात भी साबित होती है कि यहूदी भी यह बात जानते थे कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जिस्म सही हालत में है इसीलिए उन्होंने इसे चुराने की कोशिश की।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बताये हुए इस्लामी तरीके के अनुसार ही उनके परिवार में से हज़रत अली (रजि०) ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को नहलाया और मदीने की मस्जिद में दफनाया।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की कब्र को इस्लाम में काबा के बाद सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। जहाँ करोड़ों मुसलमान उसके ज़ियारत करने के लिए जाते हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने देहांत से पहले अपने मिशन को पूरा करते हुए इंसान के मुकम्मल (संपूर्ण) व कामयाब होने की धारण को बदल दिया।

1. बेदीनी (paganism) और बुतपरस्ती से निकलकर लोगों को केवल एक अल्लाह (ईश्वर) के सामने पूर्ण समर्पण (Total Devotion) कर देने की तरफ लाए।
2. कबीलों के झगड़ों और जंगों से मेलजोल और सहयोग की तरफ लाए।
3. शराबखोरी और अय्याशी से सहनशीलता और व्यावहारिक ज्ञान की तरफ लाए।
4. अव्यवस्था और अशांति से अनुशासन की तरफ लाए।
5. अनैतिकता से नैतिकता की महान ऊँचाइयों की तरफ लाए।

मानव–इतिहास ने कभी भी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से पहले या उनके बाद एक समाज में इतना पूर्ण और अदभूत परिवर्तन नहीं देखा गया और ज़रा सोचिए कि ये बेमिसाल कारनामे को सिर्फ दो दशकों (23 साल) में अंजाम दिए गए।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के देहांत के बाद उनके अनुयायियों ने, वह सब कुछ जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा और किया, उसको संजोकर सुरक्षित रखा, क्योंकि अल्लाह की इच्छा के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए वे सर्वोत्तम आदर्श थे। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की बातों को इकठ्ठा करके किताबों के रूप में लिखा गया जिन्हें "हदीस" कहा जाता है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सुन्नत (तरीका) याद दिलाती है कि सारे इंसानों को अल्लाह (ईश्वर) की मर्ज़ी के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए। जब मुसलमानों के सामने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का नाम आता है तो इस नाम के प्रति अपनी निष्ठा और सम्मान को ज़ाहिर करते हुए "उनपर शांति हो" के शब्दों को दोहराते हैं। हज़रत आदम (अलै०) पहले इंसान व पहले पैग़म्बर और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) आखिरी पैग़म्बर एवं ऐसे ही एक इंसान थे। आज 1437 साल बाद भी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की विरासत बग़ैर किसी मामूली कमी और बदलाव के ज़िन्दा हैं। उनकी शिक्षाएं इंसानियत के साथ व्यवहार और इसकी समस्याओं से निपटने का तरीका आज भी उतना ही कामयाब है, जितना उस समय था, जब वे मौजूद थे। यह केवल पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयायियों का दावा नहीं है बल्कि इतिहास के निष्पक्ष व अच्छी जानकारी रखने वालों से यह बात ज़िंदा हक़ीक़त के तौर पर सामने आती है कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) सारी इंसानियत की महानतम विभूति थे। उनकी रहमत का साया तमाम मुसलमानों, गैर–मुसलमानों, पेड़–पौधों, जानवरों इंसानों और गैर–इंसानों तक फैला हुआ है। एक मशहूर हदीस में बताया गया है कि जब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी फ़ौज को जंग पर रवाना किया तो सारी फौज और अफसरों को आदेश दिया कि किसी भी बूढ़े व्यक्ति, औरत या बच्चे पर हाथ न उठाया जाए। यहाँ तक कि पेड़–पौधों को न काटा जाए, मकानों को नष्ट न किया जाए और जानवरों को खाने के अलावा न मारा जाए।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"शराब ना पीना क्योंकि ये हर बुराई की कुंजी है, जो दुनिया में शराब पियेगा वो आख़ेरत में (जन्नत की) शराब से महरूम रहेगा, शराब का आदि बुतपरस्त की तरह होता है शराबी जन्नत में नही जाएगा"

अतः हम पाते हैं की पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अपने आप में एक पैगम्बर, योद्धा, सेनापति, व्यवसाय कर्ता, उपदेशक, दार्शनिक, वक्ता, समाज सुधारक, अनाथों को आसरा देने वाले, ग़ुलामों की देखभाल करने वाले और फैसला करने वाले (जज) सभी कुछ थे। और सबसे बढ़कर यह कि इन सारे शानदार किरदारों में और इंसानी ज़िन्दगी के इन सभी क्षेत्रों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) एक समान नज़र आते हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के कामों को दो किस्मों में बाँटा जाता है, एक वे जो अनिवार्य है और दूसरे वे जो अक्सर हालात में माफ़ हो जाते है। मदीना में निर्वासित ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) जब एक विजेता की हैसियत से मक्का में दाखिल हुए तब अपने दुश्मनों और विरोधियों के लिए आम माफ़ी का ऐलान किया जब कि उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) और मुसलमानों पर बहुत जुल्म किए थे हालंकि मक्के के यहूदियों और दूसरे लोगों ने कई बार आपकी जान लेने की कोशिश की थी लेकिन आपने बगैर किसी शर्त और बदले के सबको माफ़ कर दिया।

ऐतिहासिक दस्तावेज़ यह दर्शाते हैं कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के सभी समसामयिक व्यक्ति चाहे उनके मित्र हों अथवा शत्रु दोनों जीवन के हर मार्ग पर तथा मानवीय कृतियों के प्रत्येक आयाम में इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के विश्वस्त गुणों, बेदाग ईमानदारी, सच्चे गुणों, निरकुंश निष्ठा और सच्चाई को स्वीकार करते थे। यहूदी भी, जो उनके संदेशों पर विश्वास नहीं करते थे उन्होंने भी पैग़म्बर की सटीक निष्पक्षता के गुणों के कारण अपने व्यक्तिगत विवादों में उसे मध्यस्थ के रूप में स्वीकार करते थे। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की हस्ती की सच्चाई की थाह पाना अत्यंत कठिन है। कोई भी व्यक्ति महज़ इसकी एक झलक ही पा सकता है। उनकी उपलब्धियां जीवन के किसी एक पहलू तक ही सीमित नहीं है इसमें मानवीय परिस्थितियों के सभी पहलू शामिल हैं।

बद्र की जंग के बाद एक बार यहूदियों ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की जान लेने की योजना बनाई। उन्होंने आपको समझौता करने के लिए बुलाया और धोखे से एक बड़ा पत्थर आप (सल्ल०) के ऊपर डालकर जान लेने की कोशिश की लेकिन उनकी साजिश उजागर हो गयी और उसी (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए आप तेज़ी से मदीना लौट आए।

इन जंगों के बारे में ध्यान देने की बात यह है कि इनमें कितने लोग काम आए, पैग़म्बर (सल्ल०) के द्वारा लड़ी गयी ऐसी बहुत सी जंगे हैं जिनमें बिल्कुल भी खून नहीं बहा। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अपने जीवन में लड़ी गयीं सभी 27 जंगों में अल्लाह की कृपा और अपनी बुद्धिमता से कामयाब हुए। इन तथ्यों से साफ़ तौर पर पता चलता है कि इस्लाम हिंसा का धर्म नहीं है। इसके मानने वाले आतंकवादी नहीं हैं। वे राष्ट्र आतंकवादी के पोषक है जो गाज़ा, इराक, सीरिया, अफ़ग़ानिस्तान म्यांमार और दूसरी जगहों पर बेगुनाह और निहत्थे नागरिकों का कत्ले आम करते हैं।

कैसा दुर्भाग्य है कि जिन्होंने 1940 इ० के दशक में हिरोशिमा और नागासाकी में दो लाख बेगुनाह लोगों का कत्लेआम किया, जिन्होंने 2003 इ० में इराक़ी नागरिकों के ख़िलाफ़ सफ़ेद फास्फोरस (युद्ध क्षेत्र में भी प्रतिबन्धित) का इस्तेमाल किया, जिन्होंने अफ़ग़ानिस्तान और इराक पर युद्ध थोपकर दस लाख से ज़्यादा नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया, और जिन्होंने म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों का कत्लेआम किया, उन्हें नॉबेल पुरस्कार, अमेरिकी कांग्रेस का गोल्ड मेडल, अटलांटिक कॉउंसिल का ग्लोबल सिटिज़न टाइटिल और अवार्ड और ऐसे लोग सभ्यता और मानवाधिकारों की अगुवाई करने के दावेदार हैं। हक़ीक़त में यह बात सोच–विचार करने के लायक है।

Formula to go to Heaven

The Quran (God) + Hadiths and
Sunnah (the practices of the prophet) + the
practices of his companions + the opinions
of the imams + consensus of ulamas + the
comments and opinions of their students + the
comments and opinions of early ulemas + the comments
and opinion of later ulemas + the fatwas of the living ulema
= Islam

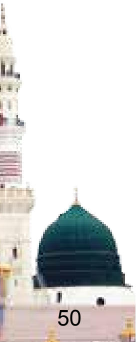

Introduction

Can you guess the name of the dignity I am going to talk to you about; yes, the dignity who in spite of being orphaned at a very early age, never considered himself an orphan; the dignity who was chosen by an elderly rich lady, almost double his age as her husband and to whom he remained devoted and faithful till her end. He was a dignity who epitomized beauty, courage, fearlessness and love, showered blessings on one and all without any discrimination. Even in the commanding position he was merciful to those also at whose hands he had suffered the most. It was his intelligence, wisdom and hard work that transformed the savage Arabs into Allah fearing and exemplary human beings. He was a dignity who lifted the woman from the abyss hell and placed the heaven under her feet. Yes, he is all heavenly qualities incarnated – the Prophet for all mankind, Prophet Muhammad (pbuh) s/o Abdullah s/o Abdul Muttalib s/o Hashim s/o Abdul Munaf s/o Qussai s/o Kilab s/o Murrah s/o Kaab s/o Luwai s/o Ghalib s/o Fahar s/o Malik s/o Nadir s/o Kananah s/o Khuzaima s/o Mudrakah s/o Ilyas s/o Mudar s/o Nizar s/o Maad s/o Adnan.

With the advent of human beings on this earth Prophets also started coming with their holy books and revelation for their people. From Adam to Moses and to Jesus they came against Pharaoh and many others like him for their followers. But, our beloved Prophet Muhammad (pbuh) came for the whole mankind and Jinns. In the history of mankind there is no one whose life is depicted in such a comprehensive and meticulous way. There are millions of books written on Holy Prophet Muhammad (pbuh) and this will continue till the day of judgment.

He was a dignity who in the face of all the odds stood for sanctity of life, trust and justice, universal equality and global brotherhood of human beings holding the pillars of Islam steadfast which compelled even some of his direst opponents to recognize him as an example of perfect dignity. He, our beloved Prophet Muhammad (pbuh) was a symbol of mercy for all mankind (Rehmatal-lil-aalamin). It is only our selfishness under the evil influence of the devil (shaitan) which holds and restricts some sections of the human beings from treading the path shown by him, the path of Islam (peace).

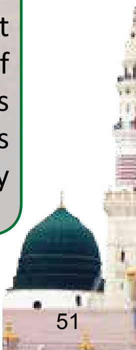

"हम सब मिलकर एक ऐसे विश्व का निर्माण कर सकते हैं जहाँ वास्तविक शांति हो, जहाँ हर इंसान खुशहाली प्राप्त कर सकता हों, जहां वह प्रकृतिक संसाधनों का पूरा लाभ उठा सकता हो, तो मुझे विश्वास है हम सफल हो सकते हैं"

किंग अब्दुल्लाह, जॉर्डन

"Together, we can create a world in which peace is real; in which every human being can thrive; in which all share the promise of our century. I believe we can succeed"

King Abdullah of Jordan

A chronology of the life of Prophet Muhammad (pbuh)

May Allah pardon me, a person who is still in the process of learning and comprehending the Holy Qur'an and Hadith for venturing upon to trace the history of a man like the Prophet Muhammad (pbuh). However let me take the privilege of having a brief look into the life of the Messenger of ALLAH, followed by billions of people all over the world till the day of judgment (also called the day of standing up, day of separation, day of reckoning and day of awakening. His name is now invoked in reverence innumerable times a day. He is the most revered figure in the history of the west from the 7th century to quite recent times. The last of the prophets of ALLAH and the source of the Holy book, the Qur'an, whose name means highly praised was born in the city of Makkah in 571 anno domini.

When he appeared Arabia was a desert- a nothing. Out of nothing a new world emerged fashioned by the mighty spirit of Prophet Muhammad (pbuh) - a new life, a new culture, a new civilization, a new kingdom which extended from Morocco to indies and influenced the thought and life of three continents- Asia, Africa and Europe.

A Jew scholar from Syria (Shaam) who had good knowledge of ancient Holy Scriptures was living in Makkah. He used to say, "O people of Makkah very soon a child will take birth here. Not only the Arabs but the whole world will follow him heart and soul. Whoever comes into his contact and follows him will succeed while his antagonists will fail."

It is almost a universal observation that prophets and messengers belong to honourable families and so was our prophet Muhammad (pbuh) son of Abdullah - bin Abdul Muttalib, who was one of the honoured leaders of Makkah, and one of the wisest man of the Arabs and the rulers of "Quraish" tribe.

Allah for the best reasons known only to Him, had ordained that the Prophet comes to this world as an orphan. His father Abdullah-Ibn-Abdul-Muttalib died a few weeks before his birth. When Prophet Muhammad

"यदि कोशिका हार्मोन को ग्रहण करती है तो हार्मोन प्रतिक्रिया शीघ्र ही करता है,यदि तुम पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)को स्वीकार करोगे जिसने चाँद के दो टुकड़े किये थे (अल्लाह के हुक्म से) तो तुम शीघ्र सफ़ल हो जाओगे और चाँद की तरह चमक जाओगे"

मुहम्मद टी कैफ़ी

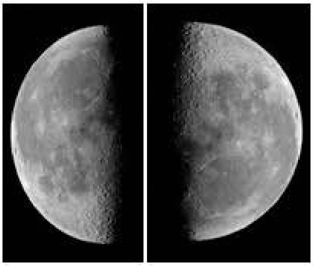

"Hormone acts soon if the cell has receptors for the harmone , you will become soon successful and beautiful like moon if you are the acceptor of Prophet Muhammad (Pbuh) who performed the miracle of moon"

Muhammad T Kaifi

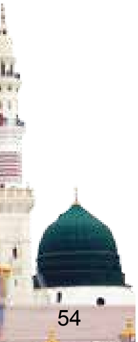

(Pbuh) was eight days old a group of ladies visited Makkah to adopt the new born babies as foster mothers and take them to the open desert environment as per the custom and culture of the land. In that group a lady called Haleema, wife of Harith-Bin-Zowaib from the Banu saad tribe, got Prophet Muhammad (pbuh) for foster care. Her companions were happy as they got the babies from very well to do families but who knew that Haleema was carrying a baby boy who was to become the greatest personality in human history. She was full of milk for the child and her mount, looking weaker apparently strode ahead of all its fellow mounts. When she arrived home her goats yielded much more milk for the family and it was then Haleema realised that hers was not an ordinary baby, but an angel of blessings. After 24 months of foster care Prophet Muhammad (Pbuh) was to depart from his foster mother Haleema. Shaima the daughter of Haleema and foster sister of the Prophet was shocked and felt very sad to see him departing. Haleema brought back the young Prophet Muhammad (Pbuh) to Hazrat Aaminah daughter of Wahab-ibn- Manaf-ibn Zahrah and cried bitterly while leaving him. His mother Hazrat Aaminah was moved by her love for the child and gave him back to Haleema to be brought up in Banu Saad region near Taif. It is said that Prophet Muhammad (pbuh) returned to Makkah when he was about five years of age and where he lived under the affectionate care of his mother Hazrat Aaminah for one year. She took him to Madinah to introduce him to his parental relations. She died on her way back at a place called Abwa. Now completely orphaned, he was brought up by his grandfather Abdul-al-Muttalib, who also died after two years. He then came under the care of his uncle Abu-Talib. The Prophet Muhammad (pbuh) was raised by him as a shepherd. At the age of nine (some sources say 12) he joined his uncle Abu-Talib on a trip to Syria.

As a young man Prophet Muhammad (pbuh) worked as a camel driver between Syria and Arabia. Soon the Prophet took the career of managing merchandise caravans of merchants and came into contact with people of various nationalities and faiths including the Jews, the Christians and others.

Prophet Muhammad's (pbuh) married life and number of his wives is also a bitterly and blasphemously criticised topic. It may be surprising

"सावधान! जो भी व्यक्ति ग़ैर मुस्लिम अल्पसंख्यकों (ईसाई, यहूदियों, और अन्य समुदायों) के प्रति निर्दयी और कठोर होगा, उनके अधिकारों में कटौती करेगा, ज़रूरत से ज़्यादा काम लेगा, या उनका धन चुराएगा, मैं क़यामत के दिन अल्लाह से उसकी शिकायत करूँगा"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Beware! Whoever is cruel and harsh to a non-Muslim minority (Christians, Jews any other infidel) curtailing their rights, overburdening them, or stealing from them, I will complain (to God) about that person on the Day of Judgment"

for his critics that many of these wives were better off than him (pbuh) monetarily but because of his great honour and concern for women they themselves sought his (pbuh) company and felt honoured and proud to be his (pbuh) wife.

How many of his (pbuh) critics are going to marry a women fifteen years older than him the first time and that too at a very young age and remaining faithful only to her for almost a quarter of a century without marrying any other women during her life time.

There can be no denial to the fact that we see others in our own image. It is only people with voluptuous bent of mind who consider only carnal desire the base of relation between a man and a woman.

At the age of 25 Prophet Muhammad (pbuh) was employed by a wealthy Makkah widow Hazrat Khadija, the daughter of Khuwaylid, a leader entrepreneur and 15 years senior to him in age, who ran a thriving trade business as a CEO during her life time. Known for his reputation as Al-Amin, the trusted one, she a widow asked for his a bachelor hand in marriage and the two were married. By all accounts they lived a very successful, loving and happy married life. Hazrat Khadija bore him six children, two sons and four daughters. Early records state that “ALLAH” comforted him through her, as she made his burden light. Although polygamy was a common practice at that time, Prophet Muhammad (Pbuh) took no other wife until her death 24 years later. Once after the demise of Hazrat Khadija, the Prophet came across her necklace. When the prophet saw it, he remembered her and became sad. His love for her never lessened, so much so that his later wife Hazrat Ayesha felt envious of her. She asked the Prophet Muhammad (Pbuh) if Hazrat Khadija had been the only woman worthy of his love. The Prophet replied “She believed in me when no one else did, she accepted Islam when people rejected me and comforted me when there was no one else to care of me.”

The victims of ignorance, misinformation and prejudice attribute Prophet Muhammad’s (Pbuh) marriages to voluptuousness. He (Pbuh) preached what he (Pbuh) practiced. He expected the Muslims to follow the example of polygamy set by him. Except one (Hazrat Aisha) all his (Pbuh) wives were either older than him (Pbuh) in age or widows or divorced.

This step of his (Pbuh) was one of the greatest steps he (Pbuh) took

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"मैंने तुम लोगों के बीच अल्लाह की यह पुस्तक(कुरान)रखी है। यदि तुम इस पुस्तक का कड़ाई से पालन करोगे तो तुम अपने रास्ते से कभी नहीं भटकोगे"

"I have left amongst you the book of Allah (Quran) and if you hold fast to it, you would never go astray"

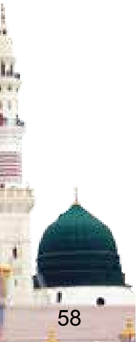

for the emancipation of women, who as widows were forced to live a very mean, ignoble and tortuous life. Beside, this step of his (Pbuh) one another greatest step he (Pbuh) took was to establish cordial relations with various sects of the society, irrespective of their status, region and religion (one of his (Pbuh) wives was a Christian and another was a Jew who later on converted to Islam of their own free will).

Thus by these marriages the Prophet (Pbuh) set an example for us to help and protect the women and their modesty in a dignified manner and maintain cordial and brotherly relations with various tribes.

Islam commands us to work and live for our individual and collective welfare in this world and hereafter. And it commands us to achieve this peacefully because it is His will that we live in peace and justice. Muslims are forbidden to initiate war. They are allowed to go for war only in self-protection or expected attack and for the cause of God, feeble and oppressed men, women and children.

In the war Muslims are commanded to observe certain rules which must not be transgressed:

- They are commanded not to fight for fame, wealth, racial or ideological differences.
- They must not fight with women, children, old and the injured.
- They must not mutilate enemy corpses, destroy fields, cut trees and livestock or indulge in any act of injustice and brutality.

Now the question arises why the custodians of peace, the Muslims were involved in various battles. Let us examine why these battles were fought. An analysis of these wars will establish that they were waged for individual and collective welfare, for peace and justice and for the protection of the oppressed.

Battle of Badr: When the Muslims became stronger in Medina, the Quraish in Makkah began to worry about threat to their trade route to Syria. They threatened to harm the Madanese and stop them from performing Umra (minor pilgrimage). These incidents forced the Muslims to extend their control over the Syrian trade route to warn the Quraish and other unfriendly tribes to reconsider their intentions.

Once when a large caravan of the Makkans, under the leadership of Abu Sufiyan, was returning from Syria after purchasing the stolen property

"इस्लाम का मुख्य आधार पाँच बातों पर आधारित है। इस तथ्य पर विश्वास करना कि कोई और अल्लाह (ईश्वर) नहीं है, सिर्फ अल्लाह ही है, इस बात पर विश्वास करना कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और सन्देशवाहक हैं, नमाज क़ायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The superstructure of Islam is raised on five (pillars), testifying (the fact) that there is no God but Allah, that Muhammad is His bondsman and messenger, and the establishment of prayer, payment of Zakat, pilgrimage to the House (Kabah) and the fast of Ramzan"

of the emigrants it feared that the Muslims would make an attempt to retrieve their property. He asked for help from Makkah for reinforcement. These challenging circumstances ignited Battle of Badr.

Battle of Uhud: This battle was an outcome of Battle of Badr as the Quraish were still smarting their defeat there.

Battle of Trench (Khandaq): This battle was a result of the conspiracy between the Jews and the Quraish. They advanced towards Medina in the hope of destroying the Muslims. This battle was the last Quraish attempt to destroy Islam and the Muslims.

Battle of Mu'ta: This battle erupted when King Shurahbil of Basra, a Christian Arab, killed the envoy (Harith ibn Umayr) who was sent to him with an invitation to embrace Islam.

Battle of Hunayn: The conquest of Makkah triggered mass embracing of Islam by the Arabs in many parts of the country. But there were some tribes living in the east and south-east of Makkah which did not wish to abjure idolatry.

They were alarmed at the rapid progress of Islam, and they thought that if it continued to spread at the same pace, they would soon be surrounded by the Muslims, and would become isolated from other pagan tribes. Their leaders figured that it would be unwise on their part to let the Muslims consolidate their recent gains and become too strong.

They, therefore, decided to act immediately by attacking the Muslims in Makkah and destroying them.

The wars and battles, involving the Muslims, particularly during the life time of Prophet (Pbuh) were fought in self-defence to avoid the expected attacks. None of these were initiated by Muslims. And these wars proved very useful in promoting and propagating Islam. It were these battles and wars which made the opponents of Islam realise the greatness of Islam.

The armies led by the Prophet (Pbuh) and his lieutenants never adopted repressive means to celebrate their victories and behaved in a very civilized way with the prisoners of war as well as with the people they conquered. They spread love, affection, compassion and peace. They never forced them to convert to Islam. These wars proved fruitful for the growth of Islam not because of the force of their swords but because of the force of their humanity in the war. Had they used the force of sword, then the

"अबू मूसा ने बताया कि अल्लाह के संदेशवाहक ने कहा था कि एक धर्म उपासक दूसरे धर्म उपासक का उसी तरह आदर करता है जिस तरह एक भवन के अलग–अलग हिस्से एक दूसरे को सहारा प्रदान करते हैं और अंगुलियां एक दूसरे में गूंथ जाती हैं"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Abu Musa reported that the Messenger of Allah, said "A believer in respect of another believer is like a building whose parts support one another." And the intertwined his fingers"

Christian slave of the second Caliph Hazrat Umar Farooq would not have remained a Christian till the death of his master. The force of which sword is responsible for the fast spreading of Islam all over the world, today particularly in the USA and other European countries?

One notable thing about these wars is the number of casualties. There have been several wars involving Prophet Muhammad (Pbuh) in which no blood was shed. There were only 50 causalities in the battle of Badr which involved a total of 1313 combatants (313 Muslims and 1000 their enemies).

Battle of Banu Mustaliq had 10 causalities. Nobody was killed in the invasion of Makkah although there were 10,000 warriors with the Prophet Muhammad (pbuh). It is because Prophet Muhammad (Pbuh) had ordered not to kill anybody in the holy city of Makkah.

The battle of Hunayn suffered 70 casualties & the battle of Khaybar only 93.

In the siege of Taif only 70 pagans were killed while the invasion of Banu Qurayzahad had 10 casualties including the pagans.

The battle of Uhud numbered 22 causalities. Egyptian intellectual Muhammad Ammra reports that the number of pagans and nonbelievers killed in the battles during Prophet Muhammad (Pbuh) time were only 202 in all the battle.

(Make love not war)

The follower of which faith break this maxim?

But then what an irony! During the second world war those who massacred around 200,000 innocent people in Hiroshima and Nagasaki in the 1940s;

"जिस प्रकार प्रत्येक चीज़ के लिए पौलिश होती है जो उस पर जमी हुई धूल को साफ करती है, उसी प्रकार अल्लाह को याद करना हृदय की पौलिश है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"There is a polish for everything that takes away rust, and the polish for the heart is the remembrance of God"

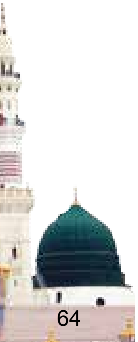

those who used uranium and white phosphorus against the civilians of Iraq in 2003 and in the wars waged by them in Afghanistan and Iraq claiming the life of 1.5 million unarmed civilians and those who Murdered Rohingya Muslims of Myanmar are decorated with Noble peace Prize, gold medal of the U.S. congress and the title of 'global citizen by Atlantic council', claim to be the pioneers of civilization and human rights.

It is really thought provoking that the 27 wars and battles which involved Prophet Muhammad (Pbuh) 19 saw no bloodshed. Though being in minority the Muslims succeeded in all of them by the grace of almighty Allah and the wisdom of Prophet Muhammad (Pbuh).

These facts clearly show that Islam is not a religion of violence, aggression and its followers are not terrorists. They are the state sponsors of terrorism who massacre innocent civilians and defenceless people in Gaza strip, Iraq, Afghanistan, Syria, Myanmar and elsewhere.

The principle of universal brotherhood and the doctrine of equality of mankind which he proclaimed great contribution of Muhammad (Pbuh) to the social uplift of humanity. All great religions have preached the same doctrine but the Prophet of Islam put this theory into actual practice and its value will be fully recognized, perhaps centuries hence, when international consciousness being awakened, racial prejudices may disappear and greater brotherhood of humanity come into existence.

Mahatma Gandhi, the father of the India nation, in his inimitable style says "that the Europeans in south Africa dreaded the advent of that Islam which civilized Spain, Islam that took the torch of light to Morocco and preached to the world the Gospel of brotherhood. They may well dread it, if brotherhood is a sin."

He (pbuh) had not studied philosophy in the school of Rome, Persia, China or India. Yet, He (Pbuh) could proclaim the highest truth of eternal value to mankind. Illiterate himself, He (Pbuh) could yet speak with eloquence and favour which moved men to tears, to tears of ecstasy. In the person of the Prophet of Islam the world has seen this rarest phenomenon walking on the earth, walking in flesh and blood. Now the world can say gifted men with genius for preaching are rare.

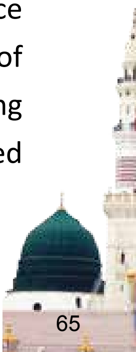

"पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "ऐ मेरे अनुयायियों, मैं अल्लाह की कसम खाता हूँ कि यदि तुम यह जान पाओगे जो मैं जानता हूँ तो तुम लोग हँसने के बजाय रोने लगोगे"

हज़रत आईशा / Hazrat Aisha

"The prophet said, "O followers of Muhammad! By Allah, if you knew what I know, you would weep much and laugh little"

By 610 at the age of 40, Prophet Muhammad (Pbuh) had gained profound experience that changed his life. Prophet Muhammad (Pbuh) and his family performed devotion each year on "Hira" (a well known cave in a mountain near Makkah), on the outskirts of Makkah. The sessions increased in duration and frequency, especially during the month of Ramazan. The month of Ramazan is one of the "Haram" months for the Arabs when even any form of violence for any reason is completely prohibited. One night during the month of holy Ramazan, Prophet Muhammad (Pbuh) reported having a strange encounter while in a semi conscious state in a cave. An angel commanded him, Recite! Twice the Prophet Muhammad (pbuh) asked, Recite what? The third time the angel replied: "Proclaim! In the name of ALLAH the cherisher, who created man, out of a leech like clot: and that ALLAH is most Bountiful, he who taught (the use of pen) taught man that which he knew not (Ref-Surah 96:1-5). Prophet Muhammad (Pbuh) recited this and then awoke, feeling "as though the words were written on his heart". Then he ran down the mountain and gazing upward, he saw the apparition "ANGLE JIBRIEL"(Jibriel who first appeared to Prophet Muhammad (Pbuh) in the cave of Hira and taught Prophet Muhammad (Pbuh) the Quran) who had spoken to him in his real form in the cave. JIBRIEL was so immense in size that in whatever direction the Prophet looked the celestial figure covered the sky, which had turned green. From that day the green colour has been adopted as the insignia of Islam. Prophet Muhammad (Pbuh) continued to receive revelations, which he recited to his wife Hazrat Khadija and thus his followers, as a small group of believers grew up in Makkah.

After receiving Hazrat Khadija's full support and additional angelic visits, Prophet Muhammad (Pbuh) became confident he had indeed been chosen as the messenger of ALLAH and began to proclaim as he had been commanded.

Prophet Muhammad's (Pbuh) message to his countrymen was to convert from pagan polytheistic Arabian religion, where around 360 cube shaped idols were worshiped, to only true ALLAH. The Prophet was always very careful to clarify his role in ALLAH'S work as he was only a prophet, the messenger of Allah.

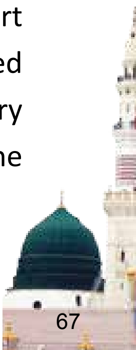

"संतुलित इस्लाम" भद्दा और अपमानजनक शब्द है । "संतुलित इस्लाम" कुछ नहीं है, इस्लाम तो सिर्फ इस्लाम है"

तय्यिब एरडोगन

“The term’ moderate Islam’ is ugly and offensive. There is no moderate Islam. Islam is Islam”

Tayyip Erdogan

In the first three years of his prophet hood, Prophet Muhammad (Pbuh) succeeded in convincing only 40 of his followers to convert to Islam.

The word Miraj (The Ascent of the prophet Muhammad (Pbuh) to heavens by soul and body) signifies an instrument which facilitates ascent. Allah (God) granted the honour of experiencing Miraj to Prophet Muhammad (Pbuh). The vehicle provided for this journey to heavens was a steed Buraq (a white animal which was smaller than a mule and bigger than a donkey, with wings on its sides). We find a reference to Miraj in Bhavishya Puran also where Kalki Autar, who, to a very great extent, refers to none other than the Prophet Muhammad (Pbuh) was to be granted a very fast steed, capable of moving at a tremendous speed to every nook and corner of the universe.

In 622 the Prophet Muhammad (Pbuh) and his followers emigrated from Makkah to Madinah. This event is known as HIJRAH and marks the establishment of the model Islamic community and the beginning of the Muslim calendar.

In 615 the tribe of Quraish imposed economic and social sanctions on Muslims and Banu Hashim, the clan of Prophet Muhammad (Pbuh).

Under the pressure of the oath known as Bait-Al-Rizwan the Quraish released Hazrat Usman and agreed to a 10 year treaty with the Prophet Muhammad (Pbuh) containing the following conditions:

1. The Muslims would return to Madina without performing ‘Umra’.
2. They would visit Makkah the next year for Pilgrimage but stay for only three days.
3. On their visit they would not carry arms, except sheathed swords.
4. If any Muslim should flee to Makkah, the Quraish would not be bound to return him. However, if any Makkan, even if he was a Muslim, should take shelter in Madina, he would be returned to the Quraish.
5. Arab tribes would be free to enter into a pact with either the Quraish or the Muslims.

The treaty did not seem to contain many benefits for the Muslims but the Quran describes it as a ‘manifest victory’. Later events proved how the treaty had really been a clear victory for the Muslims. The Muslims had not been free to preach Islam before. Now they could move about freely. As a result, thousands of Arabs embraced Islam which stood for peace and it soon became a strong force.

bLyke d: çeq[k nwr

ftckby% अल्लाह के पैग़म्बरों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने वाले प्रभारी।
blkQhy% क़्यामत के दिन का डंका बजाने के प्रभारी।
ehdkby% वर्षा और समृद्धि के प्रभारी।
btjkby (मौत का दूत)% मृत्यु के उपरांत आत्मा को अपने अधिकार में लेने वाले प्रभारी।
equdj&udhj% मृत्यु के उपरांत ये दोनों दूत कब्र में आत्मा से उनके विश्वास और कर्मों के बारे में पूछते हैं।
efyd% नरक के रखवाले
fjtoku% जन्नत के रखवाले

Prominent Angels In Islam

JIBRELL- In charge of communicating Allah's words to his prophets

ISRAFEEL- In charge of blowing the trumpet to mark the Day of Judgement

MIKAIL- In charge of rainfall and sustenance

IZRAIL (Angel of Death)-In charge of taking possession of souls after death

MUNKAR & NAKEER- After death, these angels will question souls in the grave about their faith and deeds

MALIK- Guardian of Hell

RIDWAN- Guardian of Heaven

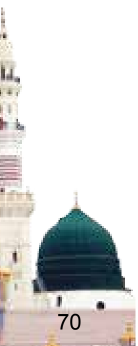

In 630 the Quresh broke the pact agreed upon at Al-Hudaybiyah and this gave freedom to Prophet Muhammad (Pbuh) to move to Makkah with a large group of Ansars and migrants. After many years of hardships and exile, the Prophet entered into Makkah and directed not to avenge for the persecutions many of them had endured. The Prophet went directly to Kabah where he ordered Hazrat Bilal to call for the prayer, to remove all the idols and restore the original purity of the Kabah which we believe was built by Hazrat Ibrahim as the house of ALLAH. The Prophet rededicated the KAABA to ALLAH, witnessed the conversion of nearly the entire Makkah population to Islam and then returned to Madinah.

Late in the spring of 632 Prophet Muhammad (pbuh), who had been considering another expedition to the north, suddenly fell ill and died three days later. As per hadith narrated by Hazrat Aisha: The prophet in his ailment in which he died, used to say, “ O ‘ Aisha! I still feel the pain caused by the food I ate at Khaibar, and at this time, I feel as if my aorta is being cut from that poison.” All actions of Prophet Muhammad (Pbuh) have been classified as obligatory and one such action which he demonstrated very often was forgiveness and pardon. He granted general amnesty to the direst of his antagonists, opponents and enemies, despite their atrocities inflicted upon him (Pbuh), when he re-entered Makkah in a commanding position after his self-imposed exile in Medina. He forgave one and all without any condition and discrimination in spite of several dastardly attempts on his (Pbuh) life by the Makkan Jews and non-Jews.

Once the Jews planned to kill him (Pbuh) after the battle of Badr. They invited him for negotiations and deceitfully tried to kill him (Pbuh) by throwing a rock on him, but a revelation exposed their plot and he (Pbuh) rushed to Madinah where he ordered to besiege them.

The last attempt on his life, which eventually turned to be the cause of his death after four years, was made by a Jew lady Zeynab bint Al-Harith who had served him the meat of a poisoned lamb. When his (Pbuh) companions asked him to kill her, he forbade them to do so. Such was the large heartedness and magnanimity of Prophet Muhammad (Pbuh). Aous ibn Aous narrated that once the Prophet Muhammad (Pbuh) had asked the people to invoke more blessings on him on Friday for their blessings would be submitted to him. The people asked him how their blessings could be submitted to him while his body lay decayed in the

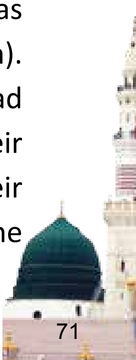

"तुम लोगों में से किसके बारे में यह माना जाए कि वह सन्तानहीन है, लोगों ने कहा जिसके पास कोई संतान नहीं है, वह सन्तानहीन है। पैग़म्बर (सल्ल०) ने कहा, नहीं, सन्तानहीन वो लोग हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को आगे नहीं बढ़ाया, अर्थात जिन लोगों ने अपने बच्चों की उन्नति के लिए कुछ नहीं किया"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"who do you reckon to be the childless among you? They said' They are those who do not have any children. 'No' he said" the childless are those who have not done anything for their children to make them successful in future"

grave. The Prophet replied "Allah, the exalted, has prohibited the earth from consuming the bodies of Prophets.

The truth of this statement dawned upon the world in 1162 A.D, almost 500 years after his leaving the world, when two Jews tried to reach his grave by digging an underground passage to kidnap his body. This also proves that the Jews knew that the Prophet's body was in fresh condition therefore they tried to take his body out. This incident is mentioned in hadith of Abu Dawood and everybody can see it in Jamul Fawaid, Hadith no-1924. According to Islamic norms established by him his body was given bath by his family, especially by Hazrat Ali, the grave was dug by an Ansari companion Hazrat Abu Talha Ansari and buried in the Masjid of Madinah. His eternal resting remains the holiest place after the Kabah, visited by multitudes of Muslims annually.

Before his (Pbuh) death the prophet had accomplished his mission of changing the concept of a perfect human being:-

1. From paganism and idolatry to submission to Allah,
2. From tribal quarrels and wars to national solidarity and cohesion,
3. From drunkenness and debauchery to sobriety and piety,
4. From lawlessness and anarchy to disciplined living,
5. From utter bankruptcy to the highest standards of moral excellence.

Human history has never known such a complete transformation of a society ever before or after him (Pbuh)–and Imagine all these unbelievable wonders in just over two decades.

After Prophet Muhammad's death, his community preserved the memory of what he did and said because he was the best example of how to live in response to **ALLAH'S** will. The records of Prophet Muhammad's (Pbuh) words were later collected in books called HADITH. These **SUNNAH'S** (Acts of Prophet Muhammad (Pbuh), serve as reminder to the humanity to follow ALLAH'S will in daily life. When the Muslims refer to Prophet Muhammad's name they express their reverence to his name followed by the salutation "peace be upon him". Adam was the first human being and the first Prophet and Muhammad (pbuh) is the last Prophet as well as a human being.

Today after fourteen hundred and thirty seven years, the legacy of Prophet Muhammad (pbuh) survives without the slightest dent and alteration. His teachings and methodology of treating mankind and its problems are still

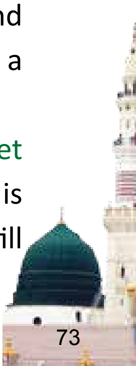

"अल्लाह ने अपने संदेशवाहकों (नूह, अब्राहम, मोसेस, जीसस और मुहम्मद (सल्ल०)को इसलिए नहीं भेजा कि लोग उनकी पूजा करें। अल्लाह ने संदेशवाहकों को इसलिए भेजा है कि लोग अल्लाह की पूजा करें। इस्लाम का यही संदेश है"

इस्लाम

"Allah did not send messengers (Noah, Abraham, Moses, Jesus and Muhammad, peace be upon them) for people to worship the messengers. Allah sent the messengers so people would worship Allah. This is the message of Islam."

the same as they were when Prophet Muhammad (pbuh) was alive. This is not the claim of Prophet Muhammad's (pbuh) followers alone but a living truth drawn from a critical and unbiased history that Prophet Muhammad (pbuh) was the greatest of all mankind; his mercy enshrined all Muslims, non-Muslims, trees, animals, humans and non-humans. According to one of the famous hadith; when he sent an army to fight the oppressors and aggressors, he ordered his companions, the leader of the army not to kill old men or women, children and even not to cut trees or destroy the buildings, and slaughter animal except for food.

Historical records show that all the contemporaries of Prophet Muhammad (pbuh) both friends foes, acknowledged the sterling qualities, the spotless honesty, noble virtues, the absolute sincerity and trustworthiness of the Prophet (pbuh) of Islam in all walk of life and in every sphere of human activity. Even the Jews and those who did not believe in his message, adopted him as the arbiter in their personal disputes by virtue of his perfect impartiality. The personality of Prophet Muhammad (pbuh), It is most difficult to get into the truth of it. Only a glimpse of it one can catch. His achievements are not limited to one aspect of life, but cover the whole field of human conditions.

We find Mohammad's (pbuh) life an amalgamation of a warrior, a general, a businessman, a preacher, a philosopher, an orator, a reformer, a refuge for the orphans, a proctor of the slaves, an emancipator of women, a law giver and a judge. And in all these magnificent roles, in all these departments of human activities he is the last word.

The least you or anyone can do as a concerned human being is just ask - could these statements, so extraordinary and revolutionary, be true, and if true why do people not pay heed to them and are indifferent to Prophet Muhammad (pbuh) and his teachings. Is this not high time that we put in efforts to know this revered man and explore his teachings and philosophy? Thus reading the Holy Qur'an and Hadith and gaining knowledge from it will automatically lead us to know Prophet Muhammad (pbuh). It will cost us nothing but will certainly prove to be a life changing beginning and experience for us.

"परिवर्तन जीवन का स्वभाव है, परन्तु चुनौतियां जीवन का भविष्य है। इस लिये हमें जीवन में आ रहे बदलाव से पैदा होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिए" अमिताभ बच्चन

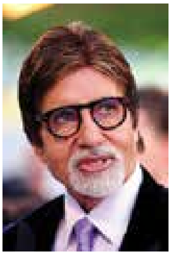

"Change is the nature of life but challenge is the future of life. So challenge the changes the changes. Never change the challenges" Amitabh Bachchan

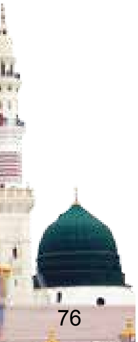

अध्याय-2
Chapter-II

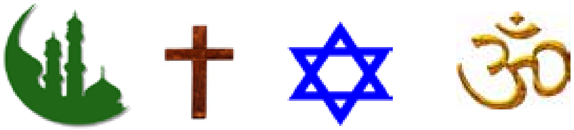

विभिन्न धर्म ग्रंथ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में क्या कहते हैं ?

What the Quran, Bible and Hindu scriptures say about Prophet Muhammad?

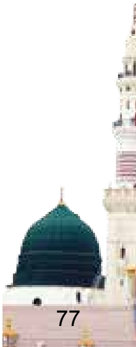

"चाकू से हज़रत इस्माइल नहीं मरे

आग में हज़रत इब्राहिम नहीं जले

मछली ने हज़रत यूनुस को नहीं खाया

समुद्र हज़रत मूसा को डूबा नहीं पाया

अल्लाह के साथ रहो, अल्लाह के बनो ,अल्लाह तुम्हारी रक्षा करेगा"

प्रस्तावना

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में जो कुछ कहा गया है:

पवित्र कुरान में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में जो कुछ कहा गया है, उससे पता चलता है कि पवित्र कुरान की निम्नलिखित सुरा में उनका नाम चार जगह पर लिया गया है: आले इमरान (3:144), अल–अहज़ाब (33:40), मुहम्मद (47:02),अल–फतह (48:29)

पवित्र कुरान में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का नाम "अहमद" भी वर्णित है (सूरा:अल–सफ, आयत–61:06) इस प्रकार पवित्र कुरान में विशेष निपुणता और सोच समझ के साथ उनके नाम का महिमा मंडन किया गया है जो आधुनिक काल के अंधेरे और डरावने रास्ते से बचने में मदद करेगा।

हिन्दू धर्म ग्रंथों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन, उनकी विजयगाथा का संक्षेप में वर्णन है इनमें न केवल उनके बारे में और शक्तिशाली भगवान का उल्लेख है जिसकी वह आराधना करते थे किन्तु उसमें उनके कट्टर शत्रुओं के विशिष्ट नामों का भी उल्लेख है। ए.एच. विद्यार्थी ने अपनी पुस्तक "विश्व धर्म ग्रंथों में मुहम्मद" में लिखा है कि सामवेद में "अहमद" ठीक उसी प्रकार से लिखा गया है जिस प्रकार उसका उच्चारण अरबी भाषा में किया जाता है। ब्राह्मणों की पुस्तकों में "अहमद" को उनके भगवान से शरिया प्राप्त हुए जो पांडित्य से परिपूर्ण है और सूर्य के प्रकाश की भांति दिव्यमान हैं। इसी तरह श्री विद्यार्थी के अनुसार मुहम्मद (सल्ल०) के नाम का वर्णन जोरोस्टिन धर्मग्रंथ और बौद्ध धर्मग्रंथ अर्थात त्रिपटिका में भी है।

बाईबल में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में क्या कहा गया है? ईसाई धर्म से संबंधित निम्नलिखित प्रामाणिक पुस्तकों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का उल्लेख है।

डियूट्रोनामि अध्याय 18 पंक्ति 18

डियूट्रोनामि अध्याय 33 पंक्ति 2

डियूट्रोनामि इस्हाक़ अध्याय 29 पंक्ति 12

डियूट्रोनामि जेनेसिस अध्याय 49 पंक्ति 10

डियूट्रोनामि हबाकक अध्याय 3 पंक्ति 3

"शिक्षा के अभाव ने बुद्धि को खोया, बुद्धि के अभाव ने नैतिक आचरण को खोया, नैतिक आचरण के अभाव ने प्रगति को खोया, प्रगति के अभाव ने धन को खोया और धन के अभाव ने शुद्रो को बर्बाद किया। देखा आपने इतना कुछ हुआ शिक्षा के अभाव में"

महात्मा ज्योतिबा फुले

"Without education wisdom was lost; without wisdom morals were lost: without morals development was lost; without development wealth was lost; without wealth the shudras were ruined: so much has happened through Lack of education."

Mahatma Jyotiba Phule

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में जो कुछ कहा गया

कुरान की सुराह अल इमरान 3:144 :– पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) संदेशवाहक से अधिक कुछ नहीं हैं। उन से पहले कई संदेशवाहक आए और चले गए। यदि उनकी मृत्यु हो जाए अथवा उनका कत्ल कर दिया जाए तो क्या तुम पीठ दिखाकर उल्टे पांव भाग जाओगे। यदि ऐसा किया तो इससे अल्लाह के उद्देश्य को हानि पहुंचेगी। किन्तु दूसरी ओर अल्लाह उन व्यक्तियों को बहुत ही जल्दी कृतज्ञतापूर्वक इनाम देंगे जिन्होंने उनके उद्देश्य को पूरा किया।

सुराह अल अहज़ाब 33:40 :– पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) किसी व्यक्ति के पिता नहीं हैं किन्तु वह अल्लाह के संदेशवाहक हैं और पैगम्बरों की मोहर हैं। और अल्लाह को सभी बातों का पूरा पता है।

सुराह अल मुहम्मद 47:02 :– किन्तु उन लोगों ने, जो रहस्योद्घाटन पर विश्वास करते हैं, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को धरती पर भेजा क्योंकि उनके अल्लाह ने यह सच कहा था कि वह (पैग़म्बर) उनकी बुरी आदतों को दूर करके स्थितियाँ ठीक करेगा।

सुराह अल फतह 48:29 :– पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के सन्देशवाहक हैं, और जो व्यक्ति उनका साथ देते हैं वे उन व्यक्तियों के घोर विरोधी हैं जो उन पर विश्वास नहीं करते हैं। किन्तु ऐसे व्यक्ति एक दूसरे के प्रति अनुकम्पाशील होते हैं। आप उन्हें अल्लाह से उनकी कृपा और उनकी खुशी मांगते हुए प्रार्थना करते समय उनको झुका हुआ दंडवत होता हुआ पाएंगे। यह तोराह में उनकी प्रतिकृति बीज की तरह है जो सबसे पहले धरती में सुप्तावस्था में होता है, फिर मज़बूत होता है फिर मोटा होता है। उसके बाद अपने तने पर खड़ा होकर पुष्प और फल के रूप में आश्चर्यजनक बातें और प्रकाश फैलाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप विश्वास नहीं करने वाले व्यक्तियों को भावावेश से भर देते हैं। अल्लाह उन में से ऐसे व्यक्तियों को वचन देते हैं, और इनाम देते है जो उनमें विश्वास करते हैं।

"उस चन्दन की भांति बनें जो उस कुल्हाड़ी को भी महका देता है जो उस चन्दन की लकड़ी को काटती है"

धम्मपद / The Dhammapada

"Be like the sandalwood, which perfumes the axe that wounds it"

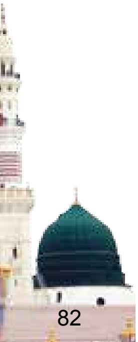

विभिन्न धर्म ग्रंथ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में क्या कहते हैं ?

वेद के कल्कि पुराण में कहा गया है :

कल्कि पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का नाम सर्वनाम होगा ।"अनाम" का अर्थ किसी एक की प्रशंसा करना और सर्व का अर्थ है सभी में एक इस प्रकार सर्वनाम का अर्थ हुआ सबसे अधिक प्रशंसनीय व्यक्ति।

अरबी भाषा में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) शब्द का यही अर्थ है। कल्कि पुराण में उल्लेख है कि कल्कि अवतार अल्लाह (भगवान) का अंतिम संदेशवाहक होगा जो विश्व का निर्देशन करेगा। (भागवत पुराण अध्याय 3, श्लोक 25)

हिन्दू धर्म के कल्कि पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म किसी द्वीप पर होगा और यह अरब का एक क्षेत्र है जिसे 'जज़ीरतुल अरब' कहा जाता है।

हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक में कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णु भगत और माता का नाम सोमनिब बताया गया है। संस्कृत में विष्णु का अर्थ अल्लाह और भगत का शाब्दिक अर्थ दास है। अरबी भाषा में इसे अल्लाह का दास कहते हैं। संस्कृत में सोमनिब का अर्थ अमन और शांति है इसको अरबी भाषा में आमिना कहते हैं।जबकि अंतिम सन्देशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पिता और माता के नाम क्रमशः हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत आमिना है।इसके अलावा इसमें लिखा है कि कल्कि अवतार के तीन भाई होंगे।उनके नाम कवि, समत और परक होंगे। कवि अर्थ चतुर जिसको अरबी में अक़ील कहते हैं। समत का अर्थ ज्ञान है जिसको अरबी में ज़फर कहते हैं। परक का अर्थ जो सर्वोच्च शिखर पर रहता है, अरबी में उसे अली कहते हैं। उपयुक्त तीनों पैग़म्बर के चचरे/ममेरे भाई हैं।

इस पुस्तक में यह भी उल्लेख है कि कल्कि अवतार संभलद्वीप के राजा की पुत्री से विवाह करेंगे। इस प्रकार मुहम्मद (सल्ल०) ने अरब की सबसे अमीर महिला हज़रत ख़दीजा से निकाह किया। हिन्दुओं की एक अन्य पवित्र पुस्तक में उल्लेख है कि कल्कि अवतार ज़ैतून और खजूर के नीचे निवास करेंगे वह सच बोलेंगें और ईमानदार होंगे।यह भविष्यवाणी भी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के मामले में सच हो रही है।

भविष्य पुराण के अनुसार दाढ़ी वाला और बिना मूंछवाला व्यक्ति जो सूअर को छोड़कर सभी शाक भक्षी जानवरों के मांस को खायेगा और प्रार्थना करने का आह्वान करेगा, ऐसा व्यक्ति जनता के जीवन में क्रांति लाएगा।

यह उन पुस्तकों में लिखा गया है जिनमें हिंदू विश्वास करते हैं कि भगवान कल्कि अवतार को एक घोड़ा प्रदान करेंगे, जिसकी सहायता से वह विश्व भर में और सातों आसमानों और स्वर्ग में भर्मण करेगा। बुर्राक़ से मेराज तक तक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की यात्रा इस भविष्यवाणी को सही सिद्ध करती है।

"इस्लाम का इतिहास सबसे अच्छा वसीयतनामा है कि अलग–अलग समुदाय शांति और सामंजस्य में कैसे एक साथ रह सकते हैं। मुस्लिमों को अन्य समुदायों के साथ उनकी बातचीत में इस्लाम की वास्तविक छवि का उदाहरण देना चाहिए" शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदेस

"The history of Islam is the best testament to how different communities can live together in peace and harmony. Muslims must exemplify the true image of Islam in their interaction with other communities" Sheikh Abdur Rahman Al-Sudes

हिंदुओं की पुस्तक में यह भी उल्लेख है की कल्कि अवतार घुड़सवारी में विशेषज्ञता हासिल करेगा और एक तलवारबाज़ होगा। इस संबंध में यह महत्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य और विचारणीय है| वह लिखता है कि टैंकों, मिसाइलों और बंदूकों के इस युग में तलवार तीर या भालों को धारण करने वाले कल्कि अवतार का इंतज़ार करना बुद्धिमानी पूर्ण नहीं होगा। वास्तविकता यह है की कल्कि अवतार स्पष्ट रूप से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की ओर इशारा करता है। एक प्रसिद्ध धार्मिक विद्वान तुलसीदास ने अपनी पुस्तक "राम चरित् मानस" में अपने निष्कर्ष के तौर पर कहा है कि "यहाँ मैं किसी का पक्ष नहीं लूँगा, मैं सिर्फ इतना कहूंगा जो वेदों और पुराणों में साधुओं और संतों ने कहा। यह अवतार बकरमी की सातवीं सदी में जन्म लेगा और अपने चार पुत्रों के साथ इस अंधकारमय संसार में प्रकट होगा। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म सन 628 (सातवीं सदी) में हुआ और ऊपर जिन चार बेटों का हवाला दिया गया है वे उनके चार ख़लीफ़ा है जिनके नाम हज़रत अबुबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली हैं (कल्कि पुराण अध्याय 2 श्लोक 5)

उपयुक्त संदर्भ को उद्घृत करते हुए एक सुविख्यात संस्कृत विद्वान और अनुसंधानकर्ता पंडित वैद प्रकाश कहते हैं कि ऐसा सिर्फ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के मामले में सच सिद्ध हुआ है।अतः गैर–मुस्लिमों, चाहे जो भी व्यक्ति हो, को किसी अन्य कल्कि अवतार का और अधिक इंतज़ार न करके इस्लाम को स्वीकार कर लेना चाहिए और अंतिम पैग़म्बर, जिसे करीब साढ़े चौदह सौ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर भेजा गया था, के मार्ग का अनुगमन करना चाहिए।

अर्थवेद कुन्तप सूक्ति अध्याय

यदि आप पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का इतिहास अर्थ की स्पष्टता और उसकी अबोधगम्य उद्देश्य सहित पढ़ेंगे तो उसका अर्थ निकल आएगा। अनुवाद किए गए एक संस्कृत पद्य को पढ़ें "हे लोगों" नराशंस की प्रशंसा की जाएगी। इसमें शब्द "नराशंस" का आशय है कि किसी एक की प्रशंसा वाला वाक्य यह प्रशंसा अनूठी है। कर्म का अर्थ मुहाजिर है जो की पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) थे। इसका आशय उस व्यक्ति से है जो शांति का प्रसार करता है। अरबी में शांति का अर्थ सलाम है। अरबी भाषा में प्रशंसा का अर्थ अहमद है, यह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का दूसरा नाम है। इस पद की कुरान के पद 14:24 और 25 के साथ खूबसूरती के साथ तुलना की जा सकती है, कुरान के पद में कहा गया है जिस प्रकार किसी पेड़ की जड़ें दृढ़ता से टिकी होती हैं और उस की डालियाँ और टहनियाँ स्वर्ग की ऊंचाई तक जाती हैं उनकी तरह कलमा–ए–तैयब है (अल्लाह के सिवा कोई पूजने योग्य नहीं)। अर्थवेद में मम्हा नामक महानतम व्यक्ति का ज़िक्र किया गया है, जिसका आशय है एक सम्मानित अथवा प्रसिद्ध पुरुष अर्थात पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)।

"तीर से लगा घाव भर जाता हैं। कुल्हाड़ी से काटा गया जंगल एक बार फिर से फलफूल सकता है। किन्तु कड़वे वचन बोलकर दिया गया घाव कभी नहीं भर पाता है"

महाभारत / Mahabharat

"A wound made by an arrow will cicatrize and heal; a forest felded by the axe will spring up again in new growth; but wound made by the tongue will never heal"

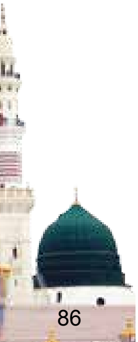

बौद्ध धर्म ग्रंथ

लगभग सभी बौद्ध धर्म ग्रन्थों में इसी प्रकार की भविष्यवाणी की गई है। ऐसा चक्रवर्ती सिहंद सुतांत (डी 76.3.) में कहा गया है "विश्व में मैत्रय (एक परोपकारी) एक सर्वोच्च, आचरण में चुतराई से युक्त, विश्व का ज्ञाता होगा। अपने धर्म का उपदेश देगा, अपने मूलस्थान पर यसावी हो, उसका यश और उसका उद्देश्य चरम पर होगा। वह धार्मिक जीवन उद्घोषित करेगा, निष्पाप और पूरी तरह से विशुद्ध होगा। वह ऐसा समाज स्थापित करेगा जिसके अनुयाइयों की संख्या लाखों में होगी जैसा की मैंने आज ऐसा समाज बनाया है जिसमें के कई भिक्षु अनुयायी है"। ये पूर्व के देश की एक पवित्र पुस्तक के खंड 35 के पृष्ट 225 में कहा गया है।

मैं केवल ऐसा बुद्ध नहीं हूँ जिसपर नेतृव का भार हैं और प्रजा निर्भर है। मेरे बाद एक अन्य बुद्ध मैत्रय होगा वह ऐसे ही गुणों का स्वामी होगा। मैं अब सैकड़ों व्यक्तियों का नेता हूँ वह हजारों व्यक्तियों का नेता होगा। आनंद ने यह भी पूछा कि हम किस प्रकार से उसे जान पायेंगें ? भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया उसे मैत्रय नाम से जाना जाएगा। संस्कृत शब्द "मैत्रय" अथवा पाली भाषा में उसके समक्ष शब्द "मैत्यों" का अर्थ प्यारा, सवेंदनशील, दयावान और परोपकारी है। इसका अर्थ दया और मित्रता, सहानुभूति आदि है।

धम्मपद मेत्ताय सुट्टा 151 के अनुसार वह व्यक्ति 1) पूरे मानवमात्र के लिए परोपकारी 2) शांति का दूत 3) विश्व में सबसे अधिक सफ़ल होगा ।

नैतिकता के शिक्षक के रूप में मैत्रय का

क) सच्चा

ख) स्वयं आदरणीय

ग) सज्जन

घ) प्राणियों का राजा

ड) कर्म और वचन में दूसरों के लिए अनुकरणीय होगा

महाभारत का कथन

वेद व्यास ने जिन्होंने भविष्य पुराण की रचना की थी। अच्छाई और बुराई के युद्ध और विजय का वर्णन करते हुए हिन्दू महाभारत की रचना की थी। महाभारत में कहा गया है कि कलयुग (जिसमें हम लोग रह रहे हैं) में मुहम्मद (सल्ल०) नाम का महान साधू जन्म लेगा। विश्व को एकेश्वरवाद की शिक्षा देगा। उसे वहां के लोगों द्वारा उसके निवास स्थान से भगाया जाएगा और संसार में उसके द्वारा शांति की स्थापना होगी। (इस्लाम का अर्थ है शांति)। महाभारत में यह कहा गया है कि बादलों से उसे छाया प्राप्त होगी इतिहास में यह भी दर्ज है कि सीरिया के ईसाई पादरी बुहैरा ने अपने बचपन में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में ऐसा ही आभास किया था तथा शताब्दियों तक के लिए उसे अंतिम पैग़म्बर के रूप में अभिचिहिनत किया था।

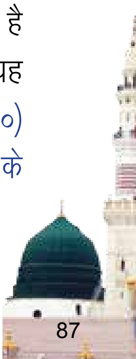

"आइये एक साथ आयें, बात करें, मन में सदभाव रखें, हमारी प्रार्थना एक हो ताकि हम एक जुट हो जाएं, और उद्देश्य भी एक हो, इच्छाएं और जरूरत भी एक हो। आईये अपने इरादो में भी एकजुटता दिखाएँ"

ऋग वेद / Rig Ved

"Let us come together, talk together, let our minds be in harmony, common be our prayer, common be our end, common be our purpose, common be our deliberations, common be our desires, united be our hearts, united be our intentions, perfect be the union among us"

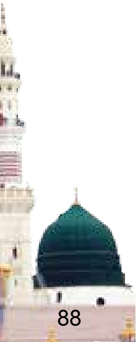

पवित्र क़ुरान और तौरा में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में क्या कहा गया हैः

सर्वशक्तिमान ईश्वर बुक ऑफ़ ड्यूटेरोनोमी के अध्याय 18 पद 18 में कहते हैंः

मैं उनके लिए उनके भाइयों में से तुम्हारी तरह एक पैग़म्बर पैदा करूँगा, वह मेरी वाणी को अपने शब्दों में कहेगा और वह उन्हें प्रत्येक बात बताएगा, मैं उस पर नियंत्रण रखूँगा। यदि कोई मेरे नाम पर पैग़म्बर द्वारा बोली गयी मेरी वाणी नहीं सुनेगा उसे मैं स्वयं दंड दूंगा। ईसाई कहते हैं कि यह भविष्यवाणी जीसस पर लागू होती है क्योंकि जीसस मोसेस की तरह थे। मोसेस एक यहूदी थे और जीसस भी यहूदी थे। मोसेस एक पैग़म्बर थे और जीसस भी पैग़म्बर थे।

यदि भविष्यवाणी पूरी होने के ये दो मानदंड हैं तो बाइबिल के सभी पैग़म्बर मोसेस के बाद आये। इस भविष्यवाणी को सिद्ध करते हैं क्योंकि वे सभी यहूदी पैग़म्बर थे ।

तथापि मुहम्मद (सल्ल०) अपेक्षाकृत मोसेस के अधिक समकक्ष हैः

1) दोनों का एक पिता था और एक माता थी जबकि जीसस बिना किसी पुरूष के आश्चर्यजनक ढंग से पैदा हुए थे।
2) दोनों ने शादियाँ की थी और उनके बच्चे हुए थे। बाइबिल के अनुसार जीसस ने न तो शादी की थी और न ही उनके कोई बच्चा था।
3) दोनों की प्राकृतिक मृत्यु हुई थी जबकि जीसस की मृत्यु नहीं हुई थी।
4) इन पदों से स्पष्ट है कि "उनके भाइयों में से तुम्हारे जैसा पैग़म्बर का क्या अर्थ है जो इस्माइल के समान महान होगा, चूँकि इस्माइल इसहाक के भाई हैं, जो इज़राइल के निवासियों का पितामह है। मोसेस के बाद इस्माइल की तरह जो महान पैग़म्बर हुए और जो कई तरह से उनकी तरह दिखते थे वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ही थे।
5) दोनों को उनके जीवनकाल में उनकी जनता ने पैग़म्बर के रूप में स्वीकार कर लिया था जबकि जीसस को उनकी जनता ने नकार दिया था। अध्याय 1 पद 11 में कहा गया हैः वह स्वयं सामने आये किन्तु उन्हें उनके ही लोगों ने स्वीकार नहीं किया।
6) दोनों ने अपने जनता के लिये नये कानून और विधान बनाए थे। बाइबिल के अनुसार जीसस ने कोई नया विधान नहीं बनाया था। "दि ड्यूटेरोनोमी में अध्याय 33 पद 2 में यह उद्घृत हैः यह क्रमशः मोसेस, जीसस और मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बरवाद से संबंधित है। सिनाय वह स्थान है जहाँ पैग़म्बर मोसेस ने ईश्वर से बात की और तोराह प्राप्त किया। सीर फिलिस्तीन में वह स्थान है जहाँ पैग़म्बर जीसस ने दैवीय रहस्योद्घाटन प्राप्त किया और ख़ुद को पैग़मबर मुहम्मद (सल्ल०) के समक्ष अंतिम बार प्रकट होकर मानवता के लिए स्वयं को स्पष्ट किया। वरण मक्का में पहाड़ों की श्रृंखला है। तोराह में इसको रेगिस्तान में ऐसे क्षेत्र के रूप में उल्लेख किया गया है जहाँ बीबी हाजरा को उनके पति हज़रत इब्राहिम ने छोड़ दिया था ताकि वह अपने बेटे इस्माइल के साथ शांति से रह सके। यहाँ पर ज़मज़म का कुआँ प्रकट हुआ। जैसा कि क़ुरान में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि हज़रत इब्राहिम ने अपनी बीवी हाजरा और इस्माइल को छोड़ दिया था। उस समय वरण की पहाड़ी श्रृंखला का यह स्थान रहने योग्य नहीं था।

"आप अपने लिए मूर्तियां न बनाएं, न तो एक नक्काशीदार छवि और न ही एक स्तंभ जिसके पीछे आप चलेंगे और न अपने देश में एक नक्काशीदार पत्थर का निर्माण, ताकि उसके आगे झुकना पड़े। क्योंकि मैं ही तुम्हारा परमेश्वर हूं"

लेविटीकस / Leviticus

"You shall not make idols for yourselves; neither a carved image nor a sacred pillar shall you rear up for yourselves; nor shall you set up an engraved stone in your land, to bow down to it, for I am the Lord your God"

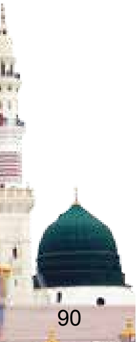

ईसा की पुस्तक के अध्याय 29 के पद 12 में यह उल्लेख हैः

और यह एक अज्ञात पुस्तक उन्हें दी गयी और कहा गया "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ इसे पढ़ो और उन्होंने उत्तर दिया कि मैं विद्वान नहीं हूँ। जब आकर जिब्राइल ने यह कहते हुए मुहम्मद (सल्ल०) को यह आदेश दिया "इक़रा" इसे पढ़ो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं विद्वान नहीं हूँ।

ईसा की पुस्तक के अध्याय 42 पद 1 वर्णन आया हैः -

"शांत रहो मेरे सेवक ! तुम पर मेरी कृपा बनी हुई है। मैंने तुमको चुना है, तुम्हारे अंदर मेरी आत्मा प्रकाशवान है।

मैंने उस पर अपनी आस्था कायम की है। वह अपनी जनता से न्याय करेगा। वह अपना बखान नहीं करेगा (चिल्लाएगा नहीं), न ही शोर मचाएगा, न ही गलियों में उसकी आवाज़ सुनाई देगी। वह न तो सरकंडे को आघात करेगा और न ही उसे धूम्रपान की प्यास लगेगी। सच्चाई यह है कि वह न्याय करेगा। पृथ्वी पर न्याय की स्थापना होने तक न तो वह निष्फल होगा और न ही वह हतोत्साही होगा और यह द्वीप उसके न्याय की प्रतीक्षा करेगा।

ईसा 42 बहुत पहले की गयी साधारण भविष्यवाणियों में से एक है, जिसे विद्वानो ने समय–समय पर उल्लेख किया है। मुहम्मद (सल्ल०) के काल से विद्वानों को यह विश्वास था कि इस भविष्यवाणियों को कोई और नहीं पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ही सही सिद्ध करेंगे। विद्वानों को विश्वास था कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को ही ईश्वर ने अपने दास के रूप में चुना है, जबकि ईसाइयों को यह विश्वास था कि जीसस भगवान थे, भगवान का अवतार थे न कि भगवान के सेवक। बुक ऑफ़ जेनेसिस के अध्याय 49 के पद 10 में उल्लेख हैः–

"शिलाह के आने तक सकैप्टर जद्दाह से नहीं जाएगा। और वह उसके लिए लोगों में सबसे ज्यादा वफादार होगा।

इस भविष्यवाणी को अक्सर पैग़म्बर के लिए भविष्यवाणी के रूप में क़ुरान की आयत 81:3 में पढ़ते हैं। डेविड बिनजामिन जैसे कुछ लेखक विश्वास करते हैं कि हिब्रू शब्द "शिलाह" वास्तव में हिब्रू शब्द "शहलाह" का बिगाड़ा हुआ रूप है। इसका अर्थ दूत/संदेशवाहक, भेजा गया व्यक्ति है अथवा हिब्रू शब्द "शिलूयाह" है जिसका अर्थ "ईश्वर का दूत है"। बुक ऑफ़ हबाकुक के अध्याय 03 पद 03 में कहा गया ईश्वर दक्षिण से उदय होगा। उसका प्रकाश स्वर्ग को ढक लेगा और पृथ्वी पर उसकी पूर्ण प्रशंसा होगी।

इस भविष्यवाणी को भी विद्वान, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में की गयी भविष्यवाणी के रूप में उद्घृत करते हैं। चूँकि जीसस और वरण पर्वत "दि मॉउंटेन ऑफ़ इस्माइल" में कोई संबंध नहीं है अतः विद्वान तर्क देते हैं कि इस पद में बताई गई पवित्र आत्मा मुहम्मद (सल्ल०) हैं। वे अक्सर फिलिस्तीन के दक्षिण से ईश्वर के उदय होने को अरबिया के पश्चिम तट पर इस्लाम की बग्गी के रूप में हवाला देते हैं।

"किसी के धर्म, रंग, जाति, लिंग, भाषा, दर्जा, धन–दौलत, जन्म, व्यवसाय, रोज़गार आदि पर विचार किए बग़ैर मानव–मात्र का सम्मान और आदर करें "

पवित्र कुरान

"Respect and honour all human being irrespective of their religion, color, race, gender, language, status, property, birth, profession / job and so on"

Introduction

What they say about Prophet Muhammad

What the holy Quran says about Muhammad (PBUH).The name Muhammad of Holy Prophet has appeared four times in the following Surahas of the holy Quran:
Al-Imran (3:144)
Al-Ahzaab (33:40)
Muhammad (47:2)
Al-Fatah (48:29)
The name ‘Ahmad’’of the Prophet is also mentioned in the holy Quran (Surah/ Al-Saff-61:6) In this way the holy Quran has completely glorified the name and the mission of the Prophet emphasizing his special genius and wisdom which can illuminate these dark and frightening modern times.
The Hindu scriptures provide precise descriptions of the coming of Prophet Muhammad (pbuh), his victories, and the mention of not only him and the one mighty God, he worshipped, but also the specific names of his sworn enemies. A.H. Vidyarthi, in his book “Muhammad in World Scriptures”, states that “the name of the Arab messenger (Ahmad) is written, as it is pronounced in Arabic in the “Samaveda” and in the books of the Brahmans,in the sixth and eighth passages of the second part, it states that, “Ahmad” received sharia from his God and it is filled with wisdom as it captured the light from Him like light is captured off the sun. Further Vidyarthi adds that even Kabah is mentioned in the book Atharva veda which calls it the house of angels. Similarly, according to Vidyarthi, the name of Muhammad is described in Zoaroastrian scripture i.e Zend Avesta and Buddhist scripture i.e Tripitika.
What Bible says about Prophet Muhammad (pbuh). The following authentic books related to Christianity make mention of Prophet Muhammad (pbuh):
Deuteronomy Chapter 18 Verse 18
Deuteronomy Chapter 33 Verse 2
The Book of Isaiah Chapter 29 Verse 12
The Book of Genesis Chapter 49 Verse 10
The Book of Habakkuk Chapter 03 Verse 03
It is crystal clear from these prophecies of the advent of Prophet Muhammad (pbuh) that he is the only Prophet who came from the lineage of Ismail after Jesus Christ. Since Ismail is the brother of Isaac who is the forefather of Moses people, the children of Israel. The only Prophet who came from the line of Ismail after Moses and bore resemblance to him in many ways was Prophet Muhammad (pbuh) and this historical fact cannot be denied by any devout devotee to Christianity.

"जब अल्लाह (ईश्वर) कुपित होते हैं तो तिनके सूख जाते हैं, फूल मुरझा कर टूट जाते हैं। मानव भी उसी तिनके के समान है"

पवित्र कुरान

"The grass dries up; the flowers wither, when the wind sent by the Lord blows on them. Surely Humanity is like a grass"

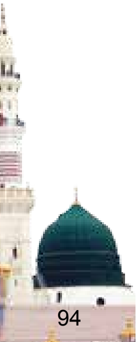

What

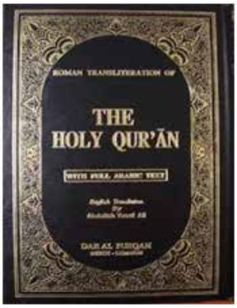

Says about Prophet Muhammad (pbuh)?

Al-Imran 3:144; Prophet Muhammad (pbuh) is no more than a messenger : many were the Messengers that passed away before him. If they died or were slain, would you then turn back on your heels? If any did turn back on his heels, not the least harm would he do to Allah; but Allah (on the other hand) would swiftly reward those who (served him) with gratitude.

Al-Ahzaab 33:40; Prophet Muhammad (pbuh) is not the father of any of your men, but (he is) the messenger of Allah, and the seal of the Prophets : and **Allah** has full knowledge of all things.

Muhammad 47:2; But those who believe in the (Revelation) sent down to Prophet Muhammad (pbuh) – for it is the truth from their Lord- He will remove from them their ills and improve condition.

Al-Fatah 48:29; Prophet Muhammad (pbuh) is the messenger of Allah; and those who are with him are strong against unbelievers, (but) compassionate amongst each other. You will see them bow and prostrate themselves (in prayer), seeking Grace from Allah and (his) Good Pleasure. On their faces are their marks (being) the traces of their prostration. This is their similitude in the Torah; and their similitude in the Gospel is; like a seed which sends forth its blade, then makes it strong; it then becomes thick, and it stands on its own stem, (filling) the showers with wonder and delight. As a result, it fills the unbelievers with rage at them. Allah has promised those among them who believe and do righteous deeds forgiveness, and a great Reward.

"हमारे मरने के बाद हमारा आकलन इस बात से नहीं होगा कि हमने कितनी डिग्री (शिक्षा) हासिल की या हमने कितना धन कमाया या हमने कितने महान काम किए, हमारा आकलन इस बात से किया जाएगा कि "मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन दिया, मेरे पास कपड़े नहीं थे, तुमने मेरा तन ढका, मेरे पास घर नहीं था तुमने मुझे आश्रय दिया"

मदर टेरेसा

"At the end of our lives, we will not be judged by how many degrees we have received, how much money we have earned or how many great things we have done but we will be judged by, "I was hungry and you gave me to eat. I was naked and you clothed me. I was homeless and you took me in"

Mother Teresa

What

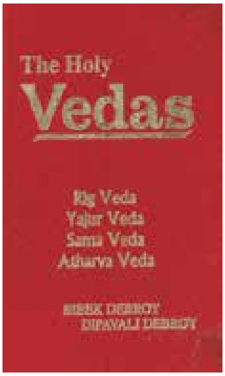

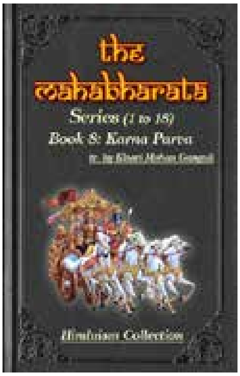

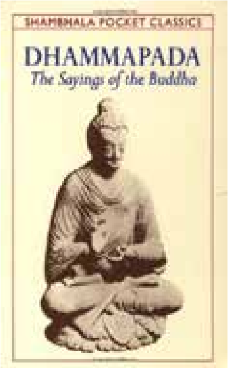

Scripture say about Prophet Muhammad (pbuh)?
Veda's "Kalki Puran" say:-

According to Kalkipuran the name of Kalki Autar will be "SARWANAMA". The meaning of "ANAMA" is the praised one and "SARW" mean most of all, so SARWANAMA means the most praised one and in Arabic "Prophet Muhammad" (pbuh) has the same meaning.

Kalki Puran mentioned that "Kalki Autar" will be the last messenger of Bhagwan or Allah to guide the whole world. Bhagwat Puran, Adhay 3 Shaloka 25).

According to a prophecy of Hinduism "Kalki Autar" will be born in an Island and that is the Arab territory which is known as "Jazeeratul Arab".

In the sacred book of Hindus the father's name of "Kalki Autar" is mentioned as "Vishnu Bhagat" and the mother's name as "Somanib". In Sanskrit, Vishnu stands for Allah and literal meaning of Bhagat is slave. In Arabic language it will mean Allah's slave. Somanib in Sanskrit means peace and tranquility which in Arabic is denoted by the word Amina. Whereas the last messenger Prophet Muhammad (pbuh) father's and mother's name were Hazrat Abdullah and Hazrat Aamina.

Further, it is written that Kalki Autar will have three brothers, named KAVI, SAMAT, PARAK. 'Kavi' means 'Wise' and in Arabic it means 'Aqeel'. 'Samat' which means 'Knowledge' is 'Jaafar' in Arabic. 'Parak' which means 'One who commands high position' is 'Ali' in Arabic. All the above three are cousins of Prophet Muhammad (pbuh).

The book also mentioned the Kalki Autar will marry the daughter of the King of Shambal Deep. Thus Prophet Muhammad (pbuh) married the wealthiest women of Arab, named Hazrat Khadija.

"स्वयं अपनी आत्मा से संघर्ष करना, स्वयं अपने अन्दर की बुराइयों से लड़ना ही श्रेष्ठतम जिहाद है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“The greatest Jihad is to battle your own soul, to fight the eveil within yourself"

In another book of Hindus, it is mentioned that Kalki Autar will live on olive and dates and he will be true to his words and honest. “This is true and established only in the case of Prophet Muhammad (pbuh).

As per Bhavishya Puran a bearded man without a tail like a lock on his head, eating meat of all herbivorous animals with exception of swine and giving call for prayers will revolutionize the life of the masses.

It is written in the books, which Hindus believe, that Bhagwan will provide Kalki Autar with the fastest of a horse and with the help of which he will ride around the world and the seven skies / heavens. The riding on ‘Buraq’ to Meraj by the Prophet Muhammad (pbuh) proves that.

Hindu’s book also mentioned that Kalki Autar will be an expert in horse riding and swordsmanship. In this regard this is very important and worth attention and consideration. He writes that in the age of modern weapons like Tanks, Missiles and Guns; it will be unwise to wait for ‘Kalki Autar’ bearing sword and arrow or spears. In reality, the mention of ‘Kalki Autar’ is clearly indicative of Prophet Muhammad (pbuh).

A famous religious scholar Tulsi Das presents his conclusion in his book ‘Ramayan’ “Here I will not favor anyone; I will say only that which Sadhu and sant have said in the light of Vedas and Puran.” He will be born in 7th century of Bakrami and with the light of his four sons, will appear in the stark darkness. Prophet Muhammad (pbuh) was born in 628 (7th Century) and the sons referred to are his four khalifas, their name being Hazrat Abu Bakr, Hazrat Umar, Hazrat Usman and Hazrat Ali. (Kalki Puran, Adhay 2 Shloka 5)

After quoting the above said reference ‘Pandit Vaid Prakash’, a well known Sanskrit scholar and researcher says that this holds true only in the case of Prophet Muhammad (pbuh).

Hence, all non-muslims wherever they may be, should wait no longer for any other ‘Kalki Autar’ and embrace Islam and follow the footsteps of the last Prophet who was sent in the world about fourteen and a half century ago.

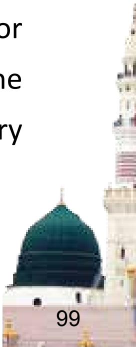

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"वास्तव में जो व्यक्ति जानबूझ कर अपने आप को मार डालेगा (आत्म हत्या करेगा) निश्चित तौर पर उसे नरक में झोंक दिया जाएगा जहाँ वह हमेशा के लिए पड़ा रहेगा "

"Indeed whoever (intentionally) kills himself, then certainly he will be punished in the fire of Hell, wherein he shall dwell forever"

Atharva Veda Chapter Kuntapa Sukt

With obscurity in meaning and its theme inscrutable it does make sense if you study the history of Prophet Muhammad (pbuh). One of Sanskrit verses translated read; 'O people! Narashans will be praised.' The word 'Narshans' means the praised one and sentence 'praised one (Narashans) will be praised' is peculiar. Kaurama means emigrant (Muhajir) that Prophet Muhammad (pbuh) was. It also means one who spreads peace-peace in Arabic is being Salam.

Arabic meaning of praise is Ahmad, the other name of Prophet Muhammad (pbuh). The verse compares beautifully with the Quranic verse 14:24 & 25 as Kalama a Tayyab (There is no God but Allah) as a tree firmly rooted on the earth with branches reaching to Heavens.

The Atharva Veda talks about a greatest named Mamaha that means; honored or famed i.e. Prophet Muhammad (pbuh) again.

The Buddhist Scriptures:

Almost all Buddhist books contain this prophecy. It is in Chakkavati Sinhnand Suttanta D.3,76: "There will arise in the world a Buddha named Maitreya (the benevolentone), a supreme one, endowed with wisdom in conduct, auspicious, knowing the universe. He will preach his religion, glorious in its origin, glorious at its climax, glorious at the goal. He will proclaim a religious life, perfect and thoroughly pure. He will keep up the society of monks numbering many thousands, even as now I keep up a society of monks numbering many hundreds." This is according to the sacred book of the east volume 35 pages 225.

I am not the only Buddha upon whom the leadership and order is dependent. After me another Buddha Maitreya of such and such virtue will come. I am now the leader of hundreds; he will be the leader of thousands. Ananda further said, "How shall we know him? The blessed one replied, He will be known as Maitreya." The Sanskrit word 'Maitreya' or its equivalent in Pali 'Metteyya' means loving, compassionate, merciful and benevolent. It means kindness and friendliness, sympathy, etc.

According to Dhammapada, Mattaya Sutta, 151 "The promised one will be 1) compassionate for the whole creation 2) A messenger of peace 3) The most successful in the world. The maitreya as preacher of moral will be: a) Truthful b) Self respecting 4) Gentle and noble 5) As a king to creatures 6) An example to others in deeds and in words.

”जो आदमी अपने गुस्से को रोकेगा हालांकि उसे अपना गुस्सा पूरा करने का अधिकार भी हो तो क़्यामत के दिन अल्लाह सब लोगों के सामने उसको बुलायेगा और फ़रमायेगा, जिस हूर को तू चाहे पसंद कर ले“

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"One who controls his anger would be rewarded on the day of resurrection by the Almighty Allah by letting him the right of selecting the fairy (hoor) of his choice"

The Mahabharata say:

The Hindu epic Mahabharata describing the struggle and triumph of good against evil was written by VedVayas who also authored Bhavishya Puran. Mahabharata says that in Kalyug (in which we now live) a great sage will appear with the name of Mahaamad. He would preach about unity of God, He will be driven away from his native place by his own folk and by him the world would get peace (Islam means peace).

Mahabharata further says that cloud will provide him shade. It is also recorded in the history that Buhaira, the Christian priest of Syria observed this sign with Prophet Muhammad (pbuh) in his boyhood and identified him as the last prophet anticipated for the millennia.

"व्यभिचारी, झूठा शासक और घमंडी, ऐसे तीन प्रकार के लोगों से अल्लाह निर्णय के दिन बात नहीं करेगा ना ही उनकी ओर देखेगा और उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"There are three people that Allah will not speak to on the day of rising purify nor look at and they will have a painful punishment: an old adulterer, a lying ruler and who is arrogant"

What

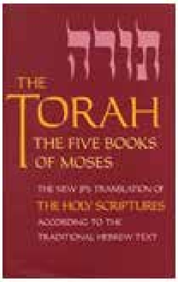

say about Prophet Muhammad (pbuh)?

Almighty God speaks to Moses in Book of Deuteronomy chapter 18 verse 18:

'I will raise up for them a Prophet like you from among their brothers; I will put My words in his mouth, and he will tell them everything I command him. If anyone does not listen to My words that the Prophet speaks in My Name, I will Myself call him to account'.

The Christians say that this prophecy refers to Jesus (pbuh) because Jesus (pbuh) was like Moses (pbuh). Moses (pbuh) was a Jew, as well as Jesus (pbuh) was a Jew. Moses (pbuh) was a Prophet and Jesus (pbuh) was also a Prophet.

If these two are the only criteria for this prophecy to be fulfilled, then all the Prophets of the Bible who came after Moses (pbuh) will fulfill this prophecy since all were Jews as well as prophets.

However, it is Prophet Muhammad (pbuh) who is more like Moses (pbuh):

i) Both had a father and a mother, while Jesus (pbuh) was born miraculously without any male intervention.

ii) Both were married and had children. Jesus (pbuh) according to the Bible did not marry nor had children.

iii) Both died natural deaths. Jesus (pbuh) has been raised up alive.

iv) It is clear from these verses that what is meant by 'a Prophet like you from among their brothers' is a Prophet who will come from the line of Ismail, since Ismail is the brother of Isaac, who is the forefather of Moses' people, the Children of Israel. The only Prophet who came from the line of Ismail after Moses and resembled him in many ways was Prophet Muhammad (pbuh).

v) Both were accepted as Prophets by their people in their lifetime but Jesus (pbuh) was rejected by his people. [John chapter 1 verse 11 states], "He came unto his own, but his own received him not."

"अरब वासियों से तीन कारणों से प्रेम करो–1) क्योंकि मैं अरब का वासी हूँ 2) पवित्र कुरान अरबी भाषा में लिखी गई है 3) और स्वर्ग के सौदागरों की भाषा अरबी होगी"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Love the Arabs for three reasons because (1) I am an Arab (2) The Holy Quran is in Arabic and (3) the tongue of the dwellers of paradise shall also be Arabic"

vi) Both brought new laws and new regulations for their people. Jesus (pbuh) according to the Bible did not bring any new laws. (Mathew 5:17-18).

It is mentioned in the book of Deuteronomy chapter 33 verse 2:

'The Lord came from Sinai and dawned over them from Seir; He shone forth from Mount Paran.'

This refers to the Prophet hood of Moses, Jesus and Muhammad respectively, upon them be peace. Sinai is the place where the Prophet Moses spoke to God and received the Torah, Seir is the place in Palestine, where the Prophet Jesus received Divine Revelation and Paran is where God manifested Himself to mankind for the last time through His Revelation to the Prophet Muhammad (pbuh). Paran is a mountain range in Makkah. It is mentioned in the Torah (Genesis, 21.19-21) as the area in the desert where Hagar (Bibi Hajra) was left by her husband Ibrahim, upon him be peace, to live with her son, Ismail. The well of Zamzam appeared in it. As is stated explicitly in the Qur'an (14.35-7), Ibrahim left Bibi Hajra and Ismail in the valley of Makkah, which was then an uninhabited place within the mountain ranges of Paran.

It is mentioned in the book of Isaiah chapter 29 verse 12:

"And the book is delivered to him that is not learned, saying, Read this, I pray thee: and he sayeth, I am not learned."

When Archangel Jibril commanded Muhammad (pbuh) by saying Iqra - "Read", he replied, "I am not learned".

It is mentioned in the book of Isaiah chapter 42 verse 1:

"Behold! My Servant, whom I uphold; My Elect One, in whom My soul delights! I have put My Spirit upon him; he will bring forth justice to the Gentiles. He shall not cry out, nor raise his voice, nor cause his voice to be heard in the street. A bruised reed shall he not break, and smoking flax shall he not quench. In truth he shall bring forth justice. He shall not fail nor be discouraged, till he has established justice in the earth; and the islands shall wait for his law".

Isaiah 42 is among the earliest and the most common prophecies referred to by the scholars. Since the time of Muhammad (pbuh), scholars believed that it was fulfilled by no one other than him. Muhammad (pbuh) is believed by scholars to be the Chosen Servant of God and his Light, while Christians believe that Jesus was God, begotten of God, not the servant of God.

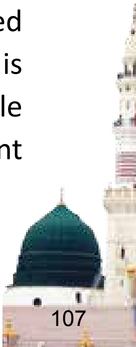

"इस प्रकार के परोक्ष शत्रुओं के विरुद्ध अपने जिहाद की घोषणा करो– अहम, घमंड, झूठा अभिमान, स्वार्थ परकता, लालच, कामुकता, हिंसा, क्रोध, झूठ, धोखा देना, अफ़वाह फैलाना और अपशब्द कहना। यदि तुम इन पर विजय प्राप्त कर लो और इन्हें नष्ट कर दो तो तुम किसी भी शक्तिशाली शत्रु पर सफ़लता प्राप्त कर लोगे"

इमाम अल ग़ज़ाली / Imam Al Ghazali

"Declare your Jihad on thirteen invisible enemies – egoism, arrogance, conceit, selfishness, greed, lust, intolerance, anger, lying, cheating, gossiping and slandering. If you can overcome and destroy them you will be successful against any enemy.

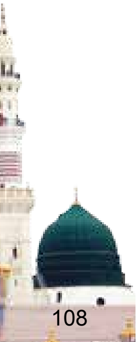

It is mentioned in the book of Genesis chapter 49 verse 10:

“The scepter shall not depart from Judah, till Shiloh comes; And to him shall be the obedience of the people”.

This prophecy is often read in the light of Qur’an 3:81 as a prophecy of Muhammad. Some writers, like David Benjamin, believe that the Hebrew word Shiloh is actually a distortion of the Hebrew word “Shaluh” which means “Apostle/Messenger/One to be sent” or of the Hebrew word “Shiluah” which means “Apostle of God”.

It is mentioned in the book of Habakkuk chapter 03 verse 03:

God will come from the south, and the holy one from mount Pharan: His glory covers the heavens, and the earth is full of his praise.

This prophecy is also commonly cited by scholars as a prophecy about Prophet Muhammad (pbuh). Since there is no connection between Jesus and Mount Paran “the Mount of Ishmael”, scholars argue that the “holy one” in this verse is Muhammad (pbuh). They often interpret the Coming of God from the south of Palestine as a reference to the cradle of Islam in the western coast of Arabia.

"सबसे उत्कृष्ट जिहाद वो है जब एक अत्याचारी के सामने सच बोला जाए"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The most excellent jihad is when one speak the truth in the face of tyranny"

अध्याय–3
Chapter-III

जिहाद की पहेली
Jigsaw of Jihad

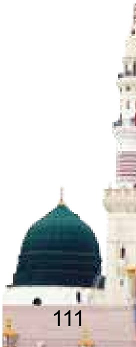

"मेरा धर्म, सच्चा, प्यारा और अल्लाह (ईश्वर) की सेवा है। दुनिया में आने वाले हर धर्म ने प्यार और भाईचारे का संदेश दिया है जो लोग उनके साथियों के कल्याण के लिए उदासीन होते हैं, जिनके दिल प्यार से खाली हैं, वे धर्म का अर्थ नहीं जानते"

खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान

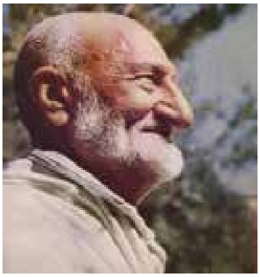

"My religion is truth, love and service to God and humanity. Every religion that has come into the world has brought the message of love and brotherhood. Those who are indifferent to the welfare of their fellowmen, whose hearts are empty of love, they do not know the meaning of religion"

Khan Abdul Gaffar Khan

प्रस्तावना

जिहाद की पहेली

लगभग सभी गैर मुस्लिम और कुछ सीमा तक मुस्लिम भी जिहाद का वास्तविक अर्थ नहीं जानते हैं। उनके लिए जिहाद एक हाथ में बंदूक लिए और दूसरे हाथ में पवित्र कुरान लिए दाढ़ी वाले ऐसे व्यक्ति की छवि पैदा करता है जो किसी विमान का अपहरण करता है या किसी भवन को बम से उड़ा देता है । ऐसे व्यक्ति जिहाद को आतंकवाद और धर्म के लिए पवित्र युद्ध से जोड़ देते है। इस्लाम आतंकवाद और मानव बम जो कि मानवता के विरुद्ध है, की भत्सर्ना करता है । मानव बम जिहाद का हिस्सा किस प्रकार से हो सकता है जब इस्लाम में कड़ाई से इसकी मनाही है क्योंकि यह मुस्लिमों के लिए उसी तरह "हराम" है जैसे सूअर का मांस या शराब ।

वास्तव में जैसा कि पवित्र कुरान और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की शिक्षा में उल्लेख है, जिहाद का आशय बेहतर मानव और मुस्लिम बनने के लिए आतंरिक और वाहय प्रयास है जो लोगों को इस्लाम पर विश्वास के बारे में लोगों को बताने के लिए कार्य करता है।

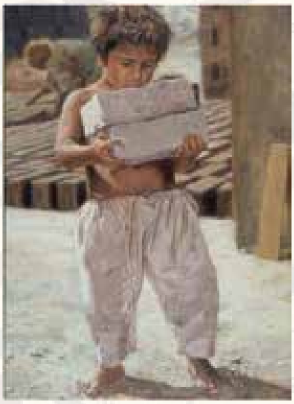

"यह भी अल्लाह की नजर में सबसे बड़ा जिहाद् है"

आतंकवाद (पापों में सबसे बड़ा पाप)

"उन व्यक्तियों का कोई भविष्य नहीं हो सकता जो इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की झूठी निंदा करते हैं" बराक हुसैन ओबामा

"The future must not belong to those who slander the prophet of Islam" Barack Hussein Obama

जिहाद का संक्षिप्त वर्णन

जिहाद शायद ऐसा शब्द है जिसे अत्यन्त गलत समझा गया है, उसकी गलत व्याख्या की गयी है और गलत अनुवाद किया गया है। अरबी भाषा में इसका सरल अर्थ है कि किसी भी रूप में किए जाने वाले अन्याय अथवा उनकी प्रथाओं को कुचलने और उन से संघर्ष करने के लिए किये गए प्रयासों से है जो सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, भावनात्मक हितों और मानवता के प्रतिकूल हों। "निश्चित तौर पर जिहाद का आशय अल्लाह की किसी भी रचना के विरुद्ध किसी भी प्रकार के बल प्रयोग अथवा हिंसा करने से नहीं है।" यदि किसी व्यक्ति को वर्तमान दशा में जिहाद का वास्तविक अर्थ समझना हो तो उसे सर सैयद अहमद खान द्वारा शिक्षा के विकास के लिए किए गए प्रयासों, महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस द्वारा अपनी मातृभूमि भारत की आज़ादी के लिए किए गए प्रयासों, नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर द्वारा रंगभेद के विरुद्ध किए गए संघर्ष में उनकी भूमिका, फ्रांस की क्रांति–अत्याचारी राजा लुइस के विरुद्ध वहाँ की आम जनता के संघर्ष की कहानी, आयातुल्ला खुमैनी द्वारा अपने देशवासियों की सोच में क्रांतिकारी बदलाव लाने और उन्हें यह अहसास कराने के लिए किए गए प्रयासों कि वे एक महान इस्लामिक देश के निवासी थे और महाभारत में श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश, रावण जैसी दुष्ट आत्मा को हराने के लिए श्री रामचन्द्र जी द्वारा किए गए कार्य को याद करना चाहिए। जिहाद वह शब्द नहीं है जैसा कि मीडिया में दर्शाया जाता है बल्कि यह वह शब्द है जिसके बारे में पवित्र कुरान में यह कहा गया है "प्रयास करना, संघर्ष करना, कठिन दौर में मुस्कराना, कठिनाइयों के समय धैर्य बनाए रखना भी जिहाद है, अच्छे कार्यों के लिए किया गया संघर्ष भी जिहाद है, वृद्ध हो गए माता–पिता की स्नेह पूर्ण देखभाल करना भी जिहाद है।" यह अत्यन्य दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिहाद के बारे में जानकारी की कमी के कारण मानवता के इन संरक्षकों को जिहादियों का दर्जा प्रदान नहीं किया गया हैं। ऐसे व्यक्ति न्यायपूर्ण नैतिक सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए संघर्ष करते है। यह उपहास का विषय है कि हम यह दर्जा उन आतंकवादियों और आत्मघाती मानव बम को प्रदान करते हैं जो हज़ारों निर्दोष मानवों की हत्या कर डालते हैं।

दि मेरियम वेबस्टर डिक्शनरी में 'जिहाद' शब्द की परिभाषा इस प्रकार की गई है– यह इस्लाम द्वारा धार्मिक कर्तव्य के रूप में चलाया गया धार्मिक युद्ध है साथ ही यह विशेष रूप से धार्मिक अनुशासन को शामिल करते हुए इस्लाम के प्रति आस्था का व्यक्तिगत संघर्ष है।

दि ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड डिक्शनरी में इसे इस्लाम को ख़ारिज करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध मुस्लिमों द्वारा लड़े गए संघर्ष के रूप में परिभाषित किया गया है।

फिर भी ये परिभाषाएं जिहाद शब्द की आधी अधूरी और विपरीत परिभाषाएं है। किन्तु जिहाद को परिभाषित करने और इसके बारे में सब कुछ बताने से पूर्व हमें जिहाद शब्द से जुड़ी आम गलत फहमीयों को दूर करना होगा।

"एक व्यक्ति के हिस्से का भोजन दो व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होता है, दो व्यक्तियों के हिस्से का भोजन चार व्यक्तियों के लिए पार्यप्त होता है और चार व्यक्तियों के हिस्से का भोजन आठ व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The food of one person is sufficient for two, the food of two is sufficient for four, and the food for four is sufficient for eight"

– जिहाद एक पवित्र युद्ध नहीं हैं।
– जिहाद किसी पर थोपा नहीं जा सकता है।
– निर्दोष व्यक्तियों को मारना जिहाद नहीं है।
– क्रोध और घृणा में आकर लड़ना जिहाद नहीं है।
– सिर्फ इस लिए किसी को मार डालना कि वह मुस्लिम नहीं है– जिहाद नहीं है।

जिहाद का आशय अंधाधुंध मार डालने या हिंसा करने से नहीं है। जिहाद शब्द अरबी भाषा के 'जीहादा' से है जिसका सरल अर्थ संघर्ष करना अथवा प्रयास करना है। जिहाद अल्लाह के बताये गये रास्ते पर चलने अथवा अल्लाह के लिए संघर्ष करना है।

इस्लाम के सिद्धांतों में इसे काफी अहम दर्जा प्राप्त है और यह प्रत्येक मुस्लिम के मौलिक कर्तव्यों में से एक है। इसका इस्लामिक सिद्धांतों में धार्मिक युद्ध अथवा इसके शब्दों से कुछ भी लेना देना नहीं है। मध्य काल के ईसाई समाज सुधारकों ने पवित्र युद्ध की भूमिका तैयार की किन्तु युद्ध में कुछ भी पवित्र नहीं होता सिवाय हत्या करने और हिंसा करने के।

वयुत्पतिपरक दृष्टि (वह उद्गम स्थान जहाँ से मूल रूप में शब्द निकला हो) से अरबी भाषा का शब्द जिहाद मूल शब्द "जुहाद" से लिया गया है, इस का अर्थ है "प्रयास करना" इससे मिलता जुलता एक अन्य शब्द "इजतिहाद" है जिसका अर्थ मेहनत करना या कर्मठता पूर्वक कार्यरत होना है। यह किसी उद्देश्य को हासिल करने के लिए किसी प्रकार के संघर्ष और प्रतिरोध को शामिल करते हुए अधिकतम प्रयास करने की प्रक्रिया है यद्धपि इस शब्द का अर्थ किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वच्छंद प्रकृति से किए गए प्रयास से है। अतः जिहाद का जातिगत शब्द के रूप में प्रयोग उस समय भी किया जा सकता है जब उससे प्राप्त ध्येय इस्लामिक न हो, अर्थात गैर–इस्लामिक दशा में जिहाद को सामान्तया निम्नलिखित पांच प्रकारों का समझा जाता है:

1 जिहाद बिल–क़ल्ब/नफ़्स (आत्मा का जिहाद)

इसका संबंध बुरी आत्मा से संघर्ष करने और इस प्रयास में बुराई पर विजय प्राप्त करने से है। इस प्रकार के जिहाद को सबसे महान जिहाद माना जाता है।

2 जिहाद अल–कलम (कलम से जिहाद)

कलम से जिहाद में इस्लाम के प्रसार में मदद करने और इस्लाम की रक्षा करने के लिए इस्लाम का ज्ञानपूर्वक खोज और इस्लाम के बारे में भ्रांतियो को दूर करने के लिए लिखने का काम करना शामिल है। इसके उदाहरण में कुरान से वैज्ञानिक गवाहों, साहित्य और गणितीय चमत्कारों पर अनुसंधान करना शामिल है।

3 जिहाद बिल–लिसान (कथन द्वारा जिहाद)

इसका संबंध सच बोलने और इस्लाम शब्द का प्रचार करने से है। यह "दावा" अर्थात इस्लाम को आमंत्रित करने की ओर बढ़ाता है।

"मैं अपने एक हाथ में शांति का प्रतीक, जैतून की टहनी, और दूसरे हाथ में एक योद्धा की पहचान, बन्दूक लेकर आया हूँ। मेरे हाथ से जैतून की टहनी न गिरने दें"

यासीर अराफात

"I come bearing an olive branch in one hand, and the freedom fighter's gun in the other. Do not let the olive branch fall from my hand"

Yaseer Arafat

4 जिहाद बिल–यद (कर्म द्वारा जिहाद)

इसका संबंध सही कार्य करने और अन्याय और गलत कर्तव्यों से संघर्ष करने से है इसके उदहारण में गरीबों को दान देना और हज अथवा उमरा कराना शामिल है।

5 जिहाद बिस–सैफ़ (तलवार से जिहाद)

इसका संबंध अल्लाह के रास्ते से है। केवल दो ही ऐसी ताकतवर संघर्ष की स्थितियाँ होती है जब तलवार से जिहाद करने की अनुमति दी जाती है।

a) स्वयं की रक्षा के लिए।

b) बुराई और अनुचित कार्य के विरुद्ध लड़ाई।

जिहाद के नाम पर लड़ने के बारे में कई नियम और सीमाएं हैं। उदहारण के लिए नागरिकों को कोई हानि नहीं पहुँचनी चाहिए, पेड़ों को नहीं काटा जाना चाहिए, आत्म समर्पण करने वाले शत्रु सैनिकों को आश्रय प्रदान करना आदि।

“और यदि कोई तुम पर अविश्वास करने वाला तुमसे संरक्षण मांगे तो उसे संरक्षण प्रदान करने ताकि वह अल्लाह की वाणी को सुन सके और तब उसे उस जगह पहुंचाओं जहाँ पर वह स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सके, ऐसा इसलिए क्योंकि ऐसे लोग कुछ नहीं जानते हैं (क़ुरान, सूरहः– अल–तोबा, आयत–6) जो कुछ प्रचारित किया गया है उससे यही पता चलता है तलवार से जिहाद को बड़े पैमाने पर गलत अर्थ में लिया गया है। सच्चाई बिल्कुल उससे अलग है। इसको समझाने के लिए संक्षिप्त इतिहास मददगार साबित होगा।

मक्का में इस्लाम के प्रकाश में आने के शुरआती वर्षों में अल्लाह ने मुस्लिमों को युद्ध करने की अनुमति प्रदान नहीं की थी। इसलिए मुस्लिमों को मक्का में गैर–मुस्लिमों ने नैतिक व शारीरिक तौर पर यातनायें दीं। तब जिहाद के संबंध में पहली बार आत्म–रक्षा करने के लिए अनुमति दी गई। ”और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने वाले व्यक्तियों से युद्ध करो किन्तु अपनी सीमा का उल्लंघन कर पाप न करो। यह सत्य है कि अल्लाह अपनी सीमा का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को पसंद नहीं करता है (क़ुरान, सूरहः–अल–बक़रह, आयत –190)

ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिमी देशों ने आतंकवाद के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ रखा है किन्तु क्या ऐसे देश आतंकवाद के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ने वाले प्रथम देश हैं? मुस्लिमों ने जिहाद बीस सैफ के नाम पर चौदहवीं शताब्दी पूर्व आंतकवाद के विरुद्ध पहले से ही एक युद्ध की घोषणा की हुई है।

जिहाद पवित्र कुरान में 164 और हदीस के मानक संग्रह में 199 बार लिखा हुआ है। इन सभी में यह माना गया है कि जिहाद का अर्थ कल्याण से है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि श्रेष्ट जिहाद अत्याचारी शासक के विरुद्ध न्याय की तलवार उठाना है अर्थात युद्ध करना है। यह भी कहा गया है कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने मुस्लिम महिलाओं के लिए हज करना उत्तम किस्म का जिहाद माना है। एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा जिस पर गौर किया जाना चाहिए और जिसे समझा जाना।

"जब कोई इस्लामिक शासन विधि, इस्लामी राजनीति, इस्लामी समाज और इस्लामी अर्थव्यस्था का थोड़ा भी अध्ययन करता है या उस पर ध्यान देता है तो उसे यह मालूम हो जाता है कि इस्लाम एक अति प्रजा सम्बन्धी धर्म है। जो कोई भी यह कहता है कि धर्म और राजनीति अलग है तो वह मुर्ख है, उसे इस्लाम तथा राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं"

आयतुल्लाह खोमेनी

"When anyone studies a little or pays a little attention to the rules of Islamic government, Islamic politics, Islamic society and Islamic economy he will realize that Islam is a very political religion. Anyone who will say that religion is separate from politics is a fool; he does not know Islam or politics"

Ayetullah Khomeini

चाहिए वह यह है कि पवित्र कुरान में निम्नलिखित दो कथनों में जिहाद शब्द को उस कई व्युत्पत्तिपरक अर्थ के रूप में प्रयोग किया गया है–

"और हमने इन्सान को उसके अपने माता–पिता के मामले में ताकीद की है कि उसकी माँ ने कमज़ोर पर कमज़ोर होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे कि "मेरे प्रति शुक्रगुज़ार हो और अपने माता–पिता के प्रति भी। अंततः मेरी ओर आना है" कुरान (31:14)

"किन्तु यदि वे तुझपर दबाव डालें कि तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीक़े से रहना। किन्तु पालन उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू (consentrate) हो। फिर तुम सबको मेरी ही ओर लौटना है; फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे" कुरान (31:15)

यह सिद्धांत इस्लाम के उस संदेश के खिलाफ है जो अल्लाह के एक होने की शिक्षा प्रदान करता है। यह कथन पहले से उल्लिखित उस सच की पुष्टि करता है कि जिहाद आवश्यक रूप से हिंसा का काम नहीं है, यह भी उल्लेखनीय है कि उपयुक्त कथन मुस्लिमों को अपने माता पिता के प्रति दयालु और उनकी परवाह करने वाला बनने का आदेश देता है किन्तु उन्हें कुछ बहुविवादी विश्वास कई पक्ष में एकेश्वरवादी इस्लामिक विचारधारा को छोड़ने के लिए उनके माता पिता द्वारा बाध्य करने के किसी प्रयास का विरोध करता है। उपयुक्त कथनों से जिहाद शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ के इस्तेमाल के अलावा पवित्र कुरान में अन्य 28 कथनों में जिहाद का विशिष्टि अर्थ में भी प्रयोग किया गया है। इस मामले में पदबंध "फी सबीलिल्लाह" जिसका आशय "अल्लाह के मार्ग में" या "अल्लाह की ओर से" स्पष्ट रूप से अथवा दशा द्वारा निहितार्थ मार्ग से जिहाद अथवा इसके किसी यौगिक पद का अनुगमन करो।

जो व्यक्ति जिहाद शब्द का कुरान में दिये गये अर्थ से अलग कोई अर्थ निकालता है और यह समझता है कि ये सिर्फ पूर्ण रूप से सशस्त्र संघर्ष है तो वे कुछ बातों में से एक विशेष महत्वपूर्ण तथ्य पर गौर नहीं कर पाते हैं वह यह है कि पवित्र कुरान में अधिकांश कथनों में शत्रु से युद्ध करने के बारे में कहा गया है।

इसमें एक कुरान शब्द "क़त्ल" का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ युद्ध करने से है। नीचे कुछ उदारहण दिए गए है:–

"और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जाननेवाले है। कुरान (2:244)

"तो जो लोग आख़िरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में लड़ें। जो अल्लाह के मार्ग में लड़ेगा, चाहे वह मारा जाए या विजयी रहे, उसे हम जल्द ही बड़ा बदला प्रदान करेंगे। कुरान (4:74)

"अतः अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो–तुम पर तो बस तुम्हरी अपनी ही जिम्मेदारी है–और ईमानवालों की कमज़ोरियों को दूर करो और उन्हें उबारो। इसकी बहुत संभावना है कि अल्लाह इनकार करनेवालों के ज़ोर पर रोक लगा दे। अल्लाह बड़ा ताक़तवाला और कठोर दण्ड देने वाला है। कुरान (4:84)

"काबा के पत्थर को पत्थर से नष्ट करने का गुनाह किसी एक बेगुनाह को मारने से हुई बुराई से कम बुराई है"

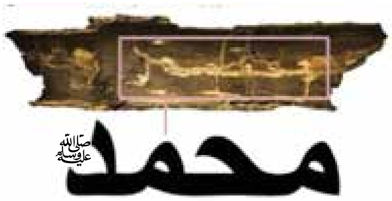

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Destroying Kaabah stone by stone, is less evil than killing a innocent person"

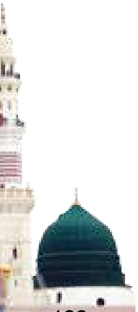

शब्द जिहाद वास्तव में अल्लाह के कई मार्ग में प्रयास करने की सामान्य बातों का अपेक्षाकृत अधिक हवाला देता है जिसमें शत्रु से युद्ध करना या सशस्त्र संघर्ष केवल एक पहलू 31:14 है कुरान की शब्दावली में 'जिहाद' और 'क़िताल' को बराबर का दर्जा देना गलत है क्योंकि ऐसा करना अपेक्षाकृत किसी ख़ास अवधारणा के व्यापक अर्थ को कम करने के समान है। इस प्रकार अल्लाह के मार्ग में किताल शब्द सशस्त्र जिहाद का केवल एक पहलू मात्र है। तथापि यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है और जिहाद के मंच की एक नई ऊँचाई है इसलिए अल्लाह के मार्ग में किताल शब्द और सशस्त्र जिहाद का प्रयोग परस्पर परिवर्तनीय है। सशस्त्र जिहाद के दो रूपों में से एक है और इसका रूप शांतिपर्ण जिहाद है। इस प्रकार जिहाद कुरान की एक अवधारणा है किन्तु इस अवधारणा को समझने के लिए शायद ही कुरान का सहारा लिया गया हो। पवित्र कुरान मुस्लिमों को आदेश देता है कि वे इस संदेश की शिक्षा देने का दायित्व निभाये और इसकी शिक्षा का प्रसार करें। तथापि **जिहाद शब्द के बारे में बड़े पैमाने पर फ़ैली गलत फहमीयां न केवल गैर मुस्लिमों द्वारा बल्कि मुस्लिमों द्वारा भी पवित्र कुरान की जानकारी में लापरवाही (थोड़ा पढ़ लिया, आगे बढ़ लिया) के कारण है, जहाँ दुर्भाग्यवश इसके गलत अर्थ का प्रचार करने में कुछ मुस्लिम संगठनों का बड़ा हाथ रहा है कि जिहाद हिंसा ही है। यह दुखद किन्तु ऐसा सच है जिसे नकारा नहीं जा सकता है कि अधिकांश मुस्लिम इस्लामिक परम्पराओं और अवधारणाओं को छोड़कर जैसा कि जिहाद के बारे में सुनी सुनाई स्रोतो से शिक्षा प्राप्त कर चर्चा करते हैं।** जिहाद शब्द का प्रयोग पुराने ज़माने से आज तक तक धीरे–धीरे विकसित हुआ है। इस शब्द का पुराना प्रयोग और अर्थ मुख्य रूप से सेना के अर्थ में है। इस्लामिक धर्मशास्त्र की पुरानी किताबों में अक्सर एक धारा है जिसे जिहाद प्रतीक कहा गया है इसमें विस्तार पूर्वक युद्ध करने से संबंधित नियम है, इन नियमों में योद्धाओं से अलग व्यक्तियों, महिलाओं, बच्चों (आवासीय इलाकों को भी) के साथ किये जाने वाले व्यवहार को शामिल किया गया है। इस प्रकार जिहाद की अवधारणा की संक्षिप्त व्याख्या यह दर्शाती है कि जिहाद के अन्य पहलुओं, जिनके बारे में पहले की धाराओं में पहले ही चर्चा की गई है, अलग रखकर 'युद्ध' पर ज़ोर दिया गया है। मुस्लिम कहते हैं कि सच्चे जिहाद का उद्देश्य इस्लाम, ईमान और अहसान (न्याय पूर्ण रहन सहन) में समानता को प्राप्त करना है।

आधुनिक काल में "न्यायपूर्ण नैतिक सामाजिक व्यवस्था" को स्थापित करना भी जिहाद है। सत्य है कि वास्तव में जिहाद उस "छुरी" के समान ऐसा औज़ार है जो एक सर्जन के हाथ में है जो जिंदगी देता है और यदि यह किसी अपराधी के हाथ लग जाये तो वह हमसे सभी चीज़ छीन लेता है यहाँ तक कि जीवन को भी। अतः कृपया यह सम्मान और उच्च स्थान आतंकवादियों को प्रदान न करें।

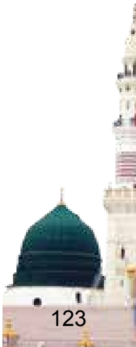

"एक वैश्या को अल्लाह ने इसलिए माफ़ कर दिया क्योंकि एक बार रास्ते से गुजरते हुए एक कुएँ के निकट एक हांफते हुए कुत्ते को देखा जो प्यास से मरने ही वाला था उसने अपने जूते उतारे और उन्हें हैडकवर के साथ बाँध कर कुएँ से कुछ पानी बाहर निकाला और उस कुत्ते को पिलाया। अतः अल्लाह ने उसे इस नेकी के काम के लिए माफ़ कर दिया"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The prostitute was forgiven by Allah, because, passing by a panting dog near a well and seeing that the dog was about to die of thirst, she took off her shoe, and tying it with her head – cover she drew out some water for it. So, Allah forgave her because of that"

Introduction

Jigsaw of Jihad

Almost all the non – Muslims and to some extent some of the Muslims also do not know what jihad actually means. To them jihad conjures up images of bearded men holding gun in one hand and the holy Quran in another to hijack a plane or blow up a building. They associate jihad with terrorism and holy war for the sake of religions. The fact is that there is nothing holy about war in Islam which is totally against any from of violence. Islam condemns terrorism and suicide bombing, a crime against humanity. How can suicide bombing be an element of jihad when it is strictly forbidden in Islam as it is 'Haram' for a Muslim just like a 'swine' or 'wine'.

In fact Jihad, as described in holy Quran and teaching of the Prophet Muhammad (pbuh) does not mean fighting injustice, opposing aggression only. It basically means an internal as well as external effort to be a good human being and Muslim, working to inform people about the faith of Islam.

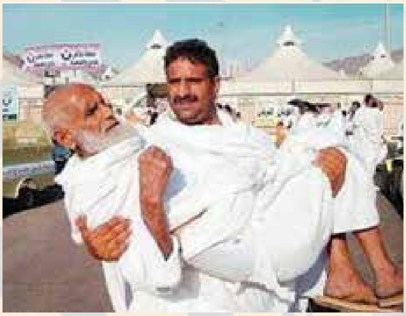

This is also Jihad (The most endeared to Allah)

Terrorism (The basest of all the sins)

"किसी के धर्म, रंग, जाति, लिंग, भाषा, दर्जा, धन–दौलत, जन्म, व्यवसाय, रोजगार आदि पर विचार किए बगैर मानव–मात्र का सम्मान और आदर करें"

The Quran

पवित्र कुरान

"Respect and honour all human being irrespective of their religion, color, race, gender, language, status, property, birth, profession/job and so on"

Jigsaw of Jihad

Jihad, perhaps, is the most misunderstood misinterpreted and mistranslated word. In Arabic it simply means to make efforts to crush and fight against any form of injustice or practice detrimental to the interests social, spiritual, political, emotional, and humanity. It certainly does not means any force or violence against any creation of the Almighty.

If one wishes to understand the real meaning of Jihad in the present context one should recall the efforts of Sir Syed Ahmad Khan for promoting education, the efforts of Mahatma Gandhi & Subash Chandra Bose in getting freedom for our motherland India, the roles of Nelson Mandela & Martin Luther King Jr. in their struggle against the apartheid, French revolution- the struggle of general public against their tyrant ruler Louis xiv, Ayatollah Khomeni for revolutionizing the thinking of his countrymen and making them realize that they are a great Islamic Nation and the sermon of Shri Krishna to Arjun in Mahabharata , the sacrifice of Shri Ramchandra to defeat the evil designs of Ravana. Jihad is not what the world media shows but what the Holy Quran says- to strive and to struggle! Smiling in tough moments is Jihad, Keeping patience in hard times is Jihad, struggling for good deed is Jihad, Taking care of old parents in a loving way is Jihad.

It is very unfortunate that because of our ignorance regarding Jihad, these benefactors of humanity have not been granted the status of Jihadist. They all struggled to establish just moral social order. It is an irony that we grant this status to those terrorists and suicide bombers who kill hundreds of innocent human being.

The Merriam Webster dictionary defines jihad as “a holy war waged by Islam as a religious duty, also a personal struggle in devotion to Islam, especially involving spiritual discipline.”

The Oxford advanced dictionary defines it as a “holy war fought by Muslims against those who reject Islam.”

These however, are incomplete and regressive definitions of the word jihad. But before trying to define “Jihad” and what it is all about let us first remove the common misconceptions associated with jihad-

- Jihad is not a Holy war
- Jihad is not blowing up oneself
- It is not killing innocent people
- It is not fighting out of anger and hatred
- It is not killing others just because they are not Muslim

”सूर्य के समान प्रकाशवान और दयालु बनो। रात की तरह दूसरों की गलतियों को ढकों। उदारता के लिए बहता पानी बनो। ग़ुस्सा और क्रोध के लिए काल के समान बनो। विनयशीलता धारण करने के लिए पृथ्वी के समान बनो जैसे हो वैसा दिखना चाहिए। जैसा दिखाई देते हो वैसा ही बनो“

अज्ञात / Anonymous

“Be like the sun for grace and mercy. Be like the night to cover others faults. Be like running water for generosity. Be like death for rage and anger. Be like the earth for modesty. Appear as you are. Be as you appear.”

Jihad neither means nor implies any indiscriminate killings and violence. Jihad is an Arabic word from the root word “Jee Ha Da” which literally means to struggle or strive. Jihad is struggling or striving in the way or sake of Allah. It takes a very important status in the doctrine of Islam and is one of the basic duties of every Muslim. It has nothing, whatsoever; to do with the term Holy War, such a term or its equivalent does not exist in Islamic doctrine. The Christian crusaders in the middle ages invented this ideology of holy war but there is nothing “holy” about wars. Wars only involve killing and violence.

Etymologically, the Arabic word jihad has been derived from the root word “Juhd” which means “effort”. Another related word is “Ijtihad” meaning “working hard or diligently”. It is a process of “exerting the best efforts” involving some form of struggle and resistance to achieve a particular goal, though the meaning of the word is independent of the nature of the invested efforts or the sought goal.

Hence jihad as a generic word can be used even when the sought goals are not Islamic i.e. non religious in context Jihad, is generally considered to be of five types-

1.Jihad bil qalb/nafs (jihad of the soul)- is concerned with combating the devil and in the attempt, to escape his persuasion to evil. This type of jihad was regarded as the greater jihad.

2. Jihad al-qalam (jihad by pen)- jihad by pen includes scholarly research of Islam in aiding the spread and defense of Islam and publishing articles to remove misconceptions about Islam. Examples include the research and discovery of scientific evidences, literature and mathematical miracles from the holy Qur’an.

3.Jihad bil lisan(jihad by tongue)- is concerned with speaking the truth and spreading the word of Islam. It overlaps with da’awah i.e invitation to Islam.

4.Jihad bil yad (jihad by hand)- refers to do what is right and to combat injustice and what is wrong with action. Examples include giving charity to the poor, performing Hajj or Ummrah.

5.Jihad bis saif (jihad by sword)-refers to the “qital fi sabili allah” armed fighting in the way of Allah. There are only two situations where jihad by sword is allowed to be undertaken-

1. For self defense
2. Fighting against evil and unjust

There are many rules and limitations while engaging in a combat under the title of jihad. For example, civilians are not to be harmed, trees are not to be cut down, asylum should be granted to surrendering enemy soldiers, etc

"शक्तिशाली वह नहीं है जो अखाड़े में प्रबल हो; शक्तिशाली वह है जो अपने क्रोध पर भारी पड़े"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The strong man is not one who wrestle well but the strong man is one who controls Himself when he is in a fit of rage"

"And if anyone of the non- believers seeks your protection then grant him protection, so that he may hear the Word of Allah, and then escort him to where he can be secure, that is because they are men who know not"(the holy Quran, Surah 9; Al-Taubah, verse 6;)

Jihad by the sword has been overwhelmingly magnified in the wrong aspect whereas the truth is completely different from what is propagated. A brief history would be helpful. In the early years of revelation of Islam in Mecca, Muslims were not granted the permission by Allah to fight. So the Muslims suffered both moral and physical humiliations from the non Muslims in Makkah. The first verses regarding Jihad were then revealed allowing Muslims to undertake self defense.

"And fight in the way of Allah those who fight you, but transgress not the limits. Truly, Allah likes not the transgressors."(the holy Quran, Surah Al-Baqarah, verse 190;)

The western world today seems to be launching a global war against terror but are they the first to launch the war on terror? The Muslims already announced the war against terror fourteen centuries ago under the name of jihad bis saif. Moreover, according to The National, with the Syrian civil war "for the first time in the history of Shia Islam, adherents are seeping into another country to fight in a holy war to defend their doctrine". Thus, Shia and Sunni are waging a "jihad" against each other in Syria. Hence jihad by sword is not confined to being inter-religion rather it has turned out to be intra-religious too.

Jihad appears in 164 verses in the holy Qur'an and 199 times in the standard collection of hadith, Bukhari. The context of the holy Qur'an is elucidated by Hadith (the teachings, deeds and sayings of the prophet Muhammad (pbuh) of the 199 references to jihad in Bukhari perhaps the most standard collection of Hadith-Bukhari-all assume that jihad means warfare.

Prophet Muhammad (peace be upon him) said that:-

"the best jihad is the word of justice in front of the oppressive Sultan (ruler) and in which your horse is slain and your blood is spilled".

It has also been reported that Muhammad (pbuh) considered performing Hajj to be the best kind of jihad for Muslim women.

An important point which must be noticed and understood is that the holy Qur'an uses the word "jihad" in its generic meaning in the following two verses:

"And we have enjoined on man to be good to his parents; his mother bears him in weakness upon weakness, and his weaning is in two years; and (you must) be grateful to me and to both your parents. To Me is the eventual coming(31.14) and if they Jahadaka (do jihad against you) to make

"आपका जीवन संघर्षमय होना यह नहीं दर्शाता कि आपकी निष्ठा ईश्वर के प्रति कमज़ोर है या आप एक अच्छे मुसलमान नहीं हैं। पैग़म्बर मुहम्मद. (सल्ल०) ने तो एक पूर्ण वर्ष कष्टकारक अवस्था में व्यतीत किया! तो क्या इसका मतलब आप यह समझते हैं कि इनकी (सल्ल०) निष्ठा अपने धर्म के प्रति अस्थिर थी, जब आपको अल्लाह की सबसे अधकि आवश्यकता हो तो कभी भी अपने आपको उस्से दूर मत समझिये"

इमाम ख़ालिद लतीफ़

" Just because you are struggling that does not mean you are weak in your faith.......or ...... that you are a bad Muslim. The Prophet Muhammad (pbuh) experienced an entire year of depression. Are you saying he was weak in his faith? Do not distance yourself from Allah when you need Allah the most"

Imam Khalid Latif

you associate (Allah) with Me, of which you have no knowledge(being a God),do not obey them, but keep company with them in this world kindly; and follow the way of he who turns to me (31.15).

Jihad in the verses above refers to actions taken by non Muslim parents against their Muslim offspring to force them to worship other than Allah. This goal goes against the message of Islam which teaches the oneness of Allah; the verses above also confirm the already mentioned fact that jihad is not necessarily an act of violence. It is also worth noting that the verses above command the Muslims to remain kind and caring toward their parents, but to resist any attempt by latter to force them to give up the Islamic tenet of monotheism in favor of some polytheistic belief.

Aside from its use of the word jihad in its generic meaning in the two verses above, the holy Qur'an uses jihad in another twenty eight verses in specific meaning. In this case, the phrase "fi sabilil Allah" which means "in the way of Allah" or "for the sake of Allah" either follows jihad or one of its derivatives, explicitly or is implied by the context.

Those who misunderstand the Qur'anic term jihad and consider it as an armed fight only totally fail to notice ,among other things, one particular important fact which in the majority of verses in the holy Qur'an talks about fighting the enemy. It uses variations of the word "qital" which means fighting". Here are some of the examples-

"And qatilu (fight) [o you who believe] in the way of Allah, and know that Allah is Hearing, Knowing"(2.244)

"Falyuqatil (then let) those who sell this world's life for the hereafter (fight) in the way of Allah. And whoever yuqatil (fights) in the way of Allah so he gets killed or turns victorious, we shall grant him a great reward(4.74).

"Faqatil (then fight) [O Muhammad] in the way of Allah; you are not held responsible but for yourself; and urge the believers (to fight). May be Allah will restrain the might of the disbelievers; and Allah is greatest in might and greatest in punishment"(4.84).

The term jihad actually refers to the more general concept of exerting efforts in the way of Allah, of which fighting the enemy, or armed fight, is only one aspect. In Qur'anic terminology, it is wrong to equate the words jihad and qital as this reduces a broad concept to a more specific one. Qital in the way of Allah is thus, only one aspect of armed jihad. It is, however, the most prominent aspect and the climax of that form of jihad, which is why it is usually possible to use qital in the way of Allah and armed jihad interchangeably. Armed jihad in turn is one of two forms of jihad; the second is peaceful jihad.

"अगर अल्लाह आपके लिए खुशी लिख चुका है तो कोई भी आपसे छीन नहीं सकता, और अगर वह आपके लिए ग़म लिख चुका है तो कोई भी इसे बदल नहीं सकता। इसलिए अल्लाह पर ही भरोसा रखो"

"If Allah has written for you happiness, no one can steal that from you, and if HE has written for your Heart to break, then no one can mend it but HE, so Always put your trust in **Allah**"

Thus, jihad is a Qur'anic concept, but the Qur'an is rarely consulted to understand this concept. The holy Qur'an commands Muslim to shoulder the responsibility of educating others about its message and disseminate its teachings. However, the widespread misunderstanding of the word jihad can only be attributed to an endemic neglect of the holy Qur'an not only by non-Muslims but also by Muslims where unfortunately Muslims have had a big share in propagating the wrong notion that jihad is all about violence. It is a sad but undeniable fact that many Muslims learn about Islamic practices and concepts such as jihad from secondary and often unreliable sources.

The usage of the word jihad has gradually evolved since classical to modern times. The classical usage and meaning is pre-dominated by the "military sense". Classical manuals of Islamic jurisprudence often contain a section called book of jihad, with rules governing the conduct of war covered at great length. Such rules include treatment of non belligerents, women, children (also residential areas).

Thus, a brief analysis of the concept of jihad shows that emphasis has been laid upon "warfare" keeping aside the other aspects of jihad which have already been dwelt upon in the earlier sections. Muslims state that "the goal of true jihad is to attain a harmony between Islam(submission), Imaan(faith), and Ihsan(righteous living). In modern times, the struggle to establish "just moral-social order" is also a jihad. The fact is Jihad actually is an instrument like a knife, which in the hands of a surgeon gives us life and in the hands of criminal deprives us of all that we have, even our life. Therefore please do not give the terrorists, this dignity and attribute.

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

- शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार और कर्तव्य।
- अपनी शादी होने तक अपने पिता/भाइयों से सभी प्रावधान पाने का अधिकार।
- अपनी सभी प्रकार की आवश्कताओं को पूरा करने के लिए अपने पति से सभी प्रकार के प्रावधान पाने का अधिकार।
- यदि उनको धन की आवश्कता है और वह धन कमाना चाहती है तो धन कमाने के लिए कार्य करने का अधिकार।
- अपना स्वयं का धन अपने पास रखने का अधिकार।
- अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार तथा यह अधिकार कि उनकी बातों को सुना जाए।
- शादी के लिए अपनी मर्जी की शर्तों पर बात करने का अधिकार।
- पति से तलाक़ प्राप्त करने का अधिकार।
- तलाक़ के पश्चात अपने बच्चों की अभिरक्षा प्राप्त करने का अधिकार।
- कई और अधिकार है....

Right of women in Islam

- The right and duty to obtain education.
- The right to obtain provisions from her father/brother until she gets married.
- The right to have their own independent property.
- The right to provision from the husband for all her needs and more.
- The right to work to earn money if they need it or want it.
- The right to keep all her own money.
- The right to express their opinion and be heard.
- The right to negotiate marriage terms of her choice.
- The right to obtain divorce from her husband.
- The right to have custody of their children after divorce.
- Any many more.................

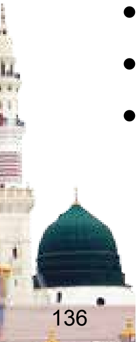

अध्याय - ४

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकार

- काबा को छोड़ कर किसी भी भवन को ढ़का नहीं गया है ।
- कुरान को छोड़कर किसी भी किताब को कपड़े से नहीं ढ़का गया है ।
- किसी भी महिला को घूंघट से नहीं ढ़का गया है किन्तु मुस्लिम महिला अपवाद हैं ।
- एक मुस्लिम पुरुष को महिलाओं के सामने अपनी नज़रो को झुकाकर चलना चाहिए ताकि महिलाएं स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सके और समझ जाए कि मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयायी जा रहे हैं ।
- अतः मुसलमानों के मूल्यों के बारे में विचार करें जिन्हें अल्लाह ने महिला की सुंदरता को छुपाने का आदेश दिया है ।

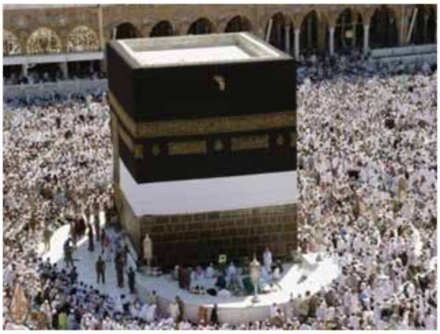

"किसी राज्य की माँ और बच्चे का स्वास्थ कि दशा के आकलन के लिए वहाँ के आर्थिक सूचक की तुलना में अधिक प्रभावशाली सूचक होता है"

हरजीत गिल

"The health of a mother and child is a more telling measure of a nation’s state than economic indicators"

Harjit Gill, CEO Asean & Pacific, Royal Philips

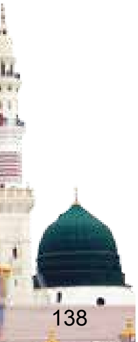

प्रस्तावना

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकार

विशेष रूप से पश्चिम में 19 वी सदी मे जे. एस. मिल द्वारा लिखित "दि सब्जेक्शन ऑफ़ विमेन" (1869) और मैरी वोलिस्टोनक्रॉफ्ट द्वारा लिखित "ए विडिकेशन आफ राइट्स ऑफ़ विमेन" (1792) जो बाद में प्रसिद्ध महिलावादी आंदोलन के रूप में परिवर्तित हुआ जिसमें पुरुष और महिलाओं के समान अधिकारों की वकालत की गई, इनमें महिलाओं की स्थिति और अधिकार, महिलाओं की स्वतंत्रता और उन पर लगाए गए प्रतिबंधों की बात सामने आई। महिलाओं के अधिकारों के बारे में हज़ारों पुस्तकें और आलेख लगातार प्रकाशित होते रहे हैं। किन्तु ऐसी बात जो गुज़र गई, पर उसके अपेक्षा और अनदेखी की गई कि किस प्रकार से 14 वीं सदी में इस्लाम धर्म में महिलाओं के अधिकारों की दृढ़ता पूर्वक वकालत की गई। इस्लाम में पर्याप्त अधिकार दिए गए और लगभग 1437 वर्ष पूर्व इन अधिकारों को पूरा किया गया जो बाद में महिलावादी आंदोलन की आवाज बना।

यह दुर्भायपूर्ण और निराशापूर्ण है कि ज्ञान के अभाव और अज्ञानता के कारण इस्लाम पर ऐसा धर्म होने का धब्बा लगा जो महिला स्वतंत्रता को रोकता है और उन्हें उचित महत्व देने से वंचित करता है । अतः यह आलेख एक प्रयास है जिससे लोगों को इस्लाम में महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्थिति से अवगत कराया जा सके।

इस पोशाक में क्या अच्छाई है ?

इस पोशाक में क्या ख़राबी है ?

कौन उत्तेजित करेगा ?

"इस्लाम में पुरुषों और महिलाओं के संबंधों में कोई अंतर नहीं है, जहाँ तक अल्लाह से उनके संबंध का मुद्दा है, कुआचरण के लिए उन्हें एक सा ही दण्ड दिया जाता है"

पवित्र कुरान

"In Islam there is absolutely no difference between men and women as far as their relationship to Allah is concerned, as both are promised the same punishment for evil conduct"

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकार

इस्लाम धर्म के जिन पहलुओं को सबसे कम समझा गया है उनमें से एक है समाज में महिलाओं की स्थिति। गैर–मुस्लिम व्यक्तियों में व्यापक तौर पर यह विश्वास किया जाता है कि मुस्लिम महिलाओं को दबाया जाता है। यह समझा जाता है कि उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं है और इस्लाम में उन्हें दूसरे दर्जे का इंसान समझा जाता है। मीडिया द्वारा प्रचारित और प्रस्तुत संवेदनशील कहानियाँ इस कथन में आग में घी डालने का काम करती हैं।

गैर मुस्लिम, विशेषकर पश्चिमी देशों के समुदाय जो कुछ भी करते हैं वे इस्लाम की छवि को धूमिल करते हैं। वे कहते हैं कि इस्लामिक सिद्धांत पुरुषों के पक्ष में है और महिलाओं के साथ अत्यन्त अन्यायपूर्ण और अनुचित व्यवहार किया जाता है। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य विश्व भर के बंधुओं को महिलाओं के संबंध में इस्लाम के नियमों और सिद्धांतों को सही परिप्रेक्षय में समझने में मदद करना हैं। पवित्र कुरान में कहा गया है कि पुरुषों के प्रति महिलाओं के अधिकार, महिलाओं के प्रति पुरुषों के अधिकारों के समान हैं (एक से नहीं हैं)। इस्लाम महिलाओं के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है। इस्लाम में उन पूर्व कानूनों और परिपाटियों को समाप्त कर दिया गया है जिन्होंने महिलाओं की गुणवता और उनकी प्रकृति में परिवर्तन कर दिया था। इस्लाम महिलाओं को महिमा मंडित करता है। उनकी इच्छा के विरुद्ध उन से विवाह नहीं किया जा सकता है। महिलाओं (माताओं, पुत्रियों, बहनों और पत्नियों) के संबंध में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की विभिन्न उपर्युक्त कथित विवरण इसके गवाह है। पैगम्बर

मुहम्मद (सल्ल०) की निम्नलिखित उपदेशों को देखें –

★ माता के चरणों तले स्वर्ग है।

★ स्वर्ग उसको ही मिलता है जो अपनी तीन बेटियों और तीन बहनों अथवा दो बेटियों और दो बहनों को अच्छा व्यवहार करते हैं।

★ बेटियों के साथ अच्छा व्यवहार नर्क की आग के विरुद्ध एक ढाल का काम करता है। इस्लाम में किसी को मार डालना एक बड़ा पाप है किन्तु यदि यह अपराध पुत्रियों के साथ किया गया हो तो यह घोर अपराध है।

★ तुम में से वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जो अपनी पत्नियों के प्रति दयावान है और तुम सभी में मैं अपनी पत्नियों के प्रति सबसे अधिक दयावान हूँ।

कई अन्य विश्वासों के विपरीत कोई भी मुस्लिम महिला अपना जीवन साथी चुनने के लिए मुक्त है यदि उसकी अपने शौहर से नहीं बनती है तो वह 'खुला'– तलाक़ का एक रूप जो कि उसके शौहर पर परम अधिकार है, मांग कर अपने शौहर से अलग हो सकती है। इस्लाम में विवाह एक आसान और गैर आडंबरपूर्ण है जहाँ दुल्हन और दूल्हा दो सरल चरणों में निकाह और वलिमा में एक दूसरे से विवाह करते हैं। कई अन्य धर्मों की परम्पराओं के विपरीत, जहाँ बहू के घरवालों को वर के घरवालों को प्रचुर दहेज़ देना पड़ता है, मुस्लिम दुल्हन को 'मेहर' (पति द्वारा अपनी पत्नी को दिया जाने वाला उपहार) का भी अधिकार प्राप्त है। पति की मृत्यु होने पर इस्लाम में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकार

"अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम महिलाओं के साथ भला व्यवहार करो क्योंकि वे तुम्हारी माँ, बहन और बेटी हैं"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Allah commands you to treat the women folk nicely as they are either your mother, sister or daughter"

पति की मृत्यु होने पर पत्नी 'इद्दत' (चार माह दस दिन) एक विशेष अवधि, (अत्यन्त वास्तविक और वैज्ञानिक दृष्टि अवधि) समाप्त होने के बाद पुनःविवाह कर सकती है। इस्लाम विधवा विवाह को बढ़ावा देता है जो कि समाज का एक दायित्व है। 'सती' प्रथा (यद्यपि यह समाप्त हो गई है) के विपरीत उसे अपने पति की चिता के साथ जलने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। इस्लाम में पुत्रियों को उम्र की किसी भी अवस्था में बोझ मानने का सख्ती से विरोध करता है। वहीं दूसरी ओर विधवा को कभी भी पाप नहीं समझा जाता है और उनके साथ कठोर रुख नहीं अपनाया जाता है बल्कि उनके साथ आदर और अनुकंपा का व्यवहार किया जाता है। इस्लाम विधवाओं को सती हुए बिना सावित्री बनने का अवसर प्रदान करता है। पुनर्विवाह महिलाओं को प्राकृतिक जैविक आवश्यकता के कारण नारकीय जीवन में धकेले जाने से बचाता है। पुनर्विवाह महिला को अपने पति की देखभाल और संरक्षण में आदर पूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करता है, ऐसा आमासी सार्वजनिक सम्पति बनने के बजाय दूसरी पत्नी के रूप में स्वीकार किया जाना और आदर दिया जाना निश्चित तौर पर एक बेहतर विकल्प है। पुरुषों और महिलाओं दोनों से एक
समान धार्मिक कर्तव्यों के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है। वास्तव में कुछ मामलों में महिलाओं के लिए शारीरिक स्थिति और उनकी क्षमता को देखते हुए महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत थोड़ी आसान अपेक्षाए रखी गई है। महिलाओं से सबंधित कुछ स्थितियों में जब वे मासिक धर्म में होती हैं तब उन्हें रोज़ा न रखने और नमाज़ न पढ़ने से भी छूट प्राप्त है। उनसे रोज़ा क़ज़ा रखने की अपेक्षा की जाती है किन्तु नमाज पढ़ने की नहीं परन्तु पुरुषों को कोई रियायत नहीं है।

इस्लामिक कानून में महिलाएँ स्वयं खरीदने बेचने या वित्तीय लेनदेन कर सकती हैं। उन पर कोई पाबन्दी या सीमा नहीं लगायी गयी है ऐसा वे बिना किसी संरक्षक के कर सकती हैं।

कई सोसाटियों में इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया है द्य मुस्लिम महिलाएं दोहरे उत्तराधिकार की हक़दार हैं– एक पिता की सम्पत्ति और दूसरे पति की सम्पत्ति में। पवित्र क़ुरान के अनुसार इस्लाम में माता–पिता, पति, बच्चों और अन्य निकट सम्बंधियों से महिलाओं के लिए शेयर निश्चित है। गैर मुस्लिम व्यक्तियों द्वारा उत्तराधिकार के कानून के कुछ खंडों की कटु आलोचना की जाती है। कानून के अनुसार महिला को मर्दों के शेयर का आधा शेयर मिलता है। इस कानून के पीछे तर्क यह है कि पुत्रियों और बहनों के पालन पोषण का जिम्मा पिता और भाई का है। जब महिला की शादी होती है तो पति की ज़िम्मेदारी है कि वह उसकी वित्तीय आवश्यकताओं का ख्याल रखे। यदि पति मर जाता है तो उसके पुत्र, पिता और भाई का है। इसके अलावा महिला को 'मेहर' (दुल्हन का धन और उपहार) उसके पति की ओर से उस की शादी के समय उसके अधिकार के तौर पर मिलता है। बहनों का परिवार या भाई पर अपने शेयर की राशि खर्च करने का कोई दायितव नहीं होता है किन्तु भाई का दायित्व है कि वह अपने परिवार अपनी बहन और स्वयं का दायित्व वहन करे उदाहरण के लिए यदि 150 रुपए एक बहन और एक भाई के बीच बांटने है तो बहन को 50 रुपए मिलेंगे किन्तु उसे उसमें से कुछ भी राशि अपने भाई या परिवार पर खर्च नहीं करनी है, किन्तु एक बेटे, से जिसे 100 रुपए मिलते हैं उसका कर्तव्य है कि वह उससे अपने परिवार, उसकी बहन और स्वयं के खर्चे पूरे करे। अब आप निर्णय करें कि लाभ की स्थिति में कौन है बेटा या बेटी।

"कई मुस्लिम देशों में महिलाओं की स्वतंत्रता, अविश्वसनीय मात्रा में यूरोप के कुछ देशों की तुलना में अधिक है। तो आप सिर्फ महिलाओं के बारे में एक सामान्यीकृत बयान नहीं दे सकते हैं। दूसरा, इस्लाम समस्या नहीं है। यह परंपरा है। यह संस्कृति है"

रानी राणिआ, जॉर्डन

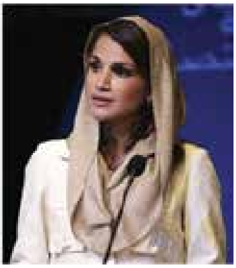

"In many Muslim countries women have incredible amounts of freedom, sometimes more than in some countries in Europe. So you cannot just make a generalized statement about women. Second, Islam is not the problem. It is tradition. It is culture"

Queen Rania of Jordan

एक अन्य कानून जिसकी कटु आलोचना की जाती है वह है बयान (गवाही देने से संबंधित) इस कानून के अनुसार दो महिलओं की गवाही ही एक पुरुष की गवाही के बराबर है। इस कानून के पीछे तर्क यह है कि प्रकृति द्वारा वित्तिय मामलों को हल करने में पुरुषों को अधिक सक्षम बनाया गया है। इसके अलावा महिलाओं में भूल जाने की प्राकृतिक रूप से प्रवृत्ति होती है जो उन्हें अप्रत्यक्ष कृपा दान प्राप्त है। उन पर यह कृपा न होने की स्थिति में वे शादी के बाद माता पिता का घर छोड़कर सुखी वैवाहिक जीवन नहीं जी पाती और अपने पति के घर में पूरी तरह से नए परिवेश में स्वयं को नहीं ढाल पाती।

इस्लामिक समाज में हिजाब एक अन्य पहलू है जो उपहास का पात्र है जिसका इस्लाम के विरोधी विशेषकर पश्चिमी समाज और मीडिया मज़ाक उड़ाते हैं। केवल मुस्लिम महिलाओं के ड्रेस कोड पर हीं व्यंग्य पूर्ण टिप्पणी क्यों की जाती है जबकि वास्तव में प्रत्येक धर्म महिला के सम्मान की रक्षा करने के लिए उनके ड्रेस कोड की आवयश्कता की वकालत करता है। कोई भी व्यक्ति इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकता है कि दोनों लिंगों स्त्री–पुरुष में एक स्वाभविक तौर पर आकर्षण होता है। साथ ही पुरुष और स्त्री एक दूसरे के लिए किसी न किसी रूप में सुंदर प्रतीत होते हैं। मानव समाज में सुंदरता का मापदंड एक जैसा नहीं है। और जब सुंदरता की बात की जाती है, तो शेक्सपीयर का मानना एक दम सही है कि सोने की बजाय सुंदरता पर चोरों की नज़र सबसे जल्दी पड़ती है। इस सम्बन्ध में गौर करने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी महिला की इज्जत, सतीत्व और आदर इस्लामिक समाज का अत्यन्त प्रमुख पहलू है और हिजाब सभी संभावित तरीकों से महिलाओं के सम्मान, इज्जत, सतीत्व और उसके सम्मान की रक्षा करता है। इस्लाम में महिला की शुचिता के महत्व को इस संबंध में निम्नलिखित आयत से समझा जा सकता है। "जो व्यक्ति किसी सती महिला को आरोपी बनाता है और चार गवाह प्रस्तुत नहीं कर पाता है, उसको साठ कोड़े लगाए जाएं तथा उसकी अभिसाक्ष्य को सदा के लिए रदद् किया जाए"। चार साक्षियों की आवयश्कता इस आरोप को सिद्ध करने के लिए नहीं होती अपितु महिला की शुचिता और सतीत्व का सम्मान करने के लिए होती है। इस्लाम पापी महिलाओं की शुचिता की भी रक्षा करता है क्योंकि निर्णय वाले दिन हमें हमारी माँ के नाम से पुकारा जाएगा, न कि पिता के नाम से।

इस्लाम के नियमों, सिद्धांतों और कानूनों के ज्ञान के अभाव में और अपनी अज्ञानता के कारण इस्लाम के विरोधी इस्लाम पर आरोप लगाते हैं कि वह महिलाओं के साथ न्यायोचित व्यवहार नहीं करता है। वह समानता के लिए भी ऐसी ही गलती करते हैं। अधिकांश मामलों में पुरुष और महिलाएं समान है किन्तु ऐसा सभी मामलों में नहीं है। दोनों लिंगों में अधिकारों और दायित्वों में कुछ भिन्नताएं नैतिक और शारीरिक अंतर के कारण हैं। अल्लाह ने महिला को पुरुषों जैसे कठोर कार्य करने के लिए नहीं बनाया है। दोनों में असमानता अथवा विषमता के कारण ही अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में पुरुषों और महिलाओं के लिये अलग–अलग प्रतियोगिताएं होती हैं। सच यह है कि दोनों लिंगों के लिए साझा प्रतियोगिताएं होने से अन्याय और असमानताएं हो जाएगी। यह देखना अत्यंत प्रशसनीय और उत्साहवर्धक है कि भारत में मंदिरों के पुजारियों ने हिजाब (शरीर को ढंक कर रखना) की पुरानी परम्परा को पुनः स्थापित करने का निर्णय लिया है ताकि मंदिरों में अपना शारीरिक प्रदर्शन किए बिना प्रवेश किया जा सके। हमें आशा करनी चाहिए की आज के समय के आधुनिक समाज के जानकार सदस्य इस स्थिति की गंभीरता को समझेंगे जिसमें महिला स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं और हिजाब की महत्व को महसूस करती है।

"मनुष्य प्रारंभिक काल में नग्न अवस्था में रहता था। जैसे जैसे उसके ज्ञान में वृद्धि हुई उसने कपड़ो की खोज कर ली और जो कपड़ा आज मैं पहनें हुई हूँ वह कपड़ो से सम्बंधित खोज की चरम सीमा है। और पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं है। पिछड़ेपन का प्रतीक तो नग्नहीनता है। यदि नग्नहीनता उन्नति का प्रतीक होती तो समस्त पशुगण आदमियों से जयादा उन्नतिशील माने जाते"

डॉ ढ़ालिया मुजाहिद

"From the first century mankind were naked, however, as he become more aware with time, he discovered clothes. And what I am wearing now is the peak of advancement that mankind has ever achieved and this is not backwardness. But nakedness is the sign of backwardness and behavior of first century. Had nakedness been sign of advancement, animals would have been more advanced than mankind"

Dr. Dhalia Mujahid

Chapter-IV

Women status & right in Islam

No Building is covered with a cloth but Kaaba.
No Book is covered with a cloth but Quran.
No Woman is covered with veil but a Muslim.
A Muslim male is supposed to walk with his eyes downwards in the presence of females so that they may feel secure and safe and know that none other than a follower of the Muhammad (pbuh) is going past them. So think of the value of a Muslim who Allah ordered to cover her beauty.

इस्लाम में प्रसिद्ध महिलाएं

पहली महिला जिसने इस्लाम धारण किया	:–	हज़रत ख़दीजा
पहली महिला जो इस्लाम के लिए मरी	:–	हज़रत सुमईया
इस्लाम की महानतम विदुषी महिला	:–	हज़रत आईशा
मुहम्मद (सल्ल०)से सर्वाधिक प्यार करने वाली महिला	:–	हज़रत फ़ातिमा
इस्लाम के लिए महानतम बलिदान देने वाली महिला	:–	हज़रत खानसा
महानतम मुस्लिम लड़ाका महिला	:–	हज़रत खावलाह

Women of Islam

First person to embrace Islam	:	Hazrat Khadija
First person to die for Islam	:	Hazrat Sumayah
Greatest scholar of Islam	:	Hazrat Aisha
Most love for Muhammad (Pbuh)	:	Hazrat Fatimah
Greatest sacrifice for Islam	:	Hazrat Khansa
One of the greatest Muslim fighter	:	Hazrat Khawlah

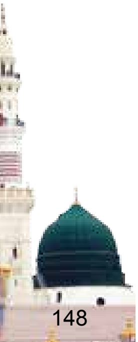

Introduction

Women's – status and rights in Islam

Women's status and rights, her freedom and restrictions imposed came to the forefront in the beginning of the 19th century especially in the west with works like "The subjection of Women" (1869) by J.S.Mill and "A vindication of the rights of Women" (1792) by Mary Wollstonecraft which later culminated into the famous feminist movement which advocated equal rights for men and women.

Thousands of books and articles continue to get written and published on the issue of rights of women. But what passed off unseen and neglected was how women's rights were strongly advocated as early as in the 14th century in the religion of Islam. Islam provided ample freedom and fulfilled all those rights about 1437 years ago which later became the cry of the "feminist movement".

It is unfortunate and pathetic that sheer lack of knowledge and ignorance has caused Islam to be labeled as a religion which curbs women's freedom and denies them their due importance. Hence this article is an attempt to make people aware of women's rights, their status and exalted position in Islam.

What is right with this dress?

What is wrong with this dress?

WHICH ONE WILL PROVOKE ONE ?

"जब सूरज बादलों से ढक जाता है तो भी सूरज की चमक कम नहीं होती है। इसी तरह से हिजाब से ढक जाने से भी सुंदरता मद्धिम नहीं होती है"

एंजेलिना जोली

"The sun doesn't lose its beauty when covered by the clouds. The same way your beauty doesn't fade when being covered by Hijab"

Angelina Jolie

Women's Status And Rights In Islam

One of the least understood aspects of Islam is the status of women in the society. It is widely believed by the non-Muslims that Muslims women are oppressed and suppressed. It is assumed that they have no rights and treated as second class human beings in Islam. This notion is further fuelled by sensational stories published and presented by the media.

The non-Muslims, particularly the western community do whatever they can to malign Islam in this respect. They say that Islamic principles are in favour of men and the women are treated very unjustly and unfairly. The aim of this book is to help the world brotherhood to understand the rulings and principles of Islam with regards to women in the correct context.

The holy Quran says "Women's right over men are equal (not similar) to those of men over women. Islam treats women with dignity and has abolished and abrogated all previous laws and practices that interiorized women in quality and nature. Islam glorifies women. They cannot be forced into marriage against their will. The various sermons of the holy Prophet (Pbuh) dealing with women (mothers, daughters, sisters and wives) bear a testimony to the above mentioned statement. Look at the following sermons of the holy Prophet (Pbuh).

- Staying by the side of mother is better than to go for Jehad.
- The mother deserve the companionship of her children three times more than that of the father.
- The paradise lies under the feet of the mother.
- Paradise is for him who keeps good company with his three daughters and three sisters or two daughters and two sisters.
- Good treatment with daughters will work as a shield against the fire of hell. Killing anyone is a major sin in Islam but when it comes to daughters it is the worst one.
- He is the best amongst you who is the kindest towards his wives and I am the kindest amongst you towards my wives.

Unlike many other faiths, a Muslim women is free to choose her partner and get separated from him, in the event of not getting along with him, by asking for 'Khula' a form of 'Divorce' which is a privilege of the husband.

Marriage in Islam is an easy and non-ostentatious affair where the bride and the bridegroom marry in two simple phases–Nikah and Walima. Dowry is strictly prohibited in Islam. Unlike the tradition in many other faiths where the family of the bride has to offer enormous dowry to the bridegroom's family, a Muslim bride has a right to 'Mehr', a kind of gift from a husband to his wife. In the event of her husband's death, she

"इस्लाम ने महिला के स्तर को ज़मीन के नीचे से उठाकर इतना ऊँचा कर दिया है कि स्वर्ग उसके पैरों के तले है"

इस्लाम

"Islam has raised the status of woman from below the earth so high that paradise lies under her feet"

can marry again after 'Iddah', a specific period of time for very genuine and scientific reasons. Islam encourages widows' marriage which is the responsibility of the society. Unlike the practice of 'Sati' (though abolished now) she cannot be forced to commit immolation in the burning pyre of her husband. Islam is strictly against considering daughters as burden at any stage of their life; on the other hand the widows are not considered a curse and treated harshly, but with respect and compassion. Islam provides an opportunity to a widow to be a 'Savitri' without 'Sati'.

Remarriage saves a woman from being forced to stoop to lead an ignoble life because of natural biological needs. Remarriage gives her an opportunity to lead an honourable life under the care and protection of her husband from evil eyes. Instead of being a virtual public property, being accepted and respected as a second wife is definitely the best option.

Equal religious duties are required from men and women. In fact in some cases, the requirements are a little easier for women keeping in consideration their physical attributes and capacity. In certain conditions pertaining to women, when it is not possible for them to remain abluted they are exempted from fasting and offering prayers. They are required to make up for the fasts but not the prayers they have missed. Men are not allowed this concession.

According to Islamic laws women can own, buy sell and undertake any financial transaction without any restrictions or limitations and also without any guardianship, a situation unheard of in many societies. A Muslim woman also enjoys dual inheritance rights, on her father's side as well as her husband's. According to Holy Quran Islam has specified a share of inheritance for women, from their parents, husband, children and other close relatives.

There is bitter criticism of certain clauses of law of inheritance by the non – Muslims. According to the law a woman gets half the share than that of the man. The logic behind this law is that the responsibility of upbringing of daughters and sisters lies with father and brothers. Once a woman gets married, it becomes the responsibility of her husband to take care of all her financial requirements. If the husband dies her sons, father and brothers become responsible for her care and needs. Besides a woman gets 'Mehr' (Bridal money or gift) from her husband as her right at the time of marriage. The sisters are not responsible for spending any part of their share on the family or brothers. But the brother is responsible for meeting all the expenses of his family, his sisters and his own. For example if Rs. 150/- are to be divided between a sister and a brother, the sister gets Rs. 50/-, out of which she is not supposed to spend any amount on her brothers or the family but the son who gets Rs. 100/- is duty bound to spend the money to meet the expenses of his family, his

हज़रत आसिया से :– धैर्य

हज़रत खदीजा से :– वफ़ादारी

हज़रत मरयम से :– शुद्धता

हज़रत आईशा से :– ईमानदारी

हज़रत फ़ातिमा से :– साफ़गोई

इन महिलाओं से सीखें

Learn from these women

Patience from Hazrat Aasiya

Loyalty from Hazrat Khadija

Purity from Hazrat Maryam

Sincerity from Hazrat Aisha

Steadfastness from Hazrat Fatimah

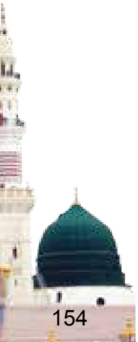

sisters and his own. Now judge who is in an advantageous position – son or the daughter!

Another law which is subjected to very harsh criticism is related to the right of testimony (witness). According to this law the testimony of two women is equal to the testimony of one man. The logic behind this law is that men are better equipped by nature to handle financial matters. Besides women, by nature have a tendency of forgetting which in disguise is a blessing for them. In the absence of this blessing they won't be able to live a happy married life after leaving their parents' home and adjusting to an entirely new environment in their husband's house.

Hijab is yet another aspect of Islamic society which is ridiculed, laughed at and made fun of by the opponents of Islam, particularly the western society and media. Why only Muslim women's dress code is a victim of sarcastic remarks and criticism when virtually every religion advocates the need for a dress code for women to protect their honour and modesty.

One cannot deny the fact that there is a natural attraction between the two genders. Also every man and women is beautiful for one another in some way or the other. The criteria of beauty, among the human beings are not universal. And when it comes to beauty Shakespeare is perfectly right in observing that 'Beauty provoketh thieves sooner than gold'. We may not accept the fact, because of our ego or obstinacy that the crimes against women will be reduced to almost hundred percent if both men and women protect their bodies by the cuirass of Hijab. It is an irony that while other religions propagate and advocate for a dress code for the women for their safety and security, it is only Islam which is labelled as a regressive and oppressive religion.

The most important thing to be noted in this regard is that the dignity, modesty, honour and respect of the women is one of the prime most aspect of Islamic social life and hijab guards the honour, chastity, modesty and respect of women in all possible ways. The importance of chastity of a woman in Islam can be judged from the following verse in this regard. 'Those who accuse a chaste woman and produce not four witnesses flog them with eight stripes and reject their testimony forever.' Four witnesses are required not in order to prove the allegation but to honour the chastity and modesty of women.

Islam protects the modesty of even a sinful woman that is why on the judgement day we all shall be called by our mother's name and not by our father's.

It is because of our ignorance and lack of proper knowledge about the commandments, principles and laws of Islam that its opponents accuse Islam of not treating women justly. They mistake similarity for equality. Men and women are equal in most aspects but not similar in all aspects. Some of the differences in the rights and responsibilities between the

आदरणीय महिलाओं

"एक दिन आपको सिर से पाँव तक ढक दिया जाएगा। इसलिए आख़िरी दिन का इन्तेज़ार किये बिना हिजाब को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बना लें"

Honourable Woman

"One day you will all be covered from head to toe. Don't let your last day on earth be the first day you wear hijaab"

two genders are due to biological and physical differences. Allah has not designed women to undertake tough jobs like men. There are separate competitions for men and women in international sports events due to inequality between them or dissimilarity? The truth is that common competitions for both genders would amount to injustice and inequality.
It is very heartening and encouraging to see that the priest in the temples in India have decided to revive the time old tradition of Hijab (covering of the body) for entering the temples without any exhibition of their physique. Let us hope that the enlightened members of our present day modern society will appreciate the gravity of the situation in which a woman completely feels unsafe and realise the importance of Hijab.

पाँच घटनाओं के होने से पूर्व इन पाँच बातों का ख़्याल रखें

वृद्ध होने से पूर्व युवा अवस्था का।
बीमार हो जाने से पहले स्वास्थ्य का।
ग़रीबी आने से पहले धन का।
पूर्वाधिकार से पहले खाली समय का।
मृत्यु आने से पहले जीवन का।

Take care of 5 before 5

Youth before old age
Health before sickness
Wealth before poverty
Free time before preoccupation
Life before death

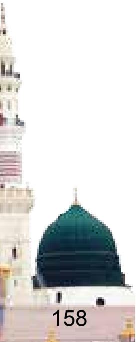

अध्याय–5
Chapter-V

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की भविष्यवाणियाँ
Prophecies of Prophet Muhammad (Pbuh)

"पवित्र कुरान समस्त धार्मिक समस्याओ के लिए एक ऐसा प्रमाण है जिसपर भरोसा किया जा सकता है। इसमें उत्तम बुद्धिजीविओ के लिए भरपूर आनंद है। यह मानव ज्ञान के भंडार का उत्तम श्रोत है"

"Quran is such an authority on problems of religion that it can be trusted upon. It contains best pleasure for a super mind. It is the greatest source of knowledge to mankind "

प्रस्तावना

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की पेशनगोईयाँ (भविष्यवाणीयाँ)

अनुमान, कल्पना, भविष्य कथन और पूर्वानुमान को भविष्य कथन के लिए गलत अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए। भविष्य कथन दैवीय शक्ति (अल्लाह) से रहस्योद्घाटन है जबकि अन्य बातें कुछ गणनाओं, जैसे कि एल्फर्क विग्गिनिस जूनियर,19 वीं सदी में अमेरिकी रेल रोड के लिए काम कर रहे इंजीनियर, पर आधारित है। उसका एक आलेख "अगले 100 वर्षों में क्या हो सकता है स्वयं ही यह बताता है कि भविष्यवाणी के बारे में कुछ भी निश्चित नहीं होता है। वे सही हो सकती हैं या गलत भी। किन्तु पेशनगोई (भविष्यवाणी) को सच होना ही है। क्योंकि वह किसी गणना पर आधारित नहीं होती है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) जो मरुस्थलीय प्रदेशों में रहने वाले सातवीं सदी के मध्य में पेशनगोई करते थे जो मानवीय जीवन के प्रत्येक चरण से संबंधित थी और वे लगभग अकल्पनीय सी लगती हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के वर्तमान स्थिति के बारे में निम्नलिखित सामान्य पेशनगोई की जो इब्न–अल–हज द्वारा लिखित मुद्दखल में दर्ज हैं। जबकि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा, प्रार्थनाएं उपेक्षित होंगी, ऊंट की इच्छाओं का अनुशीलन होगा, अपराधी प्रवृत्ति के लोग नेता बनेंगे, सच्चे और झूठे प्रवृत्ति के व्यक्ति में अन्तर कर पाना संभव नहीं होगा। झूठ बोलना अपेक्षित बन जाएगा, ज़कात का भुगतान बोझ के रूप में समझा जाएगा, आस्तिक व्यक्तियों को अपमान कारक समझा जाएगा और उसे एक बुरे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। इन बातों से उनका ह्रदय उस प्रकार पसीजेगा जिस प्रकार समुद्र में नमक किन्तु वह कुछ भी नहीं कर पाएगा। वर्षा से लाभ नहीं होगा और बेमौसम बरसात होगी। पुरुष पुरुषों के साथ और महिला महिलाओं के साथ अविलंघन करेंगी। महिलाएं हावी हो जाएंगी। बच्चे माता–पिता की आज्ञा नहीं मानेंगे, दोस्त दोस्तों के साथ बुरी तरह पेश आएंगे, किए जाने वाले पापों को हलके में लिया जाएगा, मस्जिदों को बाहर से सजाया जायेगा वहाँ पर नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति भी होंगे परन्तु वहाँ पर पाखंड ही होगा, और उनके ह्रदय में आपसी शत्रुता होगी। तब पश्चिम से एक व्यक्ति प्रकट होगा जो मेरे व्यक्तियों में कमजोरों पर प्रभुत्व स्थापित करेगा। लोग पवित्र कुरान की प्रतियां स्वर्ण अक्षरों में प्रकाशित करेंगे किन्तु उसका पालन नहीं करेंगे। कुरान का उच्चारण गीत के रूप में होगा। सूदखोरी की बुराई काबू से बाहर हो जाएगी। मानवीय रक्त का कोई मूल्य नहीं रहेगा, धर्म मददगार नहीं रह पाएगा, गाना गाने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ेगी, अमीर व्यक्ति आमोद–प्रमोद के बहाने हज करेंगे, मध्यवर्गीय व्यक्ति व्यापार करने के रूप में हज करेंगे।"

अधिकांश पेशनगोई सच साबित हुई हैं और शेष सत्य साबित होने की राह में हैं। वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त ये सभी पेशनगोई मानवीय जीवन के सभी पहलुओं, अंतरराष्ट्रीय संघर्ष, प्राकृतिक आपदाओं, सामाजिक और नैतिक अपराधों, प्रदूषण और वैश्विक ताप आदि के इर्द–गिर्द ही हैं। मुस्लिम यह मानते हैं कि इमाम मेंहदी (अवतार), के रूप में प्रछन्न इमाम की आशा करते हैं। इमाम मेंहदी के बारे में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की एक पेशनगोई है। इस विश्व का तब तक अंत नहीं होगा जब तक मेरे वंश का कोई व्यक्ति अरब पर शासन न कर ले और उसका वही नाम होगा जो मेरा नाम है। उसका ललाट चौड़ा होगा और उसकी नाक ऊँची होगी। जब यह संसार दुख से घिरा होगा तो उस समय संसार को न्याय और निष्पक्षता से परिपूर्ण करेगा। वह सात वर्ष तक राज करेगा। वह 40 वर्ष की आयु का होगा। उसका चेहरा सितारों की तरह चमकेगा, उसके बाएं गाल पर एक काला निशान होगा। वह इस प्रकार प्रतीत होगा मानो कि वह बनी इसराइल से आया हो। एक रात में अल्लाह उसे प्रेरित करेंगे और उसे अपना काम सफलतापूर्वक करने के लिए निर्देश देंगे।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"एक समय ऐसा आएगा जब इस्लाम धर्म पर चलना हाथ में जलते हुए कोयले को पकड़ने के समान होगा"

"There will come a time when holding on to Your Deen (Religion) will be like holding on to hot coals"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की भविष्यवाणियाँ

1) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी बेटी फ़ातिमा को बताया था कि वह उनके मरने के बाद उनके परिवार में मरने वाली पहली सदस्य होंगी। इस एक भविष्यवाणी में दो भविष्यवाणियाँ हैं।

i) हज़रत फ़ातिमा अपने पिता से अधिक जिन्दा रहेंगी ii) फ़ातिमा उनके मरने के बाद परिवार में मरने वाली पहली सदस्य होंगी। ये दोनों भविष्यवाणियाँ सच हुईं।

2) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि उनकी मृत्यु के बाद जेरूसलम को जीत लिया जाएगा। यह भविष्यवाणी सच हुई क्योंकि एनसायक्लोपेडिया ब्रितान्निका के अनुसार 638 में मुस्लिम ख़लीफ़ा हज़रत उमर ने जेरूसलम पर कब्ज़ा कर लिया था।

3) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि मुसलमान इस्तांबुल (तुर्की) और रोम (इटली) नामक दो शहर स्थापित करेंगे। उनके साथी ने पूछा कि कौन सा शहर सबसे पहले बसेगा तो उन्होंने उत्तर दिया इस्तांबुल। मुसलमानों ने मुहम्मद अल फतह के नेतृत्व में 1453 में इस्तांबुल की स्थापना की।

4) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था की मुसलमानों के दो क़बीलों से युद्ध होगा। एक क़बीला हथोड़े के सदृश (मंगोल) होगा। दूसरा क़बीला फर पहनता होगा और उसकी आँखें छोटी होंगी (तैमूर लंग और चंगेज़ ख़ान)। ये दोनों भविष्यवाणियाँ सच हुईं और क़बीलों द्वारा स्थापित किये गए मुस्लिम राज्यों को नष्ट कर दिया और उन्होंने अरब प्रायद्वीप को छोड़कर मुस्लिम क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।

5) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि मुस्लिम और यहूदी आपस में एक दूसरे से लड़ेंगे। मुस्लिम जॉर्डन नदी के पूर्व तट पर होंगे और यहूदी पश्चिमी तट पर। हम जानते हैं कि यहूदियों ने फिलिस्तीन पर कब्ज़ा कर रखा है और फिलिस्तीन में रह रहे मुस्लिमों से युद्ध किया। पैगम्बर (सल्ल०) की यह भविष्यवाणी सच हुई क्योंकि इजराइल को पश्चिमी देशों का समर्थन प्राप्त है।

6) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि भविष्य में लोग अपने बच्चों की अपेक्षा कुत्तों की देखभाल ज्यादा करेंगे। आजकल हम देखते हैं की दंपत्ति बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हैं, बजाय इसके वे कुत्ते और बिल्ली जैसे पालतू जानवर रखना पसंद करते हैं। विश्वभर में विशेषकर पश्चिमी देशों में यह प्रचलन बढ़ रहा है।

7) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह भविष्यवाणी की थी कि एक समय ऐसा आएगा जब लोग सड़कों पर और सार्वजनिक स्थानों पर सैक्स भावना का प्रदर्शन करेंगे। आजकल यह सब पोर्न मूवीज, थिएटरों, विश्वविद्यालयों के परिसरों, चलते हुए वाहनों में देखे जा रहे हैं । यह सच है और समसामयिक काल का एक मुख्य मुद्दा है।

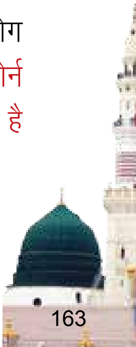

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"मेरे अल्लाह का ग़रीब वह होगा जो निर्णय वाले दिन दुआ (प्रार्थना) करता हुआ, भीख मांगता हुआ आएगा, किन्तु अगर उसने दूसरों को दुःख पहुंचाया है,दूसरे के साथ कपट किया है, अवैध तरीक़ों से दूसरे का धन हड़पा है, दूसरों का ख़ून बहाया है, उन्हें पीटा है, तो उस व्यक्ति के अच्छे कामों का फल उन व्यक्तियों को मिलेगा जो उसके हाथ से पीड़ित हुए हैं। यदि हिसाब करते समय उसके अच्छे काम कम पड़ जाएंगे तो उसके पाप उसके खाते में जुड़ जाएंगे और उसे जलते हुए आग में फेंक दिया जाएगा"

8) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि एक समय ऐसा आएगा जब लोग संसार में हर जगह रिबा (ब्याज) का प्रयोग करेंगे और कोई भी इससे बच नहीं पाएगा। 19 वीं सदी में जब वैटिकन ने ब्याज की प्रथा शुरू की और अन्य देशों ने इसे चाव से अपनाया तो यूरोप और अमेरिका इसके विरुद्ध थे । अब मौद्रिक प्रणाली में ब्याज चलित ढांचे के कारण ही कई देश मंदी और दिवालियापन की समस्या से जूझ रहे हैं। यद्यपि इसकी भविष्यवाणी सदियों पूर्व की गई थी, आज के विश्व में आम रूप से इसका प्रचलन है।

9) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने सहाबा (अनुयाइयों) से कहा था कि मुस्लिमों के बारे में यह कहा जाएगा कि वे ईसाइयों के चचेरे भाई हैं और उनकी देखभाल करेंगे क्योंकि वे मेरे पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के रिशतेदार हैं। इस्लाम के नियमों के अनुसार यहूदियों और ईसाइयों को अपनी परम्पराओं और विश्वास के पालन करने का पूरा अधिकार है। उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वे इस्लामिक राज्य की रक्षा करने के लिए कोई युद्ध लड़ें। 12 वीं सदी में धर्मयुद्ध में इस्लामिक राज्य की रक्षा करने के लिए अरब में रह रहे ईसाइयों ने मुस्लिमों के साथ मिलकर यूरोप में रह रहे ईसाइयों से खुलकर युद्ध किया क्योंकि वे इस्लामिक शासन में अपने जीवन से संतुष्ट थे।

10) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि एक समय ऐसा आएगा जब जीविका कमाने में पत्नी पति की मदद करेगी। शिक्षा में सुधार होने से परिवारों के अपने संबंधियों के संबंध में यह आम देखा जाता है कि वे अपने काम के दबाव में अपने परिवार, विशेषकर बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाती है।

11) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि जब मक्का की घाटी को खोद कर इसमें से नदी समान रास्ता (सुरंग) बनाया जाएगा और पवित्र शहर की इमारतें उसके पर्वतों से ऊँची हो जाएगी, जब तुम ऐसा देखोगे तब यह समझना कि क़यामत का समय नजदीक आ रहा है। जैसा कि हम देखते हैं कि पवित्र शहर मक्का और मदीना गगन चूमती इमारतों से घिरे हुए हैं।

12) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि एक समय ऐसा आएगा जब दैत्य अपना सिंहासन समुद्र में लगा कर लोगों को उस ओर आमंत्रित करेगा। आज यह प्रवृत्ति नंगेपन के रूप में समुद्र तटों पर दिखाई देती है।

13) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि लोग अंतिम समय पर सामने आएंगे जो धर्म को वैश्विक कार्यों के लिए कपटपूर्ण ढंग से प्रयोग करेंगे और अपनी सज्जनता को प्रकट करने के लिए भेड़ की खाल पहनेंगे। उनकी जुबान शहद से भी मीठी होगी किन्तु उनका ह्रदय कपटपूर्ण होगा। आजकल यह आम रूप से प्रचलित है।

14) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि "एक समय ऐसा आएगा जब मस्जिदें लोगों से भरी होंगी किन्तु उनके पास सही जानकारी नहीं होगी। ऐसा विश्व भर में देखा जा रहा है और इसमें उत्तरोतर वृद्धि हो रही है।

15) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था की "ऐसा समय आएगा जब अमीर व्यक्ति यात्रा एवं व्यापार करने के मकसद से हज यात्रा पर जाएंगे, बुद्धिमान व्यक्ति शेखी बघारेंगे,

"अल्लाह ने यह धरती मेरे लिए बनाई है (एक ही भाव से) अतः मैंने धरती के पूर्व और पश्चिम को देखा है और मेरा साम्राज्य वहाँ तक फैलेगा जहाँ तक अल्लाह ने दर्शन कराया है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Allah had set the earth for me (in one single view) so I have seen its East & West and my nation will reach what Allah had shown me of it"

और फैशन करेंगे और गरीब लोग भीख मांगेंगे। (हज़रत अनस के कथनं) धर्म के नाम पर झूठी जिंदगी जीना अमीरों के लिए सम्मान का विषय बन जाएगा है।

16) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि एक समय आएगा जब चारों ओर भ्रम का प्रसार होगा । लोग झूठे व्यक्ति पर विश्वास करेंगे और सच बोलने वाले पर अविश्वास करेंगे। आज के विश्व में विश्वास का न होना चिंता का विषय बन गया है और एक झूठा व्यक्ति बनना आम हो गया है।

17) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि लोग तुच्छ वैश्विक खुशियों को पाने के लिए अपने धर्म को बेच देंगे । दुर्भाग्यवश यह आज के विश्व का एक सच है।

18) अल्लाह के संदेशवाहक पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि घूस को उपहार कहा जाएगा और इसे वैध माना जाएगा । यह पैग़म्बर (सल्ल०) की अन्य भविष्यवाणियों की भांति यह भ. विष्यवाणी भी सच हो रही है।

19) अल्लाह के सन्देशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "हर्ज" बढ़ेगां उन्होंने यह पूछा हर्ज क्या है ? उन्होंने उत्तर दिया "हत्या" है । समाज में यह अपराध तेजी से बढ़ रहा है।

20) अल्लाह के सन्देशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "स्वच्छंद संभोग में वृद्धि एक नई बीमारी को जन्म देगी जिसके बारे में लोगों ने नहीं सुना होगा" यह स्पष्ट हो गया कि इससे एड्स जैसी बीमारियों का आगमन हो रहा है जिसके बारे में पहले नहीं सुना जाता था ।

21) अल्ल्लाह के सन्देशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "अंत समय तब तक नहीं आएगा जब तक भूकंप बार–बार न आये । हाल के दिनों में नेपाल, पकिस्तान और भारत में जिस तरह के भूकंप आ रहे है वैसे कभी नहीं आते थे।

22) अल्लाह के सन्देशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "लाभ का बंटवारा अमीर व्यक्तियों के बीच में होगा। उसका फायदा गरीबों को नहीं होगा। दुर्भाग्यवश यह आज के युग की कटु वास्तविकता है कि गरीब व्यक्ति और गरीब होते जा रहे हैं और अमीर व्यक्ति अमीर बनते जा रहे हैं। गरीबी का मुख्य कारण बेरोजगारी की बजाय आय का असमान वितरण है।

23) अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि "स्वच्छंद अवैध लैंगिक सहवास की प्रधानता होगी" इसका सजीव उदहारण यूक्रेन के बॉक्सर हैं जिसके विवाह के प्रस्ताव को उसकी मित्र एक अमेरिकी सुपर टीवी स्टार द्वारा आगे के लिए बढ़ाया जाना रहा है भले ही उस युवती का उससे एक बच्चा भी है। यह आज की पीढ़ी का शर्मनाक वाकया है। लोगों ने अपने वैवाहिक जीवन की पवित्रता के भाव को खो दिया है।

24) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था " एक समय ऐसा आएगा जब लोग मस्जिदों में चिल्लाएंगे और उनमें एकता का अभाव होगा। आजकल हम लोग देखते हैं कि खुतबा के समय लोग अक्सर बातें करते रहते हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"मैं और वह व्यक्ति जो अनाथों की देखभाल करता है और उनके आराम की व्यवस्था करता है उन्हें स्वर्ग में उसी तरह रखा जाएगा जिस प्रकार दो उंगली एक साथ रहती हैं"

"The one who takes care of the orphans and sees to their comforts will be as close as close to me in the paradise as the two adjoining fingers in a hand"

25) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि लोग बादलों और धरती के बीच तैरेंगे। इसका सम्बंध थोड़े समय में लंबी दूरी की यात्रा करने की अवधारणा से है। वास्तव में यह बादलों और धरती के बीच तैरने के समान हवाई यात्रा से है।

26) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि "कई व्यक्ति अल्लाह का संदेशवाहक होने का दावा करेंगे। इसके कई उदाहरण है, सवर्प्रथम पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के काल में उनकी मृत्यु से ठीक पहले आए उसके बाद कई आए जैसे कि इलिजा मुहम्मद जो काले अमेरिकी नस्लवादी आंदोलन "दि नेशन ऑफ इस्लाम" के प्रवर्तक थे"।

27) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि हजरत उमर ख़लीफ़ा के काल में मुस्लिम विश्व में पैसा खूब होगा किन्तु कोई भी व्यक्ति ""ज़कात" और "सदक़ा" नहीं देगा। उमर ख़लीफ़ा ने "ज़कात" और "सदक़ा" को बढ़ावा देने के लिए दिल खोलकर काम किया। किन्तु पहले की स्थिति आज भी बरकरार है। मुस्लिम व्यक्तियों के पास काफी धन है किन्तु वे इस धन को शक्तिशाली हथियार खरीदने में खर्च कर रहें और वे इस धन को ज़कात और सदक़ा पर खर्च करने से बच रहे हैं। इससे मुस्लिम विश्व में आर्थिक विकास और प्रगति की रफ्तार काफी कम हो रही है।

28) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि "एक समय ऐसा आएगा जब कई देशों में शराब का प्रयोग किया जाएगा। "दुर्भाग्यवश आजकल कई मुस्लिम देशों में वैध तरीके से शराब की बिक्री की जा रही है।

29) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि "महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक होगी। वास्तव में आजकल विश्व के कई देशों में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या अधिक है। कन्या भ्रूण हत्या की उच्च दर के कारण भारत और चीन इसके अपवाद हैं।

30) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी "अरब के रेगिस्तान फिर से हरे भरे और उपजाऊ हो जाएंगे। वहाँ पर छोटे पैमाने पर ऐसा हो रहा है, उन्नत सिंचाई की प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो रहा है और मरुस्थल हरे भरे मैदान में तब्दील हो रहे है। जब हम मक्का और मदीना पहुँचते हैं हम देख पाते हैं कि रेगिस्तान की बालू भरे क्षेत्र में तथा राज्यमार्गो के दोनों ओर पहाड़ों पर हरे भरे क्षेत्र हो रहा है।

31) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था " समय तेजी से बदलेगा। एक साल एक महीने के समान बीतेगा, एक महीना एक सप्ताह के समान बीतेगा जबकि एक सप्ताह एक दिन के समान होगा। आजकल यह प्रत्यक्ष हो रहा है।

32) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि लोग अल्लाह की रचनाओं को बदल देंगे। पवित्र कुरान ने प्लास्टिक सर्जरी की भविष्यवाणी की थी। इस सूक्ष्म और कूटबद्ध विज्ञानं के युग में जनन विज्ञान अभियांत्रिकी (जेनेटिक इंजीनियरिंग) और क्लोनिंग की भविष्यवाणी की थी। आजकल हम देख रहे हैं कि कॉस्मेटिक सर्जरी तेज़ी से बढ़ रही है जो वैज्ञानिक विधा में से एक है। यह सर्जरी बेहतर शरीर प्राप्त करने के लिए है या आकर्षक दिखने के लिए है या शरीर को नया आकार प्रदान करने के लिए है । लोग अब अल्लाह की इच्छा में बदलाव करते हुए चाकू द्वारा सर्जरी कराना पसंद कर रहे हैं।

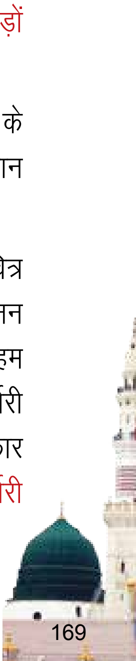

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"ऐ अल्लाह के फरिश्तों, हमें यह पता है कि स्वर्ग कैसा होगा? उसकी ईंटें सोने और चांदी की होंगी और गारा–सुगंधों का होगा और उसकी बजरी मालाओं और मोतियों की होंगी"

33) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था "लोग जो कुछ कार्य करते हैं, जैसा व्यवहार करते हैं वे उससे अलग दिखेंगे। "आजकल सीमाओं पर फिंगर प्रिंट प्रणाली, अपराधियों की जांच करने वाले प्रकोस्टन और आप्रवासन केंद्रों की कार्य प्रणाली यह साबित कर रही हैं कि यह भविष्यवाणी सही साबित हुई है।

34) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि "लोग एक दूसरे के निकट आएंगे। तीव्रगामी परिवहन प्रणाली, टेलीफोन, सेटेलाइट प्रणालियों इन्टरनेट के माध्यम से लोग एक दूसरे के नजदीक आ रहे हैं।, अतः यह भविष्यवाणी भी सही साबित हो रही है।

35) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह भविष्यवाणी की थी कि "भविष्य में मुसलमान भी उसी तरह से और अधिक कट्टर और रूढ़िवादी हो जायेंगे जिस प्रकार से यहूदी और ईसाई है। आज के युग में मुसलमानों में कट्टरता से अधिक कुछ भी नहीं है।

36) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि यहूदी और ईसाई इकहत्तर अथवा बहत्तर समुदायों में बंट जाएंगे और मेरा समुदाय मुस्लिम तिहत्तर समुदायों में बंट जाएगा। आज मुस्लिम सम्प्रदाय के तिहत्तर सम्प्रदाय बन गए हैं और यह भविष्यवाणी सही साबित हुई है।

37) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था कि क़यामत के दिन की एक पहचान अचानक मृत्यु होनी होगी । संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि सभी उपचारी कदम उठाने के बावजूद आजकल यह धीमी गति से लगातार बढ़ रही है।

38) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि अविवाहित युवक युवतियों से बच्चे पैदा होंगे। वास्तव में ऐसा प्रतीत होगा कि शादी एक पुराने जमाने की वास्तविकता है। यह विशेषकर यूरोपीय देशों में बढ़ रही प्रथा है।

39) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि समलैंगिक कार्य आम बात हो जाएगी। दुर्भाग्यवश आजकल पश्चिमी समाज में यह आम रूप से प्रचलन में आ गया है।

40) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जिन घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की थी वे इस प्रकार है। फिरौन के शरीर को सदा के लिए संरक्षित किया जाएगा (कुरान) आज जैसा कि हम देख पाते हैं, काहिरा में मिस्र के म्युजियम में उसके शरीर को एक ममी के रूप में संरक्षित किया गया है।

41) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि क़यामत के दिन की एक निशानी यह होगी कि सुदूर पूर्व से सुदूर पश्चिम तक प्रत्येक घर में शैतान का प्रवेश होगा। आजकल पूरे विश्व से हमारे घरों में टेलीविजन पर तथा इन्टरनेट के माध्यम से पोर्न साहित्य तथा अन्य बातें प्रवेश कर रहे हैं।

42) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी कि "आदमी पत्नी की बात मानेगा और अपनी माँ की बात को नहीं मानेगा। वे अपने दोस्तों के प्रति सहृदय होंगे और अपने पिता को दुत्कारेंगे। आज के विश्व में ऐसा ही हो रहा है।

43) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) यह भविष्यवाणी की थी कि जंगली जानवर एकत्र होंगे। किसी ने कभी इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि जंगली जानवरों को पकड़कर पाला जाएगा। और

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"बुख़ार को मत कोसो क्योंकि यह आदम की संतानों के पापों को इस तरह से साफ़ करता है जैसे भट्टी लोहे पर लगे जंग को हटाती है"

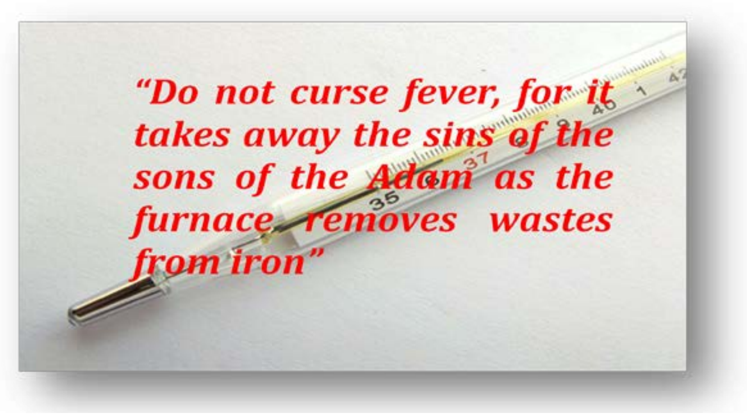

उन्हें एक दूसरे के निकट और खुले पार्कों में रखा जाएगा। चिड़ियाघरों को स्थापित किया जाना उनकी भविष्यवाणी को सच कह रहा है।

44) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी की थी "मस्जिदें महलों के समान होंगीं"। यह स्पष्टतया दिखाई देता है । यद्यपि पैगम्बर (सल्ल०) ने अल्लाह के घरों (मस्जिदों) में सादगी बरतने का आदेश दिया है किन्तु मस्जिदें अधिकाधिक विलक्षण बनती जा रही है । उनमें सोने के गुम्बद लगाये जाते हैं संगमरमर के फर्श होते हैं और महेंगे गलीचे से युक्त होते हैं। मस्जिदें पूर्णतया वातानुकूलित हो रही हैं।

45) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने भविष्यवाणी में उस समय का वर्णन किया था जो इस्लाम के बारे में कुछ भी शेष नहीं होगा किन्तु इसका नाम कुरान में इसकी शिक्षाएं शब्दों में होंगी, न कि शिक्षाओं का सार होगा और मस्जिदें बनाई जाएंगी, उनकी साज सज्जा किये जाएंगे किन्तु वे शिक्षा से दूर होंगीं। आजकल लोगों में यह बात देखी जा रही है, लोग मुस्लिम होने का दावा करते हैं किन्तु कुरान की जिन आयतों का वे उच्चारण करते हैं उसका अर्थ नहीं जानते।

46) हजरत अबू हुरैरा ने कहा था कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का यह कहना था कि "ऐसा समय आएगा जब कोई भी व्यक्ति यह ध्यान में नहीं रखेगा कि उसने अपना धन वैध तरीक़ों से कमाया है या अवैध तरीकों से कमाया है क्या ये बात आज के युग में सत्य नहीं है," जब मुस्लिम भी ताकत और पैसे की अंधी दौड़ में सभी प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल कर रहे है।

47) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने आतंकवाद फैलने की भविष्यवाणी करते हुए मानव मात्र को चेतावनी दी थी कि "इस संसार के अंतिम दिनों में कुछ युवा मूर्ख व्यक्ति प्रकट होंगे और अपने दावे में सभी व्यक्तियों के अच्छे वाक्यों का प्रयोग करेंगे (अर्थातं) पवित्र कुरान और अन्य पवित्र ग्रंथों में कही गई बातों को, तीर की भांति अपने विश्वास का परित्याग कर देंगे।

48) हदीस में दर्ज है कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर 360 जोड़ों से मिलकर बना है। आज 21 वीं सदी में वैज्ञानिक तौर पर इस बात की पुष्टि की गई है कि मानव शरीर में 360 जोड़ होते हैं। जोड़ों की संख्या पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने सातवीं सदी के मध्य में ही बताई थी।

49) क्या कोई व्यक्ति 1438 वर्ष पूर्व आज के समय की नारी की नग्नता की भविष्यवाणी कर सकता था। जी हाँ। पैग़म्बर (सल्ल०) ने ही इस बात की भविष्यवाणी करते हुए कहा था," उम्माह के अंतिम समय में औरतें ऐसी होंगी जिन्होंने कपड़े तो पहनें होंगे किन्तु नग्न दिखेंगी, उनके सर पर ऊंट के कूबड़ की तरह की आकृति होगी। उन्हें कोसो क्योंकि वह अभिशप्त हैं।

50) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने सहाबा (अनुयायियों) से कहा था कि यह विषय उसी तरह सभी जगह पहुंचेगा जिस प्रकार रात और दिन पहुँचते हैं। इसका अर्थ यह है कि इस्लाम का प्रसार इस धरती पर होगा और सभी स्थानों पर रात और दिन की तरह फैलेगा। वास्तव में आज आंकड़े यह बताते हैं कि 2025 के अंत तक इस्लाम धर्म को मानने वाले व्यक्तियों की संख्या को यदि गिना जाये तो यह सबसे बड़ा धर्म होगा।

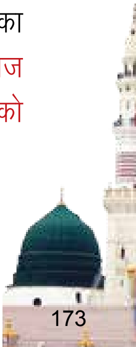

"मैं अल्लाह (ईश्वर) की क़सम खाता हूँ जिसके हाथों में मेरी जान है। लोगों का वह समय आएगा जब मारे गये व्यक्ति को यह पता नहीं होगा कि उसे क्यों मारा गया और मारने वाले को यह पता नहीं होगा कि उसने उसे क्यों मारा था"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"I swear by whom my soul is in His hand, there will be a time upon people that the killed would not know why he was killed, and the killer would not know why he killed"

Introduction

Prophecies of Prophet Muhammad (Pbuh)

Phantasy, fantasy, prediction and forecast should not be mistaken for prophecy. Prophecy is a revelation from a super power (Allah/ God) while the others are based on certain calculations like that of J. Elfreth Walkins Jr., a civil engineer working for American railroads of 19th century. His article ‘What May Happen In The Next Hundred Years’ itself indicates that there is no surety about predictions. They may come true or may not. But a prophecy is bound to be true as it is not based on any calculation.

The prophecies of Prophet Muhammad (pbuh) by no means a man of letters, living in desert conditions and making prophecies in the middle of 7th century related to every walk of human life seems to be quite unimaginable. Prophet Muhammad(pbuh) made the following general prophecy about the present state of affairs , recorded in the Mudkhal by Ibn-al-Hajj:

“The Holy Prophet (pbuh) said, ‘Prayers will be neglected, carnal desires will be pursued, transgressors will become leaders; it will not be possible to distinguish the faithful from the false, telling lies will become desirable; payment of Zakat will be taken as a burden, the believer will be deemed the most disgraceful and he will be pained at seeing evils all around and his heart will melt as salt in water but he will not be able to say anything. Rain will do no good; it will fall out of season. Males will commit adultery with males, and females with females. Women will dominate. The offspring will disobey their parents; friend will treat his friend badly, sins will be taken lightly. Mosques will have external decorations and beauty and there will be worshippers too but there will be hypocrisy and mutual enmity in their hearts. Then will appear a people from the West who will dominate the weak among my people. People will produce copies of the Holy Quran in letters of gold but will not act upon it. The Quran will be recited in a melodious way. Usury will become rampant. Human blood will have no value, religion will have no helpers. Singing women will be on the increase. The rich will perform the Hajj as a pastime, the people of the middle class will do so to conduct business and the poor to beg for charity.”

Most of these prophecies have come true and the rest are in the process of coming true. All these prophecies involving scientific facts also are based on revelations contained in the Holy Quran. These prophecies encompass every aspect of human life, international conflicts, natural calamities, social and moral crimes, pollution and global warming etc.

Muslims expect the advent of Imam Mahdi (the guided one). According to one of the prophecies of Prophet Muhammad (pbuh) for Imam Mahdi this world will not come to an end until one person from my progeny rules over the Arabs, and his name will be the same as my name. His forehead will be broad and his nose will be high. He will fill the world with justice and fairness at a time when the world will be filled with oppression. He will rule for seven years. He will be 40 years of age. His face will shine like a star and he will have a black spot on his left cheek. He will appear as a person from Bani Israel. In one night Allah will inspire him and prepare him to carry out his task successfully.

"ज्ञान उस सागर के समान है जिसका कोई ओर छोर (किनारा) नहीं होता है। इस सागर में तुम तब तक तैरते रहो जब तक मृत्यु न हो जाए"

मुफ्ती मेंक

"Knowledge is an ocean that has no coast, keep swimming until the day you Die"

Mufti Menk

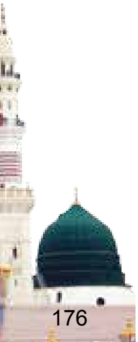

Prophecies of Prophet Muhammad (pbuh)

1) Prophet (pbuh) informed his daughter, Fatima, that 'she would be the first member of his family to die after him'. There are two prophecies in one: Fatima will outlive her father; Fatima will be the first member of his household to die after him. Both were fulfilled.

2) Prophet Muhammad (pbuh) prophesized 'Jerusalem would be conquered after his death'. This prophecy was fulfilled, according to Encyclopedia Britannica; In 638 the Muslim caliph, Hazrat Umar conquered Jerusalem.

3) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'the Muslims would establish two cities, Istanbul (Turkey) and Rome (Italy)'. His companion asked him which one would be opened first, he replied Istanbul'. The Muslims opened Istanbul in 1453 under the leadership of Muhammad Al Fatah.

4) Prophet Muhammad (pbuh) said that; 'Muslims will fight two tribes. The first tribe would resemble hammer (the Mongolians). The second tribe would wear furs and have small eyes (Taimur Lung and Changhes Khan)'. Both predictions turned true.These tribes destroyed the established Islamic state and captured the territories, except for the Arabian Peninsula.

5) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that; 'The Muslims and Jews will fight against each other. The Muslims will be on the Eastern side and Jews will be on the Western side of the Jordan River'. We know that the Jewish people captured Palestine and fought against the Palestine Muslims. The prophecy in this verse has been fulfilled as Israel is supported by western countries.

6) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'in future people will care more for dogs than their own children'. Today we find couples who do not want to have children and instead prefer to have pets such as dogs and cats. This is a growing phenomenon worldwide, particularly in the west.

7) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'there will be a time when people will have open sex in the streets and other public places'. This now can be clearly observed in pornography, movies, theater, university campuses, moving vehicles etc. It is true and one of the major issues in contemporary times.

"इस्लाम, आतंकवादियों द्वारा अपनाई गई हिंसा जो अपने भाइयों और बहनों की हत्या करते हैं और धर्म की आश्रय के तहत सभी नीच कृत्य करते हैं। इस्लाम सख्ती से इन लोगों के कार्यों से अपने आप को अलग करता है"

शेख ज़ायेद अन्नाहयान

" Islam desists violence practiced by terrorists who kill their brethren and commit all despicable actions under the cover of religion. Islam dissociates itself strictly from these people and their actions"

Shaikh Zayed Annahyan

8) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'a time will come when people everywhere will use Riba (interest) all over the world and nobody will be able to escape it'. Europe and America were against interest until the start of the 19th century when Vatican started using interest, and then other countries followed like sheep and now many of the countries are facing the problem like recession and bankruptcy due to interest driven structure in their monetary system. Even though predicted centuries ago, it is now a common practice of today's world.

9) Prophet Muhammad (pbuh) told his companions (Sahabah) that "the Muslims were told to be kin to the Christian people (Themee) and take care of them because they are relative to me (Prophet Muhammad (pbuh)). Under Islamic law, Thamee (Jews and Christians) have every right to practice their own customs and beliefs. They are not required to participate in any war to defend the Islamic State'. In the 12th century, during the Crusades, many Christian Arabs fought enthusiastically with the Muslim against the European Christians to defend the Islamic State, because they were satisfied with their life under Islamic rule.

10) Prophet Muhammad (pbuh) said that 'the time will come when a wife will help her husband with earning money. The relationship among families and relatives will weaken with education being improved'. It is a common observation today regarding working women, who are unable to give sufficient time to their family (especially children) due to work pressure.

11) Prophet Muhammad (pbuh) said: 'When the belly of Makkah will be cleft open and through it will be dug out river-like passages (i.e. tunnels) and the buildings of the holy city Makkah will rise higher than its mountains, when you observe these sign, then understand that time of trial (Judgment Day) is near at hand.' As we see now a days Holy Makkah & Medina city are surrounded by skyscraper.

12) Prophet Muhammad (pbuh) said that 'a time will come when the devil will put his throne on the sea and invite people to it". This is the present trend of going to the beaches in nakedness.

13) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said, 'In the end times men will come forth who will fraudulently use religion for worldly ends and wear sheepskins in public to display meekness. Their tongues will be sweeter than sugar, but their hearts will be the hearts of wolves'. It is far more of a common practice of today's world.

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"एक बार एक गैर–मुस्लिम ने पैग़म्बर (सल्ल०) की मस्जिद में दाखिल होकर पेशाब कर दिया। वहाँ मौजूद लोगों ने गुस्से में उसे दंडित करना चाहा तो आप (सल्ल०) ने कहा, उसे अकेला छोड़ दो और उसके पेशाब को पानी से धो दो। और अपने साथियों से कहा कि आप मुद्दों को हल करने लिए हो नकि उनको मुश्किल बनाने के लिए"

"A non-Muslim once urinated in the Prophet's Mosque, and people got up to punish him. The Prophet said, 'Leave him alone, and throw a bucket of water over his urine. You are here to make things easy, not to make things difficult"

14) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; 'there will come a time for my people when the Masjid will be full of people but they will be empty of right guidance'. It is prevalent all across the world and growing progressively.

15) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said, 'Such a time will come when the rich will go on pilgrimage for purposes of travel and business, the wise for boasting and outward show, and the poor to beg. (Narrated by Hazrat Anas)'. Falsifying life in the name of religion has become a statement of honor for the wealthiest.

16) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said, 'The time will be of confusion. People will believe a liar, and disbelieve one who tells the truth'. Trust has become a major concern in today's world and being a liar is a common practice.

17) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; People will sell their religion for a small amount of worldly goods'. This is an unfortunate truth of today's world.

18) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; 'Bribes will be called gifts, and will be considered lawful'. Like all the other predictions of the noble Prophet (pbuh) this one has also come true.

19) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said: 'The Harj (will increase). 'They asked, 'What is Harj?' He replied,' (It is) Killing (murdering), (it is) murdering (killing)'.This crime is very much increasing in the society.

20) Allah's Messenger Prophet Muhammad(pbuh) said**;** 'The increase of sexual promiscuity, will bring a new disease that people had not heard of before'. This is clear, with the arrival of AIDS, and other previously unheard viruses.

21) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; 'The Hour (Last Day) will not be established until...earthquakes will be very frequent'. Whoever does an atom's weight of evil will see it (Surah az-Zalzala:1-8). There is nothing more prevalent than the recent tremor in Nepal, Pakistan and India.

22) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; 'Gains will be shared out only among the rich, with no benefit to the poor'. Unfortunately this is one of the harsh realities of today that the poor has become poorer and the rich, richer. Unequal distribution of income is the main reason behind poverty than unemployment.

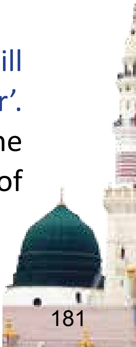

The Quran

पवित्र कुरान

"कभी यह मत कहो कि मैं कल यह काम कर दूँगा, बल्कि यह जोड़ते हुए कहो कि यदि अल्लाह की इच्छा हुई तो मैं यह काम कर दूँगा"

"And never say of anything, "Indeed, I will do that tomorrow," except (when adding), "If Allah wills"

23) Allah's Messenger Prophet Muhammad (pbuh) said; 'there will be prevalence of open illegal sexual intercourse'. One such living example is Ukrain boxer whose proposal for marriage to his cohort, an American super TV star being delayed by her even after having one child from him. It is a shameful scenario of today's generation. People have lost the sense of the integrity of the sanctity of marriage.

24) Prophet Muhammad (pbuh) said; 'Time will come when there will be shouting in the Masjid and lack of unity'. As we see now a days; during "Khutbah" lots of people are engaged in talking and shouting.

25) Prophet Muhammad (pbuh) said:'People will hop between the clouds and the earth'. This is related to the whole concept of traversing long distances in a short times, and to the idea of the use of airplanes for travelling. This, indeed is hopping between the cloud and the earth".

26) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'Many people will claim to be the Messenger of Allah, while Muhammad (pbuh) is the last one'. There are numerous examples of this, starting with Musalima, who arose in the time of the Prophet, just before his death, to more modern lairs such as Elija Muhammad (Elija Poole), founder of the Black American racist movement "The Nation of Islam".

27) Prophet Muhammad (pbuh) said: 'During the time of caliph Umar the wealth of the Muslim world was too great but there was no one to give Sadaqah and Zakat. Calips Umar worked passionately towards encouraging the practice of Zakat and Sadaqa. However, the former situation is prevalent even today. Muslims are in possession of much wealth. Sadaqa & Zakat are obligatory for them but they are investing that amount in the purchase of powerful weapon and abstain from donating the same as Sadqa and Zakat. This has lead to poor economic growth and progress of Muslim world.

28) Prophet Muhammad (pbuh) said; ' Time will come when Alcohol will be used in many nations'. Unfortunately, alcohol is legally sold in many Muslim nations today.

29) Prophet Muhammad (pbuh) predicted; 'Women will outnumber men'. Virtually every country in the world today has a higher ratio of women to men. The few exceptions are India and China (due to high rates of female infanticide)

30) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that; 'The deserts of Arabia will become lush and fertile again'. This is happening on a small scale with advanced irrigation techniques and "desert greening." As we

The Quran

पवित्र कुरान

"ग़रीबी के डर से अपने बच्चों को मत मारो, अल्लाह ने उनके और तुम्हारे लिए पर्याप्त अन्न देने का वादा किया है, उनकी हत्या एक बड़ा पाप है"

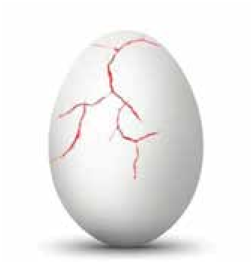

"Don't kill your children for fear of poverty.Allah provides for them and for you indeed, their killing is ever a great Sin"

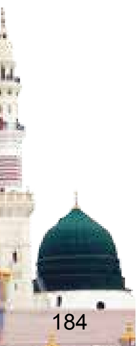

reach Makkah and Madinah we can notice the "greenery" that spreads across the desert sands and mountains on both sides of the highway.

31) Prophet Muhammad (pbuh) said: 'Time would move swiftly- a year passing like a month- a month like a week- a week like a day'. This is quite evident today.

32) Prophet Muhammad (pbuh) said; 'People will alter Allah's creation'. The holy Qur'an has prophesied the plastic surgery, genetic engineering and cloning in this short and concise sentence. And we see now a days cosmetic surgery is one of the most increasing scientific practices, whether for better body, looks or shape. People now prefer undergoing through a knife altering the Almighty will.

33) Prophet Muhammad (pbuh) said; 'Their skins will bear witness against them as to what they have been doing'. Now days the finger print system at borders, criminal investigation cells and immigration centers prove the fulfillment of this Prophecy.

34) Prophet Muhammad (pbuh) said: 'Various people will come closer'. Fast transport systems, telephone, satellite systems and internet have brought people close to each other proving the truthfulness of the Holy Qur'an.

35) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'In future Muslims also would become more rigid and orthodox, just as the Jews and Christians were'. There is nothing more prevalent than rigidness of the Muslims of today.

36) Prophet Muhammad (pbuh) said; 'The Jews were split up into seventy-one or seventy-two sects; the Christians into seventy one or seventy-two sects; and my community will split up into seventy-three sects'. This prophecy stands true today with Muslim community dividing into almost 73 sects.

37) Prophet Muhammad (pbuh) said; 'One of the signs of the day of resurrection is the sudden death'. United nation statistics confirms that phenomenon of sudden death in recent days and is increasing despite all preventive procedures.

38) Prophet Muhammad (pbuh) predicted that 'Children will be born to unmarried couple'. In fact marriage itself will seem an obsolete reality. This is one of the most gradual and increasing practice of today particularly in the west.

"दो मुस्लिमों द्वारा एक अंग्रेज सिपाही का सर काट दिये जाने से इस्लाम का कोई लेना देना नहीं है। क्या आप लोग मेरी बात सुन रहे हैं। पवित्र कुरान में ऐसा कुछ नहीं लिखा है जिससे मुस्लिमों को दूसरे व्यक्तियों को मारने की शिक्षा मिलती है"

डेविड कैमरून

"The beheading of an English soldier by two Muslims has absolutely nothing to do with Islam. Nothing, Do you hear me? There's not one thing in the Holy Quran that teaches Muslims to kill infidels"

David Cameron

39) Prophet Muhammad (pbuh) predicted; that 'Homosexuality' would become commonplace'. This unfortunately is a common practice today particularly in western society.

40) Prophet Muhammad (pbuh) predictions of future events, 'such as stating that Pharaoh's body will be preserved until the end of time (Qur'an, 10:91-92). Today, his mummified body is preserved in the Egyptian Museum in Cairo for all as witness.

41) Prophet Muhammad (pbuh) prophesied' One of the sign of the Day of Judgment is when wickedness enters every house from the far east to the far west'. The wickedness of pornography and other things on TV and the internet come to us right in our homes from all over the world.

42) Prophet Muhammad (pbuh) prophesied that 'Man will obey his wife and disobey his mother, and treat his friends kindly and shun his father'. These are the trends of today's world.

43) Prophet Muhammad (pbuh) prophesied that 'And when the wild beasts are gathered together'. Nobody ever imagined that one day wild beasts shall be captured, tamed and put together in close and open parks. The establishment of Zoo is the example for this prophecy.

44) Prophet Muhammad (pbuh) prophesied that; 'The Masjids would be like palaces''. This is clearly the case, even though the Prophet ordered simplicity in the houses of Allah, the Masjids have become more and more fantastic, with golden domes, marbled floors, lavish carpets, fully air conditioned indoor with chandeliers.

45) Prophet Muhammad (pbuh)prophesied 'of a time which would be characterized by emptiness where nothing of Islam will remain but its name, Quran would retain its words and not its essence and the Masjids will be built and furnished but would be devoid of guidance'. This is witnessed today in the form of people who claim to be Muslims but do not know the meanings of the Aayats they recite from Quran and the Masjids have become a place for occasional visits.

46) Narrated by Abu Huraira that Prophet Muhammad (pbuh) said 'A time will come when one will not care how one gains one's money, legally or illegally". Is not it true of the present times when even the Muslims (namesake) in their mad rush for power and pelf are adopting all sorts of means?

47) Prophet Muhammad (pbuh) foresaw the onslaught of terrorism and warned the humanity that "In the last days of this world there will

पवित्र कुरान

"आज हम तुम्हारे (फ़िरौन) शरीर को तुम्हारे आने वाले नस्लो के लिए सुरक्षित करते हैं ताकि वह उनके लिए एक इबरत साबित हो। हालांकि इस में कोई शक नहीं के बहुत से ऐसे हैं जो इन निशानियों को नज़र अंदाज़ कर देगें"

"So today we will save you (Pharaoh) in body that you may be to those, who succeed you, a sign. And indeed, many among the people, of our signs, are heedless"

appear some young foolish people who will use (in their claim) the best speech of all people (i.e. the holy Quran and other holy scriptures) and they will abandon their faith as an arrow going through the game. Their belief will not go beyond their throats.

48) “The Hadith records; He (Allah) created every child of Adam upon sixty and three hundred joints.” The total number of scientifically confirmed joints in the human body is now (in 21st century) 360. This number was given by our Prophet (pbuh) in the middle of 7th century.

49) Prophet Muhammad (pbuh) says to his companions : ‘This subject will reach all places the same as night and day’, which means that Islam will spread and reach all the places the same way as night and day reach every place on earth. Indeed, today the statistics say that religion of Islam is in every place in the world ! As these statistics say that by the end of 2025 , Islam will be the first religion according to the followers. This is not an exaggeration. No doubt these numbers are real.

50) Could anyone foresee the nakedness of women in the present times 1437 years ago? Yes. It was our Prophet Muhammad (pbuh) who foresaw and said: “During the last days of Ummah there will be women who are clothed but naked, with something on their heads like the humps of camels. Curse them, for they are cursed.”

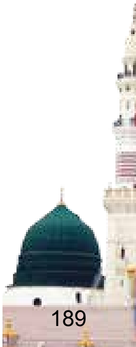

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"और रात और दिन, सूरज और चाँद उसकी निशानियों में से है, ना तो सूरज को सज्दा करो और ना चाँद को बल्कि अल्लाह ही को सज्दा करो जिसने इन चीजों को पैदा किया है अगर तुमको उसकी इबादत मंजूर है"

"And from among His signs are the night and the day, and the sun and the moon. Prostrate yourselves not to the sun nor to the moon, but prostrate yourselves to ALLAH who created them, If you (really) worship Him"

अध्याय-6
Chapter-VI

विश्व प्रसिद्ध विद्वानों (गैर मुस्लिम) की दृष्टि में पैग़म्बर मुहम्मद

Prophet Muhammad (pbuh) in the eyes of Non – Muslim Scholars

इस्लाम कहता हैं : नहीं है कोई सिवाए अल्लाह के।
ईसाई और यहूदी धर्म : सुनो ऐ इसराइल, प्रभु, हमारा परमेश्वर एक ही है।
हिंदू धर्म : बिना किसी प्रतिद्वन्दी के वह एक है ।
सिख धर्म : केवल यही सत्य है। केवल वही निर्माता है।

Islam says: There is no one but Allah.
Christianity & Judaism says: Hear, O Israel, the lord, our God, is one lord.
Hinduism: Without any companion He is one.
Sikhism: There exists none but one Allah. Who is called the true, the creator.

प्रस्तावना

विश्व प्रसिद्ध विख्यात विद्वानों की दृष्टि में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र के विविध रूप (उनकी निष्कपटता, उदारशीलता, अटलता, विपरीत परिस्थितियों में धीरज, समृद्धि के समय विनम्रता, जानवरों के प्रति चिन्ता, बच्चों के प्रति प्यार और स्नेह, मृदु और उदारशील भावना, और न्याय के प्रति स्वीकृत (विवेक) ही उनकी मान्य और असंदिग्ध विशेषता है। उनका महानतम उद्देश्य मानवता को विनाश से बचाना था। विभिन्न मतों को मानने वाले व्यक्तियों और विख्यात विद्वानों द्वारा व्यापक अनुसन्धान के पश्चात उनके दृष्टिकोण कुछ बुरे व्यक्तियों और दिग्भ्रमित व्यक्तियों की कुछ टिप्पणियों की अनदेखी करने के लिए पर्याप्त हैं।

उनके वक्तव्य और टिप्पणियाँ ज्ञान के अभाव और पूर्वापेक्षा को दर्शाती हैं और यह दर्शाता है कि लालसा के कारण ही यह सब कहा गया है। आइए हम उन्हें अपने महत्वकांक्षी प्रेक्षण के तले रहने दें। परम पिता उन्हें हमारे साथ आने की सद बुद्धि दें।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"औरत से निकाह चार चीज़ों की बुनियाद पर किया जाता है उसके माल, उसके पारिवारिक स्थिति, उसकी खूबसूरती और उसके दीन, तो तुम दीनदार औरत से निकाह करके कामयाबी हासिल करो वरना नुकसान में रहोगे"।

"A Woman is married for four things, i.e. her wealth, her family Status, her beauty and her religion. So you should marry the Religious woman (otherwise) you will be a losers"

Introduction

Prophet Muhammad (pbuh) in the eyes of eminent world famous scholars

Prophet Muhammad's (pbuh) versatility of character (his sincerity, munificence, tenacity, calmness in adversity, humility in prosperity, concern for animals, love and affection for children, velour and magnanimity of spirit and avowed sense of justice) is his esteemed and unimpeachable quality. His noble aim was to save humanity from destruction. The comprehensively researched views of various faiths and well known scholars are more than enough to ignore the acerbic remarks of a few ill and misinformed. Their works and comments display lack of knowledge and prejudices and a craze to earn fame through infamy. Let them bask in the sun of their wishful observation. May the almighty give them the good sense to come around.

"एक बनी आदम जब पैदा होता है तो पैदाइश के वक़्त शैतान उसे छूता है और बच्चा शैतान के छूने से ज़ोर से चीख़ता है सिवाय मरियम और हज़रत ईसा के"

"There is none born among the off-spring of Adam, but Satan Touches it. A child therefore, cries loudly at the time of birth Because of the touch of Satan, except Mary and her Child"

Thoughts of Eminent Non - Muslim Scholars About the Prophet Muhammad (pbuh)

Sl. No	Name	Page No.
1	Mahatma Gandhi, Father of Indian Nation	215
2	Jawahar Lal Nehru, First Prime Minister of India	217
3	(Prof.) Tejatat Tejasen, Dept. of Anatomy at Thailand	219
4	(Dr.)S Radhakrishnan, Phiolosopher & Second President of India	221
5	Ruth Cranston, American Author & Lecturer	223
6	Swami Vivekanand, Great Philosopher and Preacher	225
7	Swami Laxmi Shankaracharya, Spiritual Leader of India	227
8	Pt. Gyananadra Dev Sharma Shastri, Member of Arya Samaj	229
9	(Sir) C.P.Ramaswamy Iyer, Indian Lawyer & Politican	231
10	C.N.Annadurai, First Chief Minister of Tamil Nadu	233
11	Uri Avnery, Writer & Member of Knesst Founder at Israel	235
12	Thomas W.Lippman, Journalist and Author	237
13	F.J.C Hearnshaw, English Professor	237
14	Dr.T.V.N. Persuad, Canadian Author, & Professor	239
15	(Dr.) Keith L.Moore, Prof. Of Dpt. Of Anatomy	241
16	Karen Armstrong, British Author & Commentator	243
17	Edward Gibbon, English Historian	245
18	De Lacy Evans O'Leary, British Orientalist	245
19	Pandit Sunder Lal, Indian Academician at Thailand	247
20	Alphonse De Lamartine, French Writer, Poet and Politician	249
21	Anita Rai, Indian Author	249
22	Huston Smith, Religious Studies Scholar	251
23	(Prof.) Wilfred Cantwell Smith, Prof. of Comparative Religion	253
24	Diwan Chandra Sharma, Fiji Indian Educationist & Politician	253

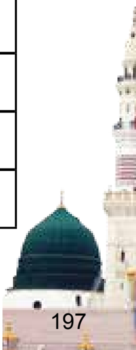

पवित्र कुरान

"ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह! यदि तुम से हो सके कि आकाशों और धरती की सीमाओं को पार कर सको, तो पार कर जाओ; तुम कदापि पार नहीं कर सकते बिना अधिकार–शक्ति के, अंतः तुम दोनों अपने रब की नेअमतों (पुरस्कारों) में से किस–किस को झुठ लाओगे"

25	Yushidi Kusan, Director of the Tokyo Observatory, Japan	255
26	Stanley Lane Pool, British Orientalist and Achaeologist	257
27	Michael H Hart, American Astrophysicist & Author	259
28	(Dr.) Maurice Bucaille, French Surgeon, Scientist & Author	261
29	J.H.Dension, Minister and Author	263
30	Johann Wolfgang Von Goethe, German Writer & Painter	265
31	Mahesh Bhatt, Bollywood Director, India	265
32	(Prof.) Jules Masserman, American Psychonalyst	267
33	(Prof) Joe Leigh Simpson, Dept..of Gynecology, USA	269
34	Manabendra Nath Roy, Founder of Communist Parties	269
35	James Albert Michener, American Author	271
36	(Prof.) David Smauel Margoliouth, Anglican Priest & Author	273
37	Shri Ravi Shankar, Spiritual Leader (India)	275
38	(Prof.) Christiaan Snouck Hurgronje , Author & Colonial Advisor	275
39	A.M.Lothrop Stoddard, American Historian& Journalist	277
40	Benjamin Bosworth Smith, American Protestant Bishop	279
41	Sarojini Naidu, Nightingale of India	281
42	Kavalam Madhava Pannikar, Novelist and Dilopmat of India	281
43	Guru Nanak Dev, First Guru of Sikhs	283
44	(Prof.) Ramakrishna Rao, Philsopher, Psychologist of India	283
45	Joginder singh, Former Director, CBI India	285
46	Annie Besant, Theosophist, Writer & Activist	287
47	Pierre Siman Laplace, French Scholar	287
48	Pringle Kennedy, Barister & Author	289
49	Pope John Paul - II	291
50	Justice Peirre Crabites, Former Chief Judge of Int'l Court	293
51	Philip K.Hitti, A Maronite Christian Scholar of Islam	295

"इस्लाम एक स्कूल है जहाँ के हम छात्र हैं। मुहम्मद (सल्ल०) उस स्कूल के सम्मानित शिक्षक हैं। अल्लाह उसका परीक्षक है। क़्यामत परिणाम की तारीख़ है। जन्नत सबसे अच्छा इनाम है उसके लिये जो दुनिया में अच्छे नम्बरो से पास होता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Islam is a school where we are students. Muhammad (pbuh) is our respectable teacher. Allah is the examiner. Qayamat is date of result. Jannat is the best reward for those who (do best in the exam) Clear the examination with flying colors "

52	Nikaloyevich Tolstoy, Novelist & Philosopher, Russia	297
53	Nelson Mandela, Former President of South Africa	299
54	W.C.Taylor, North Dakota Politician	299
55	Napolean Bonaparte, Great French General	301
56	(Prof.) W. Montgomery Watt, Scottish Historian	303
57	(Sir) William Muir, Scholar and Scottish Colonial Admin.	305
58	William J Durant, American Historian, Writer & Philosopher	307
59	Voltaire, French Philosopher	309
60	Washington Irving, American Author& Essayist	309
61	U.S. Supreme Court Note	311
62	Thomas. W. Arnold, British Orientalist	313
63	S.P. Scott, American Attorney & Banker	313
64	Thomas Carlyle, Scottish Philosopher	315
65	Stobart J W H, British Thinker	317
66	Alfred Martin, American Philosopher and Historian	317
67	George Bernard Shaw, British Dramatist and Play Writer	319
68	Pope, Michael Siryani	319
69	Edward Montet, French Historian	321
70	(Prof.) Alfred Guillane, Dept. of Arabic	321
71	(Dr.) E.Marshall Johnson, American Professor & Author	323
72	Barnaby Rogerson, British Author and Historian	325
73	(Prof.) Alfred Kroner, Dept. of Geology	327
74	Adolf Hitler, German Politician	327
75	Abraham Lincoln, Former President of U.S.A	329
76	(Dr.) Maude Roydon, British Preacher & Author	329
77	Michae Wolfe, American Poet & Author	331
78	Lesley Hazleton, British American Writer	333

Mathematical Miracles of the The Quran

Forgiveness - 234 times	=	Punishment - 117 times
World - 115 times	=	Hereafter - 115 times
Angle - 88 times	=	Devil - 88 times
Hell - 77 times	=	Heaven - 77 times
Women - 23 times	=	Men - 23 times
Zakat - 32 times	=	Blessing - 32 times
Richness -26 times	=	Poverty - 13 times

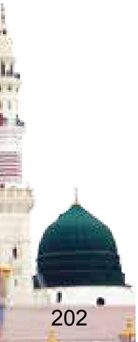

79	John Medows Rodwell,Clergyman of England	333
80	J.W.H. Stab, Organic chemist at Clemson University	335
81	(Dr.) A. Bertherand, French Medical Scientist	335
82	(Sir) John Bagot Glubb, Lieutenant General, Scholar & Author	337
83	John Stuart Mill, British Philospher	337
84	John William Draper, American Scientist & Philosopher	339
85	Sadhu T L Vaswani,	339
86	James George Roche Forlong, Chief Engineer	341
87	Jean L’ Heureux, Interpreter, Canada	341
88	H G Wells, Prolific English Writer	343
89	H.M. Hyndman, Founder of National Socialist Party	343
90	Major Arthur Glyn Leonard, British Military	345
91	Gottlieb Wilhelm Leitner, British Orientlist	345
92	(Dr.) Gustav Weil, German Orientalist	347
93	Dalai Lama	347
	VARIOUS LUMINARIES	209
94	Indira Gandhi	209
95	Atal Bihari Vajpayee	209
96	(Prof.) William W.Hay	209
97	John Austin	209
98	Corsieh	209
99	Cardivo	211
100	Simon Oakley	211
101	Lt.Col.S S MD Nahri	211
102	Dr. Lane Lake	213
103	Alexander Pushkin	213

क्या आप जानते हैं ? कुरान हमें क्या सिखाता है।

"कुरान हमें एक अविश्वसनीय रूप से अमीर आदमी को विफ़ल (फ़िरौन) और एक बेघर को सफ़ल बनाता है। कुरान बताता है सफ़लता (पैग़म्बर इब्राहिम) का धन से और विफ़लता का ग़रीबी से कुछ लेना देना नहीं है"

पवित्र कुरान

You know what the Quran teaches us?

"The Quran teaches us that an incredibly wealthy man can be a failure (Pharaoh) and a homeless man can be successful (Prophet Ibrahim).It teaches us that success has nothing to do with wealth and failure has nothing to do with poverty "

प्रसिद्ध गैर-मुस्लिम विद्वानों द्वारा पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में व्यक्त किए गए विचारः

1) **श्रीमति इंदिरा गांधी,** भारत की तीसरी तथा **प्रथम** महिला प्रधानमंत्री थीं। उन्होंने कहा थाः जिस दिन पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म हुआ था वह अच्छे कार्यों का दिन था और खुशियों का महान दिन था। विश्व के लोगों को हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आदर्शों का अनुगमन करना चाहिए।

2) **श्री अटल बिहारी वाजपेयी,** भारत के ग्यारहवें प्रधानमंत्री थे। उन्होंने पवित्र कुरान और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को यह कहते हुई नज़राना प्रस्तुत कियाः– मैं पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का आदर करता हूँ क्योंकि उन्होंने विगत में बिखरे हुए समाज को एक बनाया। कुरान न केवल मुस्लिमों की पवित्र पुस्तक है, यह भारत के सभी धर्मों के व्यक्तियों के लिए भी है ।

3) **प्रोफ़ेसर विलियम डब्लू,** संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सबसे प्रसिद्ध मैरीन वैज्ञानिक, सैटेलाइट फोटोग्राफी और दूर संवेदी तकनीक के माहिर हैं। प्रो. ने उत्तर दिया मैं इसे अत्यंत रोचक मानता हूँ कि इस प्रकार की सुचना पुरानी धार्मिक पुस्तक कुरान में मिलती है और हमें यह नहीं पता की वे कहाँ से आईं हैं किन्तु मैं इसे अत्यंत रोचक मानता हूँ कि वे लोग यहाँ हैं और खोजने का काम किया जा रहा है। मुझे यह समझना चाहिए कि यह कोई ईश्वरीय वस्तु होनी चाहिए।

4) **जहन आस्टिन,** 24 सितंबर 1927 को कैसल्स विकीली में "मुहम्मद दि प्रोफ़ेट ऑफ अल्लाह" में एक वर्ष से कम समय में वह वास्तव में मदीना के धार्मिक, और अल्पकालिक शासक थे। जिनके पास ऐसा हथियार था जिससे वह विश्व को हिला सकते थे।

5) फ्रांस के एक लेखक **कोरसी** कहते हैं – अपने संदेश से पूर्व और बाद में मुहम्मद (सल्ल०) एक बहादुर घुड़सवार नवयुवक थे जो अपने समाज के मानकों में सबसे ऊपर थे । उनकी उत्कृष्ट विशेषताओं को धन्यवाद देता हूँ कि वह धर्मार्थ मूर्तिपूजक अरब वासियों को एक अल्लाह की पूजन करने के लिए मना सके और अपने एकजुट प्रजातांत्रिक शासन के नीचे वह अवस्थाओं के सभी दृष्ताओं पर विजय पा सके और अरब प्रायद्वीप में बड़े पैमाने पर लड़े गए सभी युद्धों में विजय पा सके। उन्होंने अपने साथियों को बेहतर आचरण और ऊँचे विचारों का पाठ पढ़ाया। इस तरह से वह अपने समाज को अंधकार से निकाल कर प्रकाश में ला सके।

6) फ्रांस के दार्शनिक **कार्दिवो** कहते हैं: मुहम्मद (सल्ल०) प्रेरणायुक्त और विश्वास युक्त पैग़म्बर थे। उन्होंने जिस ऊँचाई को छुआ था, कोई भी व्यक्ति उस कद पर और भाईचारे की जागरूकता को उन्होंने इस्लामिक समुदाय के सदस्यों में पैदा किया वह परिपाटी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) में स्वयं लागू होती है।

7) **साइमन आकेले,** एक बिर्टिश सुधारवादी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ सारासेन अम्पायर लन्दन 1870" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में ये पंक्तियाँ लिखीः– मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन की महानतम सफलता उनकी नैतिक शक्ति से प्रभावित थीं। यह धर्म का प्रचार नहीं है बल्कि उनके धर्म का स्थायित्व ही था जो हमें चकित करता है, विशुद्ध और सटीक छाप मक्का और मदीना में छोड़ी थीं वह आज उस क्रांति के 1200 वर्ष बाद भी भारतीय, अफ़्रीका और तुर्की के

चार बातें कोई नहीं जानता है सिर्फ अल्लाह जानता है:

कोई नहीं जानता है कि माँ के गर्भ में क्या है, लेकिन अल्लाह जानता है
कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, लेकिन अल्लाह जानता है
कोई नहीं जानता है कि बरसात कब होगी लेकिन अल्लाह जानता है
कोई नहीं जानता है कि वह कहाँ मरेगा, लेकिन अल्लाह जानता है

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

Four things that none knows but Allah :

None knows what is in the womb, but Allah
None knows what will happen tomorrow, but Allah
None knows when it will rain, but Allah
None knows where he will die, but Allah

क़ुरान मतावलबियों ने कायम रखी है। मुहम्मद (सल्ल०) के मतावलबियों ने मानव की संवेदनाओं और परिकल्पनाओं के स्तर तक अपने धर्म और पूजा के उद्देश्य को एक समान रूप से समझा है। मैं एक ईश्वर में विश्वास करता हूँ और मुहम्मद (सल्ल०) जो ईश्वर के दूत है, वह इस्लाम का सरल और अचल अध्यवसाय है। किसी देवता की बौद्धिक छवि को किसी दृश्यमान मूर्ति द्वारा नीचा नहीं दिखाया जा सकता है, पैग़म्बर (सल्ल०) का सम्मान करने से कभी भी मानवीय गुणों की माप का उल्लंघन नहीं हुआ और उसकी जीवन अवधारणा ने धर्म की सीमाओं के भीतर बंधे उसके अनुशासन की कृतज्ञता को रोके रखा है"।

8) कर्नल एस एस एम डी नाहरी, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) महान विजेता थे, हथियारों से युद्ध नहीं जीता जाता, यह जीत उन हथियारों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों के कारण मिलती है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने मानवों को विकसित किया जो उनके वास्तविक हथियार और ताकत थे। युद्ध एक सिद्धान्त "ऊँचा आर्दश" पैग़म्बर (सल्ल०) और उनके अनुयाइयों के जीवन में भली. भांति देखा जा सकता है। जिन्होने हमेशा अपने से अधिक ताकतवर शत्रु सेना का सामना किया जो संख्या और हथियारों कि गुणवत्ता दोनों दृष्टि से उनसे अधिक बलवान होती थीं। उन्होंने बद्र, उहद, खैबर और ताबुक युद्ध में विजय पायी। यह ऐसे आदमियों का गुण था जिन्हें उन्होंने तैयार किया था। यह उनके समय के नेतृत्व तथा उनके बाद खुल्फाये राशिदीन (इस्लामिक साम्राज्य के प्रथम चार खलीफाओं) के समय के नेतृव का परिणाम था जब मुस्लिम फौज मानवता में इस्लाम और शांति के प्रचार के लिए विश्व के प्रत्येक दिशा में निकली"।

9) डा. लेन लेक, अल्लाह (सर्वशक्तिमान) ने जिन शब्दों का प्रयोग करते हुए मुहम्मद (सल्ल०) के ऐतिहासिक जीवन का वर्णन किया था जिसमें अल्लाह ने यह कहते हुए पैग़म्बर (सल्ल०) के मिशन के कारणों का उल्लेख किया था "और किसी अन्य कार्य के लिए तुम्हें हमने नहीं भेजा है सिवाए इस संसार के लिए दया के रूप में। इन शब्दों के अलावा किन्हीं अन्य शब्दों के माध्यम से पैग़म्बर (सल्ल०) ऐतिहासिक जीवन का वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा पैग़म्बर (सल्ल०) ने स्वयं ही सिद्ध कर दिया है कि वह प्रत्येक कमज़ोर व्यक्ति और किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति सबसे अधिक दया दर्शाते थे जिसको उस दया की आवश्यकता थी। मुहम्मद (सल्ल०) सभी अनाथों, गरीबों, ऐसे व्यक्तियों जिनकी किस्मत साथ नहीं देती थी, कमज़ोर, कामगारों और दर्द से, तड़प से ग्रस्त और परेशानी का सामना कर रहे व्यक्तियों पर दया दर्शाते हैं। मैं अल्लाह से दुआ करूंगा कि वह उन्हें पैग़म्बर (सल्ल०) और उनके अनुयाइयों पर अपनी कृपा बरसाएं"।

10. 19 वीं सदी के लेखक और कवि एल्किज़ेन्डर पुशकिन, पुशकिन पूर्व काल के ऐसे कवियों में शुमार हैं जो अपनी कविताओं में पैग़म्बर (सल्ल०) की कथा से काफी प्रभावित हैं विशेष तौर पर पैग़म्बर (सल्ल०) की झलक से जिसमें वह पैग़म्बर वाद की पहले की स्थिति के बारे में इस संसार पर पैग़म्बर (सल्ल०) के प्रभाव और उस की अवस्थिति की वास्तविकता की बात करते हैं। अपनी कविता "क़ुरान से एक झलक" से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने पुशकिन को किस प्रकार से, किस सीमा तक प्रभावित किया। वह पवित्र क़ुरान के कई पदों का उदाहरण करते हुए कविता को शुरू करते हैं। हम यह उल्लेख कर रहे हैं कि पुशकिन क्या कहते हैं: छाती फटी हुई थीं इसमें से धड़कता हुआ दिल बाहर आ गया था, देवदूतों ने उसे साफ किया और पुनः उसे बदल दिया। पैग़म्बर (सल्ल०) उठ खड़े हुए, विश्व में चारो ओर गए और लोगों के हृदय को प्रकाशित किया।

"प्रत्येक समस्या का हल सब्र (धर्य) धारण करने और म़ाफी मांगने से मिलता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The solution to every problem is in Sabr (patience) and Istigfaar (seeking forgiveness)"

Tribute Paid To Prophet Muhammad (pbuh) and the holy Quran By Various Luminaries

1. Indira Gandhi was the fourth and the first woman Prime Minister of India said, “The day on which Prophet Muhammad (pbuh) was born, is the day of good deeds and the great day of happiness.” “People of the world should follow the ideals of Hazrat Muhammad (pbuh).”

2. Atal Bihari Vajpayee is an Indian statesman and eleventh Prime Minister of India paid a tribute to holy Quran and Prophet Muhammad (pbuh) in these words: “I respect Prophet Muhammad (pbuh) as he has united the society that was divided in the past. Quran is the holy book not only for Muslims but also for the people of all religions of India.”

3. Professor William W. Hay is one of the best known marine scientists in the United States, satellite photography and remote-sensing techniques. Professor Hay replied: “I find it very interesting that this sort of information is in the ancient scripture of the Holy Qur’an, and I have no way of knowing where they would come from, but I think it is extremely interesting that they are there and that this work is going on to discover it, the meaning of some of the passages. Professor Hay: Well, I would think it must be the divine being!”

4. John Austin, “Muhammad (pbuh) the Prophet of Allah,” in T.P.’s and Cassel’s Weekly for 24th September 1927. “In a little more than a year he was actually the spiritual, nominal and temporal ruler of Medina, with his hands on the lever that was to shake the world.”

5. The French writer **Corsieh** says: “Both before and after his message, Muhammad (pbuh) was a brave, gallant young man, high above his society’s standards. Thanks to his excellent characteristics, he managed to guide the bigoted, idol worshipping Arabs to the worship of the One Allah. And under the umbrella of his united democratic ruling, he managed to overcome all instances of chaos, all sorts of conflicts and fighting so widespread all over the Arabian Peninsula. He taught his compatriots the best conduct and the loftiest ideas, leading thus the Arab society from darkness to civilization.”

"आइये इस्लाम के सेवक बनकर आगे बढ़ें, जनगण को आर्थिक, सामाजिक तथा शिक्षित रूप से संघठित करें। मुझे विश्वास है कि आप एक ऐसी शक्ति बन जायेंगें जिसे हर कोई स्वीकार करने पर बाध्य होगा"

मोहम्मद अली जिन्नाह

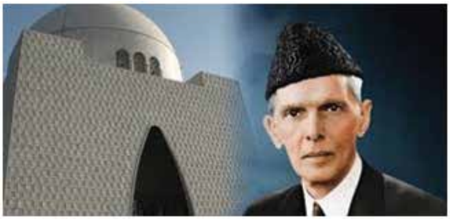

"Come forward as servants of Islam, organize the people economically, socially, educationally and politically and I am sure that you will be a power that will be accepted by everybody"

Mohammad Ali Jinnah

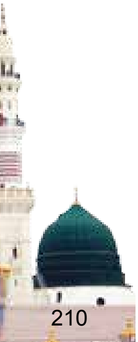

6. The French philosopher **Cardivo** says: “Muhammad is the inspired faithful prophet. No one could ever cast doubt on the lofty position he had. The awareness of equality and brotherhood that he established among the members of the Islamic community was in practice applicable to the Prophet himself.”

7. Simon Oakley was a British Orientalist and in his book ‘History of Saracen Empire’ London, 1870, he wrote these lines about Prophet Muhammad (pbuh) “The greatest success of Muhammad’s life was affected by sheer moral force. It is not the propagation but the permanency of his religion that deserve our wonder, the same pure and perfect impression which he engraved at Mecca and Madina is preserved after the revolutions of twelve centuries by the Indians, the African and the Turkish proselytes of the Quran……The Muhammad (pbuh) have uniformly withstood the temptation of reducing the object of their faith and devotion to a level with the senses and imagination of man. I believe in One God and Mahomet the Apostle of God is the simple and invariable profession of Islam. The intellectual image of the deity has never been degraded by any visible idol; the honors of the Prophet have never transgressed the measure of human virtue, and his living precepts have restrained the gratitude of his discipline within the bounds of reason and religion”.

8. Lt. Col. S S M D Nahri, Prophet Muhammad (pbuh) the greatest Conqueror “It is not the weapon, but the ‘man’ behind the weapon, that wins the war. Prophet Muhammad (pbuh) developed human beings who were the real weapon and force. The principle of war, “High morale” is best witnessed in the life of prophet and his followers, who always faced superior enemy qualitatively in terms of means and quantitatively both in terms of men and material. He came out victorious in Badr, Uhad, Kaiber, and Tabouk. It was the quality of man which he prepared that resulted in providing the best possible leadership during his times and the times of khula-fe-a-Rashideen (First four Caliphs of Islamic Empire), when Muslim forces moved in all possible directions in the world to propagate Islam and peace to mankind”.

"कुरान कोई बीज गणित या रेखा गणित की पुस्तक नहीं है। यह उन नियमों का संग्रह है जो मानवमात्र को उस पथ का मार्ग निर्देशन देती है जिसे महानतम विचारक झुठला नहीं पाए हैं"

अल्बर्ट आइंस्टाइन

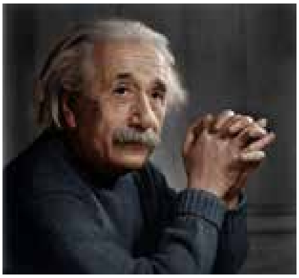

"Quran is not a book of algebra or geometry but is a collection of rules which guides human beings to the right way, the way which the greatest philosophers are unable to decline it"

Albert Einstein

9. Dr. Lane Lake, The Arabs “The historic life of Muhammad (pbuh) cannot be described using any words that are better than what Allah (The Almighty) says in a few words through which he mentions the reason of the Prophet’s mission saying; “and in no way have we sent you except as a mercy to the world.” Moreover, the Prophet has proved by himself that he has the greatest mercy for every weak and everyone who needs help. Muhammad (pbuh) was a true mercy for all the orphans, poor, wayfarers, fate-stricken, weak, workers and the people of pains and trouble. I, with love and longing, ask Allah for prayers to be upon him and his companions.”

10. The 19th century writer and poet **Alexander Pushkin**, Pushkin was among the early Russian poets who were inspired by the Prophet’s biography in his poems, especially in Glimpses from the Prophet in which he talked about early stage of prophet hood and the Prophet’s reflection on the universe and the reality of existence. In his poem Glimpses from Quran, it becomes clear how Islam influenced Pushkin. He begins the poem by quoting a number of verses from holy Quran. We are mentioning what Pushkin says: The chest was cut, removed from it the beating heart, the angels washed it, replaced it again! Arise you Prophet move around the world, enlighten the hearts of the people.

"दो तरह के लोगों को छोड़कर कुछ और बनने की ख्वाहिश न करो। पहली उस व्यक्ति जैसा बनने के ख्वाहिश जिसे अल्लाह ने धन प्रदान किया है और वह उसे सही तरीक़े से खर्च करता है,दूसरा उस व्यक्ति जैसा बनने की ख़्वाहिश जिसे अल्लाह ने बुद्धिमान बनाया और वह अपनी बुद्धि से काम करता है और बुद्धि से काम करने की सीख देता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Do not wish to be like anyone except in two cases. The first is, a person whom Allah has given wealth and he spends it righteously; the second is, the one whom Allah has given wisdom (the Holy Quran) and he acts according to it and teaches it to others"

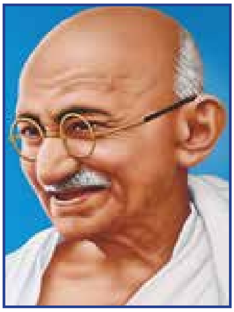

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के विख्यात नेता **महात्मा गांधी** ने अपनी पुस्तक **"यंग इंडिया** "और" **हरिजन**" में इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में निम्नलिखित बातें कहीं: मैंने पवित्र कुरान कई बार पढ़ी है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि पवित्र कुरान में सच्चाई और अहिंसा की शिक्षा दी गई है। **मैं मंत्रिमंडल को यह सलाह दूंगा की स्वतंत्र भारत को हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर जैसे ख़लीफाओं के प्रशासन की ज़रूरत है।** पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के महान पैग़म्बर थे। उनका महान चरित्र ही इस्लाम के प्रसार का कारक था न कि तलवार। इस्लामिक शिक्षाओं का अनुसंधानकरने पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पवित्र कुरान एक दैवीय रहस्योद्घाटन है। **यदि हिन्दू इस्लाम का आदर सहित अध्ययन करें तो वे भी इस्लाम को उतना ही प्यार करेंगे जितना कि मैं करता हूँ।**
मैं यह जानना चाहता था कि लाखों व्यक्तियों के हृदय पर सबसे अधिक राज कौन करता है। मुझे यह विश्वास हो गया है कि तलवार के बल पर इस्लाम लोगों के दिलों में जगह नहीं बना सकता था, यह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की अत्यंत सरलता थी और अपने स्वत्व का पूर्ण विलोपन था,उनकी प्रतिज्ञाओं का निष्ठापूर्वक सम्मान किया गया, अपने मित्रों के प्रति उनमें इतनी अगाद्य लगन थी,उनकी निभिकर्ता, भयहीनता, ईश्वर और अपने मिशन के प्रति इतना अगाद्य लगन थी कि इस्लाम सबके हृदय को जीत पाया।

Mahatma Gandhi, the pre eminent leader of Indian Independence movement in British ruled India in his books "**Young India"** and "**Harijan"** mentioned the following about Islam & the Prophet:-
"I have read the Holy Qur'an several times. I am really glad to find that the Holy Qur'an teaches truthfulness and nonviolence. My advice to the cabinet is that free India needs administrators like the caliphs (Presidents) Abu Bakr and Umar. Prophet Muhammad (pbuh) is a great prophet of God. His lofty character was solely responsible for the spread of Islam and not the sword".
"After research on Islamic teachings, I have reached the conclusion that the Holy Qur'an is a divine revelation."
"If Hindus will study Islam with respect, then they also will love Islam like I do."
"I wanted to know the best of one who holds today undisputed sway over the hearts of millions of mankind….I became more than convinced that it was not the sword that won a place for Islam in those days in the scheme of life. It was the rigid simplicity , the utter self – effacement of the Prophet, the scrupulous regard for his pledges, his intense devotion to his friends and followers, his intrepidity, his fearlessness, his absolute trust in God and in his own mission.

"सर्वप्रथम तुम्हारे विरोधी तुम्हारी उपेक्षा करेंगे, फिर तुम पर हॅसेंगे, और फिर तुमसे संघर्ष करेंगे, उसके बाद तुम्हारी जीत होगी"

महात्मा गाँधी / Mahatma Gandhi

"First they (Your opponents) ignore you, then they laugh at you, finally they fight you, then you win"

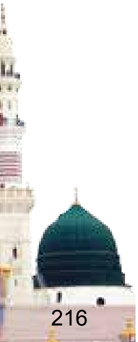

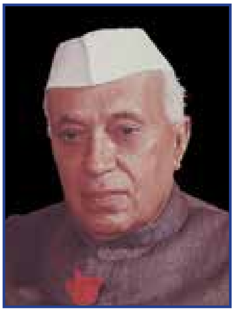

पंडित जवाहर लाल नेहरू, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। उन्हें आधुनिक भारत को सम्प्रभु,समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणराज्य का निर्माता कहा गया है। उन्होंने इस्लाम के बारे में अपनी पुस्तक **"भारत एक खोज"** में लिखा है कि इस्लाम के भाईचारे का विचार और इसके मतावलंबियों की वैचारिक समानता ने इसे शक्तिशाली बनाया विशेषकर हिन्दू धर्म में जहाँ उनके साथ समान व्यवहार नहीं किया जाता था। अपनी पुस्तक **"विश्व इतिहास की झलक"** में उन्होंने लिखा, इस्लाम में भी उन्हें भाईचारे, **जो मुस्लिम है उनमें समानता का सन्देश देता है। इस प्रकार इस्लाम ने लोगो के समक्ष प्रजातंत्र का एक उपाय सामने रखा।** आजकल ईसाई धर्म से यदि तुलना करें तो भाईचारे का यह सन्देश न केवल अरब वासियों को प्रभावित करता है, अपितु उन देशों के निवासियों को भी प्रभावित करता है जहाँ जहाँ इस्लाम का प्रसार हुआ।

Pandit Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India and considered to be the architect of the modern Indian nation – a sovereign, socialist, secular and democratic republic also mentioned and talks about Islam.

In his book "The Discovery of India" he observes : "The idea of the brotherhood of Islam and the theoretical equality of its adherents made a powerful appeal especially to those in the Hindu fold who were denied any semblance of equal treatment."

In his "Glimpse of World History" Nehru Observes: Islam also gave them a message of brotherhood – of the equality of all those who were Muslims. A measure of democracy was thus placed before the people. Compared to the corrupt Christianity of the day, this message of brotherhood must have had a great appeal, not only for the Arabs, but also for the inhabitants of many countries where they went.

"तुम दीवारों पर टंगी तस्वीरों को बदलकर इतिहास की धारा को परिवर्तित नहीं कर सकते हो"

जवाहरलाल नेहरू / Jawaharlal Nehru

"You don't change the course of history by turning the faces of portraits to the wall"

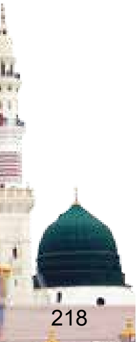

प्रो० तेजातत तेजासेन, थाईलैंड की चियांगमई यूनिवर्सिटी में शरीर क्रिया विभाग के अध्यक्ष ने सऊदी मेडिकल कॉन्फ्रेंस VIII में पवित्र कुरान और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की और उनके जीवन को अत्यधिक प्रभाषित किया जैसा कि उनके अंतिम वाक्य से स्पष्ट होता है। गत तीन वर्षों से मैं कुरान में दिलचस्पी लेने लगा हूँ। कुरान का अध्ययन करने और इस सम्मलेन से जो कुछ मुझे ज्ञात हो पाया है, मेरा विश्वास है कि आज से क़रीब चौदह सौ साल पहले कुरान में जो कुछ बताया गया है वह सच होना चाहिए। उसे वैज्ञानिक विधियों से सिद्ध किया जा सकता है। चूँकि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) न तो पढ़ सकते थे और न ही लिख सकते थे वो ऐसे सन्देशवाहक थे, जिनको सच्चाई पर विश्वास था। यह सच्चाई उन्हें उस एक ईश्वर से ज्ञान प्राप्त करने पर पता चली जो इस जगत का सृजनकर्ता है। यह सृजनकर्ता ईश्वर हो सकता है। अतः मैं यह सोचता हूँ कि अब समय आ गया है कि यह कहा जाये कि संसार में ईश्वर के आलावा कुछ भी अलग चीज़ नहीं है जिसकी पूजा की जाए। यदि पूजा करनी है तो सिर्फ अल्लाह की, और मुहम्मद (सल्ल०) का अनुसरण किया जाए,जो अल्लाह के संदेशवाहक हैं। इस सबसे बहुमूल्य बात यह है कि मुझे यहाँ आकर कुछ लाभ प्राप्त हुआ है वह लाभ है "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"।

Prof. Tejatat Tejasen, is the Chairman of Department of Anatomy at Chiang Mai University, Thailand and in his **speech in Saudi Medical Conference – VIII** he paid a tribute holy Qur'an and to Prophet Muhammad (pbuh) in these golden words and which had a profound impact upon his life as is evident by his last sentence: "During the last three years, I became interested in the Quran . . . From my study and what I have learned from this conference, I believe that everything that has been recorded in the Quran fourteen hundred years ago must be the truth that can be proved by the scientific means. Since the Prophet Muhammad (pbuh) could neither read nor write, Muhammad (pbuh) must be a messenger who relayed this truth, which was revealed to him as an enlightenment by the one who is eligible [as the] creator. This creator must be God. Therefore, I think this is the time to say there is no god to worship except Allah (God), Muhammad (pbuh) is Messenger (Prophet) of Allah (God)... The most precious thing of all that I have gained by coming to this place is La ilaha illa Allah, Muhammadur rasoolu Allah, and to have become a Muslim."

"इस्लाम हिंसा या शांति को बढ़ावा नहीं देता इस्लाम केवल एक धर्म है, और दुनिया के हर धर्म की तरह, यह उसके अपनाने वाले पर निर्भर करता है कि वह उसको किस रूप में प्रस्तुत करे। यदि आपकी प्रविर्ती हिंसक है तो आपका धर्म भी हिंसक होगा"

रेज़ा असलान

“ Islam doesn’t promote violence or peace. Islam is just a religion, and like every religion in the world, It depends on how you adopt it. If you’re violent, your Islam, Judaism, Christianity, Hinduism is also going to be violent”

Reza Aslan

डा.एस.राधाकृष्ण, भारत के दार्शनिक और दूसरे राष्ट्रपति थे। वह निम्नलिखित पैराग्राफ में इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं और उनका समर्थन करते हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जिस इस्लाम धर्म का प्रतिपादन किया उसका आशय ईश्वर की इच्छा की प्रस्तुति है। यह धर्म स्वयं को समर्पित करने, रहस्योद्घाटनों और स्वीकार करने तथा ईश्वर के आदेश को मानने की शिक्षा देता है। इस्लाम इंसानों में सार्वभौमिक भाईचारे को स्थापित करता है। इस्लाम से यह शिक्षा मिलती है कि कोई व्यक्ति तब तक सच्चा धर्म को मानने वाला नहीं बन सकता है जब तक वह भाई के लिए वैसी ही चाहत बनाकर न रखे जैसी कि वह स्वयं अपने लिए चाहता है। ईश्वर उस व्यक्ति से प्रेम नहीं करता है जो ईश्वर की बनाई हुई रचना से प्रेम न करे। वह व्यक्ति ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय होता है जो उस ईश्वर की बनाई हुई रचना से सबसे अधिक प्रेम करे। इस्लाम में गाली देना, क्रोध करना, चुगली करना, बुराई करना,रक्तपात करना,घुसखोरी करना, बेईमानी करना, शराब पीना, दुश्मनी करना, लालच करना, झूठ बोलना, कंजूसी दिखाना, घमंड करना, आत्महत्या करना, हिंसा करना, मक्कारी करना, युद्ध करना आदि की भर्त्सना की गई और भाईचारा बढ़ाना, दान देना, स्वच्छता, शुचिता, माफ़ी देने, मित्रता करना, कृतज्ञता दर्शाने, विन्रमता दर्शाना, न्याय करने,दया दर्शाना, प्यार करना, शिष्टाचार, शालीनता दर्शाने, ह्रदय की पवित्रता, सदाचारिता, सच्चाई और विश्वास करने का आदेश दिया गया है। आगे उन्होनें कहा है कि "मुहम्मद" (सल्ल०) जैसे विचारक के लिए धर्म परिवर्तन की वकालत करना संभव नहीं था। **हम व्यक्तियों को अपना धर्म परिवर्तन करने के लिए बाध्य नहीं कर सकते हैं। क़ुरान की आयत इस तथ्य का समर्थन करती हैः धर्म मानने के लिए किसी पर दबाव न डाला जाए।**

Dr. S Radhakrishnan, was an Indian Philosopher, the first Vice President and the second President of India clearly upholds and supports the teachings of Islam and of Prophet Muhammad (pbuh) in the below mentioned paragraph.

"Islam, the religion founded by Prophet Muhammed (pbuh), means submission to the will of God. It is a religion of self-surrender, acceptance of the revelations and following the commands of God. Islam establishes a universal brotherhood of man. Islam teaches that "No man is a true believer unless he desires for his brother that which he desires for himself. God will not be affectionate to that man who is not affectionate to God's creatures. He is the most favored of God from whom the greatest good comes to His creatures."

In Islam, abuse, anger, avarice, back-biting, blood-shedding, bribery, dishonesty, drinking, envy, flattery, greed, hypocrisy, lying, miserliness, pride, suicide, violence, wickedness, warfare, etc., are deprecated and virtues such as brotherhood, charity, cleanliness, chastity, forgiveness, friendship, gratitude, humility, justice, kindness, love, mercy, moderation, modesty, purity of heart, righteousness, truth and trust are enjoined".

Further, Dr. Radhakrishnan has stated, "It is not possible for a thinker like Muhammad (pbuh) to advocate forced conversions. We cannot compel men to change their beliefs." The following ayat from the Qur'an supports this fact:

"Let there be no compulsion in religion."

"विद्वानों की गलतियाँ और गुमराह करने वाले भ्रामक शासको के विचारों का समर्थन करने के लिए पवित्र कुरान का गलत तरीके से व्याख्या करना इस्लाम के लिए विनाशकारी होगा"

हज़रत उमर बिन खत्ताब / Hazrat Umar- Bin- Khattab

"The mistakes of the scholars and the misinterpretation of the Holy Quran to support the views of the misguided rulers will prove detrimental to Islam"

रथ क्रस्टन, एक अमरीकी लेखिका और धर्म की एक व्याख्याता थीं। उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में अपनी पुस्तक में लिखाः **मुहम्मद (सल्ल०) ने कभी भी युद्ध को नहीं भड़काया और न ही रक्तपात किया। उन्होंने जो भी युद्ध लड़ा वह युद्ध थोपे गए युद्ध थे।** उन्होंने जीवित रहने के लिए युद्ध लड़ा। उन्होंने अपने समय प्रचलित हथियारों से युद्ध लड़ा। वास्तव में 140,000,000 ईसाई वाला कोई भी देश एक बम गिराकर 120000 नागरिकों को बेसहारा छोड़ देता है, अपने नेता से प्रश्न नहीं करता है जो एक बम से पांच या छह सौ व्यक्तियों को बुरी तरह से मार डालता है। सातवीं शताब्दी में अरब निवासी पैगम्बर (सल्ल०) द्वारा किए गए कत्लेआम को सकारात्मक तरीके से देखते हैं और इस उन्नत और ज्ञान प्राप्त 20वीं शताब्दी में हुए कत्लेआम से इसकी तुलना नहीं की जा सकती है। इस अवसर पर हमें ईसाइयों के द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए कत्लेआम को नहीं भूलना चाहिए जब ईसाई लड़ाकों ने गर्व से रिकार्ड किया कि उन्होंने मुस्लिम मलेच्छों के हृदयों में गहरी चोट पहुंचाई है।

Ruth Cranston, an American author and lecturer on religion, write, in her book "WORLD FAITH" about Prophet Muhammad (pbuh) :

"Muhammad (pbuh) never instigated fighting and bloodshed. Every battle he fought was in rebuttal. He fought in order to survive …. And he fought with the weapons and in the fashion of his time… Certainly no 'Christian' nation of 140,000,000 people who today dispatch 120,000 helpless civilians with a single bomb can look askance at a leader who at his worst killed a bare five or six hundred. The slayings of the Prophet of Arabia in the seventh century look positively & purely incomparable with our own in this 'advanced' and enlightened twentieth. Not to mention the mass slaughter by the Christians – when, Christian warriors proudly recorded, they 'waded ankle – deep in the gore of the Muslim infidels."

"लोग सो रहे हैं जब तक जीवित हैं, जब वे मर जाते हैं वे जाग जाते हैं"

हज़रत अली

“People are asleep as long as they are alive, when they die they wake up”

Hazrat Ali

स्वामी विवेकानन्द, भारतीय हिन्दू भिक्षुक और 19वीं सदी में संत रामकृष्ण के परम शिष्य थे। वह एक बड़े दार्शनिक और धर्म प्रचारक थे। उन्होंने अपने मित्र को लिखे एक पत्र में यह कहा: हिन्दू यह श्रेय ले सकते हैं कि वे अन्य धर्मों के मुक़ाबले सबसे पहले आए। हिन्दू, हिब्रू या अरब जाति से सबसे पुरानी जाति होने के नाते किन्तु व्यावहारिक तौर पर अदैतवाद, जो सभी मानव में उनकी अपनी आत्मा के रूप में निवास करता है। वह सार्वभौमिक तौर पर हिंदुओं में कभी भी विकसित नहीं हों पाया। दूसरी ओर मेरा अनुभव यह कहता है कि यदि किसी धर्म ने प्रशंसापूर्वक ढंग से इस समानता की ओर अनुगमन किया है तो वह "इस्लाम" है, और कोई अन्य धर्म नही। **अतः मैं दृढ़तापूर्वक आग्रह करता हूँ कि वेदांत के सिद्धान्त चाहे कितने भी उत्कृष्ट और आश्चर्यजनक क्यों न हों, वे इस्लाम की व्यावहारिक मदद के बिना बड़े पैमाने पर मानव के लिए पूरी तरह से मूल्यविहीन हैं। इस्लाम लोगों के लिए सन्देश के रूप में आया। इस का पहला सन्देश समानता है और दूसरा धर्म प्यार है।** इसमें धर्म,वर्णया किसी अन्य का कोई स्थान नहीं है। इसे धारण करो, इस में आज के युग की विशेषताएं निहित हैं। इसका महान सन्देश निश्चय ही साधारण है। एक ईश्वर में विश्वास रखो,वह स्वर्ग और धरती का सृजनकर्ता है। उसके बिना किसी चीज का सृजन नहीं हो सकता है।

Swami Vivekananda, was an Indian Hindu monk and the chief disciple of the 19th century saint Ramakrishna. He was a great philosopher and preacher. In a letter written to his friend said"

The Hindus may get the credit of arriving at it earlier than other races, they being an older race than either the Hebrew or the Arab: yet practical Advaitism, which looks upon and behoves with all mankind as one's own soul, was never developed among the Hindus universally. On the other hand, my experience is that if ever any religion approached to this equality in appreciable manner, it is Islam and Islam alone.

Therefore, I am firmly persuaded that without the help of practical Islam, theories of vedantism however fine and wonderful they may be, are entirely valueless to the vast mass of mankind.

(Islam) came as a message for the masses. The first message was equality. There is one religion Love. No more question of race, color, (or) anything else. Join it that practical quality carried the day. The great message was perfectly simple. Believe in one God, the creator of heaven and earth. All was created out of nothing by him."

“Only in Islam
do the king and peasant
bow down together side by side
Proclaiming Allah’s, Greatness”

"सिर्फ इस्लाम धर्म में ही
राजा और प्रजा एक साथ
अल्लाह(ईश्वर) की इबादत करते हैं
और उनकी महानता की गुणगान करते हैं"

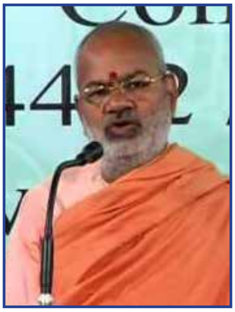

स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य, भारत में एक हिन्दू धार्मिक नेता हैं। उन्होंने पटना में सीरत–उन–नबी पर अपने भाषण में इन शब्दों में इस्लाम और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की: **इस्लाम एक अदभुत धर्म है और इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) मानवता के इतिहास के महानतम व्यक्ति हैं।** उन्होंने इस्लाम की शिक्षा और समझबूझ के बारे में बातें बताई। पैग़म्बर का जीवन और शिक्षाएं इसका श्रेष्ठ स्रोत है। उन्होंने आगे कहा हम पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में बात कर रहे हैं। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह इतिहास के एक महानतम व्यक्ति हैं। **यदि कोई इस्लाम के बारे में कुछ जानना चाहता है तो उसे पैग़म्बर (सल्ल०) के जीवन और उनकी शिक्षाओं का आकलन करना चाहिए।**

सीरत–उन–नबी पर व्याख्यान देते समय स्वामी जी, जो "हिन्दु मुस्लिम जन एकता मंच" के प्रर्वतक भी हैं, ने कहा की शांति और मानवता इस्लाम की शिक्षा का सार है। **किन्तु दुर्भायवश अधिकांश मुस्लिम इस्लाम की शिक्षाओं का पालन नहीं कर रहे हैं और उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन से शायद ही कुछ सीखा है। उन्होंने आह्वान किया कि प्रत्येक मुस्लिम का उसके धर्म के अनुसार यह कर्तव्य बनता है कि वह मानवता की रक्षा करे, उसे संरक्षित करे। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने हमेशा ही शत्रुओं को माफ़ किया और उस समय संयम दिखाया जब लोगों ने उन्हें चोट पहुंचाई।**

Swami Laxmi Shankaracharya, is a Spiritual Hindu leader of India. in his lecture on Seerat-un-nabi at Patna he praised Islam and the Prophet Muhammad in the following words:

“Islam is a wonderful religion and prophet of Islam, Hazrat Muhammad (Pbuh) is the greatest person in the history of mankind . He also said for learning and understanding Islam, Prophet’s (pbuh) life and teachings are the best source.

He further stated, “we are talking about prophet Muhammad (pbuh) and we should keep it in our mind that he is the greatest individual in history. If anyone wants to know about Islam, One should judge Islam by prophet’s (pbuh) life and his teachings.

While delivering a lecture on “Seerat-un-Nabi”, Swami who is also the founder of "Hindu Muslim Jan Ekta Manch", said that peace and humanity is the core teaching of Islam. But, unfortunately, most of the Muslims don’t follow Islamic teachings and they hardly learn from the life of Prophet Muhammad (pbuh).

He urged, “It is the duty of every Muslim according to their religion to save and protect the humanity, Prophet Muhammad (pbuh) always forgave his enemies and showed patience when he was harmed by others.”

"इस्लाम का एक मात्र सन्देश धैर्य रखना, माफ़ करना और प्रास्परिक एकता बनाये रखना है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम सन्देशवाहक का पूर्ण जीवन इसी उद्देश्य को समझाने में व्यतीत हुआ"

अज्ञात / Anonymous

"The singular message of Islam is to propagate tolerance, forgiveness and maintain mutual peaceful brotherhood. The entire life of prophet Muhammad (pbuh) remained devoted to unequivocal explanation of this message of Islam"

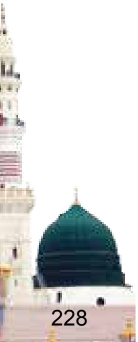

पंडित ज्ञानेन्द्र देव शर्मा शास्त्री, आर्य समाज समुदाय के सदस्य थे।उन्होंने अपनी पुस्तक "दुनिया का हादी" में इन शब्दों में गैर–मुस्लिम समुदायों को इस्लाम के बारे में किए गए गलत निरुपण के बादलों को हटाने का सराहनीय कार्य किया: इस्लाम की पक्षपात पूर्ण आलोचना और विशेषकर ऐसे व्यक्ति जो देश में हिन्दू–मुस्लिम दंगे भड़काना चाहते हैं, वे कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मदीना में सत्ता प्राप्त करने के बाद दया और सहृदय वाली अपनी छवि को कायम नहीं रख पाए। वहाँ पर उन्होंने बल और हिंसा का प्रयोग किया और सत्ता स्थापित और धन प्राप्त करने के जीवन पर्यन्त उद्देश्य के लिए क्रूर हिंसक पैगम्बर बन गए। वह धैर्य संतुलन और स्थायित्व के अपने आदर्श से पतित हो गए। **लेकिन यह उन प्रेक्षकों का विचार है जो पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं और विभाजनकर्ता हैं। उनकी सोच संकीर्ण है और उनकी आँखों के सामने अज्ञानता का आवरण ढका हुआ है। वे रौशनी के बजाय आग का अनुभव कर रहे हैं, खूबसूरती के बजाय भद्दापन देख पा रहे हैं और अच्छाई के स्थान पर बुराई का अनुभव कर रहे हैं। यह उनकी अपनी चरित्रहीनता को परिलक्षित करता है इसकी आलोचना करने वाले व्यक्ति अंधे हैं।** वे यह नहीं देख पा रहे हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) की तलवार दया, अनुकंपा, मैत्री और माफ़ करने वाली तलवार थी जो शत्रुओं पर विजय प्राप्त करती है और उनके ह्रदय में भरे हुए मैल को साफ करती है। **उनकी तलवार लोहे की बनी तलवार से अधिक पैनी थी।**

Pandit Gyanandra Dev Sharma Shastri, is a Member of Arya Samaj Community and in his book, 'Dunya ka Hadi Ghairon Ki Nazar Main', makes a noble effort to dispel the cloud of misrepresentation of Islam: to the non Muslim communities through these words

"Biased critics of Islam and especially those who want to provoke Hindu-Muslim riots in the country say that Hazrat Muhammad (pbuh) after acquiring power in Medina could not maintain his facade of mercy and kindness. There he used force and violence and became a murderous prophet to achieve his life-long aim of power, status and wealth. He fell short of his own ideal of patience, moderation and endurance. But this is the view of those observers who are prejudicial and partisan, who are narrow minded and whose eyes are covered by a veil of ignorance. They see fire instead of light, ugliness instead of beauty and evil instead of good. They distort and present every good quality as a great vice. It reflects their own depravity...The critics are blind. They cannot see that the only 'sword' Muhammad (pbuh) wielded was the sword of mercy, compassion, friendship and forgiveness—the sword that conquers enemies and purifies their hearts. His sword was sharper than the sword of steel."

"इस जीवन काल में हमारा प्रमुख उद्देश्य दूसरे व्यक्तियों की मदद करना है। और यदि हम किसी की मदद नहीं कर सकते हैं तो कम से कम उनको कोई नुकसान न पहुंचाए"

दलाई लामा / Dalai Lama

"Our prime purpose in this life is to help others. And if you can't help them, at least don't hurt them"

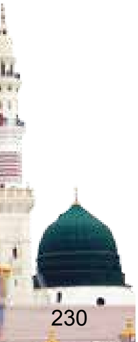

सर सी पी आर अय्यर, भारतीय अधिवक्ता, प्रशासक और राजनीतिज्ञ थे। एक हिन्दू होने के बावजूद वह इस बात पर बल देते है कि जहाँ तक प्रजातांत्रिक मूल्यों का प्रश्न है, इस्लाम किसी अन्य धर्म की अपेक्षा ज्यादा अच्छा है। इस्लाम क्या है ? विश्व में आजकल वास्तव में जिस प्रकार का प्रजातान्त्रिक विश्वास मौजूद है, उस प्रजातांत्रिक विश्वास के रूप में और मेरे जैसी सोच वाले व्यक्ति इस्लाम का आदर करते है। **एक हिन्दू होने के नाते मैं हिन्दू विचारधारा के साथ दृढ़ता से जुड़ा हुआ हूँ फिर भी मैं साहस के साथ ऐसा कहता हूँ। यद्यपि हिन्दू धर्म का मूलदर्शन मानवता की एकता है और हिन्दू धर्म में इस दर्शन का पालन किया जा रहा है फिर भी मेरा धर्म इस दिशा में सफल नहीं हो रहा है। कोई भी अन्य धर्म और उसके सिद्धान्त कुछ भी क्यों न हों, ईश्वर के समक्ष" इंसान एक है।** आवश्यक विचार को परिपाटी में उस प्रकार ढाल नहीं पाया है जैसा कि इस्लाम में किया गया है।

Sir C P R Iyer was an Indian lawyer, administrator and politician and despite being a Hindu he was bold enough to emphasize that Islam is better than other religion as far as democratic faith is concerned :

"What does Islam stand for? I regard and all thinking men regard Islam as the one and only democratic faith that is actually functioning in the world today. Being a Hindu, firmly entrenched in the Hindu Faith, I yet make bold to say so. My own religion has not succeeded, despite its fundamental philosophy, in implementing in practice the Oneness of Humanity. No other religion, whatever its theory may be, has brought into practice the essential idea of oneness of man before God as Islam has done. It is only in Islam that there can be no such problem as those presented by the Boers in the South Africa, as those prevalent in white Australia or in the Southern states of the United states of America or even in England among the several strata of society."

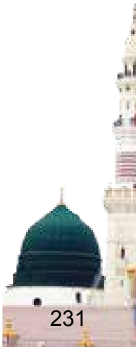

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"शराब पीने से बचो, क्योंकि ये सभी बुराइयों की जड़ है। शराब पीकर दिमाग स्थिर नहीं रह पाता है। मन धुंधला होने लगता है और मनुष्य ठीक से सोच पाने की स्थिति में नहीं होता है। हो सकता है कि वह व्यक्ति कोई अन्य पाप कर दे और उसे उसके पाप का आभास न हो पाए"

"Avoid drinking wine for it is the mother of all the sins". This is because after drinking alcohol, the mind is not steady. The mind becomes blurry and a person cannot think clearly. This may cause the person to commit other sins without realizing it"

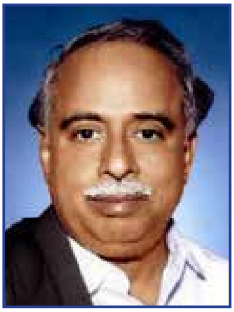

श्री सी अन्ना दुरई, तमिलनाडु (भारत) के प्रथम मुख्यमंत्री थे। वे अपनी वाक–पटुता के लिए विख्यात थे। उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा कीः

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अंधविश्वास से घिरे हुए लोगों को अंधविश्वास से बाहर निकालकर एक अनुकरणीय समाज की स्थापना की। उन्होंने ऐसे समाज के निर्माण के लिए एक बेहतर राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) अज्ञात के अंधेरे युग को समाप्त करके ज्ञान की अलख जगाई। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की हस्ती की जिस विशेषता ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया वह है उनकी मीठी आवाज, मुस्कुराता हुआ चहेरा और संयम रूपी हथियार जिससे उन्होंने वह सफलता की ऊंचाई प्राप्त की जिसे तलवार से प्राप्त नहीं किया जा सकता था। **यदि विश्व के सभी धर्म किसी फल का आवरण हैं तो इस्लाम उस फल का आंतरिक हिस्सा हैं। जिसे सीधे ही ग्रहण किया जाता है।** इस्लाम एक बुद्धि संगत धर्म है। यह एक सुन्दर धर्म भी है। इस्लाम प्यार सिखाने वाला धर्म है। **पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के वचन चमकदार हीरों के समान ओजपूर्ण हैं। इस्लाम सभी देशों के लिए सर्वकालिक एक सच्चा धर्म रहा है।**

C.N. Annadurai the first Chief Minister of Tamil Nadu (India). Well known for his oratorical skills he adored Prophet Muhammad (pbuh) in the following words:

“Prophet Muhammad (pbuh) established an exemplary society by bringing out those people who were immersed in blind belief; he designed a decent political system for the establishment of such a society. The Prophet Muhammad (pbuh) changed the dark period of ignorance into enlightened period of wisdom. About Prophet Muhammad’s (pbuh) personality what has impressed me most are his sweet words, smiling face and the personal weapon of his patience by which he achieved success which could not have been won by sword. If all the religions of world are likened to the Jack fruit, Islam would be the inner fruit thereof. In the Jack fruit the skin and rind are to be removed but not in the inner fruit thereof which can be taken straight away. Islam is rational religion. It is also a beautiful religion. Islam is a religion of love. The sayings of Prophet Muhammad (pbuh) are like sparkling diamonds. Islam is true for all times for all nations.”

"जो व्यक्ति मेरी सुन्नाह पर विश्वास करता है वह मुझसे प्रेम करता है, और जो मुझसे प्रेम करता है वह जन्नत में मेरे साथ खड़ा होगा"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"He who loves my sunnah has loved me, and he who loves me will be with me in paradise"

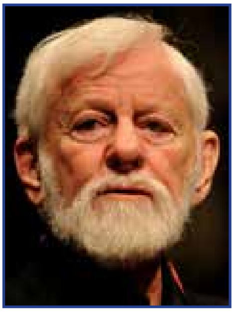

उरी अवनरी, इजराइल के एक लेखक और नीसेट के सदस्य हैं। वह "गुश शालोम पीस मूवमेंट" के प्रवर्तक भी हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक "इस्लाम दि मिसअंडरस्टूड रिलिजन" में इस्लाम के बारे में एक सच और उसकी प्रकृति का रहस्योद्घाटन किया है। **जैसा कि सभी को ज्ञात है इस्लामिक शासन के अधीन स्पेन के यहूदीयों ने जितनी खुशियाँ हासिल की वह उन्हें आज तक कहीं अन्य स्थान पर नहीं मिली।** यहूदा हेलवी जैसे कवि ने अपनी महान यादों को अरबी भाषा में लिखा। स्पेन के मुस्लिम राज्य में यहूदी लोग मंत्री, कवि और वैज्ञानिक थे। मुस्लिम राज्य में तोलेडो, ईसाई, यहूदी और मुस्लिम विद्वान एक साथ मिलकर कार्य करते थे। उन्होंने पुराने ग्रीक दर्शनशास्त्र और वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद किया। **वास्तव में वह एक स्वर्ण युग था। यदि पैग़म्बर ने तलवार (बल पूर्वक) द्वारा इस्लाम का प्रचार किया होता तो यह सब किस प्रकार से संभव हो सकता था?**

Uri Avnery is an Israeli writer and the Member of Knesset. He is also the Founder of "Gush Shalom Peace Movement". in his book "Islam the Misunderstood Religion" he discloses the true and noble nature about Islam:

As is well known, under Muslim rule the Jews of Spain enjoyed a bloom the line of which the Jews did not enjoy anywhere else until almost our time. Poet like Yehuda Halevy wrote in Arabic, as did the great Maimonides. In Muslim Spain, Jews were ministers, poets, scientists. In Muslim Toledo, Christian, Jewish and Muslim scholars worked together and translated the ancient Greek philosophical and scientific texts. That was, indeed the Golden Age. How would this have been possible, had the Prophet decreed the spreading of the faith by the sword?

"निर्णय वाले दिन सात प्रकार के लोगों को अल्लाह की छत्रछाया में आशय मिलेगा। इन लोगों में वह व्यक्ति जो न्याय करने वाला शासक हो, वह युवा व्यक्ति जिसने अपना युवा जीवन पूजा करने तथा अल्लाह के लिए दूसरों की सेवा करने में व्यतीत किया हो, वह व्यक्ति जिसे पाप करने के लिए कहा जाए किन्तु उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया हो और कहा हो "मैं अल्लाह से डरता हूँ, वह व्यक्ति जो गोपनीय तरह से और कोई दिखावा किए बग़ैर दान करता है और वह व्यक्ति जो अल्लाह को तन्हाई में इतना याद करता है कि उसकी आँखें डबडबा उठती हैं"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Seven kinds of people will be sheltered under the shade of Allah on the day of judgment. They are: a just ruler, a young man who passed his youth in worship and service of others for the sake of Allah, a man who is invited to sin but declines, saying 'I fear Allah', one who spends his charity in secret, without making a show and one who remembers Allah in solitude so that his eyes overflow"

थोमस डब्लू लिपमैन, एक पत्रकार और लेखक हैं जिन्हें महत्वपूर्ण देशों ख़ासकर संयुक्त राज्य अमरीका के संबंधों के बारे विशेषज्ञता हासिल हैं, उन्होंने 7 अप्रैल 2008 को 'न्यूज़ एंड वर्ल्ड' रिपोर्ट में कहा:
मुहम्मद (सल्ल०) की मृत्यु के एक सदी के भीतर अरब देश की सेना ने दक्षिणी फ्रांस से लेकर सिंधु नदी के किनारे तक के बड़े क्षेत्रफल पर कब्ज़ा कर लिया और उस क्षेत्र की जनता तेजी से अपने विजेताओं के धर्म को गले लगा रहे थे । **ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि उन्हें बलपूर्वक ऐसा करने को मजबूर किया बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने ऐसा करना स्वीकार कर लिया।**

Thomas W. Lippman is a journalist and author, specializing in the Middle East and Saudi Arabia – United States relations on April 7, 2008 in U.S. News & World Report says:
"Within a century after Muhammad's death, Arab armies were masters of a vast territory from southern France to the Indus River, and the people of those new territories were rapidly embracing the new religion from their conquerors – not because they were forced to do so but because they chose to do so."

फोसी जहन काब, इंग्लैंड में इतिहास विषय के प्रोफ़ेसर थे उन्होंने अपनी पुस्तक "दी साइंस आफ हिस्ट्री" में मुस्लिमों के बारे में लिखा: ईसाई मुस्लिमों के विरुद्ध धर्मयुद्ध करने आए किन्तु ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके समक्ष नतमस्तक हो गए। उन्हें यह कहते हुए सुना गया कि मुस्लिम उस संस्कृति के स्वामी हैं जो मुस्लिम सभ्यता से जगमगाई है।

Fossey John Cobb (F.J.C) Hearshaw was an English Professor of History. He writes in his book "The Science of History." about Muslim.
"The Christian world came to wage crusades against Muslims but eventually knelt before them to gain knowledge. They were spellbound to see that Muslims were owners of a culture that was were illuminated by nothing but the beacon of Muslim civilization."

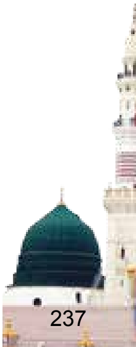

"यदि किसी के पास उसकी आवश्यकता से अधिक संपत्ति है तो उसे उस व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए जिसके पास संपत्ति नहीं है (संपत्ति आवश्यकता से कम है) और यदि किसी व्यक्ति के पास उसकी आवश्यकता से अधिक भोजन है तो उसे अपना भोजन उस व्यक्ति के साथ बांटना चाहिए जिसके पास भोजन नहीं है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Anyone who has property that exceed his needs, let him support someone whose property does not (meet his or her needs), and anyone whose food exceeds his needs, let him share it with someone who does not have food"

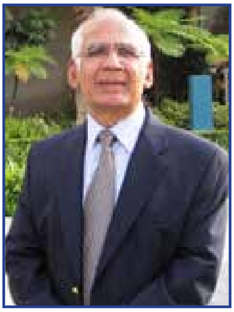

प्रो. टी वी एन परसाऊद, कनाडा के एक लेखक, यूनिवर्सिटी ऑफ मानितोबा, कनाडा में शरीर रचना विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष ने सऊदी मेडिकल कॉन्फ्रेंस VIII में अपने व्याख्यान में पवित्र कुरान और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की इन सुनहरे शब्दों में प्रशंसा की। इस्लाम का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा जैसा कि उनके आखिरी वाक्य में पैग़म्बर (सल्ल०) के बारे में इन पंक्तियों में स्पष्ट है: जिस प्रकार मुझे बताया गया कि मुहम्मद (सल्ल०) बहुत साधारण व्यक्ति थे। वह पढ़ लिख नहीं सके, वह यह नहीं जानते थे कि किस प्रकार लिखा जाता है। वास्तव में वह अनपढ़ थे। जी हाँ, हम बारह सौ (वास्तव में चौदहसौ) वर्ष पहले के युग की बात कर रहे हैं। उस समय आप सब के बीच ऐसे अनपढ़ व्यक्ति मौजूद थे जो ऐसी उद्घोषणाएं करते थे और ऐसे बयान देते थे जो आश्चर्यजनक रूप से वैज्ञानिक अवधारणा में एक दम सटीक थे। **और मैं व्यक्तिगत तौर पर कह सकता हूँ कि यह महज एक संयोग कैसे हो सकता है? उन उद्घोषणाओं में काफी अधिक सच्चाई है, और डा.मोर की तरह मुझे यह स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है कि यह कोई दैवीय प्रेरणा या रहस्योद्घाटन ही रहा होगा जिसके कारण वह ऐसे बयान दे सकें।**

Prof. T V N Persaud is a Canadian Author, Professor and Chairman of Dept of Anatomy, University of Manitoba, Canada and he said in his speech in Saudi Medical Conference – VIII he paid a tribute holy Qur'an and to Prophet Muhammad (pbuh) in these golden words and which had a profound impact upon his life as is evident by his last sentence: following lines about Prophet Muhammad (pbuh):

"The way it was explained to me is that Muhammad (pbuh) was a very ordinary man. He could not read, didn't know [how] to write. In fact, he was an illiterate. And we're talking about twelve [actually about fourteen] hundred years ago. You have someone illiterate making profound pronouncements and statements and that are amazingly accurate about scientific nature. And I personally can't see how this could be a mere chance. There are too many accuracies and, like Dr. Moore, I have no difficulty in my mind that this is a divine inspiration or revelation which led him to these statements."

"मुस्लिम रक्तहीन व्यक्ति नहीं हैं। इस्लाम शांति का एक धर्म है जो निर्दोष की हत्या को रोकता है। इस्लाम ने सभी पैगम्बरों को स्वीकार किया है, चाहे वे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) या मूसा या पुस्तकों के अन्य पैगम्बर"

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज अल–सऊद

" Muslim are not bloodthirsty people. Islam is a religion of peace that forbids the killing of the innocent. Islam also accepts the Prophets, whether those prophets are Muhammad (pbuh) or Moses or the other Prophets of the books"

Abdullah Bin Abdul Aziz Al-Saud

डा.कीथ मोर, कनाडा में प्रोफेसर और यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो में शरीर क्रिया विज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "एम्ब्रियोलॉजी इन दि कुरान एंड दि हदीस" में उन्होंने पैग़म्बर (सल्ल०) के बारे में कुछ पंक्तियाँ कहीं। कुरान में कहा गया कि निश्चित ही हमने मिट्टी से इंसान को बनाया। उसके बाद हमने उस छोटे से आरामदायक स्थान पर एक छोटी बूंद के रूप में बनाया फिर हमने उस बूंद के एक धब्बे को माँस का लोथड़ा बनाया, फिर हमने माँस के लोथड़ा में हड्डियां बनाई, उसके बाद हमने उन हड्डियों को मांस के आवरण से ढका। उसके बाद हमने उसे एक अन्य स्थान पर बढ़ने दिया। इस प्रकार अल्लाह के आशीर्वाद से मानव के रूप में श्रेष्ठ रचना हुई। सातवीं शताब्दी में किये गए मुझे इन बयानों की वैज्ञानिक सटीकता पर आश्चर्य हुआ। **मुझे यह स्पष्ट हो गया है कि मुहम्मद (सल्ल०) का बयान अल्लाह (ईश्वर) से मिला होगा क्योंकि अधिकांश ज्ञान का कई शताब्दियों तक पता नहीं चल पाया। इससे यह सिद्ध होता है कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के सन्देशवाहक रहे होंगे।**

Dr. Keith L. Moore, a Canadian Professor and Chairman of Dept of Anatomy, University of Toronto and in his famous work "Embryology in the Koran and the Hadith" he also mentioned these lines about Prophet Muhammad (pbuh):

Qur'an says…"Certainly We created man of an extract of clay, then We made him a small drop in a firm resting-place, then We made the drop a clot, then We made the clot a lump of flesh, then We made bones in the lump of flesh, then We clothed the bones with flesh, then We caused it to grow into another creation, so blessed be Allah, the best to create…"

"I was amazed at the scientific accuracy of these statements which were made in the 7th century A.D."

"It is clear to me that these statements must have come to Muhammad (pbuh) from God, or Allah, because most of this knowledge was not discovered until many centuries later. This proves to me that Muhammad (pbuh) must have been a messenger of God, or Allah."

"लोगों से इस तरह मिला करो कि जब तुम इस दुनिया में न रहो तो वे तुम्हें याद करके रोएं और जब तक तुम इस धरती पर रहो वे तुम्हारे लिए जिये"

हज़रत अली / Hazrat Ali

"Meet the people in such a manner that if you die, they should weep for you, and if you live, they should long for you"

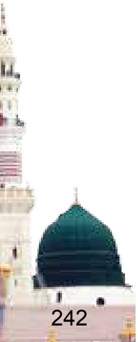

केरेन आर्मस्ट्रांग, एक ब्रिटिश लेखक और टीकाकार हैं। वह तुलनात्मक धर्म के बारे में पुस्तकें लिखने के लिए विख्यात हैं। उन्होंने "ए बायोग्राफी ऑफ प्रोफेट मुहम्मद" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में निम्नलिखित बातें कहीं: **प्रत्यक्ष मुहम्मद (सल्ल०) कभी असफल नहीं रहे। उन्हें राजनीतिक तौर पर तथा आध्यात्मिक तौर पर अभूतपूर्व सफलता मिली और इस्लाम दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होता चला गया।** ईसाई धर्म के विपरीत इस्लाम धर्म सफलता प्राप्त करता रहा है। पश्चिमी जगत में ईसाई धर्म की छवि एक उजड़ते हुए चमन में मर रहे ऐसे कलंकित व्यक्ति के समान हो गई जो असहाय हो गया हो किन्तु 11 सितंबर को आयोजित सभा में मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कही गयी बातें आशावादी प्रतीत होती हैं क्योंकि मैं इन पृष्ठों में **जैसा कि यह बताने के प्रयास कर रही हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) ने अत्यधिक कत्ले आम को रोकने का प्रयास करने में अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया।** इस्लाम शब्द सब कुछ ईश्वर का होने के नाते ईश्वर को समर्पण का पर्याय है। मुस्लिमों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे सब कुछ समर्पित कर दें। यह बात सलाम (शांति) से संबंधित है और एक महत्वपूर्ण बात यह है कि **मुहम्मद (सल्ल०) ने अहिंसा की नीति पर जोर दिया। यह उनके कैरिएर का चरम बिंदु था। अतिवादी व्यक्तियों ने जीवन का पूरा अर्थ ही बदल दिया।**

Karen Armstrong a British author and commentator known for her books on comparative religion wrote the following about the Prophet Muhammad (pbuh) in her book "A biography of Prophet Muhammad (pbuh)"

"Mohammad (pbuh) was not an apparent failure. He was a dazing success, politically as well as spiritually, and Islam went strength to strength to strength".

"Islam is a religion of success unlike Christianity, which has as its main image in the west at least, a man dying in a devastating, disgraceful, helpless death.

"But the very idea that Muhammad (pbuh) would have found any thing to be optimistic about in the carnage committed in his name on September 11th is an obscenity, because, as I try to show in these pages, Muhammad (pbuh) spent most of his life trying to stop that kind of indiscriminate slaughter. The very word Islam, which denotes the existential "surrender" of the whole being to God, which Muslims are required to make, is related to salam, " Peace". And most importantly, Muhammad (pbuh) eventually abjured violence and pursued a daring , inspired policy on non – violence that was the culmination of his career, the fundamentalists (extremists) have distorted the whole meaning of life."

"जब वह बेटी होती है तो ऐसा लगता है कि वह पिता के लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलती है, जब वह पत्नी बनती है वह अपने पति के आधे जीवन को पूरा करती है, और जब वह माँ बनती है तो जन्नत उसके कदमों तले होती है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"When she is a daughter, she opens a door of Jannat for her father. When she is a wife, she completes half of the Deen of her husband, when she is a mother, Jannat lies under her feet"

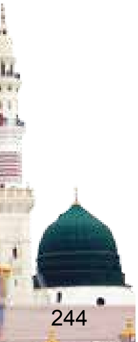

एडवड गिब्बन, एक अंग्रेज इतिहासकार और सांसद थे उन्होंने अपनी पुस्तक "दि डिकलाइन्ड ऑफ़ दि रोमन अम्पयार(1823)" और "हिस्ट्री ऑफ़ दि सारसेन अम्पयार्स (1870)" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह टिप्पणी की: ईसाइयों और पश्चिमी जगत की नज़र में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का सबसे बड़ा अपराध और सबसे बड़ा पाप यह था कि उन्होंने अपना क़त्ल नहीं होने दिया। उन्होंने सिर्फ स्वयं को, अपने परिवार को और अपने अनुयाइयों का बचाव किया। और अंत में शत्रुओं का नाश किया। **मुहम्मद (सल्ल०) की यही सफलता ईसाइयों की खिन्नता का कारण बनी, उन्होंने प्रतिनिधिमूलक बलिदान पर विश्वास नहीं किया।** अल्लाह के उस दूत मुहम्मद (सल्ल०) ने पुरुषों को परिवार के प्रति दायित्वों के बारे में बताया,अग्नि प्रज्वलित की,फर्श की सफाई की,पालतू जानवरों का दूध दूहा और अपने ही हाथों से अपने वस्त्र तथा जूते साफ़ किए। अपने प्रायश्चित और एकांतवास के गुणों से घृणा करते हुए मिथ्यमार्थ मान के बिना एक अरबवासी का संयमी जीवन यापन किया।

Edward Gibbon was an English Historian and a member of Parliament. in his books "The Declined of the Roman Empire (1823) and History of the Saracen Empires (1870)" he remarks about Prophet Muhammad (pbuh) that:

"The greatest crime, The greatest "sin" of Muhammad (pbuh) in the eyes of the Christian west is that he did not allow himself to be slaughtered, to be "Crucified" by his enemies. He only defended himself, his family and his followers; and finally vanquished his enemies. Muhammad's (pbuh) success is the Christians gall of disappointment; He did not believe in any vicarious sacrifices".

"The good sense of Muhammad (pbuh) despised the pomp of royalty. The Apostle of God submitted to the menial offices of the family; he kindled the fire; swept the floor; milked the ewes; and mended with his own hands his shoes and garments. Disdaining the penance and merit of a hermit, he observed without effort of vanity the abstemious diet of an Arab."

"यदि आप युद्ध के बिना किसी राष्ट्र को नष्ट करना चाहते है तो व्यभिचार (ज़िना) और नग्नता अगली पीढ़ी में आम कर दें"

सलाहउद्दीन अय्यूबी

"If you want to destroy any nation without war, make Adultery and Nudity common in next generation"

Salahuddin Ayyubi

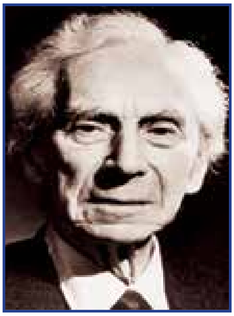

डा० डी लेसी ओलेरी, जो एक ब्रिटिश सुधारवादी थे। उन्होंने अरबों के पूर्व के इतिहासकार पर कई पुस्तकें लिखी थीं। उन्होंने अपनी पुस्तक "इस्लाम ऐट दि क्रॉस रोड्स" में लिखा हैः तथापि इतिहास से यह स्पष्ट है कि पौराणिक धर्मार्थ मुस्लिमों ने विश्व पर कब्जा करना शुरू किया और **तलवार की नोंक पर जीते हुए प्रदेशों की जनता पर इस्लाम धर्म थोपना शुरू किया, यह एक अत्यंत धर्मवादी बेतुके मिथ है** जिसे कई इतिहासकारों ने दोहराया है। इस विश्व को इस धर्म से यह लाभ उठाने की आवश्यकता है क्योंकि कई चतुर व्यक्तियों ने पहले ही इसकी प्रशंसा की है। "कारलाइल" ने विश्व से यह सुनने के लिए निवेदन किया है" **ऐसे व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) के शब्द प्रकृति की स्वयं की आवाज है। मनुष्यों को इस आवाज को अवश्य ही सुनना चाहिए।**

The Reverend Doctor **De Lacy Evans O'Leary** was a British Orientalist who wrote a number of books on the early history of Arabs.

In his book **"Islam at the cross road"**, he writes "History makes it clear however, that the legend fanatical Muslims sweeping through the world and forcing Islam at the point of the sword upon conquered races is one of the most fantastically absurd myth that historians have ever repeated." The world needs to benefit from this faith that many of their wise men have already hailed. Carlyle bids the world to listen, "The word of such a man (Muhammad (pbuh)) is a voice direct from nature's own heart; men do and must listen to that, as to nothing else.

पंडित सुन्दर लाल, प्रसिद्ध भारतीय शिक्षाविद थे। उन्होंने लिखा है मेरी राय में ये शिक्षाएं मानवता के लिए प्रकाश पुंज के समान सिद्ध हुई है। विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा के समय इस्लाम के इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते मैं इस्लाम के पैग़म्बर की हस्ती से बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूँ। **उनके जैसा व्यक्ति इतिहास में शायद ही पैदा होगा।**

Pandit Sunder Lal, famous Indian Academician Writes,

"These teachings, in my opinion have proved to be beacon light to mankind. As a student of the history of Islam which has been my subject since my university days, I have been deeply impressed by the personality of the Prophet of Islam the like of whom is seldom born in History."

"जब तुम किसी भिखारी को दान दो तो ऐसा नम्रतापूर्वक करो क्योंकि तुम उसे जो कुछ दे रहे हो अल्लाह को समर्पण करने के समान है"

अबू बक्र सिद्दीक / Abu Bakr Siddique

"When you offer any sadaqa to a beggar, do it with humility. And respect, for what you are offering is an offer to Allah"

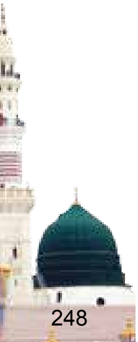

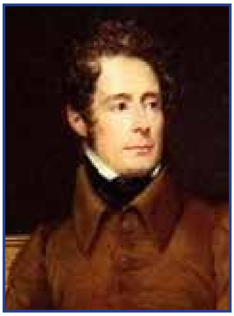

ऐल्फ़ानसो डी लेमार्टिन, फ्रांस के एक लेखक,कवि और राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने फ्रांस के तीन रंगों वाले झंडे को बनाने में भी योगदान दिया। उन्होंने अपनी पुस्तक "**हिस्ट्री दि तुर्की**" पैरिस 1854 में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में ये विचार प्रकट किए: **यदि प्रयोजन की महानता, साधनों की कमी और अप्रत्याशित परिणाम को मानवीय बुद्धिमत्ता का मानदंड माना जाए तो आधुनिक इतिहास के किसी भी महान व्यक्ति की तुलना पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से नहीं हो सकती है।** अत्यधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों ने सिर्फ शास्त्रों का निर्माण किया,कानून बनाए और सामंजस्य खड़े किए।उन्होंने जो कुछ स्थापित किया वह भौतिकवादी शक्तियों के सिवाए कुछ भी नहीं था। ये शक्तियां शायद उनके जीवित रहते रेंगने के अवस्था में पहुँच गई। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने न केवल सेना खड़ी की, कानून बनाया, साम्राज्य बनाया, राजवंश की स्थापना की, वरन उस समय विश्व में रह रही एक तिहाई जनसँख्या के लाखों लोगों को धर्म परायण बनाया। ईश्वर, धर्म और विचार, विश्वास और आत्मा,विजय में संयम, उनका उदेश्य,जो पूरी तरह से एक विचारधारा में समाया था और किसी भी रूप में उनको साम्राज्य की ललक नहीं थी, उनकी अंतहीन प्रार्थना, ईश्वर के साथ उनके मिथकीय वार्तालाप,उनकी मृत्यु के उपरांत विजय, ये सब बातें न केवल एक व्यक्तित्व को प्रमाणित करती हैं वरन एक दृढ़ मत को परिपुष्टि करती है जिसने उसे एक मत को कायम करने के लिए शक्ति प्रदान की। वह है, ईश्वर एक है और ईश्वर का निराकार स्वरूप। पहली बात यह बताती है कि ईश्वर क्या है और दूसरी बात यह बताती है कि ईश्वर क्यों नहीं है। एक पक्ष तलवार के बल पर झूठे ईश्वर को उखाड़ता है और दूसरा पक्ष शब्दों से विचारों को शुरू करता है।

Alphonso de Lamartine, was a French writer, poet and politician who was instrumental in the foundation of the Second Republic and for the continuation of the Tricolor as the flag of France and these are his views on Prophet Muhammad (pbuh) in book "Histoire de la Turquie", Paris 1854:

"If greatness of purpose, smallness of means, and astounding results are the three criteria of human genius, who could dare to compare any great man in modern history with Muhammad (pbuh)? The most famous men created arms, laws and empires only. They founded, if anything at all, no more than material powers which often crumbled away before their eyes. This man moved not only armies, legislations, empires, peoples and dynasties, but millions of men in one-third of the then inhabited world; and more than that, he moved the altars, the gods, the religions, the ideas, the beliefs and souls... the forbearance in victory, his ambition, which was entirely devoted to one idea and in no manner striving for an empire; his endless prayers, his mystic conversations with God, his death and his triumph after death; all these attest not to an imposture but to a firm conviction which gave him the power to restore a dogma. This dogma was twofold, the unit of God and the immateriality of God; the former telling what God is, the latter telling what God is not; the one overthrowing false gods with the sword, the other starting an idea with words.

"Philosopher, orator, apostle, legislator, warrior, conqueror of ideas, restorer of rational dogmas, of a cult without images; the founder of twenty terrestrial empires and of one spiritual empire, that is Muhammad (pbuh). As regards all standards by which human greatness may be measured, we may well ask, is there any man greater than he?"

"मेरी उम्मत पर एक ऐसा वक्त आएगा जब वह पाँच बातों को अपना लेंगे, और पाँच अन्य बातों को भुला देंगे। दुनिया के प्यार में डूब जाएगें और आख़िरत (इस के बाद की ज़िंदगी) को भुला देंगें, ज़िन्दगी से प्यार करेगें और मौत को भुला देगें, अपने घरों से प्यार होगा और क़ब्र को भूल जांएगे; दौलत से प्यार और हिसाब के दिन को भूल जांएगे; वो कुदरत (प्रकृति) से प्यार करेंगें लेकिन बनाने वाले (अल्लाह) को भूल जांएगे"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"There will come a time for my Ummah when they will love five things and forget five others. They will love this world / Dunia and forget next world they will love Life and forget the death they will love Palaces and forget the grave they will love wealth and forget the day of Account and they will love creatures and forget the Creator"

'दि ऐसनशील वोमेन', की लेखिका अनीता राय ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में लिखाः मेरे लिए सिर्फ इतना काफी है कि मुहम्मद (सल्ल०) विश्व में अब तक के सबसे बड़े नारीवादी है किन्तु इस बारे में बहुत ही कम सुनने को मिला है। **व्यक्तिगत तौर पर मैं मुहम्मद (सल्ल०) की अनन्त काल तक ऋणी हूँ जिसने न केवल निराश और शोषित महिलाओं की आवाज को उठाया बल्कि उन्हें सही मायने में उनके दुःख को मिटाने के लिए तथा उनके सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए और विरोध करने वाले लोगों को दबाया।** युगों–युगों से महिलाएं अपने पुरुष मालिकों से भीख मांगती रही हैं और अपने अधिकारों के लिए हाथ फैलाती रही हैं, और अपने लिएं न्याय की दयायचना करती रही हैं। किन्तु उसे हमेशा अनसुना किया गया और उसकी समस्या का कोई निदान नहीं किया गया। **मुहम्मद (सल्ल०) ने सदा के लिए ऐसी महिलाओं की तक़दीर बदल दी है।**

Anita Rai, author of the triumphant book " The essential Woman " writes for Prophet Muhammad (pbuh) :
"For me it is enough that Muhammad (pbuh) is the greatest feminist the world has so far had but has so little come to know of .... Personally I am infinitely grateful to Muhammad (pbuh), who has not only empathized with the crying voice of the despairing and exploited woman but has taken momentous measures blustering all opposition, to alleviate her lot and strengthen her in realistic terms .... For ages and ages, a woman had found herself begging and groveling in front of her male master, with her heart – wrenching pleas for justice remaining unheard and unaddressed. Muhammad (pbuh) had changed this forever".

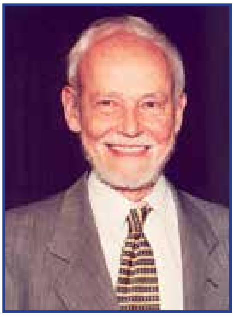

ह्यूस्टन स्मिथ, अमरीका में धार्मिक अध्यनन के विद्वान हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक "दि वर्ल्डस रिलीजन" में पैग़म्बर मुहम्मद(सल्ल०) के बारे में ये पंक्तियाँ लिखीं –
"मुहम्मद (सल्ल०) ने निष्ठापूवर्क उस चार्टर का पालन किया जिसे उन्होंने मदीना के लिए बनाया था, इस चार्टर को कुरान की आयतों में अक्षर किया गया है। "धर्म में किसी प्रकार का दबाव नहीं होना चाहिए" यह मानव इतिहास में धार्मिक सहष्णुता का प्रथम अधिवेश है जो तर्क करने योग्य है।"

Huston Smith is a religious studies scholar in the United States and in his book "The World's Religion" he wrote following lines about Prophet Muhammad (pbuh): "Muhammad adhered meticulously to the charter he forged for Medina, which - grounded as it was in the Quranic injunction, "Let there be no compulsion in religion" (2:256) - is arguably the first mandate for religious tolerance in human history.

"आस्था एक छोटा सा दीपक है जो अँधेरे जंगल मे सब कुछ नहीं दिखा सकता लेकिन अगले क़दम की सुरक्षा के लिए पर्याप्त रोशनी दे सकता है"

"Faith is like a small lamp in dark forest. It does not show everything at one but gives enough light for the next step to be safe!"

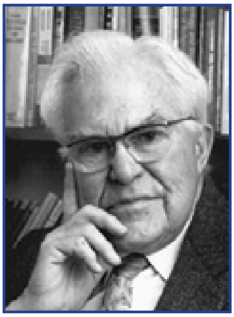

विल्फर कैंटवेल स्मिथ, धर्म के बारे में तुलनात्मक अध्यनरत कनाडा के प्रोफ़ेसर ने अपनी पुस्तक "इस्लाम इन मोडर्न हिस्ट्री (लंदन 1946)" में इस्लाम और ईसाई धर्म की तुलना की हैः ईसाई धर्म हाल के वर्षों में गोस्पेल की ओर मुड़ा है, किन्तु इस्लाम शुरू से ही इस दिशा में लगा हुआ है। दोनों धर्मों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि न्यू टेस्टामेन्ट ईश्वर का रहस्योद्घाटन है। कुरान में यह अल्लाह से रहस्योद्घाटन है। **कोई धर्म जो चौदह सौ वर्षों से लगातार चलता आ रहा है उसमें मौलिक तौर पर कुछ ऐसा महत्वपूर्ण और सार्थक तो होगा ही जो प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह व्यक्ति करोड़पति हो या भिखारी, राजकुमार हो या दास, इस्लाम निःसंदेह कुछ सन्देश देता है।**

Wilfred Cantwell Smith was a Canadian professor of comparative religion and in his book 'Islam in Modern History (London, 1946) 'he compares Islam and Christianity -
"While Christianity in recent years has moved towards a social gospel, Islam has been a social gospel from the start. A significant distinction between the two Religions is that in the New Testament is a revelation of God; in the Qur'an is a revelation from God... Any religion that has lasted fourteen centuries must have some thing fundamentally significant and meaningful to say to every man whether he is a millionaire or a pauper, a prince or a slave and Islam undoubtedly does."

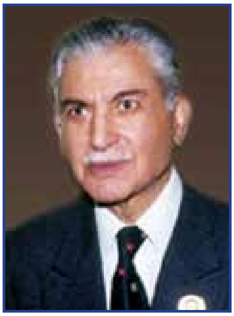

दीवान चंद्र शर्मा, फिजी में भारतीय शिक्षाविद और राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "सर्वेंट एंड मैसेंजर ऑफ़ गॉड" में लिखा हैः मुहम्मद (सल्ल०) एक पवित्र आत्मा थे, जो व्यक्ति उनके इर्द–गर्द थे उन्होंने उनका जो प्रयास महसूस किया वह कभी भुला देने वाला नहीं थे। मुहम्मद (सल्ल०) एक मानव प्राणी से ज्यादा कुछ भी नहीं थे। किन्तु उनका एक श्रेष्ठ मिशन था, यह मिशन केवल एकमात्र किन्तु ईश्वर की पूजा करने के लिए मानवता को एकजुट करना और **उनको ईश्वर के आदेशनुसार सच्चाई और ऊँचें आदर्श वाले जीवन को जीने की शिक्षा देना था। वह स्वयं को ईश्वर का सेवक और एक संदेशवाहक ही मानते थे।**

Diwan Chand Sharma is a Fiji Indian Educationist and Politician. He wrote in his book "A servant and Messenger of God'.
"Muhammad (pbuh) was the soul of kindness, and his influence was felt and never forgotten by those around him. Muhammad (pbuh), peace and blessings be upon him, was nothing more or less than a human being, but he was a man with a noble mission, which was to unite humanity on the worship of one and only one God and to teach them the way to honest and upright living based on the commands of God. He always described himself as , "A Servant and Messenger of God."

"हम न उनमें से हैं और न कभी होंगे जो अपनी उपलब्धियों के नशे में, खो जाते हैं, अपनी सफलताओं पर गर्व करते हैं और जो यह मानते हैं कि आगे बढने का काम खुद चलता रहेगा"

शेख मोहम्मद बिन रशीद अल मकतूम, दुबई

"we have never been, nor ever will be among those who rest on their laurels; nor those who obsess on their success; nor those who believe that the march forward will continue automatically"

Sheikh Mohammad bin Rashid Al Maktoom, Dubai

यूशिदी कुसान, टोक्यो वैध शाला टोक्यो, (जापान) के निदेशक हैं। शेख अब्दुल मजीद–ए–जिंदानी, कुरान के कई पदों के बारे में प्रस्तुतीकरण किया है जिसमें उन्होंने इस ब्रह्मांड और स्वर्ग की शुरुआत, और इस पृथ्वी और स्वर्ग के बीच संबंधों का वर्णन किया है। **उन्होंने यह कहते हुए आश्चर्य प्रकट किया कि कुरान में इस ब्राह्मांड के बारे में इस प्रकार से वर्णन किया गया है मानो कि इस ब्राह्मांड को किसी सबसे ऊँचे प्रेक्षण से देखा गया हो जहाँ से हर चीज़ एक दम अलग–अलग और स्पष्ट दिखाई देती है।** मैं कहता हूँ कि कुरान में बताये गए खगोलीय तथ्यों से काफी अधिक प्रभावित हूँ। और हम सभी आधुनिक खगोल वैज्ञानिक इस ब्रह्मांड के एक छोटे से हिस्से का ही अध्ययन कर रहे हैं। हमने अपने प्रयासों को अत्यंत छोटे से हिस्से को समझने के लिए लगाया है। क्योंकि टेलीस्कोपों का प्रयोग करके हम सम्पूर्ण ब्रह्मांड के बारे में सोचे बिना आकाश के सिर्फ कुछ भाग को ही देख पाते हैं। **अतः हम कुरान पढ़कर और प्रश्नों का उत्तर जानकर मैं समझता हूँ कि इस ब्राह्मांड को खोजने के लिए हम भविष्य में कोई मार्ग खोज सकते है।**

Yushidi Kusan, Director of the Tokyo Observatory, Tokyo, Japan.
Sheikh Abdul-Majeed A. Zindani presented a number of Qur'anic verses describing the beginnings of the universe and of the heavens, and the relationship of the earth to the heavens. He expressed his astonishment, saying that the Qur'an describes the universe as seen from the highest observation point, everything is distinct and clear.
I say, I am very much impressed by finding true astronomical facts in Qur'an, and for us modern astronomers have been studying very small piece of the universe. We have concentrated our efforts for understanding of very small part. Because by using telescopes, we can see only very few parts of the sky without thinking about the whole universe. So by reading Qur'an and by answering to the questions, I think I can find my future way for investigation of the universe.

“हमारे सामाजिक रिति रिवाज, हमारे दैनिक कार्य, हमारी तमाम कोशिशे सभ्यता की चरम सीमा को छू लेने वाली होनी चाहिए। इस्लाम का गौरवपूर्ण काल वह था जब वह विज्ञान तथा ज्ञान की शिखर पर तथा राजनीति, दर्शन तथा साहित्यिक विचारों की चोटी पर था”

अज्ञात / Anonymous

“Our social customs, our daily work, our constant efforts must be turned up, must be brought into line with the highest form of possible civilization. At the greatest period, Islam was at head of science, was at the head of knowledge, and was in the advanced line of political, philosophical and literary thought”

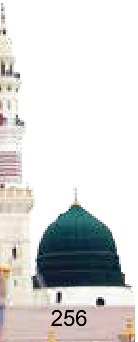

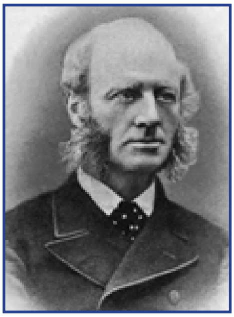

स्टेनली एडवर्ड लेन, एक ब्रिटिश सुधारवादी और पुरातत्वविद ने अपनी पुस्तक "दि स्पीचेस एंड टेबल टॉक ऑफ दि प्रोफेट महम्मद" में लिखा है: जिस दिन पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने शत्रुओं पर विजय पायी थी उस दिन उन्होंने स्वयं अपने ऊपर भी महानतम विजय पायी थी। उन्होंने उपयुक्त भाव से कुरैश, सालों साल से चले आ रहे दु:ख और निर्दयी तिरस्कार जिसने उनको प्रभावित किया था, को माफ़ी प्रदान कर दी और मक्का की सम्पूर्ण जनता को अभयदान प्रदान किया। जब अपने सबसे कटु दुश्मनों के शहर में एक विजेता के रूप में उन्होंने प्रवेश किया था तब मुहम्मद (सल्ल०) की निषेधात्मक सूचि में चार अपराधी थे जिन्होंने न्याय का अपमान किया था। उनकी सेना ने उनका अनुकरण किया और शांतिपूर्वक शहर में प्रवेश किया। उन्होंने किसी के घर को नहीं लुटा न ही किसी महिला की गरिमा का अपमान किया सिर्फ एक चीज़ का विनाश हुआ जब काबा की ओर जाते समय मुहम्मद (सल्ल०) तीन सौ साठ मूर्तियों के समक्ष खड़े थे और उनकी ओर इशारा करते हुए उन्होंने अपने सिपाहियों से कहा सच्चाई समाने आ गई है और झूठ के पाँव उखड़ चुकें हैं। उनके ये शब्द सुनकर उसके सैनिकों ने उन मूर्तियों को नीचे गिरा दिया। इस प्रकार मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने निवास स्थान पर पूण:प्रवेश किया। **विजय के सभी वृतांतों को देखे तो इस विजय की तुलना में कोई और विजय देखे नहीं मिलती।**

Stanley Edward Lane-Poole was a British orientalist and archaeologist. In his work "The Speeches and Table Talk of the Prophet Mohammad" he writes:

The day of Mohammad's greatest triumph over his enemies was also the day of his grandest victory over himself. He freely forgave the Koraysh and all the years of sorrow and cruel scorn which afflicted him, and gave an amnesty to the whole population of Makkah. Four criminals whom justice condemned made up Muhammad's proscription list, when he entered as a conqueror to the city of his bitterest enemies. The army followed his example, and entered quietly and peacefully; no house was robbed, no women insulted. One thing alone suffered destruction. Going to the Kaaba, Muhammad (pbuh) stood before each of the three hundred and sixty idols, and pointed to it with his staff, saying, 'Truth has come and falsehood has fled away!' and at these words his attendants hewed them down, and all the idols and household gods of Makkah and round about were destroyed. It was thus Muhammad (pbuh) entered again his native city. Through all the annals of conquest there is no triumphant entry comparable to this one."

"जब जीवन सरलता से गुज़र रहा हो तो अल्लाह को याद रखो। क्योंकि जब तुम्हारा कठिन दौर आयेगा तो वह तुम्हें याद रखेगा"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Remember Allah during times of ease and he will remember you during times of difficulty"

माइकल एच हार्ट, एक अमरीकी खगोल भौतिक विज्ञानी और लेखक हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक "दि 100" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किया—मैंने विश्व के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को चुना। इससे कुछ पाठकों को आश्चर्य होगा और कुछ लोग मेरे चुनाव पर प्रश्न चिह्न लगाएंगे **किन्तु वह इतिहास में एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो धर्म तथा निरपेक्ष दोनों स्तरों पर सबसे अधिक सफल रहे।** निर्धन मूल में पैदा हुए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने विश्व के महान धर्मों में से एक महान धर्म की नींव रखी और उसे प्रख्यायित किया और एक अत्यंत प्रभावशाली राजनीतिक नेता के रूप में उभर कर आए। **आज उनकी मृत्यु के तेरह सौ वर्ष बाद भी उनका प्रभाव अभी भी शक्ति से ओत-प्रोत है।** इस पुस्तक में अधिकांश व्यक्तियों को सभ्यता, ऊंचें सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक धुरी वाले देंशों के केन्द्र में पैदा होने और बड़े होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा। किन्तु मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म 570 ई० में उस समय विश्व के सबसे पिछड़े क्षेत्र दक्षिण अरब के मक्का शहर में हुआ था जो व्यापार, कला, शिक्षा केंद्रों से काफी दूर स्थित था। वह छह वर्ष की आयु में अनाथ हो गए थे वह अत्यंत साधारण परिवार में पले बड़े हुए। इस्लामिक परम्परा बताती है कि वह अनपढ़ थे।

Michael H. Hart, is an American astrophysicist and author and in his book "The 100" put forward his views about Muhammad Prophet (pbuh):

"My choice of Muhammad (pbuh) to lead the list of the world's most influential persons may surprise some readers and may be questioned by others, but he was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels".

Of humble origins, Muhammad (pbuh) founded and promulgated one of the world's great religions, and became an immensely effective political leader. Today, thirteen centuries after his death, his influence is still powerful and pervasive.

The majority of the persons in this book had the advantage of being born and raised in centers of civilization, highly cultured or politically pivotal nations. Muhammad (pbuh), however, was born in the year 570, in the city of Makkah, in southern Arabia, at that time a backward area of the world, far from the centers of trade, art, and learning. Orphaned at age six, he was reared in modest surroundings. Islamic tradition tells us that he was illiterate.''

"यदि किसी के दिल में राई के बराबर का भी घमंड है तो वह स्वर्ग में नहीं जा पायेगा और यदि किसी के दिल में अल्लाह के लिए राई भर का भी विश्वास है तो वह नर्क में पहुँच ही नहीं सकता"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"No one will enter Paradise who has even a mustard-seed's weight of arrogance in his heart, and no one will enter Hell who has even a mustard-seed's weight of faith in his heart"

डा.मैरिस बुकैली, फ्रांस के एक शल्य चिकित्सक, वैज्ञानिक, विद्वान और "दि बाइबिल और कुरान साइंस" नामक पुस्तक के रचनाकार थे। उन्हें कुरान में पाए गए पुरावशेष और पैगम्बर (सल्ल०) के उस कथन पर आश्चर्य हुआ जिसका सार नीचे दिया गया है। इस अध्ययन में विचार विशुद्ध वैज्ञानिक दृस्टिकोण से विकसित हुआ। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सातवीं सदी में रह रहे मानव के लिए यह अकल्पनीय था कि वह कुरान में विभिन्न किस्म के ऐसे विषयों के बारे में बयान दे जो उस दौर का विषय नहीं था और इनके बारे में जानकारी सदियों बाद ही ज्ञात हो सकी। मैं समझता हूँ कि कुरान में कही गई बात किसी मानव की कही नही हो सकती है। मुहम्मद (सल्ल०) के काल के ज्ञान के स्तर को देखते हुए यह माना नहीं जा सकता है कि कुरान में दिए गए अधिकांश बयान जो विज्ञान से संबंधित हैं, वे किसी मानव की देन नहीं हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त **यह निश्चित ही रहस्योद्घाटन के रूप में न केवल कुरान का आदर करना वैध होगा बल्कि जिस प्रामाणिकता की इसमें गारंटी मिलती है और जिस प्रकार के वैज्ञानिक बयान दर्ज हैं जिन्हें जब आज पढ़ा जाता है तो मानवीय सन्दर्भों में व्याख्यान करना चुनौती पूर्ण प्रतीत होता है उसके लिए एक इनाम भी है।**

Dr. Maurice Bucaille was a French surgeon, scientist, scholar and author of the book "The Bible, The Qur'an and Science". He shows his surprise and amazement at the anachronism found in the Qur'an and the sayings of prophet Muhammad (pbuh) in the extract given below:

"The ideas in this study are developed from a purely scientific point of view. They lead to the conclusion that it is inconceivable for a human being living in the Seventh century A.D. to have made statements in the Qur'an on a great variety of subjects that do not belong to his period and for them to be in keeping with what was to be known only centuries later. For me, there can be no human explanation to the Qur'an.

In view of the level of knowledge in Muhammad's day, it is inconceivable that many of the statements In the Qur'an which are connected with science could have been the work of a man. It is, moreover, perfectly legitimate, not only to regard the Qur'an as the expression of a Revelation, but also to award it a very special place, on account of the guarantee of authenticity it provides and the presence in it of scientific statements which, when studied today, appear as a challenge to explanation in human terms."

"यदि किसी का बचपन समाप्त हो जाता है तो अल्लाह जो सर्वशक्तिमान है, अपने दूतों से पूछता है कि क्या तुमने मेरे दास का बचपन समाप्त कर दिया है ? यदि उसे सकारात्मक उत्तर मिलता है तो वह फिर यह पूछता है कि "क्या तुमने उसके हृदय का सार ले लिया है "दूत उसका सकारात्मक उत्तर देता है। इस बात पर अल्लाह फिर यह पूछता है कि "मेरे दास ने क्या कहा? दूत कहता है" दास ने आपकी प्रशंसा की और कहा "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलेही राजिउन (हम अल्लाह से हैं और उसके लिए हम लौट जाएंगे)"। अल्लाह कहता है "जन्नत में मेरे दास के लिए एक घर बनाओ और उस घर को बैत–उल– हम्द (प्रशंसा का घर) नाम दो"।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"When a person's child dies, Allah the most high asks his angels. 'Have you taken out the life of the child of my slave? They reply in the affirmative. He then asks, 'Have you taken the fruit of his heart?' They reply in the affirmative. There upon he asks, 'What has my slave said?' They say: 'He has praised you and said: Inna Lillahi wa inna Ilaihi raji'un (we belong to Allah and to him we shall be returned).' Allah says: 'Build a house for my slave in Jannah and the name it Bait-ul-Hamd (House of praise)"

जे.एच.डेंसन, नामक लेखक ने अपनी पुस्तक "इमोशन ऐज दि बेसिस ऑफ सिविलाइजेशन" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में इस प्रकार लिखा : पांचवी और छठी शताब्दियों में सभ्य समाज अव्यवस्था के कगार पर खड़ा था। पुराने मनोभावों से युक्त संस्कृतियाँ, जिन्होंने यथा संभव सभ्यता का निर्माण किया। उन्होंने मानव को एकता और अपने शासकों के प्रति आदर का भाव प्रदान किया था, ऐसी सभ्यताएं टूट गई थीं और ऐसा कुछ सूझ नहीं पा रहा था जो इनका स्थान ले सके। ऐसा लगा कि जिस सभ्यता को बनने में चार हजार वर्ष लग गए वह अब टूटने के कगार पर थी। ऐसे में यह संभावना बनने लगी थी कि शायद मानव जंगली बनने की स्थिति में पुनः लौट जाएगा जहाँ पर प्रत्येक कबीला एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा होगा और वे लोग कानून और व्यवस्था के बारे में जानते ही नहीं होंगे। **ईसाइयों द्वारा बनाये गए नये प्रतिबंधों से मानव में एकता बने रहने के बजाय विभाजन और बिखराव होने लगा था।** सभ्यता एक ऐसा भीमकाय पेड़ के समान हो गई थी जिसकी पत्तियाँ धरती तक पहुँच गई और पेड़ खड़ा होकर लड़खड़ा रहा था क्या उस समय कोई मनोभाव युक्त संस्कृति मौजूद थी जो मानवता को एक कर सकती और सभ्यता को बचा सकती ? ऐसा अरबवासियों में था, **वहां एक ऐसे व्यक्ति ने उस समय जन्म लिया जो पूर्व और दक्षिण के ज्ञान से विश्व के लोगों को एक कर सके।**

J.H.Dension, Author, he writes in his book 'Emotions as the basis of civilisation' about Prophet Muhammad (pbuh):

"In the fifth and sixth centuries, the civilised world stood on the verge of chaos. The old emotional cultures that had made civilisation possible, since they had given to man a sense of unity and of reverence for their rulers, had broken down, and nothing had been found adequate to take their place... It seemed that the great civilisation which had taken four thousand years to construct was on the verge of disintegration, and that mankind was likely to return to that condition of barbarism where every tribe and sect was against the next, and law and order were unknown... The new sanctions created by Christianity were creating divisions and destruction instead of unity and order....Civilisation like a gigantic tree whose foliage had over reached the world..... Stood tottering... rotted to the core.... Was there any emotional culture that could be brought in to gather mankind once more to unity and to save civilisation? It was among the Arabs that the man was born who was to unite the whole known world of the east and south.

"वास्तव में मेरी खुशी मेरा ईमान है, और मेरा ईमान मेरा दिल है, और मेरा दिल किसी का नहीं सिर्फ अल्लाह का है"

अस्मा–बिन–अबूबक्र / Asma Bint Abu Bakr

"Verily my happiness is my Imaan and verily my Imaan in my heart and verily my heart doesn't belong to anyone but Allah"

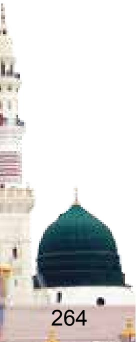

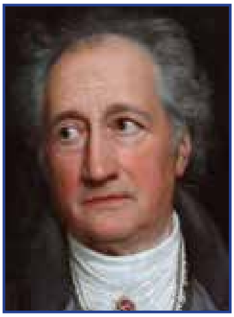

जोहानन वोल्फगांग गोथे, एक जर्मन लेखक ने अपनी पुस्तक "अल्लाह ओवर दि ओसिडेंट टेडिशन ऑफ मुहम्मद गीसांग" में लिखा है: **सभी अमरीकी, यूरोपीय अवधारणाएं उस ऊंचाई तक नहीं पहुँच पायी जहाँ तक मुहम्मद (सल्ल०) की सोच पहुँच सकी और कोई भी अन्य व्यक्ति उस सोच से आगे नहीं निकल पाया।** हमने मानवता के इतिहास में कई उदहारण देखे और यह पाया कि मुहम्मद (सल्ल०) के सच्चाई का पता लगा सके। निश्चित ही मुहम्मद (सल्ल०) सम्पूर्ण विश्व को एकेश्वरवाद की ओर ले जाने में सफल हो पाए। **मैंने मानव के एक रोलमोडल को सम्पूर्ण इतिहास में खोजने का प्रयास किया तो मैंने सिर्फ और सिर्फ पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को इस स्थान के लिए उपयुक्त पाया।**

Johann Wolfgang Von Goethe a German Writer says in his book Allah's Sun Over the Occident Rendition of mahomets Gesang :
"US, Europeans, with all our concepts could not reach what Muhammad (pbuh) has reached, and no one will be able to procede him. I have looked in the history of humanity for an example and found that it was Muhammad (pbuh), as the truth must be revealed. Indeed, Muhammad (pbuh) succeeded to subdue the entire world to monotheism."
"I have searched throughout history for a role model to man and I found none but the Prophet Muhammad (pbuh)."

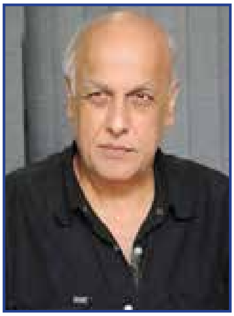

भारत के विख्यात फिल्म निर्देशक और फिल्म प्रोड्यूसर महेश भट्ट ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा इन शब्दों में की है: एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने के लिए एक यात्रा पर जाते समय उन्होंने एक बच्चे को रोते हुए देखा जो अपनी प्यारी चिड़िया के मरने पर रो रहा था। अपनी यात्रा जारी रखने के बजाय वह बच्चे को सांत्वना देने के लिए काफी देर तक रुके और उसे सांत्वना प्रदान की। **उस प्यार और सद्भावना के कृत्य की वह सुगंध चौदह सौ वर्ष बाद भी महकती है।**

Mahesh Bhatt a renowned film director and producer from India praises Prophet Muhammad (pbuh) in following words:
"One on journey to attend an important meeting the Prophet had found a boy crying because of the death of his pet bird, instead of continuing his journey with he stayed with the child for a long time to soothe him and offer his condolences. The perfume of that act of love and compassion lingers fourteen hundred years later."

“कल्पनाओं और विचारों को दबाना महान पाप है और हम किसी को भी ऐसा करने की आजादी नहीं दे सकते। हमारे धर्म में सहनशीलता, सदव्यवहार और अस्पष्टता है और हमारा आदरणीय कुरान ज्ञान विचारों का प्रतीक है। कुरान के श्लोक हम को बेकार तथा विचारमुक्त होकर बैठा रहना और आखें मूंद कर जीवन व्यतीत करना नहीं सिखाता। हमारे कुरान ने कभी भी तथा किसी समय भी अन्वेषण तथा ज्ञान का विरोध नहीं किया”

सुल्तान काबूस बिन सईद अल सईद, ओमान

"The suppression of ideas and thoughts is a major sin, and we will never allow anyone to stifle freedom of thought………… in our religion there is tolerance, morality and openness, and the venerable Quran stands for knowledge and thought. These verses do not call for sitting idly, unthinking, or to go through life blindly. It has never been, at any time, against inquiry or the seeking of knowledge"

Sultan Qaboos bin Said Al –Said, Oman

डा. जूल्स एच मासरमैन, मनोविश्लेषक, अमरीकी मनोचिकित्सक संघ के पूर्व अध्यक्ष और नार्थ वेस्ट्रन यूनिवर्सिटी मेडिकल स्कूल के पूर्व सदस्य थे।उन्होंने टाइम्स पत्रिका (15 जुलाई 1974) में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) कौन थे "हिस्ट्रीज ग्रेट लीडर्स" में इस प्रकार लिखा है–नेताओं को तीन तरह के कार्य करने चाहिए–जिनका नेतृत्व कर रहे हो वे उनके कल्याण के बारे में सोचें, एक ऐसा सामाजिक संगठन (परिवेश) उपलब्ध कराएं जिसमें जनता स्वयं को सुरक्षित महसूस कर लोगों को एक धर्म प्रदान करें। पाश्चर और साल्क जैसे लोग प्रथम प्रकार की सोच वाले नेता हैं। एक ओर गांधी, कन्फ्यूशियस जैसे लोग तथा दूसरी ओर एल्किजेन्डर ओर सीजर जैसे व्यक्ति दूसरी और शायद तीसरी श्रेणी में आते हैं जीसस और बुद्ध तीसरी श्रेणी में आते हैं। **शायद सभी समयों में मुहम्मद (सल्ल०) ही सबसे महानतम नेता है जो तीनों प्रकार के कार्यों का एक युग्मक है।**

Dr. Jules H. Masserman was a psychiatrist, psychoanalyst, former president of the American Psychiatric Association and a former member of the Northwestern University medical school opined following lines about Prophet Muhammad (pbuh) in "Who were Histories Great Leaders " in Time Magazine (15 July 1974) : "Leaders must fulfill three functions- provide for the well – being of the led, provide a social organization on which people feel relatively secure, and provide them with one set of beliefs.

People like Pasteur and Salk are leaders in the first sense. People like Gandhi and Confucius, on one hand, and Alexander and Caesar the other, are leaders in the second and perhaps the third sense. Jesus and Budha belong in the third category alone. Perhaps the greatest leader of all time was Muhammad (pbuh), who combined all three functions."

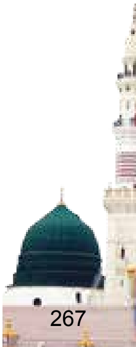

"मुझे सबसे कम शब्दों के साथ भेजा गया है जिनका आशय बहुत व्यापक है और मुझे शत्रुओं के हृदय में भय पैदा करके विजयी बनाया गया है और जब मैं निद्रा में था, मुझे इस संसार के खज़ाने की चाबी सौंपी गई थी"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"I have been sent with the shortest expressions bearing the widest meanings, and I have been made victorious with terror (cast in the hearts of the enemy), and while I was sleeping, the keys of the treasures of the world were brought to me and put in my hand"

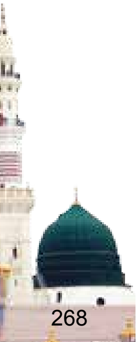

जीय लेघसिमसपन, प्रकृति विज्ञान और स्त्री रोग विभाग, यू एस ए.के अध्यक्ष ने सऊदी मेडिकल सम्मेलन में इन सुनहरे शब्दों में पवित्र कुरान और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जिन्होंने उनके जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया जैसा कि उनके अंतिम वाक्य से स्पष्ट होता है। उन्होंने इस्लाम और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह विचार व्यक्त किए।हदीस पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के कथन उस समय के वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर प्राप्त नहीं किये जा सके जिस समय लेखक ने हदीस लिखी थी। किन्तु वास्तव में इस्लाम धर्म कुछ परम्परागत वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के रहस्योद्घाटन करके विज्ञान का निर्देशन कर सकता है। **कुरान में विद्यमान बयान सदियों बाद वैध पाए गए जो इस बात का समर्थन करता है कि कुरान में मौजूद ज्ञान ईश्वर से प्राप्त किया गया है।**

Joe Leigh Simpson is the Professor and Chairman of the Department of Obstetrics and Gynecology, U.S.A in his speech in Saudi Medical Conference he paid a tribute holy Qur'an and to Prophet Muhammad (pbuh) in these golden words and which had a profound impact upon his life as is evident by his last sentence and he is of the following view about Islam and Prophet Muhammad (pbuh) :

"... Hadiths (sayings of Muhammad) could not have been obtained on the basis of the scientific knowledge that was available at the time of the 'Writer' .... (Islam) but in fact religion (Islam) may guide science by adding revelation to some of the traditional scientific approaches .... There exist statements in the Qur'an shown centuries later to be valid which support knowledge in the Qur'an having been derived from God."

मैक्सिको और भारत में साम्यवादी दलों के प्रवर्तक श्री मानवेन्द्र नाथ राय ने अपनी पुस्तक "इस्लाम की ऐतिहासिक भूमिका" में लिखा है– **मुहम्मद (सल्ल०) को उनसे पहले तथा उनके बाद के सभी पैग़म्बरों में सबसे महान पैग़म्बर के रूप में पहचाना जाना चाहिए।** इस्लाम का प्रसार सभी चमत्कारों में सबसे अधिक चमत्कारी है।

Manabendra Nath Roy, Founder of the Communist parties in Mexico & India he writes in his book "The Historical Role of Islam".

"Muhammad (pbuh) must be recognized as the greatest of all Prophets, before or after him. The expansion of Islam is the most miraculous of all miracles."

"जो व्यक्ति कुछ ज्ञान देता है, उसे उसका प्रतिफल उससे मिलता है जो उस शिक्षा का पालन करता है, यह प्रतिफल उस व्यक्ति को मिले प्रतिफल में से बिना कभी निकाले प्राप्त होता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Whoever teaches some knowledge will have the reward of the one who acts upon it, without that detracting from his reward in the slightest”

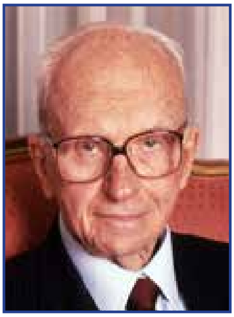

जेम्स अल्बर्ट मिशीनर एक अमेरिकी लेखक जिसने 40 से अधिक पुस्तकें लिखीं। रीडर्स डिवेस्ट (अमेरिकी अंक) मई 1955 के अपने आलेख "इस्लाम दि मिस अंडरस्टुड रिलिजन"में उन्होंने लिखा हैः–प्रेरित व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) जिन्होंने इस्लाम की नींव रखी थी, का जन्म 570 ई० में एक अरबी कबीले में हुआ था जहाँ मूर्ति पूजा की जाती थी। वह बचपन में ही अनाथ हो गए थे। वह हमेशा ही विशेष रूप से गरीबों, जरुरतमंद व्यक्तियों, विधवाओं, अनाथों, दासों और समाज के निम्नतम वर्ग के प्रति चिंताशील रहते थे। बीस वर्ष की आयु में वह एक सफल व्यापारी बन गए थे और शीघ्र ही एक धनवान विधवा के यहाँ ऊँटों के काफिले का निर्देशक बन गए।जब वह 25 वर्ष के हुए तो उनकी नियोक्ता ने उनके गुणों को पहचान कर उनसे शादी करने का प्रस्ताव रखा। यधपि उम्र में वह उन से पंद्रह वर्ष बड़ी थी फिर भी उन्होंने उनसे विवाह किया और जब तक वह जिन्दा रहीं, वह उनके वफादार पति बने रहे। उनसे पहले के लगभग प्रत्येक पैग़म्बर की भांति अपनी स्वयं की कमियों के बारे में जानते हुए खुदा के वचनों के प्रसारकर्ता के रूप में सेवा करने के लिए शर्म का त्याग किया। लेकिन दूत ने उन्हें पढ़ने का आदेश दिया जहाँ तक हम जानते हैं, मुहम्मद (सल्ल०) पढ़ अथवा लिख नहीं सकतें थे, किन्तु उन्होंने प्रेरक पढ़ना शुरू किया जो धरती के बड़े भूभाग में शीघ्र ही क्रांति बन गए "ईश्वर एक है"जब उनके सबसे प्रिये पुत्र इब्राहिम की मृत्यु के समय हुए ग्रहण लगने की घटना हुई तो शीघ्र ही अल्लाह द्वारा सांत्वना देने की अफवाह फैल गई। इस पर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह घोषणा की कि ग्रहण लगना प्राकृतिक घटना है। ऐसे किसी मनुष्य के जन्म लेने या उसके मरने से जोड़ना एक बेवकूफ़ी है। मुहम्मद (सल्ल०) की मृत्यु पर भी उन्हें देवता बनाने का प्रयास किया गया परन्तु जो व्यक्ति प्रशासनिक उत्तराधिकारी बने उसने धार्मिक इतिहास में अपने सबसे अच्छे सन्देश में इस उन्माद को खत्म कर दिया कि यदि तुम लोगों में से किसी ने भी मुहम्मद (सल्ल०) की पूजा की तो वह मरे हुई व्यक्ति के समान है किन्तु तुमने यदि ख़ुदा की इबादत की तो वह हमेशा जीवित रहेगा।

James Albert Michener was an American author of more than 40 books and is a Member of Advisory Council, in his book 'Islam: The Misunderstood Religion' in Reader's Digest (American Edition), May 1955:

"Muhammad (pbuh), the inspired man who founded Islam, was born about A.D. 570 into an Arabian tribe that worshipped idols. Orphaned at birth, he was always particularly solicitous of the poor and needy, the widow and the orphan, the slave and the downtrodden. At twenty he was already a successful businessman, and soon became director of camel caravans for a wealthy widow. When he reached twenty-five, his employer, recognizing his merit, proposed marriage. Even though she was fifteen years older, he married her, and as long as she lived, remained a devoted husband.

"Like almost every major prophet before him, Muhammad (pbuh) fought shy of serving as the transmitter of God's word, sensing his own inadequacy. But the angel commanded 'Read'. So far as we know, Muhammad (pbuh) was unable to read or write, but he began to dictate those inspired words which would soon revolutionize a large segment of the earth: "There is one God."

"In all things Muhammad (pbuh) was profoundly practical. When his beloved son Ibrahim died, an eclipse occurred, and rumours of God's personal condolence quickly arose. Whereupon Muhammad (pbuh) is said to have announced, 'An eclipse is a phenomenon of nature. It is foolish to attribute such things to the death or birth of a human-being.'

"At Muhammad's own death an attempt was made to deify him, but the man who was to become his administrative successor killed the hysteria with one of the noblest speeches in religious history: 'If there are any among you who worshipped Muhammad (pbuh), he is dead. But if it is God you worshipped, He lives forever."

"अच्छी बात तो यह है कि कोई व्यक्ति अपने मरने के बाद तीन चीजें छोड़कर जाता है – एक बुद्धिमान बेटा जो उसके लिए प्रार्थना करता है, दान देने की प्रथा को आगे बढ़ाता है, इस का प्रतिफल मरने वाले व्यक्ति को भी मिलता है और उसके मरने के बाद उपयोग किया जाने वाला ज्ञान"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The best things that a man can leave behind are three: A righteous son who will pray for him, ongoing charity whose reward will reach him, and knowledge which is acted upon after his death"

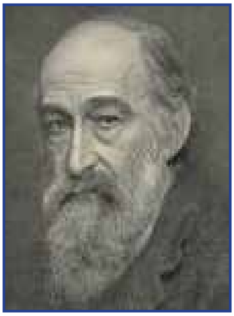

डेविड सैमुयल,एक सुधारवादी लेखक और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अरबी भाषा के प्रोफेसर थे। उनकी पुस्तक "मुहम्मद एंड दि राइज ऑफ इस्लाम"में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित सारांश उद्धृत किया हैः—उनकी उदारता, दयालुता छोटे–छोटे जानवरों पर भी थी। उन्होंने आजीविका के लिए जिन्दा पक्षियों को बंदी बनाने से भी मना किया और उन व्यक्तियों को दुत्कारा जो अपने ऊटों के साथ बुरा बर्ताव करते थे। जब उनके कुछ अनुयाइयों ने किसी चींटी के बिल को आग लगा दि तो उन्होंने उस आग को बुझाने के लिए उनको बाध्य किया। किसी पुराने अंधविश्वास से जुड़े निर्दयता के मूर्खतापूर्ण कृत्य का उन्होंने पैग़ाम संबंधी किसी अन्य बात के साथ प्रतिकार किया। किसी मृत व्यक्ति की मज़ार के साथ उनके ऊंट को भूख से मरने के लिए अब नहीं बाँधा जायेगा। वर्षा करने के लिए बैलों की पूंछ में आग लगा कर उन्हें मवेशियों के झुण्ड में खुला नहीं छोड़ा जाएगा। घोड़ों के गाल पर प्रहार नहीं किया जाएगा क्यूंकि प्राकृति द्वारा उन्हें उनकी सुंदरता के लिए बनाया है और उनकी पूंछ पर भी प्रहार नहीं किया जाएगा क्यूंकि वह मक्खियों से उनकी रक्षा करती हैं। गधों के चेहरों पर प्रहार नहीं किया जाएगा। यहाँ तक की मुर्गा और ऊँटों को अपशब्द कहना को भी हतोत्साहित किया गया।

David Samuel Margoliouth, who was an Anglican priest, orientalist, Author & Professor of Arabic at University of Oxford the following extract has been taken from his book 'Mohammed (pbuh) And The Rise Of Islam' to present his views on Prophet Muhammad (pbuh):

"His humanity extended itself to the lower creation. He forbade the employment of living birds as targets for marksmen and remonstrated with those who ill-treated their camels. When some of his followers had set fire to an anthill he compelled them to extinguish it. Foolish acts of cruelty which were connected with old superstitions were swept away by him (along) with other institutions of paganism.

No more was a dead man's camel to be tied to his tomb to perish of thirst and hunger. No more was the evil eye to be propitiated by the bleeding of a certain proportion of the herd. No more was the rain to be conjured by tying burning torches to the tails of oxen and letting them loose among the cattle. Horses were not to be hit on the cheek, the former being meant by nature for their warmth, and the latter as a protection against flies. Asses were not to be branded or hit on the face. Even the cursing of cocks and camels was discouraged."

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"दो भूखे भेड़िये भेड़ों के झुंड को इतना नुक्सान नही करेंगे जितना कोई व्यक्ति धन और प्रतिष्ठा के लालच में नुकसान कर बैठता है"

"Two hungry wolves loose among sheep do not cause as much damage as that caused to a man's Deen by his greed for money and reputation"

श्री श्री रविशंकर, एक धार्मिक नेता और "आर्ट ऑफ लिविंग" फॉउनडेशन के संस्थापक हैं। वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहते हैं :– मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में भविष्य पुराण में भविष्यवाणी की गई है कि वह लोगों में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करेगें।

Sri Sri Ravi Shankar, a spiritual leader and founder of 'Art of living' foundation which aims to relieve individual stress, societal problems, and violence says about Prophet Muhammad (pbuh):

"Muhammad (pbuh) is prophesied in the Bhavishya Purana that he will cleanse people of corruption........

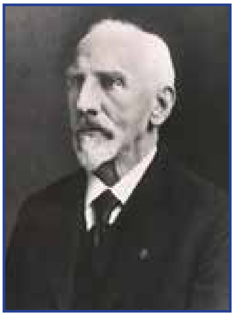

क्रिस्टियान एस हरगोन्जे, सुधारवादी संस्कृतियों और भाषाओं के क्षेत्र में एक विद्वान थे और नीदर लैंड, की औपनिवेशिक सरकार के नेटिव मामलों के सलाहकार थे। "एन्साईकलोपिडिया सर्वे ऑफ इस्लामिक कल्चर (1997)" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) और इस्लाम के बारे हमे कुछ पंक्तियाँ मिली हैं जो विशेषकर "प्रिंसिपल ऑफ इंटरनेशनल यूनिटी" में हैं–पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा स्थापित "दि लीग ऑफ नेशन्स" अंतरराष्ट्रीय एकता और मानवीय भाईचारे के सिद्धान्त का प्रतिपादन है जो वैश्विक एकता की नींव है जो अन्य देशों का मार्ग प्रशस्त करता है। सच तो यह है कि इस्लाम ने लीग आफ़ नेशन्स की विचारधारा को मूल रूप देने की दिशा में जो कार्य किया विश्व का कोई अन्य देश उसकी बराबरी नहीं कर सकता है।

Christiaan S Hurgronje, was a Dutch scholar of Oriental cultures and languages and Advisor on Native Affairs to the colonial government of the Netherlands and in his - Encyclopedia Survey of Islamic Culture (1997) we find a few lines about Prophet Muhammad (pbuh) and Islam especially in the context of what he "principle of international unity".

"The League of nations founded by the Prophet of Islam put the principle of international unity and human brotherhood as such universal foundations as to show candle to other nations......the fact is that no nation of the world can show a parallel to what Islam has done towards the realization of the idea of the league nations."

"बेबसों की मदद करना, मजबूरों की जरुरत पूरी करना, भूखे को खाना खिलाना, इंसान को नर्क के अज़ाब से दूर रखता है"

ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती / Khwaja Moinuddin Chisty

"To help the needy one, to fulfill the desires of the poor, to feed the hungry person, keeps one away from the hell"

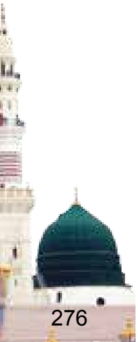

ए एम लोथ्रोप, स्टोडार्ड एक अमरीकी इतिहासकार, पत्रकार और राजनीतिक विचारक थे जिसने अपनी पुस्तक "दि न्यू वर्ल्ड ऑफ इस्लाम (लन्दन 1932)" में इस्लाम के बारे में निम्नलिखित पंक्तियां लिखीः इस्लाम का उदय होना मानवीय इतिहास की अत्यंत आश्चर्य. जनक घटना थी। इस्लाम का उदय ऐसे भूमि पर ऐसे लोगों के बीच हुआ जिनकी इससे पहले कहीं भी गणना नहीं होती थी, ऐसे स्थान से इस्लाम उदय होकर एक शताब्दी में अधिक से अधिक पृथ्वी पर फैल गया, महान साम्राज्यों को ध्वस्त कर दिया। लंबे समय से स्थापित धर्मों को उखाड़ फेंका, मानवीय आत्माओं में आमूल चूल परिवर्तन किया और एक नया संसार इस्लामिक विश्व की स्थापना की। अपनी अवस्थिति से प्रथम तीन शताब्दियों (650–1000) के बीच इस्लाम का साम्राज्य अत्यंत सभ्य था और संसार का सबसे अधिक प्रगतिशील हिस्सा था। वैभवशाली शहरों, रमणीय मस्जिदों और शांत विश्वविद्यालयों जहाँ पर पुरातन विश्व की विशेषताओं को संरक्षित किया गया, इन सबसे युक्त यह मुस्लिम जगत पश्चिम के ईसाई जगत से एकदम उलट था बाद में वह समय के साथ धूमिल हो गया।

A M Lothrop Stoddard was an American historian, journalist and political theorist and he wrote these lines about Islam in his book 'The New World of Islam (London 1932)' :

"The rise of Islam is perhaps the most amazing event in human history. Springing from a land and a people alike previously negligible, Islam spread within a century over half the earth, Shattering great empires, overthrowing long established religions, remolding the souls of races, and building up a whole new world – the world of Islam...For the first three centuries of its existence (circ. A.D.650-1000) the realm of Islam was the most civilized and progressive portion of the world. Studded with splendid cities, gracious mosques and quiet universities where the wisdom of the ancient world was preserved and appreciated, the Muslim world offered a striking contrast to the Christian West, then sunk in the night of the Dark Ages."

"इस धरती पर प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई कहानी होती है। तुम किसी व्यक्ति के बारे में यह निर्णय न लो की तुम उसे अच्छी तरह से जानते हो। इस प्रकार की सच्चाई से तुम अचंभित भी हो सकते हो"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Every single person on the planet has a story. Don’t judge people before you truly know them. The truth might surprise you”

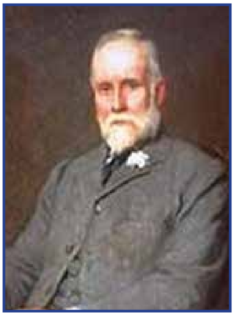

बेंजीमिन बोसवर्थ स्मिथ, एक अमेरिकी प्रटोस्टेंट इपिस्कपल बिशप थे। 1874 में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मुहम्मद एंड मुहमम्दिनिज्म" लिखी जिसमें उन्होंने इन शब्दों में मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की :– वह राष्ट्रध्यक्ष और चर्च के प्रमुख थे। सीजर और पॉप दोनों ही हस्तियों उनमें समाहित थीं। लेकिन वह किसी पॉप के स्वांग के बिना पोप थे और सीजर की अक्षैहिणी सेना, स्थायी सेना के बिना, अंगरक्षक के बिना, पुलिस बल के बिना अथवा नियत राजस्व के बिना ही सीजर थे। यदि कभी किसी व्यक्ति ने दैविये शक्तियों द्वारा राज किया तो वह मुहम्मद (सल्ल०) ही थे। यह मुहम्मद (सल्ल०) ही थे जिनके पास बिना किसी सहारे के सभी शक्तियां थीं। उन्होंने शक्ति के प्रदर्शन की परवाह नहीं की। जो सरलता उनके निजी जीवन में थी वही उनके सार्वजनिक जीवन में भी थी। मुहमम्दिनिज्म में प्रत्येक बात भिन्न थी। कोई परछाई या अद्‌भुद होने के बजाय हमारे पास उनका इतिहास है ....हम मुहम्मद (सल्ल०) का वाहय इतिहास जानते है ......जबकि उनके मिशन की उद्‌घोषणा होने के बाद उनके आतंरिक इतिहास के बारे में हमारे पास अपने मूल रूप में नितांत अनूठी पुस्तक है ....उनके पर्याप्त प्राधिकार से कोई भी व्यक्ति कभी भी कोई गंभीर शंका नहीं कर सका है।

Benjamin Bosworth Smith was an American Protestant Episcopal bishop. In the year 1874 he wrote his famous book "Mohammed and Mohammadanism in which " he praised Mohammad (pbuh) in these words:

"Head of the state as well as the church, he was Caesar and pope in one; but he was pope without the pope's pretensions, and Caesar without the legions of Caesar, without a standing army, without a bodyguard, without a police force, without a fixed revenue. If ever a man ruled by a right divine, it was Muhammad (pbuh), for he had all the powers without their supports. He cared not for the dressings of power. The simplicity of his private life was in keeping with his public life."

"In Muhammadanism every thing is different here. Instead of the shadowy and the mysterious, we have history .... We know of the external history of Muhammad (pbuh) ...... while for his internal history after his mission had been proclaimed, we have a book absolutely unique in its origin, in its preservation....... On the substantial authority of which no one has ever been able to cast a serious doubt."

"पहले विवाहिता हुई महिला से तब तक विवाह नहीं करना चाहिए जब तक उसे इस बारे में न पूछा जाये, और एक कुवाँरी लड़की से तब तक विवाह नहीं करना चाहिए जब तक वह सहमति न दे दें और उसकी सहमति उसका मौन होती है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"A previously-married woman should not be married until she is consulted, and a virgin should not be married until her consent is sought, and her consent is her silence"

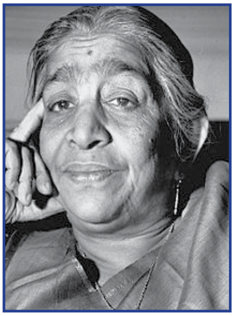

सरोजनी नायडु, भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन की सक्रिय कार्यकर्ता और कवयित्री थी। वह भारत के किसी राज्य की सर्वप्रथम महिला राज्यपाल बनी। उन्होंने अपनी पुस्तक "आइडियल ऑफ इस्लाम" में संसार को इस्लाम के बारे में एक खूबसूरत सन्देश दिया– यह पहला धर्म है जहाँ प्रजातंत्र का पालन किया जाता है क्योंकि मस्जिद में जब प्रार्थना का आह्वान किया जाता है और प्रार्थना के लिए लोग एकत्र होते हैं तो दिन में पांच बार इस्लाम में प्रजातंत्र उस समय परिलिप्त होता है जब एक किसान और एक राजा एक साथ घुटनों के बल बैठकर उद्घोषणा करते हैं किकेवल अल्लाह ही महान है। पवित्र कुरान न्याय की पुस्तक है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) जिसने मानवता को भ्रातृभाव का सन्देश दिया, स्वतंत्रता और समानता का प्रबोधन कराया, उनका नाम संसार में तब तक सर्वोपरि रहेगा जब तक यह संसार चलेगा।

Sarojini Naidu, was an Indian independence activist, poet and the first woman to become the governor of an Indian state and she wrote such a beautiful message about Islam to world in her famous book “Ideals of Islam”(Madras 1918):
“It was the first religion and practiced democracy; for in the mosque, when the call for prayer is sanded and worshippers and gathered together, the democracy of Islam is embodied five times a day when the peasant and king kneel side by side and proclaim, God Alone is Great”.
“The Holy Quran is a book of justice. The holy name of Prophet Muhammad (pbuh) who taught the mankind brotherhood, realization of independence and equality will prevail all over the world as long as it exists.”

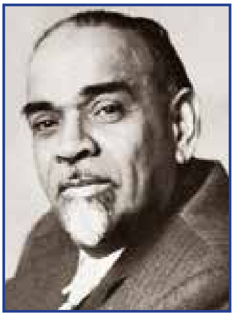

कावालम माधव पनीक्कर, एक भारतीय उपन्यासकार, पत्रकार, इतिहासकार, प्रशासक और राजनयिक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "सर्वे ऑफ इंडियन हिस्ट्री" में लिखा है–एक बात तो स्पष्ट है, इस अवधि में हिन्दू धर्म पर इस्लाम का गहरा प्रभाव पड़ा है। मध्ययुगीन ईश्वरवाद एक तरह से इस्लाम के आक्रमण का एक उत्तर है और मध्ययुगीन ईश्वरवाद शिक्षकों का सिद्धान्त, उनके ईश्वर का नाम चाहे जो रहा हो, अनिवार्य रूप से ईश्वरवादी था। यह वह सर्वशक्तिमान ईश्वर है जो आराधक की आराधना का एक उद्देश्य है और यह उसका प्रताप है कि हम इस प्रकार देखते हैं।

Kavalam Madhava Panikkar was an Indian novelist, journalist, historian, administrator and diplomat. He say about his book “A Survey of Indian History”. One thing is clear. Islam had a profound effect on Hinduism during this period. Medieval theism is in some ways a reply to the attack of Islam; and the doctrine of medieval teachers by whatever names their gods are known are essentially theistic. It is the one supreme God that is the object of the devotee’s adoration and it is to His grace that we are asked to look for redemption.”

"कभी युद्ध की इच्छा मत करो बल्कि अल्लाह से शांति और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करो और जब तुम शत्रुओं से लड़ने के लिए मजबूर हो जाओ तो निर्भय होकर युद्ध करो और यह जान लो कि स्वर्ग तुम्हारी तलवार के साये में हैं"

(रियाज़ुस सालिहीन)

"Never desire war but pray to Allah for peace and security. And when you are (forced) to fight the enemy, fight with steadfastness and know that paradise is under the shadow of swords"

(Riyadh us Saleheen)

प्रथम सिख गुरु नानक देव जी, जिन्होंने एक ईश्वर का संदेश देने के लिए दूर दूर तक यात्राएं की थी, उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का हवाला देते हुए कहा था–ईश्वर ने मुहम्मद (सल्ल०) को भेजकर लोगों को अपने पूजा करने के लिए आमंत्रित किया था। ऐसे व्यक्ति मूर्ख होते हैं जो उनकी दी हुई शिक्षा की अवहेलना करते हैं। मैंने उनके प्रति अपने प्रेम के कारण दो बार सऊदी अरब की यात्रा की थी।

Guru Nanak Dev, the founder of Sikhism and the first of the Sikh Guru who travelled far and wide teaching people about the message of one God also referred to Prophet Muhammad (pbuh) and said : God has sent Muhammad (pbuh) to invite the people towards worshipping Him. It Were only fools and underserved people who denied his advice. I visited twice Saudi Arabia due to my love for him.

प्रो के रामकृष्ण राव,एक विचारक, शिक्षाविद अनुसंधानकर्ता और प्रशासक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "इस्लाम एंड मोर्डन ऐज" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में लिखा है–पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की हस्ती की पूरी सच्चाई का पता लगा पाना अत्यन्त मुश्किल है। मैं उनके जीवन के कुछ पहलुओं के बारे में ही जान पाया हूँ। उनकी हस्ती किसी चलचित्र में समय समय पर आने वाले अलग अलग दृश्य के समान बदलती हुई सी प्रतीत होती है। एक मुहम्मद (सल्ल०) हैं जो पैग़म्बर हैं, मुहम्मद (सल्ल०) जो एक व्यापारी हैं, मुहम्मद (सल्ल०) जो एक अच्छा वक्ता हैं, मुहम्मद (सल्ल०) जो समाज सुधारक है, मुहम्मद (सल्ल०) जो अनाथों में शरणार्थी है, मुहम्मद (सल्ल०) जो दासों को संरक्षण देता है, मुहम्मद (सल्ल०) जो महिलाओं का उद्धारक है, मुहम्मद (सल्ल०) जो न्यायधीश है , मुहम्मद (सल्ल०) जो संत है। इन सभी भूमिकाओं में वह मानवीय कार्यकलापों के सभी रूपों में भूमिका अदा करता है। मुहम्मद (सल्ल०) मानवजीवन का एक सटीक मॉडल है।

Prof. K Ramakrishna Rao, a philosopher, psychologist, educationist, researcher and administrator wrote about Prophet Muhammad (pbuh) in his book "Islam and Modern Age"

"The personality of Muhammad (pbuh), it is most difficult to get into the whole truth of it. Only a glimpse of it I can catch. What a dramatic succession of picturesque scenes ! There is Muhammad (pbuh), the prophet. There is Muhammad (pbuh), the warrior; Muhammad (pbuh), the businessman; Muhammad (pbuh), the statesman; Muhammad (pbuh), the Orator; Muhammad (pbuh), the Reformer; Muhammad (pbuh), the refugee of Orphans; Muhammad (pbuh), the protector of Slaves; Muhammad (pbuh), the Emancipator of Women; Muhammad (pbuh), the judge; Muhammad (pbuh), the saint. All in all these magnificent roles, in all these departments of human activities, he is alike a hero.''.....Muhammad (pbuh) is the "Perfect model for human life."

"जिस व्यक्ति के पास तीन बेटियाँ होती हैं और वह उनके प्रति धैर्यवान होता है, अपने धन से उनको भोजन, पानी और कपड़े देता है तो वे बेटियां क़यामत के दिन उसे आग से बचाने के लिए ढाल का काम करती है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Whoever has three daughters and is patient towards them, and feeds them, gives them to drink, and clothes them from his wealth; they will be a shield for him from the Fire on the Day of Resurrection"

सरदार जोगिन्दर सिंह, केंद्रीय अन्वेषण बयूरो,भारत के पूर्व निर्देशक ने अपनी चिट्टी में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहाः इस्लाम के प्रतिष्ठित विद्वान ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को कुछ बयानों में सीमित कर दिया है। ये व्यापक बयान हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में समाहित है। इनमें सेकुछ निम्नलिखित हैं:

1. मनुष्य के कार्य के बारे में निर्णय उसके कार्य करने की मंशा से आंका जाता है।
2. अल्लाह विशुद्ध है और जब तक कोई विशुद्ध नहीं हो अल्लाह उसे स्वीकार नहीं करता है। अल्लाह वफादार बनने का हुक्म देता है उसने ऐसा आदेश अपने पैगम्बरों को दिया था।
3. कोई व्यक्ति तब तक पूरी तरह से इस्लाम का उपासक नहीं बन सकता जब तक वह अपने भाई के लिए कामना न करे जो वह स्वयं अपने लिए करता है।
4. किसी भी व्यक्ति को न तो स्वयं को हानि पहुँचानी चाहिए न ही किसी दूसरे व्यक्ति को। अपने जीवन वैश्विक लाभों को इकटठा करने पर ध्यान केंद्रित न करो तब ही अल्लाह तुम्हें प्यार करेंगे । उस चीज़ पर कतई ध्यान न दो जो अन्य व्यक्तियों के पास हो तब ही वे तुम्हें प्यार करेंगे।

Sardar Joginder Singh, a Former Director, Central Bureau of India said following lines about prophet Muhammad (pbuh) in his mail :

Classical scholars of Islam have condensed the teachings of Prophet Muhammad into a few statements. These comprehensive statements touch every aspect of our lives. Some of them are :

1. Actions are judged by the intention behind them.
2. God is pure and does not accept anything unless it is pure and God has commanded the faithful with what he commanded the prophets.
3. Part of a person's good observance of Islam is to leave aside what does not concern him.
4. A person cannot be a complete believer unless he loves for his brother what he loves for himself.
5. One should not harm himself or others.
6. Don't let your focus in this life be to amass wordily gain and God will love you. Don't be concerned with what people have, and they will love you.

"मुसलमानों में सबसे उम्दा घर उसका होता है जहाँ पर कोई अनाथ रहता है और उस अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है। और उस मुसलमान का घर सबसे खराब होता है जहाँ रहने वाले किसी अनाथ के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"The best house among the Muslims is a house in which there is an orphan who is treated well. And the worst house among the Muslims is a house in which there is an orphan who is treated badly"

एनी बीसन्ट, एक प्रमुख ब्रिटिश समाजवादी थियोसोफिस्ट, कार्यकर्ता, लेखक और वक्ता थी। उन्होंने अपनी पुस्तक "द लाइफ एंड टीचिंगस ऑफ मुहम्मद" में मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की: जिस व्यक्ति ने अरब के महान पैग़म्बर (सल्ल०) के जीवन और चरित्र का अध्यन्न किया, जो यह जानता है की उसने किस प्रकार शिक्षा दी और उसने किस प्रकार का जीवन जिया, उसके लिए सर्वोच्च अल्लाह के उस शक्तिशाली पैग़म्बर का आदर करने के सिवाए कुछ और महसूस करना अत्यंत असंभव है। और यधपि मैं आपके सामने यह बात रख रही हूँ, मैं कुछ ऐसी बातें बताऊँगी जो कई लोग जानते हों । जब कभी मैं उन बातों को बार–बार पढ़ती हूँ तो मैं नए प्रकार के प्रशंसा भाव महसूस करती हूँ, और अरब के महान पैग़म्बर के लिए आदर के नए भाव महसूस करती हूँ ।

Annie Besant, was a prominent British socialist, theosophist, activist, writer and orator admired Muhammad (pbuh) in her book "The life and teachings of Muhammad as

"It is impossible for anyone who studies the life and character of the great prophet of Arabia, who knows how he taught and how he lived, to feel anything but reverence for that mighty Prophet, one of the great messengers of the Supreme. And although in what I put to you I shall say many things which may be familiar to many, yet I myself feel whenever I re-read them, a new way of admiration, a new sense of reverence for that mighty Arabian teacher."

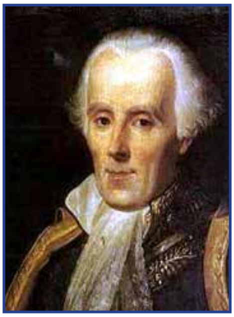

पयरे सिमोन, एक प्रभावशाली फ्रेंच विद्वान अपनी पुस्तक "इस्लाम डक्टराइन जनरल" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में लिखा: यद्यपि दैवीय धर्मों में विश्वास नहीं करते हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की धार्मिक बातें और अवधारणाएं मानव जीवन के लिए दो सामाजिक उदहारण हैं। अतः हम मानते हैं कि उनके धर्म और उनके शासकों के आगमन का काफी बड़ा और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। अतः हम मुहम्मद (सल्ल0) के अनुदेशों का अनुसरण किए बिना नहीं रह सकते हैं।

Pierre-Simon, was an influential French scholar and in his book Islam Doctrine Journal he wrote about Prophet Muhammad (pbuh) as-

"Although we do not believe in divine religions, Prophet Muhammad (pbuh)'s ritual and his percepts are two social exemplars for humanity's life. So we confess that the advent of his religion and its wise rules have been great and valuable. Therefore we are not needless of Muhammad's instructions."

“जब तुम में से किसी को ग़ुस्सा आए और वह खड़ा हो तो उसको चाहिए कि बैठ जाए, अगर बैठने से ग़ुस्सा चला जाए, (तो ठीक है) वर्ना उसको चाहिए कि लेट जाए”

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Whenever anyone of you is in a state of anger in the standing position, he should sit down and if the anger does not subside in the sitting position then he should lie down”

प्रिंगल कैनेडी, एक लेखक और बैरिस्टर अपनी पुस्तक "अरेबियन सोसाइटी एट दी टाइम ऑफ मुहम्मद" में निम्नलिखित शब्दों द्वारा मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा कीः—मुहम्मद (सल्ल०) सटीक उदगार व्यक्त करते थे,वह समय को देखकर चलते थे। उनकी आश्चर्यजनक सफलता के बारे में अध्यन्न करने के लिए हमें उस समय की स्थितियों का अध्ययन करना होगा। किस तरह से कुछ ही वर्षों में यह सब परिवर्तन हुआ। 650 ई० तक इस संसार का एक बड़ा भाग कैसे एक अलग संसार बन गया। यह हमारे मानवीय इतिहास का उल्लेखनीय अध्याय है। वह आश्चर्य जनक परिवर्तन हुआ अगर ऐसा मुख्य रूप से एक व्यक्ति मक्का के पैग़म्बर के कारण नहीं हुआ, उस असाधारण व्यक्ति के बारे में किसी व्यक्ति की राय कुछ भी क्यों न हो, चाहे वह राय उस श्रदावान मुस्लिम के बारे में हो जो उसे ईश्वर के वचनो के अंतिम और महानतम संकेत को मानते हैं, अथवा चाहे पूर्ववर्ती समय के पागल ईसाई का मत हो जो उसे किसी बुराई का प्रतीक मानता है अथवा कुछ आधुनिक सुधारवादियों का मत हो जो उसे किसी संत के बजाये एक ऐसे राजनीतिज्ञ मानते हैं जो उसे धार्मिक सुधारवादी मानने के बजाय यूरोप के विरुद्ध सामान्य रूप से एशिया और विशेष रूप से अरबवासियों का संगठनकर्ता मानते हैं। इन सब बातों का विश्व के इतिहास को प्रभावित करने वाले उनके जीवन के प्रभाव की प्रचुरता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अन्य व्यक्ति भी जो यह मानते हैं की समय और स्थान की स्तिथियाँ प्रत्येक तरीके के परिवेश के कारण विश्व के इतिहास में महान चरणों का पर्दापण हुआ, इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकते हैं की मुहम्मद (सल्ल०) के बिना यदि ऐसे कदम उठाये जाये तो इसमें अनंत काल तक विलंभ होता।

Pringle Kennedy was an author and barrister and in his book "Arabian Society at the Time of Muhammad (1926)" he praised Muhammad (pbuh) using the following words

"Muhammad (pbuh), was to use a striking expression, the man of the hour. In order to understand his wonderful success, one must study the conditions of his times. How, in a few years all this was changed, , how by 650AD a great part of this world became a different world from what it had been before, is one of the most remarkable chapters in human history.....This wonderful change followed, if it was not mainly caused by, the life of one man, the prophet of Mecca whatever the opinion one may have of this extraordinary man, whether it be that of the devout Muslim who considers him the last and greatest herald of God's word, or of the fanatical Christian of former days, who considered him an emissary of the Evil one, or of certain modern Orientalists, who look on him rather as a politician than a saint, as an organizer of Asia in general and Arabia in particular, against Europe, rather than as a religious reformer; there can be no difference as to the immensity of the effect which his life has had on the history of the World.

Even others, who hold that the conditions of time and place, the surroundings of every sort, brought about the great steps in the world's history, cannot well deny, that even if this step were to come, without Muhammad (pbuh), it would have been indefinitely delayed.''

"हम सभी अलग-अलग हैं और जब हम परमात्मा की दी हुई शुभकामनाओं की बात करते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमात्मा ने हम सभी को एक ही सा बनाया है"

ब्लादिमिर पुतिन

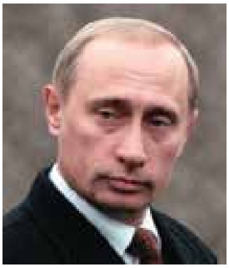

"We are all different, but when we ask for the Lord's blessings, we must not forget that God created us equal"

Vladimir Putin

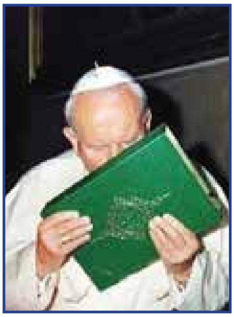

पोप जॉन पोल–II, जो 1978 से 2005 तक पोप के रूप में कार्य किया। एक आश्चर्य की बात यह है कि उन्होंने कुरान का चुम्बन किया और ये शब्द कहेः क्या यह ऐसी पुस्तक नहीं है जो कैथोलिक धर्म के ठीक विपरीत है? क्या इसने भगवान के पुत्र के दर्जे को हटाकर महज एक पैगम्बर का दर्जा दिया ? क्या विगत में पोप ने इसे जला डालने की माँग नहीं की थी? इस सभी प्रश्नों का उत्तर सकारत्मक है किन्तु फादर ने जो कुछ किया वह कैथोलिक विरोधी और अथवा सीडकानितयर बनने से कहीं अधिक जटिल है। एक प्रतिनिमंडल ने उन्हें कुरान भेंट स्वरूप दी। उपहार दी गई वस्तु उपहार देने वाले व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। वे लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि पोप कैथोलिक ईसाई है। किन्तु उन्होंने वह वस्तु पोप को उपहार स्वरूप दी जो उनके जीवन की सबसे बहुमूल्य वस्तु उनकी अपनी कुरान थी। इस प्रकार सभा के अंत में पोप ने इस अतरंग दान की दिल खोलकर प्रशंसा और झुककर कुरान को माथे से लगाया और चुम्बन दिया यह प्रशंसा की निशानी स्वरूप था।

Pope John Paul-II, served as Pope from 1978 to 2005. He was elected by the second Papal conclave of 1978 and what is surprising enough is he kissed The Quran and spoke these words:

"Is it not a book that speaks directly against the Catholic faith? Does it not reduce the Son of God to a mere prophet? Did not the popes of the past demand its burning ? The answer to all these questions is YES, and yet what the Holy Father did was more complicated than what the anti- catholic and / or sedevacantist spin – doctors might say about it. The Qur'an was a gift to him from the delegation. Islamic peoples are not casual in the giving of gifts. It represents the giver. They knew perfectly well that the pope was a Catholic Christian, but they gave to him that which was regarded as most important in their life, their own holy book. Thus, at the end of the audience, the pope showed his deep appreciation to this intimate self – donation, by bowing and kissing the Qur'an as a sign of respect. The pope appreciated the suffering of the Iraqi people, particularly the women and children. It showed he did not look down upon them but had a genuine respect for them within the brotherhood of man."

"यदि कोई व्यक्ति कुमार्ग पर चल कर धन सम्पति अर्जित करता है और दान देता है तो उस दान को अल्लाह स्वीकार नहीं करेंगे; यदि वह उस धन को इस प्रकार व्यर्थ करता है तो कोई आशीर्वाद प्राप्त नहीं होगा और यदि वह उस धन को छोड़कर मर जाता है तो यह आग लगाने के इंतजाम के समान होगा। वास्तव में अल्लाह किसी एक बुरे काम से दूसरा बुरा काम को समाप्त नहीं करता वरन वह किसी बुरे काम को किसी अच्छे काम से अंत करता है। कोई गन्दी वस्तु किसी दूसरी वस्तु की गंदगी को साफ नहीं करती"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"If a person earns property through haram means and gives charity, it will not be accepted (by Allah): if he spends it there will be no blessing on it; and if he leaves it behind (at his death) it will be his provision in the Fire. An unclean thing does not wipe away another uncleanthing"

जस्टिस पियरे करैबाइट,एक प्रसिद्ध अमरीकी न्यायविद और अंतर्राष्ट्रीय न्यायविद के मुख्य न्यायधीश रहे हैं। उन्होंने अमरीका में "एशिया" नामक पत्रिका में "थिंक मुहम्मद डीड फार वोमेन" लेख में इस्लाम में पुरुषों और महिलाओं को दी गई समानता और महिलाओं के अधिकारों के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा की गई वकालत की प्रशंसा की। मुहम्मद (सल्ल०) महिलाओं के अधिकारों के सबसे बड़े समर्थक थे जिसे विश्व ने देखा है। मुहम्मद (सल्ल०) ने महिलाओं के अधिकारों के लिए जो सबसे उत्कृष्ट योगदान दिया वह लोगों की पत्नियों को दिए गए समाप्ति के अधिकार में निहित है। किसी पत्नी का न्यायिक अधिकार ठीक वैसा ही है जैसा कि उसके पति का। जहाँ तक महिलाओं की संपत्ति का प्रश्न है, इस मामले में मुस्लिम महिला उतनी ही स्वतंत्र है जितना कोई पति। उसे कानून सम्मत यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने पति की बिना किसी सहमति के अपनी वित्तीय आस्तियों से जो चाहे कर सकती है। ऐसे मामले में उसके पति को अपेक्षाकृत अधिक अधिकार नहीं मिले हैं। तकनीकी तौर पर कहा जाए तो पत्नी अपने पति का नाम नहीं लेती है। एक मुस्लिम लड़की आईशा बिन्त उमर (उमर की बेटी आईशा) दस बार निकाह कर सकती है किन्तु उसके विभिन्न पति उसके स्वत्व को खंडित नहीं कर सकते हैं। वह ऐसा चंद्रमा नहीं है जो प्रतिबिम्बित रौशनी से चमकता है। वह एक स्टार है जिसका एक नाम होता है और उसकी स्वयं की कानून सम्मत हस्ती होती है।

Justice Pierre Crabites, was a famous American Jurist and chief Judge of international Court of justice. In his Article titled "Things Muhammad did for women" in "Asia" a magazine in the USA he appreciated the equality granted to both men and women in Islam and also how Muhammad (pbuh) advocated women's rights-

"Muhammad (pbuh) was probably the greatest champion of women's rights the world has ever seen."

"Muhammad's outstanding contribution to the cause of women, resides in the property rights that he conferred upon the wives of his people. The Juridical status of a wife, is exactly the same as that of a husband. The moslem wife, in so far as her property is concerned, is as free as a bird. The law permits her to do with her financial assets whatever she pleases without consulting her consort .In such matters he has no greater rights.

A wife technically speaking, does not even take her husband's name. A muslim girl Aisha Bint Omar (Aisha daughter of Umar) may marry ten times, but her individually is not absorbed by her various husbands. She is not a moon that shines through reflected light. She is a star planet, with a name and legal personality of her own."

हमेशा जिन्दगी में बराण्डेड चीज इस्तेमाल करो

Always use branded items in life

होंठ– सच्चाई के लिए

lips – For truth

आवाज– दुआ के लिए

Voice –For prayer

आँख– सहानुभूति के लिए

Eyes – For sympathy

हाथ– दान के लिए

Hand- For charity

दिल– प्यार और मुस्कान के लिए

Heart- For love & smile

डॉक्टर ए पी जे अब्दुल कलाम / Dr. A P J Abdul Kalam

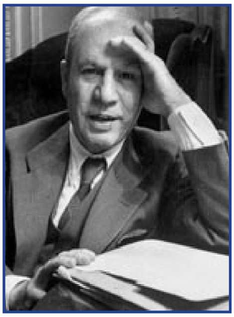

फिल्प खुरी हिती, एक लेबनानी अमेरिकी विद्वान थे। जिन्हें अरब और मध्यपूर्व के इतिहास, इस्लाम समकालिक भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने अपनी पुस्तक " हिस्ट्री ऑफ दी अरब "में पैग़म्बर के बारे में लिखा है: इस पुस्तक में उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को "समय संसार की सीमाओं की नींव रखने का श्रेय दिया है" इस नश्वर जीवन के छोटे से अंतराल में मुहम्मद (सल्ल०) ने कल्पनाशील बात, एक राष्ट्र का आह्वान, ऐसा इससे पहले कभी नहीं हुआ, वह भी उस देश में जो अब तक अस्तित्व में तो था लेकिन भौगोलिक आस्तित्व में नहीं, वहाँ उन्होंने एक धर्म की स्थापना की जो बड़े भूभाग में फैल गया और जिसने ईसाई और यहूदी धर्म के प्रसार को पीछे छोड़ दिया और साम्रज्य की नींव रखी जिसने दूरदराज़ के इलाकों और तत्कालीन सभ्य विश्व के बड़े भूभाग को अपने में समाहित कर लिया। मुहम्मद (सल्ल०) ने जिस उत्कृष्टता को हासिल किया, जैसा की उनके काल में अस्पष्टता थी, एक और आडम्बर पूर्ण जीवन उन मिट्टी के बने घरों में होता है, जैसा की आज के समय अरब और सीरिया के पुराने दौर के घरों में होता है, जिसके कुछ कमरे आँगन में खुलते है और उनमें आँगन के मार्ग से ही प्रवेश किया जाता है। उसे अक्सर अपने स्वयं के वस्त्र संकारते हुए देखा जाता था। और वह हर समय अपने अनुयाईयों की पहुँच के भीतर होता था।

Philip Khuri Hitti was a Lebanese American scholar and authority on Arab and Middle Eastern history, Islam, and Semitic languages. He has written about prophet Muhammad (pbuh) in his famous book History of The Arabs where he credits him of "laying the boundaries of civilized world"

"Within a brief span of mortal life, Muhammad (pbuh) called forth of unpromising material, a nation, never welded before; in a country that was hitherto but a geographical expression he established a religion which in vast areas surpassed Christianity and Judaism, and laid the basis of an empire that was soon to embrace within its far flung boundaries the fairest provinces the then civilized world"

"Even at the height of his glory Muhammad (pbuh) led, as in his days of obscurity, an unpretentious life in one of those clay houses consisting, as do all old-fashioned houses of present-day Arabia and Syria, of a few rooms opening into a courtyard and accessible only from it. He was often seen mending his own clothes and was at all times within the reach of his people."

"मदीना में एक आदमी की मौत हो गई, जो मदीना में ही पैदा हुआ था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर कहा, काश यह आदमी अपनी पैदाइश के अलावा किसी और जगह वफ़ात पाता। सहाबा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०), आपने ऐसा क्यों फ़रमाया ? आप (सल्ल०) ने कहा कि जब कोई आदमी अपनी पैदाइश की जगह के अलावा कहीं और वफ़ात पाता है तो पैदाइश की जगह से वफ़ात की जगह तक के फ़ासले की जगह को नाप कर उसे जन्नत में जगह दे दी जाती है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"When a man born in Madina died in Madina the Prophet (pbuh) , after conducting the prayer for his soul (Namaz-e-Janazah) said" blessed he would have been if he had died at some other place. When the congregation there asked him (pbuh) the reason for this he said " In that case he could be eligible for a greater space in the paradise equivalent to the distance between the place of his birth and the place of his death"

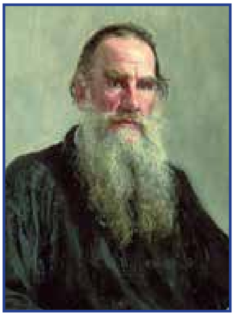

निकोलाई टाल्सटाय, रुसी उपन्यासकार को सर्वकालिक विचारक माना जाता है, उन्होंने अपनी पुस्तक "सलेक्टेड सेइंगस ऑफ दी प्रोफेट" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में निम्नलिखित उदगार व्यक्त किये: निसंदेह, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) महानतम सुधारवादी थे जिसने मानव समुदाय को गहन सेवायें प्रदान की। उनकी महानता के सूचक के तौर पर यह उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि उन्होंने पुरे राष्ट्र को सच्चाई का मार्ग दिखाया और यातित्ववादी जीवन जीने का विकल्प प्रदान किया। उन्होंने रक्तपात करने या मानवीय बलिदान करने से मना किया। उन्होंने अपने राष्ट्र के लिए प्रगति और सभ्यता का मार्ग खोला। यह महान पहलकदमी थी जो किसी ने नहीं की। यह बात कोई मायने नहीं रखती की कोई कितना ताकतवर हो सकता है, क्या वह यह हासिल कर सकता है। इस प्रकार का व्यक्ति वास्तव में अत्यंत आदरणीय और पूजनीय है। मुहम्मद (सल्ल०) का कद हमेशा ही ईसाईओं के कद से ऊँचा रहा है वह अपने आप को ईश्वर के रूप में नहीं माना, मुस्लिम ईश्वर के सिवाए किसी अन्य की पूजा नहीं करते है और मुहम्मद (सल्ल०) उनके सन्देशवाहक थे। इसमें कोई रहस्य और गोपनीयता नहीं है। वह कुरान को कार्य करने का श्रेष्ठ दिशा निर्देश मानते हैं। कोई सुधारवादी नहीं बल्कि सिर्फ कुरान ही मानवता को सही दिशा निर्देश दे सकती है। यदि कोई सुधारवादी नहीं होता तो मानवता के सही दिशा निर्देशन के लिए कुरान ही पर्याप्त है। इस पुस्तक के आगमन से सभी बुराईयों का अंत हुआ है ।

Nikolayevich Tolstoy regarded as a famous Russian novelist and philosopher of all times propounded his views about Prophet Muhammad (pbuh) in his book "Selected sayings of the Prophet" as:

Undoubtedly, the prophet Muhammad (pbuh) was one of the greatest reformers who rendered extensive service to the human community. As an indication of his greatness, it suffices to mention that he guided an entire nation to the light of truth and made it incline to serenity and peace and opted to live a life of asceticism. He forbade acts of bloodshed or human sacrifice. He opened up for his nation the way to progress and civilization. That was a great feat which nobody? No matter how powerful he may be? Is able to achieve. Such a man, indeed, is highly respectable and estimable?

"Muhammad (pbuh) has always been standing higher than the Christianity. He does not consider God as a human being and never makes himself equal to God. Muslims worship nothing except God and Muhammad (pbuh) is his Messenger. There is not any mystery and secret in it."

He considers Qur'an as the best working manned and guide book no reformer, only the Qur'an was enough for the right guidance of mankind. Even if there had been no reformer, only the Qur'an was enough for the right guidance of mankind. The advent of this book brought all the evils to an end."

शब्दों में दयालुपन एक विश्वास को जगाता है।
सोच में दयालुपन से गहनता जाग्रत होती है।
किसी पर दया करने से प्यार उमड़ता है।

लाओ तजु

Kindness in words creates confidence.
Kindness in thinking creates profoundness.
Kindness in giving creates love.

Lao Tzu

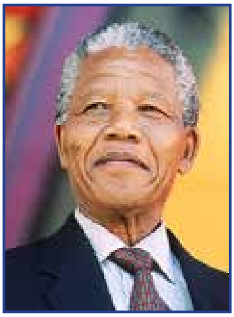

नेल्सन मंडेला,एक सुविख्यात दक्षिणी अफ़्रीक़ी रंगभेद विरोधी क्रांतिका. री, राजनितज्ञ और सुधारवादी जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति के रूप में भी सेवा की। शैख जाबिर को दिए अपने सन्देश (16 दिसंबर 1994) में उन्होंने महान मुस्लिम नेता पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के प्रभाव के बारे में बात कीः– आज पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जन्मदिन है और हमारे विचार आपके और समूचे मुस्लिम समुदाय के साथ हैं। इस संसार में जहाँ कहीं भी आप सभी विभिन्न मस्जिदों में इकट्ठे होकर एक मात्र धार्मिक नेता को श्रद्धांजलि देते हो उसका प्रभाव व्यवहारिक तौर पर विश्व के प्रत्येक भाग में प्रत्येक राष्ट्र पर लगातार फैलता रहता है।

Nelson Mandela a well known South African anti–apartheid revolutionary, politician and philanthropist who served as President of South Africa in his Message to Sheikh Jabir (16 Sep 1994) spoke about the influence of the great Muslim leader Prophet Muhammad (pbuh) :

“Today is the birth day of the Prophet Muhammad (pbuh) and our thoughts will be with you and entire Muslim community, whenever in the world they may be, as you all gather at the various mosques to pay homage to a unique religious leader, whose influence continues to spread to practically every part of the world and to every nation.”

वाल्टर सी टेलर, नार्थ डकोटा का एक राजनीतिज्ञ था। उसने अपनी पुस्तक "दी हिस्ट्री ऑफ मुहम्मदिनिज़्म एंड इटस सेक्टस" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह कहाः घर का सामान खुला छोड़ देते थे उन्होंने कभी भी उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए स्वयं से प्रतिवाद नहीं किया उन्होंने उन व्यक्तियों के साथ संवाद किया और उनकी परेशानियाँ के प्रति उनसे सहानुभूति दर्शयी। वह उनका पक्का दोस्त और वफादार इंसान था।

Walter C Taylor was a North Dakota politician and in his book ‘The History of Muhammadanism and its sects’ he wrote these lines about Prophet Muhammad (pbuh):

“So great was his liberality to the poor that he often left his household unprovided, nor did he content himself with relieving their wants, he entered into conversation with them, and expressed a warm sympathy for their sufferings. He was a firm friend and a faithful ally”.

"यदि तुम अपने शत्रु के साथ शांति की इच्छा रखते हो तो तुम्हें अपने शत्रु के साथ मिलकर काम करना होगा। तब ही वह तुम्हारे साथ भागीदार बनेगा"

नेल्सन मंडेला / Nelson Mandela

"If you want to make peace with your enemy, you have to work with your enemy. Then he becomes your partner"

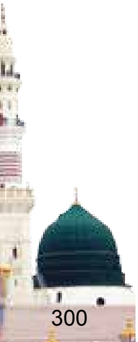

नैपोलियन बोनापार्ट, फ्रांस का एक सैन्य और राजनितिज्ञ नेता जो फ्रांस की क्रांति के दौरान सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा और उसका नाम सामान्यता युद्व से जोड़ा जाता है। क्रिस्टियन चिरफिलस ने अपनी पुस्तक"बोना पार्ट नैपोलियन एठ इस्लाम (पैरिस 1914)" में नैपोलियन द्वारा मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व और आदर्शों की निम्नलिखित उदगार व्यक्त कीः– मुहम्मद (सल्ल०) एक राजकुमार थे, उन्होंने अपने आस पास के अनुयाईयों का नेतृत्व किया। कुछ ही वर्षों में मुस्लिमों ने आधे विश्व पर कब्जा कर लिया। उन्होंने झूठे भगवानों की आत्माओं को छीन लिया, मूर्तियों को खंडित किया और पंद्रहवीं शताब्दी में मोसेस और जीसस के अनुयाइयों ने उस अवधि से 15 वर्ष कम की अवधि में मूर्ति धवस्त कर दिए। मुहम्मद (सल्ल०) महान व्यक्ति थे। नैपोलियन बोनापार्ट का पवित्र विश्वास था कि वह दिन दूर नहीं जब सभी सवेंदनशील, सही सोच वाले बुद्धिजीवियों और पढ़ें लिखे व्यक्तियों को एक प्लेटफार्म पर ला सकेगा और कुरान पर आधारित सरकार स्थापित कर सकेगा। सिर्फ कुरान के सिद्धांत सत्य हैं और सिर्फ ये सिद्धांत ही खुशी और मानवता की समीरदिर्ता की गारंटी दे सकते हैं। संसार में काफी परेशानियाँ हैं, वे बुरे व्यक्तियों की हिंसा की वजह से नहीं हैं बल्कि ये परेशानियाँ अच्छे लोगों के चुप रहने के कारण हैं ।

Napoleon Bonaparte, a French military and political leader who rose to prominence during the French Revolution and whose name is generally associated with wars associated in his book Quoted in Christian Cherfils "Bonaparte Napoleon et Islam" (PARIS 1914), appreciated Muhammad (pbuh), his personality and ideals.

"Muhammad (pbuh) was a prince; he rallied his compatriots around him. In a few years the Muslims conquered half of the world. They snatched away more souls from false Gods, pulled down more idols, demolished more pagan temples in fifteen years than the followers of Moses and Jesus did in fifteen centuries, Muhammad (pbuh) was a great man".

Napoleon Bonaparte's pious belief was that he hoped the day was not far off when he would succeed in bringing all the sensible and right thinking intellectuals and the educated on the one platform and establish a government based on the principles of Quran – "only the principles of Quran are the whole truth and only these principles can guarantee the happiness and prosperity of mankind."

The World suffers a lot. Not because of the violence of bad people, but because of the silence of good people.

"अपने दिल को ठीक करें, दिल आपके दिमाग को ठीक करेगा, और दिमाग आपकी ज़ुबान को ठीक करेगा, और ज़ुबान ज़िंदगी को ठीक कर देगी, और ज़िंदगी आख़िरत को ठीक करेगा"

अज्ञात / Anonymous

"Fix your heart, and your heart will fix your mind, and your mind will fix your tongue, and your tongue will fix your life, and your life will fix your AKHIRAH"

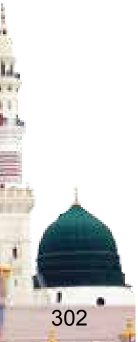

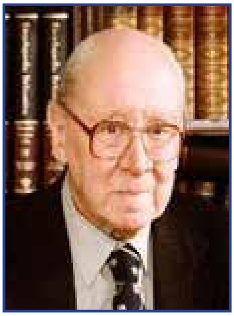

डब्लू मोंटे गोमरी वाट, स्कॉटलैंड के एक इतिहासकार और यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग में अरबी और इस्लामिक अधयन्न के प्रतिष्ठित प्रोफ़ेसर ने अपनी पुस्तक "मुहम्मद एठ मक्का (ऑक्सफोर्ड)" में यह बताने का प्रयास किया की मुहम्मद (सल्ल०) को गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया और उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में धारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया: वह अपने विश्वास के लिए, उन व्यक्तियों के उच्च नैतिक आदर्श के लिए,जो उन पर विश्वास करते थे और उन्हें अपना नेता मानते थे और अपने अंतिम उद्देश्यों की महानता के लिए कठोर प्रयास करने के लिए ततपर रहते थे–सभी व्यक्ति इसे उनकी मौलिक सत्यनिष्ठा मानते है। मुहम्मद (सल्ल०) को एक ढोंगी मान लेने से समस्या का हल निकलने के बजाय समस्याएं बढ़ेंगी। इसके अलावा इतिहास में किसी अन्य महान व्यक्ति की पश्चिमी जगत में इतनी नंदनीये प्रशंसा नहीं की गयी जितनी कि मुहम्मद (सल्ल०) की....... इस प्रकार महज़ हम आवश्यक ईमानदारी और प्रयोजन की सत्यनिष्ठा के साथ इसका श्रेय मुहम्मद (सल्ल०) को नहीं देंगे। अगर हमें उनके बारे में थोड़ा भी समझना हो, यदि हमें की गई गलतियों को ठीक करना है जो हमें विगत से विरासत में मिली है तो हमें सत्याभास का प्रदर्शन करने के बजाय समावेशी सबूत की अपेक्षाकृत अधिक कठोर आवश्यकता को नहीं भूलना चाहिए और इस प्रकार के मामले में यह स्तिथि मुश्किल से हासिल होगी ।

W. Montgomery Watt was a Scottish historian, an Emeritus Professor in Arabic and Islamic studies at the University of Edinburgh and in his book 'Muhammad at Mecca(Oxford)' he tries to convey w Muhammad has been the misrepresented and tries to clear the misconception about Prophet Muhammad (pbuh):

"His readiness to undergo persecution for his beliefs, the high moral character of the men who believed in him and looked up to him as a leader, and the greatness of his ultimate achievement - all argue his fundamental integrity. To suppose Muhammad (pbuh) an impostor raises more problems than it solves. Moreover, none of the great figures of history is so poorly appreciated in the West as Muhammad.... Thus, not merely must we credit Muhammad (pbuh) with essential honesty and integrity of purpose, if we are to understand him at all; if we are to correct the errors we have inherited from the past, we must not forget the conclusive proof is a much stricter requirement than a show of plausibility, and in a matter such as this only to be attained with difficulty."

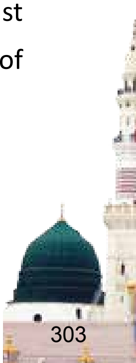

"विकृति विज्ञान के बारे में जानने से पहले आप को शरीर विज्ञान के बारे में जानना होगा; वास्तविकता के बारे में जानने से पहले आपको पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) और उनकी विचार धारा के बारे में जानना होगा"

अज्ञात / Anonymous

"To know pathology first you need to know physiology; to know reality first you need to know Prophet Muhammad (pbuh) and his Ideology"

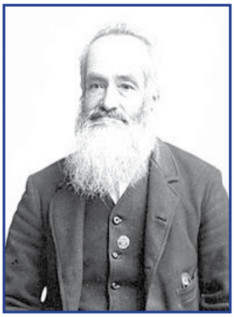

सर विलियन मुइर, स्काटिश सुधारवादी, इस्लाम के विद्वान ने अपनी पुस्तक "लाइफ ऑफ मुहम्मद में" पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में उनकी राय उल्लेखनीय है जब वह यह कहते हैं:– मुहम्मद (सल्ल०) ने मूर्ति पूजा का अंत किया। उन्होंने एक ईश्वर, ईश्वर की अनन्त दयालुता, अनाथों की देखभाल, दासों को मुक्त करने, शराब से मनाही की शिक्षा दी–इस दिशा में इस्लाम ने जो उपलब्धि हासिल की उतनी किसी अन्य धर्म ने नहीं की। उनकी एक उल्लेखनीय विशेषता नागरिकता थी उस पर विचार करने पर हम पाते हैं की उन्होंने अपने अनुयाईयों के साथ उपेक्षित व्यवहार किया। विनयशीलता और उदारता, धैर्य,स्वयं की मनाही उदारता उनके आचरण में समाहित थी जिसके कारण उनके आस पास के व्यक्ति उनको चाहते थे। वह ना कहना पसंद नहीं करते थे। यदि वह किसी के प्रश्न का सकारत्मक उत्तर नहीं दे पाते थे तो वह मौन रहना पसंद करते थे। यदि किसी छोटे व्यक्ति ने भी उन्हें घर पर आमंत्रित किया तो वह उसे मना नहीं करने वाले व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। और यदि कोई छोटी चीज भी उन्हें प्रस्तुत की जाती थी तो उन्होंने उसे कभी मना नहीं किया। उनमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संगत में लेने की अनूठी कला थी। यदि वह ऐसे व्यक्ति से मुलाकात करते थे जो सफलता पर ख़ुशी का इज़हार करता तो वह उसे उत्सुकता वश गले लगा लेते थे। अनाथ और आक्रांत व्यक्तियों से मिलकर वह हमदर्दी जताते थे। छोटे बच्चों के साथ वह सज्जन व्यक्ति की तरह पेश आते थे। आभाव के समय भी वह अपना खाना अन्य व्यक्तियों के साथ बाँट कर खाते थे। वह प्रत्येक के आराम के लिए व्याकुल रहते थे। एक उदार और परोपकारी स्वाभाव और सभी विशेषताएं उनके चरित्र में समाहित थी।

Sir William Muir was a Scottish Orientalist, scholar of Islam, and colonial administrator. His opinion regarding Prophet Muhammad (pbuh) in his book "life of Muhammad" is remarkable when he says-

"Muhammad (pbuh) brought an end to idol worship. He preached monotheism and infinite mercy of God, human brotherhood, care of the orphan, emancipation of slaves, forbidding of wine – no religion achieved as much success as Islam."

A remarkable feature was the urbanity and consideration with which Muhammad (pbuh) treated even the most insignificant of his followers. Modesty and kindliness, patience, self denial, and generosity, pervaded his conduct, and riveted the affections of all around him. He disliked to say no. If unable to answer a petitioner in the affirmative, he preferred silence. He was not known ever to refuse an invitation to the house even of the meanest, nor to decline a proffered present however small. He possessed the rare faculty of making each individual in a company think that he was the favored guest. If he met anyone rejoicing at success he would seize him eagerly and cordially by the hand. With the bereaved and afflicted he sympathized tenderly. Gentle and unbending towards little children, he would not disdain to accost a group of them at play with the salutation of peace. He shared his food, even in times of scarcity, with others, and was sedulously solicitous for the personal comfort of everyone about him. A kindly and benevolent disposition pervaded all those illustrations of his character.

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

Prophet Muhammad (pbuh)

"किसी व्यक्ति की अंतिम यात्रा पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के सामने से गुज़र रही थी तो वह खड़े हो गए। जब लोगों ने उन्हें बताया कि मरने वाला व्यक्ति यहूदी था तो उन्होंने कहा" क्या वह कोई इंसान नहीं था ?"

"A funeral procession passed in front of our Prophet Muhammad (pbuh) and he stood up. When he was told by the people that it was the coffin of a Jew, He (pbuh) said, "Was he not a human being?"

विलियम जे दुरंत, अमेरिकी लेखक,इतिहासकार और विचारक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक"दी हीरोज ऑफ हिस्ट्री" में पुरातन काल से आधुनिक काल तक सभ्यता के इतिहास का ब्यूरा दिया है। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में उद्धृत किया हैः यदि हम प्रभाव के द्वारा महानता का आकलन करें तो वह मुहम्मद (सल्ल०) इतिहास के महान व्यक्तियों में से एक थे। उन्होंने गर्मी और खाध साम्रग्री बिहीन स्तिथि से उत्पीड़ित होकर असभ्य बने व्यक्तियों के उस अध्यातिमिक और नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का कार्य शुरू किया और वह अन्य सुधारक की अपेक्षा अधिक सफल रहे, शायद ही किसी व्यक्ति ने इस प्रकार के सपने को साकार होने के बारे में महसूस किया होगा। उन्होंने धर्म के माध्यम से अपने प्रयोजन को सिर्फ इसलिए पूरा नहीं किया क्यूंकि वह एक धार्मिक व्यक्ति थे। आपूर्ति उस समय के अरब वासियों को किसी अन्य तरीकें से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था उन्होंने उनकी कल्पनाओं और आशाओं का आह्वान किया और उन्हें इस तरह से संभाषण किया की वह समझ सकें। जब उन्होंने अपना कार्य शुरू किया था उस समय अरब एक मरुस्थल था, मूर्तिपूजक कबीलों का रहस्यमय संसार था। उन्होंने पागलपन और अंधविश्वास को रोका, उनका उपयोग भी किया। और यहूदी और ईसाई धर्म के स्थान पर उन्होंने एक ऐसा धर्म बनाया जो सरल, स्पष्ट और सदृढ़ हो और निष्कुट, साहस और जातीय अभिमान से युक्त हो जिसने एक ही पीढ़ी में एक शताब्दी में हजारों विजय हासिल की और एक साम्रज्य स्थापित किया और आज यह आधे विश्व में एक ओजसवी फौज के रूप में विधमान है।

William J Durant, was an American writer, historian, and philosopher and in his book "The Heroes of History" A brief history of civilization from ancient times to the dawn of the modern age he quotes about Muhammad (pbuh) :

"If we judge greatness by the influence, he (Mohammad) was one of the giants of history. He undertook to raise the spiritual and moral level of a people harassed into barbarism by heat and foodless waste and he succeeded more completely than any other reformer: seldom has any man so fully realized his dream. He accomplished his purpose through religion not only because he himself was religious, but because no other medium could have moved the Arabs of his time. He appealed to their imagination, fears and hopes and spoke in terms that they could understand.

When he began, Arabia was a desert flotsam of idolatrous tribes but when he died it was a nation. He restrained fanaticism and superstition, but also used them. Upon Judaism, Zoroastrianism and his native creed, he built a religion simple, clear and strong, as well as morality of ruthless courage and racial pride which, in a generation, marched to a hundred victories in a century to empire and remains to this day a virile force through half the world.

”सभी मानव स्वतंत्र पैदा होते हैं और उनकी गरिमा और अधिकार एक से होते हैं। वे उद्देश्यपूर्ण और विवेकशील होते हैं, उन्हें एक दूसरे के साथ भ्रातृभाव के साथ व्यवहार करना चाहिए“

युनिवर्सल डेक्लेरेशन आफ़ ह्युमन राईटस / Universal Declaration of Human Rights

“All human beings are born free and equal in dignity and rights. They are endowed with reason and conscience and should act towards one another in a spirit of brotherhood”

फरकोनेस वाल्टेयर, एक फ्रान्सीसी प्रबंधनों के प्रचारक, इतिहासकार और विचारक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "वाल्टेयर एंड इस्लाम में" मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहा है: पवित्र पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) निसंदेह महान व्यक्ति थे। वह बड़े विजेता, चतुर विधान रचयिता, एक न्यायपूर्ण राजा और पवित्र पैग़म्बर थे। उन्होंने इस धरती पर आम लोगों के समक्ष महानतम भूमिका अदा की।

François Voltaire was a proponent of French Enlightenment, a historian, and a philosopher and in his book "Voltaire and Islam" he states about Prophet Muhammad (pbuh):

The holy prophet Muhammad (pbuh) indubitably was a great man. He was a mighty conqueror, a wise legislator, a just king and a pious prophet. He fulfilled the greatest possible role in front of ordinary people on the earth.

वाशिंगटन इरविन, एक अमेरिकी लेखक, निबंधकार, इतिहासकार और एक राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद (लंदन)" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह उल्लेख किया: पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) अपने खानपान के मामले में अत्यंत सरल थे तथा कठोर उपवास (रोज़े) रखते थे। उन्होंने कोई तड़क भड़क वाली पोशाक नहीं पहनी, न ही कभी कोई दिखावा किया। सरलता न सिर्फ उनकी पोशाक में झलकती थी अपितु किसी स्रोत के इतनी सहज से विभेद के लिए वास्तविक असम्मान का परिणाम थी। वह निजी व्यवहार में न्यायपूर्ण थे। उन्होंने मित्रों, अजनबी व्यक्तियों, अमीरों और गरीबों, शक्तिशाली और कमजोर व्यक्तियों के साथ एक सा व्यवाहर किया और आम आदमी उन्हें मिलनसार व्यवहार के लिए प्यार करते थे जो उनसे मिलता था और वह उनकी शिकायतों को सुनते थे ।

Washington Irving was an American author, essayist, biographer, historian, and diplomat and he mentions Prophet Muhammad (pbuh) in his book "Life of Muhammad (London)" as:

"Prophet Muhammad (pbuh) was sober and abstemious in his diet and a rigorous observer of fasts. He indulged in no magnificence of apparel, the ostentation of a petty mind; neither was his simplicity in dress affected but a result of real disregard for distinction from so trivial a source.

In his private dealing he was just. He treated friends and strangers, the rich and poor, the powerful and weak, with equity and was beloved by the common people for the affability with which he received them, and listened to their complaints."

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"तुमसे पहले के लोग इसलिए बर्बाद हो गए क्योंकि जब अमीर लोग चोरी करते थे तो तुम उनको छोड़ देते थे, और जब ग़रीब लोग चोरी करते थे तो तुम उनको सज़ा देते थे। अल्लाह की कसम अगर मेरी (बेटी फातिमा बिन्त मुहम्मद, सल्ल०) भी चोरी करती तो मैं उसका हाथ काट देता"

"People before you were destroyed because when the noble among them stole, they would let him go; and if the poor and weak stole they would punish him. By Allah! If Fatimah, (daughter of Muhammad, pbuh) steals, I would cut her hand off"

अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को विश्व के सबसे महान विधि निर्माता के रूप में सम्मान प्रदान किया हुआ है।

PROPHET MUHAMMAD (PBUH)

HONORED BY U.S. SUPREME COURT
AS ONE OF THE GREATEST LAWGIVERS
OF THE WORLD.

"मानव जीवन का एक मात्र प्रयोजन सेवा करना और दयालुता का प्रदर्शन करना, दूसरों की मदद करने की इच्छा जताना होता है"

अल्बर्ट शिटज़र

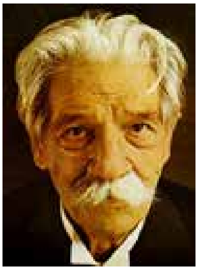

"The purpose of human life is to serve and to show compassion and the will to help others"

Albert Schweitzer

सर थामस वाकर आरनल्ड, एक विख्यात ब्रिटिश सुधारवादी और इस्लामी कला के इतिहासकार ने अपनी पुस्तक "दी प्रीचिंग ऑफ इस्लाम" में इस्लाम के बारे में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं: इस्लाम ऐसा धर्म है जो अनिवार्य रूप से विस्तृत अर्थ में युक्तिपरक है .....और ईश्वर की एकत्मता का हठधर्म हमेशा ही भव्यता पूर्ण, अनवरत सुचिता और निचित दृढ़ विश्वास के साथ उसमें उद्घाटित है जिसे इस्लाम के दायरे के बहार प्राप्त करना मुश्किल है। ऐसा समुदाय है जो सभी प्रकार की ईश्वर परक जटिलताओं से अलग और पारशुद है और परिणाम स्वरुप इसमें साधारण समझ वाले व्यक्ति के लिए सुग्राहय है और वास्तव में मानवों के अवचेतन में प्रवेश करने की आश्चर्य जनक शक्ति विधमान है।

Sir Thomas Walker Arnold was an eminent British orientalist and historian of Islamic art and his view about Islam is mentioned in his book 'The Preaching of Islam' as:

"Islam is a religion that is essentially rationalistic in the widest sense of this term … and the dogma of unity of God has always been proclaimed therein with a grandeur, a majesty, an invariable purity and with a note of sure conviction, which it is hard to find surpassed outside the pale of Islam. A creed so precise, so stripped of all theological complexities and consequently so accessible to the ordinary understanding might be expected to possess and does indeed possess a marvelous power of winning its way into the consciences of men."

सैमुअल पार्सन्स सकॉट, एक अमेरिकी अटार्नी, बैंकर और विद्वान अपनी पुस्तक, "हिस्ट्री आफ दी मूरिष अम्पायर इन यूरोप" में इन शब्दों में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति आदर व्यक्त करते हुए लिखा: यदि किसी धर्म का उद्देश्य नैतिक मूल्यों को मन में बैठाना है, बुराइयों को दूर करना है,मानवीय खुशियों को बढ़ाना है,मानवीय बौद्धिक स्तर का प्रसार करना है। यदि किसी अच्छे कार्य को करने से वह दिन अच्छा होता है जब कर्मों का हिसाब किताब करने हेतु बुलाया जाता है तो यह स्वीकार करना न तो अपमानजनक होगा और न ही अनुचित होगा कि मुहम्मद (सल्ल०) वास्तव में ईश्वर का प्रचारक थे।

Samuel Parsons Scott, known as S.P. Scott, was an American attorney, banker, and scholar. In his book "History of the Moorish Empire in Europe" he showed his gratitude to Prophet Muhammad (pbuh) in these words

"If the object of religion be the inculcation of morals, the diminution of evil, the promotion of human happiness, the expansion of the human intellect, if the performance of good works will avail in the great day when mankind shall be summoned to its final reckoning it is neither irreverent nor unreasonable to admit that Muhammad (pbuh) was indeed an Apostle of God."

"सोने की अदायगी सोने से, चांदी की चांदी से, गेहूं की गेहूं से, बाजरे की बाजरे से, खुजूर की खुजूर से और नमक की नमक से होती है। जैसे भुगतान किया जाता है यह भुगतान तुरंत होता है तो यदि कोई अपेक्षा से ज्यादा भुगतान करता है या भुगतान करने की मांग करता है और वह सूद खोरी का व्यापार करता है। इस प्रकार ज्यादा देने वाला और ज्यादा पाने वाला दोनों दोषी हैं"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Gold is to be paid by gold, silver by silver, wheat by wheat, barley by barley, dates by dates and salt by salt, like for like, payment being made on the spot. If anyone gives more or asks for more, he has dealt in usury. The receiver and the giver are equally guilty"

थॉमस कारलाइल, स्कॉटलैण्ड के निवासी दार्शनिक, व्यंग्यकार, निबन्धकार, इतिहासकार एवं शिक्षक ने अपनी पुस्तक "हीरोज़ एंड हीरो वर्शिप एंड दी हिरोइक इन हिस्ट्री 1840" में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के निर्दोष चरित्र की पूर्ण रूप से प्रशंसा की है। मिथ्यापूर्ण बातों का पाश्चात्य निंदनीय बातों पर आधारित जो धर्मोत्साहमय ग़लत जोश के कारण इस इंसान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चारों ओर ढ़ेर लगा दिया है वह केवल हमारे लिए सज्जनशीलता का विषय है। एक मौन महान आत्मा जो सच्चाई के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है वो सारे विश्व को प्रकाश देने वाले थे, जगत के विधाता ने उनको ऐसा ही आदेश दिया था। पूर्वाग्रही नास्तिक लोग दावा करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) केवल व्यक्तिगत प्रसिद्वि, गौरव, सत्यवादी श्रेष्ठ अवस्था प्राप्त करने के इच्छुक थे। परमात्मा की सौगन्ध यह एक झूठा दावा है, यह महान गहरे हृदय वाला मरूभूमि पुत्र (रेगिस्तान–पुत्र) अपनी कान्तिमय काली आंखों से, गहरी आत्मा से, जो करूणा, परोपकारिता, दया, भक्ति, धर्मनिष्ठा, बुद्वि एवं दृढ़ विश्वास से भरी, उन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) में यह गुण एवं भावनाएं थी। सांसारिक महत्वकांक्षाओं का उनमें अभाव था, यह कैसे हो सकता है घ्जबकि वह एक मौन महान आत्मा के मालिक थे, वह इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं हो सकते, वह एक महान सत्यवादी पुरूष हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र और उनकी उदात्त एवं उत्कृस्ट शिक्षाओं का विश्लेषण करने के उपरान्त कारलाइल ने कहा कि "मैं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उनके आडम्बर–मुक्त स्वभाव के कारण उनको बेहद पसंद करता हूं"

Thomas Carlyle, was a Scottish philosopher, satirist, essayist, historian and teacher. in his book "Heroes and Hero Worship and The Heroic in History (1840)" he is full of praise for the impeccable character of Muhammad(pbuh):

"The lies (western slander) which well-meaning zeal has heaped round this man (Muhammad, pbuh) are disgraceful to ourselves only".

"A silent great soul, one of that who cannot but be earnest. He was to kindle the world, the world's maker had ordered so."

"Prejudiced atheists claim that Muhammad (pbuh) only desired personal fame, glory and authority .... By God this is a false claim! This great deep – hearted son of the desert, with his beaming black eyes, deep soul full of mercy and beneficence, kindness and piety, wisdom and persuasion had thoughts in him other than worldly ambitious. How can this not be when he had a silent great soul; he was one of those who cannot but be in earnest !" After analyzing Prophet Muhammad's character and sublime teachings , Carlyle said, "I like Muhammad for his hypocrisy – free nature."

“समस्त रूकावटों तथा बाधाओं, निराशाओं एवं असंभावनाओं के बावजूद स्थायित्व, दृढता एवं अध्यव्यवसाभ वह कारण है कि जो समस्त बातें उस दृढ आत्मा को कमज़ोर लोगों से विशिष्ठ करती है।”

थॉमस कारलाइल / Thomas Carlyle

“Permanence, perseverance and persistence in spite of all obstacles, discouragements, and impossibilities: It is this, that in all things distinguishes the strong soul from the weak.”

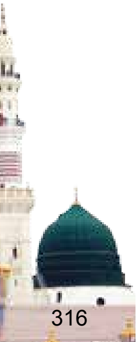

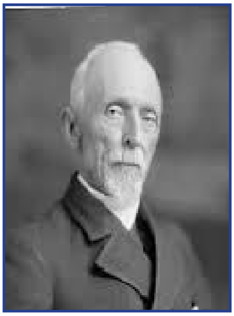

स्टूबर्ट जे डब्लू, सोसइटी फॉर प्रमोटिंग के प्रवर्तक ने अपनी पुस्तक "इस्लाम एंड इट्स फाउंडर" में लिखा है: उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना जाता है जिसके पास साधनों की कमी थी और उन्होंने जो कार्य संपन्न किया उसके लिए विश्व के इतिहास में ऐसा कोई नाम सामने नहीं आता है जो मक्का के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के समक्ष ठहर सके। जो आवेग उन्होंने पैदा किया उससे अनगिनत सल्तनतें उनके आस्तित्व की ऋणी हो गई। स्वच्छ शहर और राजशाही महत्ता बड़े बड़े प्रान्त उनके विश्वास के आज्ञाकारी बने। और सभी से आगे उनकी वाणी ने पीढ़ियों तक राज किया, उनके वचन लोगों के जीवन के नियमों के रूप में स्वीकार्य बने और वे निश्चित तौर पर आने वाले विश्व का मार्ग दर्शक बनेंगे। हजारों पूजास्थालों में विश्वास से परिपूर्ण आवाज़े उनको दुआ देते हैं जिन्हें वे ईश्वर के पैगम्बर के समान आदर प्रदान करते हैं। वह धर्म दूत की एक मोहर के समान हैं। उन्हें मानवीय कीर्ति के एक मानक के रूप में माना जाता है जिस की चमक अमित है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है।

Stobart J W H Founder, Society for Promoting, Writes in his book "Islam and its Founder":
“Judged by the smallness of the means at his disposal, and the extent and permanence of the work that he accomplished, no name in world’s history shines with a more specious luster than that of the Prophet of Mecca. To the impulse, which he gave, numberless dynasties have owed their existence, fair cities and stately palaces and temples have arisen, and wide provinces became obedient to the Faith. And beyond all this, his words have governed the belief of generations, been accepted as their rule of life, and their certain guide to the world to come. At a thousand shrines the voices of the faithful invoke blessings on him, whom they esteem the very Prophet of God, the seal of the Apostles... Judged by the standards to human renown, the glory of what mortal can compare with his?”

Alfred Martin was an American Philosopher and Historian and in his book ‘The Great Religious Teachers of the East’ he described about Prophet Muhammad (pbuh) as mentioned below.
“The Successful prophet - Nor is anything in religion’s history more remarkable than the way in which Muhammad (pbuh) fitted his transfiguring ideas in to the existing social system of Arabia. To his everlasting credit it must be said that in lifting to a higher plane of life the communities of his day and place, he achieved that which neither the Judaism nor the Christianity of Medieval Arabia could accomplish. Nay more, in the fulfillment of that civilizing work Muhammad (pbuh) rendered invaluable service not only to Arabia but also to the entire world.”

"जब पूरा संसार मौन हो तब एक भी आवाज शक्तिशाली बन सकती है। जब हम चुप होते हैं तब हम अपनी आवाज़ की महत्वता महसूस करते हैं"

मलाला युसूफ ज़ई

"When the whole world is silent, even one voice becomes powerful. We realize the importance of our voices only when we are silenced"

Malala Yousafzai

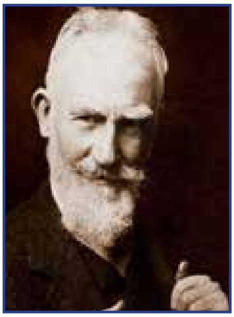

जॉर्ज बर्नार्ड शा, एक सुविख्यात नाटककार और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के संस्थापक थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दि जेनियस इस्लाम" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहा – मेरा विश्वास है कि उनकी तरह का कोई व्यक्ति आधुनिक विश्व में निरकुंश शासन करे तो वह एक तरह से संसार भर की समस्याओं को दूर कर सकेगा जिससे संसार को चिर प्रतीक्षित शांति और खुशियां प्राप्त होंगी। मैं मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म के बारे में भविष्यवाणी करता हूँ कि यह आने वाले दिनों में यूरोप में स्वीकार्य होगा क्योंकि आज के युग के यूरोप में इसको स्वीकार्यता मिलनी शुरू हो चुकी है।

George Bernard Shaw one of the most well known Irish playwright and a co-founder of the London School of Economics in his famous book "The Genuine Islam (1936)"considers Prophet Muhammad (pbuh):
"I believe that if a man like him were to assume the dictatorship of the modern world he would succeed in solving its problems in a way that would bring it the much needed peace and happiness: I have prophesied about the faith of Muhammad that it would be acceptable to the Europe of tomorrow as it is beginning to be acceptable to the Europe of today."

पोप माइकल सिरयानी कहते हैं: वैजंतिनियन शासको ने हमारे पवित्र गिरजाघरों की लूटमार, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता तथा निष्ठुरता से की। मुसलमान शासको के आगमन ने हमें रोमी क्रूरता से बचाया। उन्होंने हम ईसाइयों को अपने धर्म का पालन अपने तरीके से करने की पूर्ण आजादी प्रदान की। मुस्लिम शासन काल में ही हमें शांति और बराबरी का अनुभव हुआ।

Pope, Michael Siryani says: The Byzantinian emperors had our sacred churches plundered with utmost ruthlessness, savagery, tyranny, barbarism and terrorism. But, with the onset of the era of Muslim rule, the Muslim rulers had us delivered from the tyranny of the Romans. They give us, Christians, full freedom to practice our religion the way we liked. It was during the era was Muslim rule that we had the peace and equanimity fallen to our lot.

"किसी व्यक्ति के प्रति किसी की थोड़ी भी दयालुता पूरी मानवता के प्रति बड़े पैमाने पर प्यार के मुकाबले बेहतर है"

रिचर्ड डेहमेल

"A little kindness from person to person is better than a vast love for all mankind"

Richard Dehmel

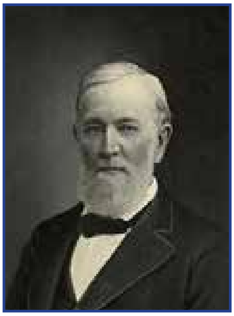

एडवर्ट मानटेट, एक फ्रेंच पेंटर और इतिहासकार जिसने अपनी पुस्तक "क्रिस्चियन प्रोपेगंडा अगेंस्ट मुस्लिम" में इस्लाम के बारे में यह पंक्ति लिखीः इस्लाम व्युत्पत्तिमूलक तौर पर तथा ऐतिहासिक तौर पर बड़े पैमाने पर अनिवार्य रूप से बुद्धिपरक माना जाता है। पैगम्बर की शिक्षाओं को कुरान में मौलिक तौर पर शुरूआती बिंदु के रूप में स्थान दिया गया है और ईश्वर की एकता का धार्मिक सिद्धान्त हमेशा ही दृढ विश्वास का ऐसा आधार रहा है जिसे इस्लाम की मान्यता से बाहर करना कठिन है। इस्लाम का धार्मिक सिद्धान्त अत्यन्त सुस्पष्ट है और इसमें सैद्धांतिक जटिलताओं को समाप्त कर दिया गया है जिसके परिणाम स्वरूप साधारण समझबूझ वाले व्यक्तियों के लिये यह सुगम्य है और वास्तव में इस्लाम में मनुष्यों के अतःकारण में अपना स्थान बनाने की अभूतपूर्व शक्ति विद्यमान है।

Edward Montet was a French Painter, Historian and he said these lines about Islam in his book "Christian Propaganda Against Muslims" :

"Islam is a religion that is essentially rationalistic in the widest sense of this term considered etymologically and historically ..... The teachings of the prophet, the Qur'an has invariably kept its place as the fundamental starting point, and the dogma of unity of God has always been conviction, which it is hard to find surpassed outside the pale of Islam......A creed so precise, so stripped of all theological complexities and consequently so accessible to the ordinary understanding might be expected to posses and does indeed posses a marvelous power of winning its way in to the consciences of men."

अल्फेर्ड गुइल्लाम, अरबी भाषा के प्रोफेसर ने अपनी पुस्तक "इस्लाम में" पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों के बारे में यह कहा–मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी तीन छोटी छोटी लड़ाइयों में लड़ाकों की संख्या कभी भी कुछ हजार व्यक्तियों से अधिक नहीं थी किन्तु महत्वपूर्ण यह है कि विश्व इन लड़ाइयों को निर्णायक लड़ाइयों में से एक मानता है।

Alfred Guillaume was a Professor of Arabic at Princeton University and in his book Islam in regards to the Battle fought by Prophet he said following words about Prophet Muhammed (pbuh):

Muhammad (pbuh) accomplished his purpose in the course of three small engagements: the number of combatants in these never exceeded a few thousand, but in importance they rank among the world's decisive battles.

"कितना भी पश्चाताप कर लो तुम्हारा अतीत नहीं बदलेगा और कितनी भी चिंता कर लो तुम्हारा भविष्य नहीं बदलेगा। आरामदायक बनो, परिणाम अल्लाह निर्धारित करेंगे। यदि किसी को कहीं और जाना है तो वह कभी भी तुम्हारे मार्ग में नहीं आएगा किन्तु यदि तुम्हारे भाग्य में उसका सामना करना लिखा है तो तुम भाग नहीं पाओगे"

उमर बिन ख़त्ताब / Umar ibn Khattab

"No amount of guilt can change the past and no amount of worrying can change the future. Go easy on yourself, for the outcome of all affairs is determined by Allah's decree. If something is meant to go elsewhere it will never come your way but if it is yours by destiny from you it cannot flee"

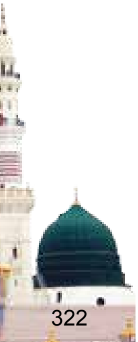

डा.ई.मार्शल जॉनसन, एक अमेरिकी प्रोफसर थे। जिन्होंने 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कीं। उन्होंने अपनी पुस्तक "डॉक्यूमेंट्री दि ट्रूथ" में कुरान में दिए गए वैज्ञानिक ज्ञान पर आश्चर्य व्यक्त किया। उन्हें इस बात पर भी आश्चर्य हुआ कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) किस प्रकार से वैज्ञानिक तथ्यों की वयाख्या कर पाए। जॉनसन के अनुसार यह कोई दैवीय अन्तःक्षेप ही रहा होगा। कुरान में न केवल वाह्य आकार के विकास का ही वर्णन नहीं है वरन इसमें आंतरिक स्थितियों, भूर्ण के अंदर की अवस्था, भूर्ण के सृजन और विकास को भी बल दिया गया है। जिन मुख्य अवस्थाओं का कुरान में वर्णन है उनको समसामयिक विज्ञान ने मान्यता दी है। एक वैज्ञानिक के रूप में मैं केवल उन की बात करूंगा जिन्हें मैं विशेष तौर पर देख सकता हूँ। मैं भूर्ण विज्ञान और जीव विज्ञान के विकास को समझ सकता हूँ। मैं उन शब्दों को समझ सकता हूँ जिन्हें कुरान से अनुवाद करके मुझे बताया गया है। मैं आज जो कुछ जानता हूँ और जिसका मैं वर्णन कर सकता हूँ उनको ध्यान में रखकर यदि मैं स्वयं को उस युग तक ले जाऊं तो मैं कह सकता हूँ कि जिस प्रकार से कुरान में वर्णन किया गया है मैं उस तरह से वर्णन नहीं कर सकता। मैं इस अवधारणा को नकारने वाले तथ्य का कोई साक्ष्य नहीं देख पा रहा हूँ कि यह व्यक्ति, मुहम्मद (सल्ल०) ने किसी अन्य स्थान से लाकर इस सूचना को विकसित किया। अतः मुझे इस अवधारणा के प्रतिकूल कोई अन्य अवधारणा देखने को नहीं मिले जो कुछ मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा था उनमें दैवीय अन्तःक्षेप रहा होगा।

Dr. E. Marshall Johnson was an American Professor and author of more than 200 publications and in his book Documentary: "The Truth" he is wonderstruck at the scientific knowledge present in Qur'an and how Prophet Muhammad(pbuh) was able to explain things through what Johnson calls "divine intervention"

"The Quran describes not only the development of external form, but emphasizes also the internal stages, the stages inside the embryo, of its creation and development, emphasizing major events recognized by contemporary science."

"As a scientist, I can only deal with things which I can specifically see. I can understand embryology and developmental biology. I can understand the words that are translated to me from the Quran. If I were to transpose myself into that era, knowing what I knew today and describing things, I could not describe the things which were described. I see no evidence for the fact to refute the concept that this individual, Muhammad (pbuh), had to be developing this information from some place. So I see nothing here in conflict with the concept that divine intervention was involved in what he was able to say."

"अल्लाह से बात करने से सांस नहीं थमती,
अल्लाह का इंतजार करने में समय नहीं खोता,
अल्लाह पर विश्वास करोगे तुम घाटे में नहीं रहोगे"

अज्ञात / Anonymous

"Talk with Allah no breath is lost.
Wait for Allah, no time is lost.
Trust in Allah you will never be lost"

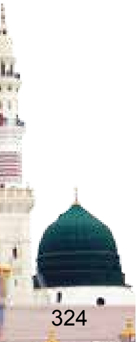

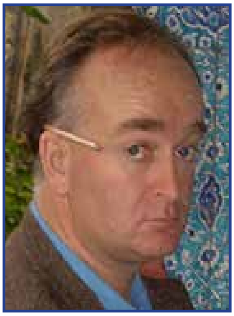

बरनेबी रोजरसन, प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक, प्रकाशक और इतिहासकार ने अपनी पुस्तक "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ए बायॉग्राफी" में पूर्व तथा पश्चिम के अन्य नेताओं के साथ तुलना करते हुए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का वर्णन इस प्रकार किया है: इस्लाम के भीतर तथापि वह सभी मानव मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के एक पैग़म्बर (सल्ल०) थे और आदम से लेकर अब्राहम, मोसेस और जीजस तक जिन्होंने मानवता को ईश्वर का संदेश देने के लिए संघर्ष किया था। महान व्यक्तियों की पंक्ति में सबसे ऊपर हैं। यदि सम्पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्ष के परिदृश्य से भी देखें तो वह एक सुपर हीरो की तरह हैं। वह खलीफा साम्राज्य के प्रवर्तक हैं। वह विश्व के सबसे महान साम्राज्य थे। वह क्लासिकल अरबी भाषा का एक नई साहित्य और विश्व की नई भाषा का सृजन हैं,वह नई राष्ट्रीय पहचान "अरब" के प्रवर्तक है। वह इस्लाम के सृजन हैं। इस्लाम विश्व भर की संस्कृति बन गयी है जिसको मानने वालों की संख्या अब 1200 मिलियन हो गई है और यह लगातार इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि आप गिनती नहीं कर पाएंगे। यूरोपीय सभ्यता के युगपुरुषों महान अलकंजेंडर, सम्राट फॉनस्टेटाइन,पाल और सेंट फ्रांसिस के कुछ गुणों में से उनके श्रेष्ठ गुणों को जोड़ कर आप इस व्यक्ति के कद की ऊंचाई को समझ सकेंगे।

Barnaby Rogerson was a Famous British Author, Publisher and Historian and in his book 'Prophet Muhammad – A Biography' he gives a description of prophet Muhammad (pbuh) comparing with other leaders of the east and the west-

"Within Islam, however he represents almost everything of human value. Muhammad (pbuh), Prophet of God, the last and the greatest of that long line of men, from Adam through to Abraham, Moses and Jesus, who have struggled to bring the word of God to humankind. Even when viewed in an entirely secular perspective he remains a super hero. He was founder of the caliphate, one of the greatest empires of the world; creator of classical Arabic, a new literature and world language; founder of a new national identity, the Arab; and the Creator of Islam, a worldwide culture that is now 1200 million strong and growing more rapidly than you can count. Only by marrying the best qualities of certain characters from European civilization – a combination, say, of Alexander the Great, Diogenes and Aristotle, or the Emperor Constantine, St. Paul and St. Francis - can you begin to understand the measure of the man."

"यदि प्रत्येक व्यक्ति इस्लाम में मुस्लिम महिलाओं की वास्तविक स्थिति जान ले तो पुरुष भी महिला होना चाहेंगे"

अज्ञात / Anonymous

"If everyone knows the true status of Muslim women in Islam then even the men would want to be women"

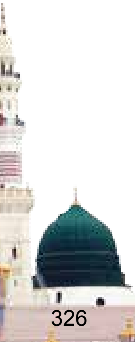

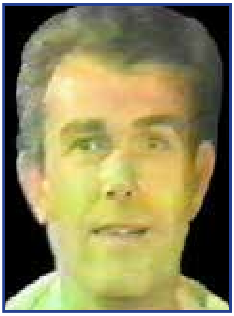

प्रो० अलफर्ड क्रोनर, जोहानीज गुतनावरक विश्वविद्यालय में भूमिविज्ञान के प्रोफेसर, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में उनका दृष्टिकोण उनकी पुस्तक "दी ट्रुथ" में इस प्रकार से देखा जा सकता है। ऐसे कई प्रश्नों के बारे में सोचकर तथा यह सोचकर की मुहम्मद (सल्ल०) कहाँ से आए, मैं यह समझ पाया हूँ कि यह नितांत असंभव है कि वह इस विश्व के सामान्य उदगम जैसी चीजो के बारे में जानते होंगे क्योंकि कुछ ही वर्ष की अवधि में ही वैज्ञानिक अत्यंत जटिल और उन्नत तकनीकी विधियों से ही यह पता लगा सके हैं कि यह इस प्रकार से घटित हुआ है। मैं समझता हूँ कि 1400 वर्ष पूर्व जो व्यक्ति नाभिकीय भौतिकी के बारे में कुछ नहीं जानता था, वह अपना मस्तिष्क प्रयोग करके सब यह पता नहीं लगा सकता था कि आकाश और पृथ्वी का उदगम स्रोत एक ही है और ऐसे कई प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता था जिनकी आज हम चर्चा करते हैं।

Prof. Alfred Kroner is a Professor of Geology at Johannes Guttenberg University of Mainz in Mainz, Germany and his point of view on Prophet Muhammad (pbuh) can be found in his book 'The Truth':

"Thinking about many of these questions and thinking where Muhammad came from, he was after all a Bedouin. I think it is almost impossible that he could have known about things like the common origin of the universe, because scientists have only found out within the last few years with very complicated and advanced technological methods that this is the case."

"Somebody who did not know something about nuclear physics 1400 years ago could not, I think, be in a position to find out from his own mind for instance that the earth and the heavens had the same origin, or many others of the questions that we have discussed here".

अडोल्फ़ हिटलर, नाज़ी पार्टी का एक नेता और प्रभावशाली तानाशाह था। द्वितीय विश्व युद्ध का केंद्र बिंदु हिटलर ही था। हिटलर के एक घनिष्ठ मित्र अहमद हूबर अबैत "रिलिजन एंड फ्रॉफेट"में इस प्रकार उद्घृत किया हैं : मैं जिस एक मात्र धर्म का आदर करता हूँ वह इस्लाम है और मैं जिस पैगम्बर की प्रशंसा करता हूँ वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) है।

Adolf Hitler who was the leader of the Nazi party, an effective dictator of Nazi German. Hitler was at the centre of world war II. Ahmed Huber quotes his friend Hitler, in Kevin Coogan's book "The mysterious Ahmed Huber about religion and prophet

"The only religion I respect is Islam. The only Prophet I admire is the Prophet Muhammad (pbuh) ."

"सिद्धांत बताता है कि अल्लाह का कानून क्रूर और अनुचित है, लेकिन अल्लाह का फ़रमान है कि उसका कानून वास्तव में उचित है"

सुल्तान हसनल बोल्किअह, ब्रुनेई

"Theory states that Allah's law is cruel and unfair, but Allah himself has said that his law is indeed fair"

Sultan Hassanal Bolkiah, Brunei

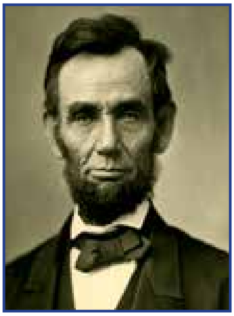

अब्राहम लिंकन, अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति जिन्होंने सिविल वार में अमरीका का नेतृत्व किया था। उन्होंने जो पंक्तियाँ कही थीं उनकी गूंज हदीस में परिलाक्षित है:
जब तुम अच्छा काम करते हो तो अच्छा महसूस करते हो।
जब तुम बुरा काम करते हो तुम्हें बुरा लगता है यही मेरा धर्म है।
अपनी अंतरात्मा से संवाद कर उस अंतरात्मा से मार्ग निर्देशन प्राप्त करो। अच्छा काम वही होता है जिसको करने से आत्मा को शांति मिलती है और ह्रदय संतोष महसूस करता है और पाप युक्त कार्य वह कार्य होता है जिसका तुम्हारी आत्मा में कोई स्थान नहीं होता और जो तुम्हारे ह्रदय को कचोटता रहता है यद्यपि अन्य लोग उस कार्य को विधिसम्मत मानते हैं।

Abraham Lincoln was the 16th President of the United States. He led the United States through its Civil War and the lines which he said echoes what has been prescribed in hadith
"When I do kind things I feel good, when I do bad things I feel bad. That's my religion".
"Seek the guidance of thy soul, seek the guidance of thy soul! The virtuous deed is one where by thy soul feels restful and thy heart contented and sinful act is one which rankles in thy soul and which contracts thy heart even though the other people endorse it as lawful."

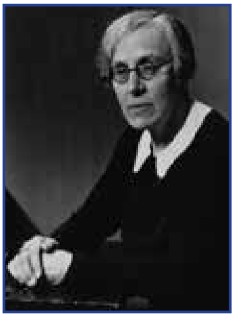

डॉ.अगनेसमोड रायडेन, एक ब्रिटिश धर्म प्रचारक, लेक्चरर और लेखिका थी। उन्होंने पैग़म्बर मोहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह लिखा: पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसे शानदार और सर्वशक्तिमान ईश्वर की अवधारणा का परिचय दिया है, जिसकी आँखों के सामने ये सभी वैश्विक प्रणालियाँ घास के तिनके के समान हैं। किसी भी मानव ने कभी भी ऐसी पूर्व स्वतंत्रता के बारे में कभी नहीं सोचा जिसकी स्थापना पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने की थी।

Dr. Agnes Maude Royden was a British Preacher, Lecturer & Author and this is what she said about Prophet Muhammad (pbuh):
"Prophet Muhammad introduced the concept of such Glorious and Omnipotent God in whose eyes all worldly systems were pieces of straw. Islamic equality of mankind is no fiction as it is in Christianity. No human mind has ever thought of such total freedom as established by Prophet Muhammad (pbuh)."

"किसी ने हज़रत आइशा से पूछा कि उन्होनें पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) में सबसे अदभुत बात क्या अनुभव की। उन्होनें कहा उनकी तो हर बात ही अदभुत थी लेकिन वह यह कहेंगी कि जब रात का अँधेरा छाने लगता था और हर कोई अपने प्रिय की ओर आकर्षित हो जाता था तो वह अल्लाह के साथ हो जाते थे"

अज्ञात / Anonymous

Someone asked Hazrat Aaisha about the most wondrous thing she observed about the Prophet Muhammad (pbuh). She said, "Everything about him was wondrous. But i will say this: when the veiling of the night came, and when every lover went to his lover, he went to be with Allah"

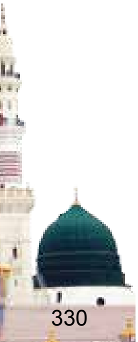

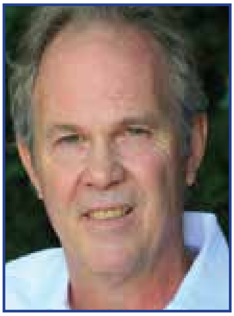

माइकल वोल्फ, एक अमेरिकी कवि और यूनिवर्सिटी प्रोडक्शन फाउंडेशन के अध्यक्ष और कार्यकारी प्रोड्यूसर ने अपनी पुस्तक "मुहम्मद" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में निम्नलिखित विचार प्रकट किए। मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने अनुयाइयों को एक दूसरे के प्रति एक अच्छा इन्सान बनने की शिक्षा दी न कि एक दूसरे के अधिकारों का उल्लंघन करने की ? आदमियों और औरतों की एक दूसरे के साथ मानवीय व्यवहार करने के लिए कहा, भाइयों और बहनों को एक दूसरे के साथ भाई–बहन का व्यवहार करने को कहा और शायद यह महत्वपूर्ण है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने जान से मारने और बदला लेने की प्रथा समाप्त करने का आह्वान किया क्योंकि इस प्रथा से इस संस्कृति के जन्म से ही मानवता भयानक रूप से खून से नहाती रही है। मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं ने अपनी उपलब्धियों का गुणगान नहीं किया है। इस व्यक्ति ने लोगों को एक सूत्र में बांधा है और लोगों को एकेश्वरवाद का पाठ पढ़ाया। उन्हें शांति के मार्ग पर ले गये और फिर भी इन्हें अपना बड़प्पन नहीं मानते थे। इसके ठीक विपरीत उन्होंने अपने समुदाय से पूछा! क्या मैं अपने ईश्वर और आप लोगों के प्रति अपने मिशन में सफल रहा? आप इन शब्दों में ही एक पूर्ण विश्वास करने योग्य व्यक्ति है जो अपने कार्य के प्रभावों के प्रति आश्वस्त नहीं है। यह तो मानवीय स्वभाव है कि वह जानना चाहता है और वह पूछता है और उसके अनुयाई उसका सकरात्मक उत्तर देते हुए तीन बार हाँ कहते हैं और कहते हैं कि "हाँ, आप अपने मिशन में सफल रहे ह।

Michael Wolfe is an American poet, author, and the President and Executive Producer of Unity Productions Foundation and in his book "Muhammad": Legacy of a Prophet (pbuh) he is of the following views about Prophet Muhammad (pbuh):

“He tells them to be good to each other and not to violate each other’s rights. For men and women to treat each other humanely, for brothers and sisters to treat each other well, and for Muslims to treat each other as brothers and sisters. And, perhaps most importantly, he calls an end to revenge, to blood killing, to the vendetta, which has bled this culture terribly since he was born. At the end of Muhammad’s sermon, he does not list his achievements. This man has unified people. He has taught them monotheism. He has brought them to peace. And yet, he doesn’t mark these as his accomplishments. Quite the opposite, he asks his community, “Have I fulfilled my mission to my God, and to you?” You can hear in his words the desire for a completed mission. This is a man of faith who is unsure of his effects. It’s a very human moment in which he needs to know, and he asks, and the people affirm that, yes, three times they say, “Yes, you have fulfilled your mission.”

"जितना अधिक तुम इस्लाम के बारे में जानोगे उतना ही यह जान पाओगे कि अल्लाह सिर्फ आंदोलन नहीं है, कुरान महज एक पुस्तक नहीं है और इस्लाम एक महज धर्म नहीं है"

अज्ञात / Anonymous

"The more you know about Islam, the more you know that salah isn't just movements, Quran isn't just a book, Islam isn't just a religion"

लेसली हैज़िलटन, एक ब्रिटश–अमेरिकी, लेखक है। उन्होंने अपने लेख में राजनीति, धर्म और इतिहास के अन्तर पर ध्यान केंद्रित किया, उन्होंने अपनी पुस्तक "दी फर्स्ट मुस्लिम" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह कहा: प्रत्येक व्यक्ति उनका नाम जानता है। वह सर्वकालीन सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। फिर भी हम में से अधिकांश व्यक्ति उनके बारे में थोड़ा ही जानते हैं। मेरी नई पुस्तक "दी फर्स्ट मुस्लिम" के बारे में जिन व्यक्तियों ने प्रश्न किये उनसे सर्वप्रिय प्रश्न यह था कि किस बात ने मुझे इस पर अनुसन्धान करने के लिए प्रेरित किया। अथवा शायद वह कौन सी बात है जो उन्हें आश्चर्य चकित कर सकती है।

Lesley Hazelton was a British American author whose work focuses on the intersection of politics, religion and history, in her book "The First Muslim" she talks of Prophet Muhammad (pbuh):as

"Everyone knows his name (Prophet Muhammad). He was, and still is, one of the most influential figures of all time, yet most of us have little real sense of the man himself. A favorite question of those asking about my new book, " The First Muslim" is thus what surprised me most in my research. Or rather, what might surprise them."

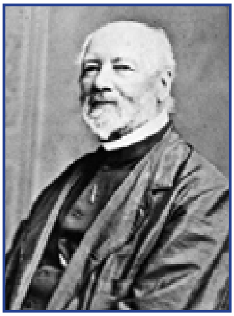

जॉन मीडीज रॉडवेल, इंग्लैंड के गिरिजाघर में पादरी और गैर मुस्लिम विद्ववान थे। पवित्र कुरान की अनुदित कृति के प्राक्कथन में उन्होंने ये विचार व्यक्त किए, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जीवनवृत्त उनके अंदर निहित शक्ति और जीवन का एक शानदार उदहारण है। ईश्वर और अदृश्य संसार के प्रति उसका आगाध विश्वास था। उन्हें हमेशा ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा जिन्होंने अपने अनुयाइयों के विश्वास, चरित्र, बल और उनके सांसारिक जीवन को प्रभावित किया। ऐसा कार्य किसी और ने नहीं बल्कि वास्तव में किसी महान व्यक्ति ने ही किया होगा या कोई महान व्यक्ति ही कर सकता है और किसी महान उद्देश्य के प्रसार के लिए जिसके प्रयास हमेशा फलीभूत होंगे।

John Medows Rodwell was an English clergyman of the Church of England and a Non – Muslim Scholar. in his preface to the translation of the Holy Quran he put forward his views in these words:

"Prophet Muhammad's career is a wonderful instance of the force and life that resides in him who possesses an intense faith in God and in the unseen world. He will always be regarded as one of those who have had that influence over the faith, morals and whole earthly life of their fellow men, which none but a really great man ever did, or can exercise; and whose efforts to propagate a great verity will prosper."

"कभी कभी आप के पास ऐसा कोई अवलम्बन नहीं होता जिस को आप अपनी परेशानियों के बारे में बता सकें, आप के पास सिर्फ धरती होती है जिस पर सर रखकर अपने आंसू बहा सकते हो"

डा. बिलाल फिलिप्स

"Sometimes you have no shoulder to cry on, but you always have a ground to put your head down and shed your tears on"

Dr. Bilal Philips

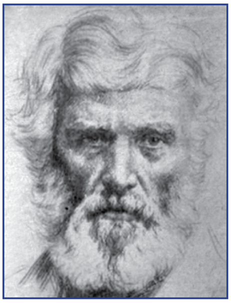

J W H Stab is an Organic Chemist at Clemson University. In his book "Islam and its Founder" he wrote these lines about Prophet Muhammad (pbuh):

"Judged by the smallness of the means at his disposal, and the extent and permanence of the work that he accomplished, no name in world's history shines with a more specious luster than that of the Prophet of Makkah. To the impulse, which he gave, numberless dynasties have owed their existence, fair cities and stately palaces and temples have arisen, and wide provinces became obedient to the Faith. And beyond all this, his words have governed the belief of generations, been accepted as their rule of life, and their certain guide to the world to come. At a thousand shrines the voices of the faithful invoke blessings on him, whom they esteem the very Prophet of God, the seal of the Apostles… Judged by the standards to human renown, the glory of what mortal can compare with his?"

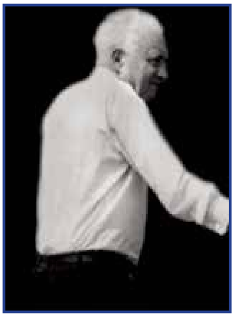

Dr. A Bertheran was a French Medical Scientist and Author and in his book ''Contribution des Arabs progress de sciences medicals (Paris 1883)'' he wrote

"To seek knowledge is the duty of every Muslim man and woman. 'Seek knowledge even though it be in China.' The savants are the heirs of the Prophets. These profound words of the great reformer are an indisputable contradiction to those who seek and exert themselves in putting the responsibility of the intellectual degradation of Muslims upon the spirit of the Qur'an. Let them read and meditate upon this great book and they will read that the Prophet incessantly called the attention and the meditation of his people to the splendid marvels, to the mysterious phenomenon of creation. The incredulous, skeptical and unbelieving may convince themselves that the importance of this book and its doctrine was not to throw back, eventually, the intellectual and moral faculties of a whole people. On the contrary, those who have followed its counsels have been the creators of a civilization which is astounding unto this day."

"जब तक आप अपने ह्रदय की बगिया से शत्रुता, घृणा, भय और बदले की भावना के जहरीले पौधों को उखाड़ नहीं देंगे तब तक आपको शांति प्राप्त नहीं होगी"

अज्ञात / Anonymous

"You will never find happiness until you clean the garden of your heart from the poisonous plants of envy, hatred, spite, and resentment"

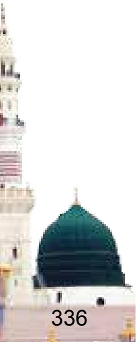

John Bagot Glubb was a British soldier, scholar and author and in his book 'The Life and Times of Muhammad' he wrote following lines about Muhammad (pbuh):

It is difficult to deny that the call of Muhammad (pbuh) seems to bear a striking resemblance to innumerable other accounts of similar visions, both in the Old and New Testaments, and in the experience of Christian saints, possibly also of Hindus and devotees of other religions. Such visions, moreover, have often marked the beginnings of lives of great sanctity and of heroic virtue. To attribute such phenomena to self-delusion scarcely seems an adequate explanation, for they have been experienced by many persons divided from one another by thousands of years of time and by thousands of miles of distance, who cannot conceivably have even heard of each other. Yet the accounts which they give of their visions seem to bear an extraordinary likeness to one another. It scarcely appears reasonable to suggest that all these visionaries 'imagined' such strikingly similar experiences, although they were quite ignorant of each other's existence.

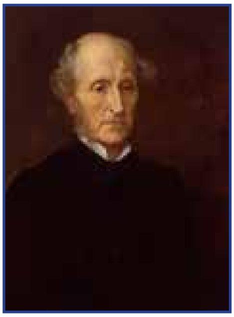

John Stuart Mill was a British philospher, political economist and civil servant and in his famous book History of Muhammed he praised Prophet Muhammed (pbuh) in following words:

Deeply read in the volume of nature, though extremely ignorant of letters, his mind could expand into controversy with the wisest of his enemies or contract itself to the apprehension of meanest of his disciples. His simple eloquence was rendered impressive by a manner of mixed dignity and elegance, by the expression of a countenance where the awfulness of his majesty was so well tempered by an amiable sweetness, that it exerted emotions of veneration and love. He was gifted with that authoritative air or genius which alike influences the learned and commands the illiterate.

"अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों, हज़रत नूह की जलप्रवाह से, इब्राहिम की अग्नि से, याकूब की नेत्रहिनी से, युसूफ़ की वियोग से, अय्यूब की अकेलापन से, मूसा की निष्ठुर शासक से, हारुन की विश्वासघात से, सुलेमान की राजपाठ से, तथा दाऊद का युद्ध से इम्तहान लिया। और तुम पूछ रहे हो मुझे इम्तेहान में क्यों डाला ! तो धैर्य रखो और गर्व करो क्योकि अल्लाह ने तुम्हें इम्तेहान में डालकर तुम्हे उन महान आत्माओं की लाइन में खड़ा कर दिया। तुम्हारा दु:ख और तकलीफ़ अल्लाह की तुमसे प्रेम का प्रतीक है"

हज़रत अबू बक्र / Hazrat Abu Bakr

"Allah tested; Prophet Nuh with a flood, Prophet Ibrahim with a fire, Yaqoob with blindness, Yusuf with separation, Ayyub with loneliness, Musa with tyrants, Haroon with betrayal, Sulaiman with kingdom and Dawood with war.

You're asking "why me?" Be patient and take honour that Allah tested you and allowed you to join the ranks of the great ones. Your tribulation is a sign of His Love for you."

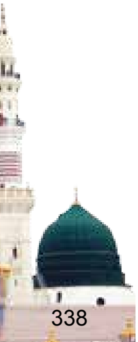

जॉन विलियम डरापर, अमीरकी वैज्ञानिक, विचारक, डॉक्टर, रसायनशात्री, इतिहासकार और फोटोग्राफर ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ इंटेलेक्चुअल डेवलपमेंट ऑफ यूरोप" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की महान विशेषता की इस प्रकार प्रशंसा की। जस्टीनियन (526 ई.पू.) की मृत्यु के चार वर्ष के उपरांत उनका जन्म अरब के मक्का शहर में हुआ। उन्होंने मानवीय समाज को अत्यधिक प्रभावित किया। उनकी व्यापक सोच और दिलदार प्रवृति ने सभी धर्मों के पवित्र आनुयाइयों को प्रभावित किया। उसने यह भी कहा "पैग़म्बर मोहम्मद (सल्ल०) में ऐसे गुण विद्यमान थे जिनसे कई बार साम्राज्यों के भविष्य का निर्णय हुआ जिनसे वह कई साम्राज्य के धार्मिक नेता बने, जिनसे उन्होंने एक तिहाई मानव सभ्यता के दैनिक जीवन का निर्देशन किया शायद ये गुण ही उनके ईश्वर के संदेशवाहक शीर्षक को सार्थक बनाते है।

John William Draper was an English - American scientist, philosopher, physician, chemist, historian and photographer and in his book "History of Intellectual Development of Europe" he praised the noble qualities of Prophet Mohammad (pbuh) in words written below:
"Four years after the death of Justinian, AD 569, was born at Makkah in Arabia. "Exercised the greatest influence upon the human race." His broad mindedness and large heartedness encompassed the pious followers of all faiths."
He adds; Prophet Muhammad (pbuh) possessed that combination of qualities which more than once has decided the fate of empires....to be the religious head of many empires, to guide the daily life of one third of the human race may perhaps justify the title of messenger of God."

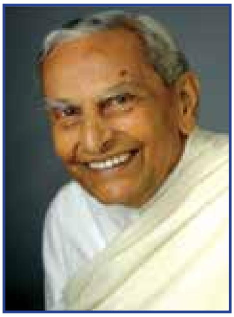

साधु टी एल वासवानी, एक भारतीय शिक्षाविद् और पुणे में मीरा आंदोलन के संस्थापक ने निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की:– "मैं दुनिया के शक्तिशाली नायकों में से एक के रूप में मुहम्मद (सल्ल०) को सलाम करता हूँ। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) एक विश्व शक्ति है और कई लोगों के उत्थान की एक शक्तिशाली शक्ति है"

Sadhu T L Vaswani, an Indian educationist and founder of Mira movement of education at Pune praised Muhammad (pbuh) using the following words "I salute Muhammad (pbuh) as one of the world's mighty heroes. Muhammad (pbuh) has been a world force, a mighty power of the uplift of many peoples."

चार बातें कोई नहीं जानता है सिर्फ अल्लाह जानता है:

कोई नहीं जानता है कि माँ के गर्भ में क्या है, लेकिन अल्लाह जानता है

कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, लेकिन अल्लाह जानता है

कोई नहीं जानता है कि बरसात कब होगी लेकिन अल्लाह जानता है

कोई नहीं जानता है कि वह कहाँ मरेगा, लेकिन अल्लाह जानता है

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

Prophet Muhammad (pbuh)

Four things that none knows but Allah:

None knows what is in the womb, but Allah

None knows what will happen tomorrow, but Allah

None knows when it will rain, but Allah

None knows where he will die, but Allah

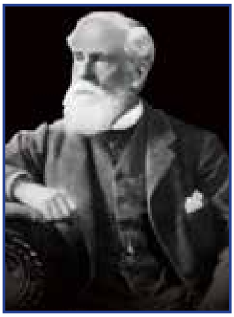

जेम्स जॉर्ज फोरलांग, अवध सरकार का मुख्य अभियंता और भारतीय सेना में मेजर जनरल ने अपनी पुस्तक "शार्ट स्टडीज इन साइंस आफ कंपरेटिव रिलिजन "में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में लिखा है: एक महान अरब निवासी, उनके विश्वास, उनके सार्वजनिक और निजी चरित्र, उनके गुणों और दोषों, उनके 40 वर्ष के समय काल और परिस्थितियों का सम्पूर्ण और गहन अध्ययन करने और मुहम्मद (सल्ल०) के सभी देशों में रह रहे सभी पंथों के अनुयाइयों से गहन विचार विमर्श के पश्चात् हमें यह बात माननी चाहिए कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का स्थान इस विश्व के महानतम राजाओं और इतिहास निर्माताओं की सूची में सबसे ऊपर है। कैंप और परिषद में उनके व्यवहार के विपरीत प्रजा, गवर्नर, बहादुर और अस्त व्यस्त या क़बीले राष्ट्र के प्रशासक और संगठनकर्ता के रूप में मुहम्मद (सल्ल०) को राज्य के व्यक्तियों,मित्रों और दुश्मनों में आदरणीय था जो व्यक्ति उन्हें निजी तौर पर या सार्वजनिक तौर पर जानते थे,वे उनसे प्यार करते थे उनका सम्मान करते थे।

James George Roche Forlong was The Chief Engineer of government of Oudh and The Major General of the Indian Army and he wrote about Prophet Muhammad (pbuh) in his book 'Short Studies in the Science of Comparative Religions':
"The Virtuous Prophet, after a long, very full and candid study of the great Arabian and his faith, his public and private character, virtues and defects; his times and circumstances – a study extending over forty years and in close connection with Muhammadans of all sects and nations, we must confess that the Prophet stands high in the list of the greatest of the Earth's rulers and makers of History... Alike in camp and council, as a governor of men, administrator and organizer of brave and turbulent tribes or settled nations. Muhammad commanded the respect of statesmen, friends and foes, and was loved, honored and esteemed by all privileged to know him privately and publicly."

जीन लेहियूएक्स, कनाडा का एक भाषान्तरकार ने अपनी पुस्तक "इटुड इस्लामिज़्म" में इस्लाम कि सरलता और उसके स्थायी प्रकृति के बारे में यह कहा है: इस्लाम में अपनी विचार धारा की सरलता, इसकी धार्मिक और इसके सिद्धान्तों की स्पष्टता और निश्चित संख्या में परिपाटियों द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से प्रत्येक के हृदय पर विजय प्राप्त करने की शक्तिनिहित है। ईसाई धर्म के विपरीत जिसमें इस धर्म के उदय होने के समय से लगातार परिवर्तन हो रहा है, इस्लाम धर्म हमेशा से ही एक सा बना हुआ है।

Jean L'heureux was an Interpreter in Canada and in his book "Etude sur L'Islamisme" he wrote about simplicity and permanent nature of Islam as:
"Islam had the power of peacefully conquering souls by the simplicity of is theology, the clearness of its dogma and principles, and the definite number of the practices which it demands. In contrast to Christianity which has been undergoing continual transformation since its origin, Islam has remained identical with itself."

"संभाषण दवा के समान है। इसकी थोड़ी सी मात्रा आदमी को चंगा करती है तो इसकी अधिक मात्रा उसका विनाश कर देती है"

हज़रत अली / Hazrat Ali

"Speech is like a medicine, a small dose of which cures but an excess of which kills"

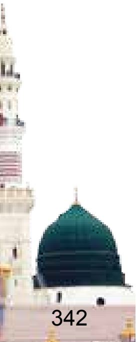

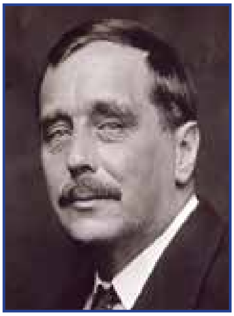

एच.जी वेल्स, एक बहु–आयामी अंग्रेज लेखक जिसने उपन्यास, इतिहास, राजनीति और सामाजिक टिप्पणी साहित कई विधाओं में रचनाए लिखीं। इतिहास के रेखा चित्रण के समय उसने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बर के प्रमाण के तौर पर यह कहा: क्योंकि जो व्यक्ति उन्हें जानते थे वे उन पर गहन विश्वास करते थे। मुहम्मद (सल्ल०) किसी भी तरह से धोखे बाज नहीं थे। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि इस्लाम धर्म में कई श्रेष्ठ विशेषताएं है। उन्होंने ऐसे समाज का सृजन किया जो व्यापक निर्दयता और सामाजिक उत्पीड़न से मुक्त, यह एक ऐसा समाज है जो इस विश्व में कभी भी आस्तिव में नहीं था।

H. G. Wells, was a prolific English writer in many genres, including the novel, history, politics, and social commentary, In the outline of History, he wrote regarding a major proof of the prophet hood of the Prophet Muhammad (pbuh): "Because those who knew Muhammad (pbuh) best believed in him the most….. Muhammad (pbuh) was no imposter at any rate….. There can be no denying that Islam possesses many fine and noble attributes…. They created a society more free from widespread cruelty and social oppression than any society had ever been in the world before."

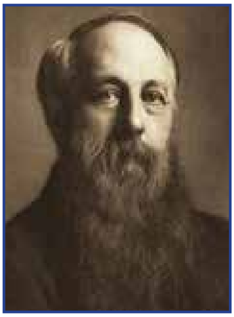

हैनरी हाइनडमेन, एक अंग्रेज लेखक, राजनीति और सोशल डेमोक्रेटिक फेडरेशन का प्रवर्तकथे। उसने अपनी पुस्तक "अवेकिंग आफ एशिया" (1950) मे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के गुणों के बारे में लिखा है। मुहम्मद (सल्ल०) ने कभी भी स्वयं को एक साधारण व्यक्ति और ईश्वर के संदेशवाहक से अधिक का दर्जा नहीं दिया। जब वह गरीबी और प्रतिकूल परिस्थिति से गुजर रहे थे तो लोगों ने उन पर विश्वास किया और जब वह महान साम्राज्य के शासक बने तो भी लोगों ने उन पर अपना विश्वास जताया। वह एक बेदाग चरित्र वाले व्यक्ति थे जिसे स्वयं अपने ऊपर तथा ईश्वर की मदद पर पूरा विश्वास था। उनका जीवन एक खुली किताब है जिसका कोई भी पहलू छिपा नहीं हैं और न ही उनकी मृत्यु कोई अनोखी घटना थी।

Henry M Hyndman was an English writer, politician, the founder of the Social Democratic Federation. in his book 'The Awaking of Asia (1950)' he writes about the noble qualities of Muhammad (pbuh):

"Mohammad (pbuh) never assigned himself a status more than a common man and a messenger of God. People had faith in him when he was surrounded by poverty and adversity and trusted him while he was the ruler of a great Empire. A man of spotless character who always had a confidence in himself and in God's help. No aspect of his life remained hidden nor was his death a mysterious event."

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"यह मेरे लोग हैं जिनके लिए रहम किया गया है। इनके लिए आख़िरत में कोई सज़ा नहीं होगी लेकिन इस दुनिया में आज़माइश जैसे ज़लज़ले और क़त्ल हो जाना उनके लिए अज़ाब होगा"

"These people of mine are one to whom mercy is shown. They will have no punishment in the next world, but their Punishment in this world will be trials, earthquakes and being killed"

ग्लेन लेनार्ड, एक लेखक थे और उन्होंने अपनी पुस्तक "इस्लाम मोरल एंड स्पिरिचुअल वैल्यूज" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहा था: यह मुहम्मद की प्रतिभा ही थीं कि इस्लाम के सार के माध्यम से अरब के लोगों में जिस जोश का संचार किया उस जोश ने उन्हें उल्लासित कर दिया। उस जोश ने उन्हें आलस्य से बाहर निकाला, इससे वे लोग जो कबीले के निम्नतम स्तर पर स्थिर थे वे राष्ट्रीय एकता और साम्राज्य की उच्च कीर्ति को प्राप्त कर सके। यह मुहम्मद (सल्ल०) कि एकेश्वरवाद की उच्च विचारधारा, सरलता, गंभीरता और परिशुद्वता थीं जो उनके अपने सिद्धान्तों के प्रति उनके प्रवर्तकों की वफादारी मन में पैठ कर गई जिसने सच्ची प्रेरेणा से चुम्बकीय गुण सहित उनके नैतिक और बौद्धिक ताने बाने पर कार्य करती रही।

Glyn Leonard was an author and his book "Islam moral and Spiritual values" he wrote these lines about Prophet Muhammad (pbuh):

"It was the genius of Muhammad (pbuh), the spirit that he breathed into the Arabs through the soul of Islam that exalted them. That raised them out of the lethargy and low level of tribal stagnation up to the high watermark of national unity and empire. It was in the sublimity of Muhammad's deism, the simplicity, the sobriety and purity it inculcated the fidelity of its founder to his own tenets, that acted on their moral and intellectual fiber with all the magnetism of true inspiration."

विहिलम लिटीनर, एम.ए, पीएच. डी, एल.एल.डी, डी.ओ.एल, एक ब्रिटिश सुधारवादी लेखक और ब्रिटिश अनुसंधानकर्ता था। उसने अपनी पुस्तक "मुहम्मदनिज्म" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में निम्नलिखित बातें कहीं—मैं घोषणा करता हूँ कि एक ऐसा दिन आएगा जब ईसाई पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को सर्वोच्च आदर प्रदान करेगें। वास्तव में जो ईसाई इस धर्म को मान्यता देंगे और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बताए मार्ग का अनुसरण करेंगे वे वास्तव में ईसाई हैं।

Gottlieb Wilhelm Leitner, M.A., Ph.D., L.L.D., D.O.L. was a British orientlist and an English Researcher. He wrote the following lines about Prophet Muhammad (pbuh) in his book "Muhammadanism":

"I declare my hope to see a day coming in which the Christians will highly respect Jesus through their respect to Prophet Muhammad (pbuh), truly the Christians who recognize the religion and the right path brought by Prophet Muhammad (pbuh) is the true Christians."

"छोटे बीज को पता है कि बढ़ने के लिए मिट्टी में दबना पड़ता है, अंधेरे में खोना पड़ता और फिर रौशनी तक पहुंचने के लिए संघर्ष करना पड़ता है"

अज्ञात / Anonymous

"the tiny seed knew that in order to grow, it needs to be buried under the dirt, covered in darkness and struggle to reach the light"

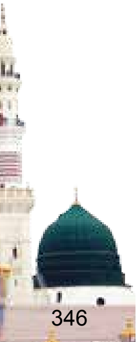

गुस्ताव वील, एक जर्मन सुधर वादी ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ इस्लामिक पीपुल" में पैग़म्बर मोहम्मद (सल्ल०) के बारे में कहा है– मुहम्मद (सल्ल०) अपनी जनता के बीच शानदार उदहारण थे। उनका चरित्र विशुद्ध और शिकन रहित था। उनका घर, उनका वस्त्र, उनका भोजन अत्यंत सादा था। उनके पास इतनी भावनाएं नहीं थीं कि उन्हें अपने अनुयायियों से कोई विशेष सम्मान सूचक प्रतीक ंमिलता और न ही उन्होनें अपने दास से वह सेवा प्राप्त की जिसे वह स्वयं के लिए करते। वह सभी के लिए सभी समय उपलब्ध थे। उनके मन में सभी के लिए पूरी हमदर्दी थी। उनका परोपकार और उदारता असीमित थी और उनके मन में समुदाय के लिए कल्याण के प्रति उत्सुकता थीं।

Gustav Weil was a German Orientalist and in his book “History of the Islamic People” he wrote these lines about Prophet Muhammad (pbuh):
“Muhammad (pbuh) was a shining example to his people. His character was pure and stainless. His house, his dress, his food - they were characterized by a rare simplicity. So unpretentious was he that he would receive from his companions no special mark of reverence, nor would he accept any service from his slave which he could do for himself. He was accessible to all and at all times. He visited the sick and was full of sympathy for all. Unlimited was his benevolence and generosity as also was his anxious care for the welfare of the community.”

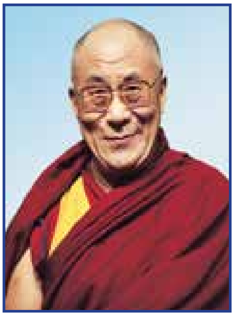

नोबेल पुरस्कार विजेता दलाई लामा, हाल ही में ऑनलाइन भारतीय समाचार पत्र, "कर्नाटक मुस्लिम" में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के हवाले से कहते हैं, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन संपूर्ण मानवता के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है। हमें विश्व शांति स्थापित करने और दुनिया से आतंकवाद मिटाने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा दिखाए गए मार्ग का पालन करना चाहिए। शांति, प्रेम, न्याय और धार्मिक सहिष्णुता के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का संदेश हमेशा पूरे मानवता के लिए एक प्रमुख प्रकाश होगा। जो संपूर्ण मानव जाति के लिए एक मार्गदर्शन और कल्याण के लिए दिया गया एक अनमोल उपहार है"

The **Dalai Lama,** a Nobel Laureate, recently quoted to online Indian newspaper, “Karnataka Muslim” about Prophet Muhammad: “Prophet Muhammad’s (pbuh) life is the best example for the entire humanity. We should follow the path shown by Prophet Muhammad (pbuh) in order to establish global peace and to end terrorism and tyranny from the world. Prophet Muhammad’s (pbuh) message of peace, love, justice and religious tolerance will always be a leading light for the whole humanity. Which is a priceless gift of God given to mankind for guidance and welfare of the entire humanity.”

"सबसे अद्भुत चिकित्सक प्रकृति है, क्योंकि यह सभी रोगों के इलाज और अपने सहयोगियों के बारे में कभी बुरा नहीं बोलती"

विक्टर

"The most wonderful doctor is the nature, because it cures all diseases and never speaks bad about its colleagues"

Victor Cherbullez

अध्याय-7
Chapter-VII

कुरान और पर्यावरणीय प्रदूषण
Quran and Environmental Pollution

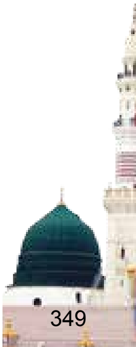

“हमें प्रतिदिन डर के बजाये आशा और विभेद के बजाये विभिन्ता का चयन करने की जरुरत है। डर ने कभी किसी का भला नहीं किया है न ही पेट भरा है। जो लोग इसका इस्तेमाल खुद के लिए करते हैं वह उन समस्याओ का निदान कभी नहीं कर पाएंगे जो सोच का कारण बनी है”

जस्टिन ट्रुडो,कनाडा

“Every single day, we need to choose hope over fear, diversity over division. Fear has never created a single job or fed a single family. And those who exploit it will never solve the problems that have created such anxiety”

Justin Trudeau, Canada

प्रस्तावना

कुरान और पर्यावरणीय प्रदूषण

अपने जीवन को सरल, आसान और अपेक्षाकृत अधिक आरामदायक बनाने के उत्साह में मानव ने वैज्ञानिक ज्ञान के क्षेत्र में अपरिकल्पित छलांग लगाई है और प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है। बजाय घोड़े की पीठ पर सुरक्षित चढ़ने के बदले वह घोड़े के दूसरी तरफ धरती पर जा गिरा। किसी भी प्रकार का प्रदूषण ऐसा ही प्रयास है। आधुनिकीकरण का श्रेय वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी विकास के क्षेत्र में उन्नति को जाता है किन्तु इसका परिणाम विभिन्न प्रकारों के प्रदूषणों और पारिस्थितिकीय असंतुलन के रूप में सामने आया है।

पवित्र कुरान में मानव की इन अज्ञानताओं की भविष्यवाणी की गई है और उसमें मानव को इस महत्वपूर्ण कार्य जो कि विध्वंशकारी परिणामों से युक्त है, के लिए करीब 1437 वर्ष पूर्व चेतावनी दी गई है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"जन्नत में एक पेड़ हैं जो इतना बड़ा और विशाल है कि अगर कोई घुड़सवार उसकी छाया में सौ साल तक यात्रा करता रहे, तब भी वह उस पेड़ को पार नहीं कर सकता"

"There is a tree in paradise which is so big and huge that if a rider travels in its shade for one hundred years, he would not be able to cross it"

कुरान और पर्यावरणीय प्रदूषण

कुरान प्रकृति और वन्यजीवन को भूमि पर स्वर्ग के हरे भरे जंगलों से युक्त आईने के रूप में महिमा मंडित करता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है :

कुरान की (सुरहः अल आराफ) की पंक्तियों में हमारे लिए दयालु पूर्ण आदेश हैः

"उसके परिवर्तन के पश्चात धरती पर भ्रष्टाचार नहीं होगा। अगर सम्मानपूर्वक और आशापूर्वक उसका आह्वान करो। वास्तव में अल्लाह की दयालुता अच्छा व्यवहार करने वालों के अपेक्षाकृत अधिक निकट होती है"।

भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय प्रदूषण से बवंडर, सूनामी, बाढ़, सूखा, भूकंप और तापमान वृद्धि जैसी प्राकृतिक आपदाएं पैदा होती हैं।

मनुष्य के हाथों भूमि पर तथा समुद्र में जो विनाश होता है, अल्लाह उन्हें उसकी सज़ा देता है ताकि वे विनाश करने से बाज़ आएं। (सुरहः अर–रूम पंक्ति 41)

ध्वनि के प्रदूषण के बारे में पवित्र कुरान में हमें आदेश दिया गया है कि प्रार्थना करते समय भी शोर नहीं करना चाहिए, प्रार्थना का उच्चारण न तो ज़ोर से हो और न ही धीमी आवाज में हो बल्कि कुरान मध्यम आवाज में ही पढ़नी चाहिए। (सुरहः अल इसरा पंक्ति 10)

एक अन्य पंक्ति (सुरहः अल लुकमान पंक्ति 19) में कहा गया हैः

तुम्हारी आवाज़ धीमी तथा संतुलित गति वाली होनी चाहिए क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि ककर्श ध्वनि गदर्भ ध्वनि के समान होती है।

पवित्र कुरान में पारिस्थिति के बारे में कई जगह हवाला दिया गया है और पर्यावरण के संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का वर्णन भी किया गया है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जानवरों के प्रति मानव व्यवहार, पर्यावरणीय संसाधनों के संरक्षण और वन्य जीवों का संरक्षण करने को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया है जो कुछ इस प्रकार हैं :

"जो व्यक्ति पेड़ रोपता है और उसके परिपक्व होने तथा उस पर फल लगने तक उसका ध्यानपूर्वक देखभाल करता है, उसको अल्लाह इनाम देता है।"

"यह संसार खूबसूरत और हरा भरा है और वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें संसार में अपना खिदमतगार बनाया है और वह देख रहा है कि तुम किस प्रकार से स्वयं को इसमें ढाल पाते हो। मनुष्य की आदतों के कारण धरती और समुद्र पर भ्रष्टाचार फैल गया है।"

पवित्र कुरान की उस पंक्ति का भावार्थ यह है कि पयार्वरण में प्रदूषण मानव के कारण हुआ है और हमारी नई नई (अर्थात फैक्टरियों की चिमनियों से धुएं, रासायनिक और नाभिकीय अपशिष्ट और शहरों में अत्यधिक परिवहन शोर और ओज़ोन छिद्र इस भविष्यवाणी के पूरे होने की कई कसौटियाँ हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

Prophet Muhammad (pbuh)

"यदि कोई मुस्लिम कोई पेड़ लगाए या कोई बीज बोये और पक्षी या वे व्यक्ति या कोई जानवर इसका फल ग्रहण करे तो यह उसके लिए धर्मार्थ उपहार के समान है"

"If a Muslim plants a tree or sows seeds, and then a bird, or a person or an animal eats from it, it is regarded as a charitable gift for him"

"प्रदूषण के संबंध में एक अन्य पंक्ति है जो जीवन समाप्ति के एक संकेत के रूप में है अर्थात स्पष्ट घने धुएँ के समान जिसे आकाश में देखा जा सकता है "तब उस दिन तुम देखोगे कि आकाश में घना धुआँ दिखाई दे रहा है। (कुरान 44 : 10)

संतान के संबंध में भी एक पंक्ति है कि किस प्रकार से वह मनुष्य को अल्लाह की सृजनात्मकता को परिवर्तित करने का निर्देश देता है (कुरान 4:119)।

हमारे शरीर की तरह इस धरती के भी वाह्य और आतंरिक अंग होते हैं जैसे पानी और खनिज (आंतरिक) और जंगल, नदी और पहाड़ (वाह्य अंग)। हमारे इस ग्रह की शारीरिक रचना से किसी भी प्रकार का छेड़छाड़ करने से यह प्रदूषण के गर्त में समा जाती है। प्रदूषण की समस्या वास्तव में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यधिक विकास के कारण पैदा हुई है। और हम सभी यह जानते हैं कि किसी चीज की अति हमेशा हानिकारक होती है। ज़रा देखें कि इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति होने से हमारी युवा पीढ़ी का मस्तिष्क किस प्रकार से प्रदूषित हो रहा है और उन्हें सभी प्रकार के अनैतिक कार्यों की ओर धकेल रहा है।

हम इस संबंध में अपनी गलती तो महसूस करते हैं किन्तु हमारा अहंकार और हमारे नैतिक साहस की कमी इस गलती को स्वीकार करने से हमें रोकती है। **प्रगति करने के पागलपन दौड़ में हमने शेर को उसकी पूंछ से पकड़ा हुआ है।** इस्लाम हमें किसी भी कीमत पर पर्यावरण की संरक्षा करने की सीख देता है । पैगम्बर (सल्ल०) ने कहा है "पर्यावरण पवित्र है और किसी भी व्यक्ति को अपने जानवर के लिए चारे की व्यवस्था करने के सिवाय किसी भी स्थिति में किसी पेड़ को नहीं काटना चाहिए ।"पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया "यदि कोई मुस्लिम बीज बोता है या खेती करता है और जब भी कोई पक्षी, मनुष्य या जानवर इसके फल का सेवन करता है तो यह उस व्यक्ति द्व ारा किया गया दान समझा जायेगा। यदि कोई व्यक्ति इस्लाम का अध्ययन करे तो यह देखेगा कि मुस्लिम प्रकृति और जीव जंतुओं के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से जीवन यापन करते हैं।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी कवि "लेमरटाइन" ने लिखा है कि मुस्लिमों का सभी जीव जंतुओं, जानवरों, पेड़ों और पक्षियों के साथ मधुर संबंध रहा है। संक्षेप में कहें तो वे ईश्वर निर्मित सभी वस्तुओं का आदर करते हैं। इस्लाम समग्र रूप से पर्यवारण के बारे में बातचीत करने को अत्यन्त प्रमुखता प्रदान करता है पर्यावरण का संरक्षण करना मानवीय बाध्यकारिता है। 13 वीं सदी के तुर्की के कवि "यूनुस इमरे" के ये शब्द कितने सटीक हैं कि "हम अल्लाह को प्राप्त करने के लिए जीव जंतुओं से प्रेम करते हैं"।

धरती के संसाधनों को बर्बाद करना: पर्यावरण के संबंध में एक अन्य इस्लामिक विचारधारा बिना सोचे समझे पर्यावरण का उपयोग करने, उसे बर्बाद करने और आवश्यकता से अधिक पर्यावरण के उपयोग को रोकने और उसका चिंतन करने के बारे में हैं। यह सब करना (अल्लाह) ईश्वर, सृजनकर्ता और इस धरती के स्वामी का अपमान है। इस्लाम में पर्यावरण का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की गई है किन्तु ऐसा करना एक पक्षीय नहीं होना चाहिए। समय बीतने के साथ ही यह समझबूझ बन रही है कि इस संसार के संसाधन सीमित हैं। कुरान के आदेश के अनुसार "स्पष्टतया फिजूलखर्ची एक प्रकार की बुराई है और यह बुराई अपने ईश्वर के प्रति अकृतज्ञ बनाती है।

"मुस्लिम होने के नाते आपके हृदय में भटके हुए लोगों के लिए जगह होनी चाहिए, आपको बीमारों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, गरीबों को दान देना चाहिए, जिन व्यक्तियों को आपकी आवश्कता हो उनकी सेवा करनी चाहिए और प्यार से वंचित व्यक्तियों को प्यार करना चाहिए"

अज्ञात / Anonymous

"Being a Muslim means you should have a heart for the lost, pray for the sick, give to the poor, serve the needy, and love the unloved"

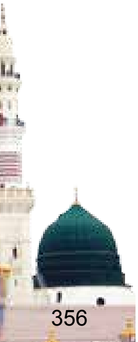

जल का महत्वः कुरान की कुछ पंक्तियों में अल्लाह ने कहा है कि उसने प्रत्येक जीवन जल से बनाया है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जल ही जीवन का आधार है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने वुजू (परिमार्जन) की स्थिति में भी जल का अत्यधिक उपयोग करने से मना किया है। एक हदीस में कहा गया है कि जब पैगम्बर (सल्ल०) ने "साद" को अत्यधिक जल का उपयोग करते हुए देखा तो उन्होंने यह कहते हुए हस्तक्षेप किया कि "यह क्या कर रहे हो "तुम जल बर्बाद कर रहे हो"। किसी को उस समय भी जल का अत्यधिक उपयोग नहीं करना चाहिए जब वह नदी के बहते हुए पानी के किनारे पर हो। यदि जीवन में तीन चीजे न हों तो जीवन में आनंद नहीं आता हैं–स्वच्छ ताजी हवा, स्वच्छ जल और उर्वर भूमि। (इमाम सादिक)

इस्लाम में पेड़ लगाना प्रार्थना करने के समान माना जाता है । जीवन जीना, भोजन, जल, घर और दवा प्राप्त करना प्रत्येक जीव का अधिकार है । इस्लाम में पर्यावरण को पवित्र माना जाता है और पर्यावरण के प्रति आंतरिक मूल्य निहित हैं । कुरान हमें धरती को एक विश्वास के रूप में और मानवता को इसके संरक्षण के रूप में मानने का आदेश देती है । आज हमें पुनर्चक्रण करने और हमारे आस पास व्याप्त संसार का सरंक्षण करने और उसकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है किन्तु आज से बहुत समय पूर्व कुरान में यह सब करने के लिए कहा गया है जब इस प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती थी। "पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पूर्ण जीवन और कार्यों से हमें शिक्षा मिलती है कि उनके मन में पेड़ पौधों और धरती, जल, अग्नि और वायु के प्रति अत्यन्त आदर था।

कुरान में कहा गया है कि पृथ्वी की सभी पर्यावरणीय और पारिस्थितिकीय समस्याएं मनुष्यों की करनी के कारण भूमि और समुद्र में हुए अनिष्ट से उत्पन्न हुई हैं। यदि हम भूमि और जल की आवश्यकता से अधिक दोहन करेंगे तो उसका परिणाम हमारे लिए अत्यन्त विपरीत होगा। प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी होना प्राकृतिक संसाधनों का मनुष्यों द्वारा दुरुपयोग करने का ही परिणाम है।

अल्लाह ने मनुष्य के प्रयोग के लिए कच्चे माल का दोहन करने की इजाजत दी है किन्तु साथ ही उसने मनुष्य को इन संसाधनों को प्रचुर मात्रा में उपयोग करने से मना किया है ।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की पर्यावरण के बारे में दी गई सीख जानवरों को इस परिस्थिति को अनन्य भाग मानने का सुझाव देते है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है "अपने हाथों को अपने विनाश का कारण नहीं बनने दो केवल अच्छा काम करो क्योंकि अल्लाह सिर्फ उन्हीं से प्यार करता है जो अच्छे काम करते हैं।

अल्लाह ने जीव जंतुओं से बड़े बड़े काम लिए हैं।
Fauna who served a great purpose in the way of Allah

एक चींटी ने हज़रत सुलेमान की फौज का रुख़ बदल दिया था।

A Small Ant was able to change the direction
of Hazrat Sulaiman's Army.

एक कौआ ने इंसान को दफनाने का तरीक़ा सिखाया।

A Crow was the first to display
the Way to Human burial.

एक हाथी ने ख़ाना – ए – काबा को गिराने से
इन्कार कर दिया था।

An Elephant had refused to demolish
the Khana-e-Kaaba.

एक हुदहुद पूरी कौम के मुसलमान होने
का सबब बन गया।

The Hoopoe bird turned out to be the reason
for an entire race to resort to Islam.

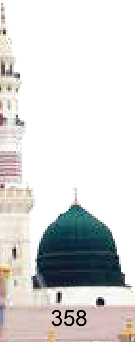

Introduction

Quran and Environment Pollution

In his excitement to make life simpler, easier and more comfortable man has taken such an uncalculated leap in the field of scientific knowledge and meddled with nature that instead of landing safely on the back of the horse, he has crash landed on the other side of the horse. Pollution of any nature is a result of this leap.

The credit of modernization goes to advancement in the field of scientific inventions and technological development, but its fruits are proving a discredit in the form of various shades of pollution and ecological imbalance.

The Holy Qur'an predicated these follies of man and warned him of their devastating consequences very vividly fifteen hundred years ago.

"मैं पर्यावरण की रक्षा करना नहीं चाहता हूँ बल्कि ऐसा संसार सृजित करना चाहता हूँ जहाँ पर पर्यावरण का संरक्षण करने की आवश्यकता न पड़े"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"I don't want to protect the environment; I want to create a world where the environment does not need protection"

Quran and Environmental Pollution

In one of the verses of Quran 'Al – A'raf' the all merciful command us:

"And cause not corruption upon the earth after its reformation. And invoke Him out of reverence and hope. Indeed, the mercy of Allah is nearer to the doers of good."

The corruption and pollution of environment aggravate natural disasters, like, hurricanes, tsunamis, floods, drought, earthquakes, global warming and diseases.

The Quran glorifies nature and wild life as an earthly heaven, a mirror to the lush green forests of Paradise.

Allah the Almighty says:

Mischief has appeared on the land and sea, because of (the deed) that the hands of man have earned, that (Allah) may give them a taste of some of their deeds in order that they may turn back from evil. (Ar – Rum: Verse 41).

About the noise pollution:

The glorious Quran commands us to avoid noise even while praying. It says: 'Neither speak thy prayer aloud, nor speak it in a low tone, but seek a middle course between." (Al – Israa: Verse 110).

Yet in another verse (Luqman: Verse 19) The Quran says: "And be moderate in thy pace and lower thy voice, for the harshest of sounds without doubt is the braying of the ass."

The holy Quran has a number of specific references to ecology and also contains some important principles for environmental preservation.

The Prophet (pbuh) gave high degree of importance to human treatment of animals, preservation of natural resources and protection of wild life.

Some of his (pbuh) sayings with regards to environment are:

"Whoever plants a tree and diligently looks after it until it matures and bears fruit is rewarded."

"The world is beautiful and verdant and verily Allah, be He exalted, has made you His stewards in it and He sees how you acquit yourselves."

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"यदि सभी पेड़ों को क़लम और समुद्र को स्याही बना लिया जाए तो सात समुद्र को मिलाने पर भी अल्लाह के बोल नहीं समाप्त होंगे जबकि स्याही समाप्त हो जाएगी क्योंकि अल्लाह की शक्ति और ज्ञान असीमित है"

"Even if all the trees on earth were pens,and the ocean inks, with seven more oceans added to it, the words of Allah would not be Exhausted: for Allah is infinite in power and wisdom"

"Corruption has spread on land and sea because of what men's hands have wrought" (Quran 30:42)

One of the interpretations of the above verse of the Holy Quran is that environmental pollution is caused by human beings. And that it has engulfed both the land and the sea due to our own inventions, i.e., fumes from chimneys of factories, chemical and nuclear waste, and huge traffic in the cities, noise and creation of ozone hole are manifest testimonies of the fulfillment of this prophecy.

There is also a verse regarding pollution as one of the signs of the end of time-i.e. a thick clear smoke that one can see in the sky; "Then watch thou for the Day that the sky will bring forth a kind of smoke plainly visible." (Quran 44:10) Also, there is a verse regarding Satan and how he will "command man to change Allah's creation" (Quran 4:119). Like our bodies our earth also has internal and external organs viz water and minerals (internal) and vegetation, rivers and mountains (external). Any kind of meddling with the physiology of our planet is bound to push it into the hell of pollution.

The fact is that the problem of pollution is actually due to our too much advancement in the field of science and technology. And we all know that too much of anything is very harmful. Just see how too much advancement in the field of internet and mobile phones is polluting the mind set of our young generation, pushing it towards all kinds of immoral activities. We do realize our mistake in this regard but our ego and lack of moral courage prevent us to own it. In our mad race for progress we have caught a tiger by its tail. Islam teaches us to protect our environment at all costs. Prophet Muhammad (pbuh) established the first Islamic city state of Medina as an environmental reserve by associating its sanctity with the environment. He said, "It is sacred and none of its trees may be cut except for a man feeding his camel." The Prophet (pbuh) also said: "If a Muslim plants a seedling or cultivates a field, and whenever a bird, a human or an animal eats of it, it will be counted as a charity for him." If one studies the history of Muslims one would see that they lived in harmony with nature and its creatures.

The famous French poet Lamartine recorded that "Muslims have good relations with all creatures, animate or inanimate, trees and birds; in short; they respect all the things God has created."

“परोपकार एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है, जिसे मैंने तीन दशक से भी ज्यादा समय पहले ही शुरू किया था और यह मेरे इस्लामी विश्वास का एक आंतरिक हिस्सा है”

प्रिंस वलीद अल तलाल आफ़ सऊदी अरबिया

“Philanthropy is a personal responsibility , which I embarked upon more than three decades ago and is an intrinsic part of my Islamic faith”

Prince waleed Al-Talal of Saudi Arabia

Islam attaches the greatest importance to the conversation of environment as a whole. The conservation of environment is, therefore, not only a human obligation but also a religious obligation. How profound are the words of Yunus Emre, the Turkish poet of 13th century: “We love creatures for the sake of their Creator.”

Wasting earth’s resources: Another important Islamic principle related to the environment is the prohibition, concerning its thoughtless consumption wastefulness and extravagance. It is disrespectful towards God, the Creator and Owner of all His bounties. Islam permits utilization of environment, but this should not be arbitrary.

With the passage of time it is becoming better understood that the world’s resources are limited. According to the command of The Quran “Verily spendthrifts are brothers of the evil one and the evil one is to his Lord ungrateful.”

Importance of water: In some verses of the Quran God states that He ‘Created every life from water’ emphasizing that water is the basis of life and living. The Prophet (pbuh) forbade excessive use of water even for ablution. According to one Hadith when he saw Saad using a lot of water for ablution, he intervened saying, “What is this? You are wasting water”, one must not use excessive water even if one is taking ablution on the bank of a rushing river. ‘There is no joy in life unless three things are available: Clean fresh air, pure water and fertile land.’ – Imam Sadiq.

In Islam planting of trees is considered an act of worship. Animals have right to life, food, water, home and medicine. In Islam the environment is scared and has an intrinsic value. The Quran commands us to treat earth as a trust and the humankind as its guardians. Today we are encouraged to recycle, conserve and care for the world around us, but the Quran echoed the same ecological concern 1500 years ago when people could not even imagine the need of such a concern.

From all accounts of Prophet’s (pbuh) life and deeds we learn that he had a profound respect for fauna flora and the four elements, earth, water, fire and air.

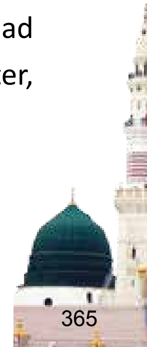

पवित्र कुरान

"हमने ही इंसान को पैदा किया है। और हम जानते हैं कि उसका अंतरात्मा उसके कान में क्या कानाफूसी करता है। क्योंकि हम उसकी शहरग (गले का नस) से भी ज्यादा करीब हैं"

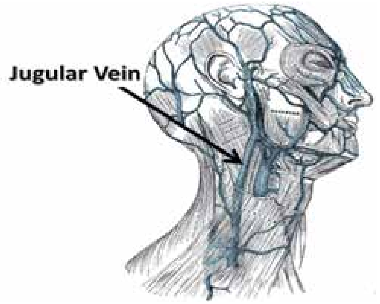

"And we have already created man and know what his soul whispers to Him and we are closer to Him than his jugular vein"

The Quran points out that all environmental and ecological problems of the land are because of “mischief has appeared on land and sea because of man’s doings.” If we overexploit land and water the overall outcome would be too unfavorable. The increasing natural calamities are the outcome of man’s misuse of natural resources.

Allah has given right to extract raw materials, for man’s use but at the same time He has prevented him to use these resources by extravagance. Prophetic environmental teachings recommend considering the animals also as an indispensable part of ecology. Allah, the almighty says:

“Don’t make your own hands contribute to your own destruction, but do good only, for Allah loves those who do well.” (Holy Quran)

"अल्लाह (ईश्वर) के प्रति निष्ठामान के कमान्डर की हैसियत से इस बात का तो प्रश्न ही नहीं उठता कि मैं इस्लाम से लड़ता हूं। हमें तो हिंसा तथा अज्ञानता से लड़ना है, यह सच है कि जब कोई बाहर निकलता है तो वह औरतों को दुपट्टों, और मर्दो को दाढ़ी के साथ देखता है। मुरक्को में हमेशा ऐसा ही रहा है। मुरक्को की नीव सहनशीलता पर आधारित है"

मोहम्मद–6 मुरक्को

"As commander of the faithful, it is out of the question that I fight Islam. We need to fight violence and ignorance. It is true, when one strolls out, one sees women with scarves and men with beards. This has always been the case in Morocco. Morocco is built on tolerance"

King Mohammad (vi) of Morocco

पवित्र कुरानः- एक संक्षिप्त परिचय

कुरान अल्लाह द्वारा अपने दूत जिब्राइल के माध्यम से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को 23 वर्षों की अवधि में कहे गए संदेशों के शब्द का रिकॉर्ड है, जिब्राइल ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को उनकी 40 वर्ष की आयु में संदेश देना शुरू किया। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह संदेश अपने साथियों को सुनाया जिन्होंने इसे क़लमबंद किया। जैसा कि इब्न ख़ातिर ने अपनी तफ़्सीर में बताया है, इस कुरान में 320015 अक्षर, 77449 शब्द, 6000 से अधिक पंक्तियाँ हैं (कुछ धार्मिक विद्वानों के अनुसार इनकी संख्या 6236 है) इतनी सदियों के बीत जाने के बाद भी इसकी 114 सूरहों के एक भी शब्द को नहीं बदला गया है। इस प्रकार से पवित्र कुरान प्रत्येक मायने में एक अनूठा और चमत्कारी पाठ है जिसका 1437 वर्ष पूर्व पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप कुरान का संरक्षण करने का आशय इस्लाम का इसके अंतिम रूप में संरक्षण करना है। जीसस के गोस्पेल की हानि का आशय है कि ईसाई कभी भी पैग़म्बर जीसस की सच्ची शिक्षा तक नहीं पहुँच पाएंगे। मूल तोराह उस समय समाप्त हो गया जब जेरुसलम में सोलेमन का मंदिर बेबिलोनिया के निवासियों ने ध्वस्त कर दिया था, इस प्रकार यहूदी पैग़म्बर मोसेस की विशुद्ध शिक्षा तक नहीं पहुँच पाए। केवल इस्लाम में ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को संरक्षित रखा गया है। इस लिए अल्लाह पवित्र कुरान के सूरह अल हिज्र में कहते हैं: "हमने निसंदेह धरती पर एक सन्देश भेजा है और हम आशवस्त होना चाहेंगे कि इसकी रक्षा की जाएगी। अन्ततः यह धरती के अंतिम दिन तक एक संरक्षित पुस्तक के रूप में बनी रहेगी। इस प्रकार से पवित्र कुरान इस रूप में मैखिक और लिखित दोनों रूपों में संरक्षित होता है जितना की इतिहास में किसी अन्य धार्मिक पुस्तक को संरक्षित नहीं रखा गया है। यह प्रत्येक मर्द–औरत और बच्चे का कर्तव्य है कि वह पवित्र कुरान को पढ़कर अपनी क्षमता के अनुसार समझने का प्रयास करे।

अल्लाह ने पवित्र कुरान के सूरह 56 में कहा है :

77:कि यह कुरान ही है जो अत्यंत आदरणीय है।

78:पुस्तक के रूप में भली भांति संरक्षित की हुई है।

79:जिसे कोई भी छू नहीं सकेगा सिवाए पवित्र व्यक्तियों के

80:यह इस संसार में अल्लाह का एक संदेश है।

पवित्र कुरान की एक अन्य सूरह में कहा गया है – हमने तुझे प्रेरित किया है क्योंकि हमने इसे नूह संदेशवाहक के पास भेजा है, उसके बाद हमने यह प्रेरणा अब्राहम, इस्माइल, इस्हाक़, याकूब और उनके कबीले को, जीसस को, सोलोमन को और द्रविड़ को वचन दिए ।

पवित्र कुरान की प्रथम कॉपी 632–634 ई० में खलीफा हज़रत अबूबकर ने संकलित की थी। 644–654 ई० के बीच ख़लीफा हज़रत उसमान ने इस की प्रतियाँ विश्व के महत्वपूर्ण शहरों में भेजी।

"जीवन में दो तरह का समय आता है। एक आपके अनुकूल होता है तो दूसरा प्रतिकूल। अतः जब समय आप के अनुकूल हो, तो घमंड न करें, लापरवाह मत हों और जब समय प्रतिकूल हो तो धैर्य रखें क्योंकि दोनों तरह के समय आपकी कसौटी होते हैं"

अज्ञात / Anonymous

"Life consists of two days, one for you, one against you. So when it's for you, don't be proud or reckless, and when it's against you, be patient, for both days are a test for you"

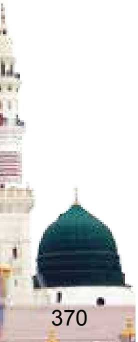

1) मुस्लिमों के हृदय को सदृढ़ करने के लिए और जो इसमें विश्वास नहीं करते है और वे कहते हैं कि उन्हें क़ुरान का खुलासा एक बार में क्यों नहीं हुआ ? इस प्रकार से (इसे टुकड़ों में धरती पर क्यों भेजा गया) ताकि हम उससे तुम्हारे हृदय को सुदृढ़ कर सकें । हमने धीरे–धीरे तुम्हें इसके बारे में कई चरणों में बताया। (32:25)

2) मुस्लिमों को क़ुरान आसानी से याद कर सकने योग्य बनाना :–

प्रत्येक बार पद धीरे–धीरे प्रकट हुआ, सहाबा (साथीगण) आसानी से उसे याद कर सके। पवित्र क़ुरान हमारे लिए ऐसी पुस्तक है जिसे हम याद कर सकें। और वास्तव में हमने आसानी से समझने और याद करने के लिए पवित्र क़ुरान को आसान बनाया है । (सूरहः अल क़मर 54:17)

3) मुस्लिमों को क़ुरान आसानी से समझ सकने योग्य बनाना । निःसंदेह हमने पृथ्वी पर इसे अरबी भाषा में भेजा है ताकि तुम इसे समझ सको। (सूरहः युसूफ 12:2)

4) मुस्लिमों को क़ुरान आसानी से कार्यों, कथन योग्य और शरिया के विधान का पालन करने योग्य बनाना । तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं । कहो ! उन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परंतु उनका गुनाह उनके फायदे से कहीं बढ़कर है "और वे तुमसे पूछते हैं। कितना ख़र्च करें ? कहो ! जो आवश्यकता से अधिक हो।" इस प्रकार अल्लाह दुनिया और आख़िरत के विषय में तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल–खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच–विचार करो। (सूरहः अल बक़रह 2:219)

"ऐ ! इन्सान जब तुम शराब पीकर नशे में होते हो तो तुम तब तक नमाज़ नहीं पढ़ो जब तक तुम उसे नशे के कारण समझ नहीं पाते हो कि तुम क्या बोल रहे हो।"

5) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का दिशा निदर्शन करनाः–

मक्का में पैग़म्बर की उस समय त्यौरी चढ़ गई क्योंकि वह उस वक्त अमीर और शक्तिशाली क़ुरैश को दावत देने में व्यस्त थे, तब एक अंधा व्यक्ति उनके पास आ गया और कहा–एक बार पैग़म्बर किसी पाखंडी की क़ब्र पर उसकी प्रार्थना कर रहे थे ।

"ऐ! पैग़म्बर, कभी किसी पाखंडी की क़ब्र पर प्रार्थना न कर और न ही उसकी क़ब्र पर खड़ा हो । एक अन्य अवसर पर पैग़म्बर ने अपनी पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए स्वयं के प्रयोग हेतु शहद (मधु) तैयार किया। तथापि अल्लाह ने मानवता के लिए शहद को इलाज बताया है। "ऐ पैग़म्बर !" जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध ठहरया है।" उसे तुम अपनी पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए क्यों अवैध करते हो ? अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला और अत्यंत दयावान है। (सूरहः अल तहरीम 66:1)

6) उस प्रश्न का उत्तर जो लोगों ने पैग़म्बर से पूछा थाः– लोगों ने पैग़म्बर से रूह (आत्मा) के बारे में पूछा। वे रूह के बारे में चिंतित होते हुए कहते हैं "रूह एक अम्र (आदेश) है

पवित्र कुरान स्वयं में एक अकाल्पनिक चमत्कार है। प्रकृति के अनेक रहस्यों, जिनकी जानकारी प्राप्त करना, आज से पंद्रह सौ साल पहले आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के बगैर असंभव थी जो पवित्र कुरान में मौजूद है। यह भी एक चमत्कार से कम नहीं।

The holy Quran itself is a great miracle of the many mysteries of nature , revealed by the holy Quran in the absence of any scientific gadgets available more than 1500 hundred years ago , is no less than a miracle. The below mentioned natural phenomenon , described in the holy Quran is also one of the miracles.

सागरों को एक दूसरे में मिश्रित न होने की प्रकृति

हाल ही में वैज्ञानिको की खोज से यह पता चला है कि सागर एक दूसरे के नज़दीक तो हो सकते हैं परन्तु उनका पानी एक दूसरे में मिश्रित नहीं होता। एक दूसरे में मिश्रित न होना वह भौतिक बल है जिसे सरफेस टेंशन कहते हैं। जिसके कारण सागरों का पानी एक दूसरे में मिश्रित नहीं हो पाता। विभिन्न सागरों के पानी का घनत्व भिन्न होता है और इसी घनत्व के अंतर के कारण सागरों का पानी एक दूसरे में मिश्रित नहीं हो पाता।

अल्लाह सागरों के बीच एक अटूट बंधन के साथ जुड़ने की स्वतंत्रता दे रखी है (पवित्र कुरान)

Non mingling nature of seas

Science recently discovered that the seas come together yet they do not mingle with one another at all. This is because of the difference in the density of their waters and the physical force called surface tension.

"He has let loose the two seas, converging together, with a barriers between them, they don't break through" (Holy Quran)

जिसकी जानकारी सिर्फ अल्लाह के पास है। और जहाँ तक जानकारी की बात है यह जानकारी तुम्हें थोड़ी मात्रा में ही दी गई है।" (सूरहः अल इसरा 17:85)

7) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को समय समय पर पेश आ रहे असमंजस को दूर करने के लिएः– जब पैग़म्बर की निंदा होने लगी तो पैग़म्बर यह नहीं जान पाए कि किस पर विश्वास करूं। वह हज़रत आईशा के प्रति विचारहीन हो गए थे। तब अल्लाह ने हज़रत आईशा को लोगों द्वारा उन पर लगाए गए आरोपों से पाप मुक्त करने के लिए उक्त पद के बारे में बताया। वास्तव में जिन व्यक्तियों ने तुम्हें अपनी पत्नी के प्रति विश्वासहीन बनाया है वह तुम में से कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा आरोप लगाया गया है। तुम इसे बुरी बात मत मानों। नहीं ऐसा नहीं है, यह तुम्हारे लिए अच्छी बात है। उन सभी व्यक्तिओं ने ऐसा करके जो पाप किया है उन्हें उसकी सज़ा मिलेगी और उन व्यक्तियों में से जो इस पाप का सबसे बड़ा भागीदार है उसको कड़ी यातना दी जाएगी। (सूरहः नूर 24:11) कुछ सहाबा (साथीगण) ने जो पाखंडी नहीं है, जब तक सेना पीछा न छोड़ दे और वे सेना का साथ न पकड़ लें, उन्होंने आने में देरी की ऐसे सहाबा (काब इब्ने मालिक, हिलाल–इब्ने उमैया, और मशराह इब्ने रबी थे) पैग़म्बर ने 50 दिनों के लिए उनका बहिष्कार करने की घोषणा की। तत्पश्चात तीनों सहाबा द्वारा पैदा किए गए असमंजस को दूर करने के लिए अल्लाह ने उक्त पद का खुलासा किया और उन्होंने उन्हें माफ़ कर दिया जो तबूक अभियान (जिसमें पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) शामिल थे) में शामिल नहीं थे। अर्थात उसने पैग़म्बर (सल्ल०) के मामले में कोई निर्णय नहीं लिया और उनका मामला धरती पर ज़िंदा रहने तक अल्लाह के निर्णय पर छोड़ दिया।

तत्पश्चात उसने उनके पछतावे को स्वीकार कर लिया कि उन्हें अपनी करनी का पछतावा हुआ । वास्तव में वह अल्लाह ही है जो ऐसे पछतावे को स्वीकार कर लेता है, वह अत्यंत दयावान हैं । (सूरहःअल तौबा 9:113)

8) पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को उस परिदृश्य की जानकारी देने के लिए जो आसन्न था।

जब तुम ग़नीमतों को प्राप्त करने के लिए उनकी ओर चलोगे तो पीछे रहने वाले कहेंगेः हमें भी अनुमति दी जाये कि हम तुम्हारे साथ चलें। "वे चाहते हैं कि अल्लाह के कथन को बदल दें। कह देनाः" तुम हमारे साथ कदापि नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही ऐसा कह दिया है। "इस पर वे कहेंगेः नहीं, बल्कि तुम हमसे ईष्या कर रहे हो।"नहीं, बल्कि वे लोग समझते थोड़े ही हैं । (सूरहः अल फतह 48:15)

अल्लाह ने यह पद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को यह बताने के लिए कहा कि वह ख़ैबर को जिताने जा रहा है और इस युद्ध का लाभ लेने जा रहा है और पाखंडी इससे भी लाभ उठाना चाहते हैं। तथापि केवल 1400 सहाबा ही, जिन्होंने पेड़ के नीचे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को वचन दिया था, ख़ैबर का लाभ पाने के हक़दार है।

"147 वर्ष पूर्व ब्रिटेन की संसद ने विवाहित महिला सम्पत्ति अधिनियम 1870 में अंतिम रूप से यह स्वीकार किया गया कि महिलाओं को अपनी संपत्ति और उत्तराधिकार का वैध स्वामित्व प्रदान किया था। जो 1437 वर्ष पूर्व अल्लाह और उसके संदेशवाहक ने अपनी संपत्ति रखने और उत्तराधिकार का अधिकार प्रदान किया था"

अज्ञात / Anonymous

"147 Years ago the parliament of the United Kingdom issued the 'Married Women's Property Act, in 1870 finally allowing women to be the legal owners of their money and inheritance. Over 1437 years ago Allah and his messenger gave women the right to keep their own money and inheritance"

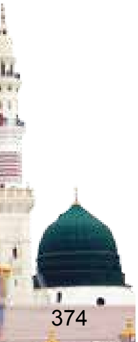

9) मुस्लिमों को ऐसे कुछ व्यवहारों के बारे में बताने के लिए जिनसे मुहम्मद (सल्ल०) को पीड़ा होती है। जब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने ज़ैनब–बिन्त जश से शादी की, उन्होंने मेहमानों को आमंत्रित किया और खाने को भोजन दिया लेकिन दो व्यक्तियों ने स्वागत की अवधि से अधिक दिन बिताए वे जाना नहीं चाहते थे। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) उनसे जाने के लिए कहने से हिचक रहे थे। तब अल्लाह ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति उनके अनुयाइयों के व्यवहार को ठीक करने के लिए उपरोक्त पद कहा।

"ऐ ! मुस्लिम, तुम पैग़म्बर के घर पर मत जाया करो सिवाए तब जब तुम्हें दावत के लिए बुलाए, तुम दावत की तैयारी का इन्तेज़ार मत करो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तब ही जाओ और जब तुम दावत खालो तो चले जाओ बातें करने के लिए न बैठो। इस प्रकार का तुम्हारा व्यवहार पैग़म्बर को खिन्न करता है और वह तुमसे जाने के लिए भी नहीं कह सकते है, किन्तु अल्लाह तुम्हें सच बताने से नहीं रूकेगा। और जब तुम उनकी पत्नियों से कुछ मांगना चाहो, तो परदे के पीछे से ही मांगों। इससे तुम्हारा और उनका हृदय शुद्ध बना रहेगा। और यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं है कि तुम अल्लाह के संदेशवाहक को नाराज़ करो, न ही यह ठीक है कि तुम कभी भी उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नियों से निकाह करो। अल्लाह की नियामतें कायम रहे।" (सूरहः अल अहज़ाब 33:53)

10) नास्तिकों को चुनौती

अरब के यहूदियों, ईसाइयों अगर तुम्हें शंका है कि हमने अपने दास मुहम्मद (सल्ल०) को कुरान दी है तो यदि तुम सही हो तो इसी के समान कोई अध्याय सामने लाओ और अपने समर्थकों को मेरे सामने लाओ (सूरहः अल बक़रह 2:23)

11) मुनाफ़िकों (पाखंडियों) का भंडाफोड़ करने के लिए

प्रत्येक बार कुरान में कहा गया है कि पाखंडी हमेशा दबाव में रहेंगे इसलिए अल्लाह ने मुनाफ़िकों का भंडाफोड़ करने के लिए पवित्र कुरान प्रस्तुत की है। पाखंडी अल्लाह के सिपहसालारों के सामने नहीं ठहर पाएंगे। जो इसके समर्थक हैं वे कहेंगे " क्यों न ही सूरह (कुरान का अध्याय) दे दें ? लेकिन जब निर्णयकारी सूरह इनका बखान करती है और आदेश देती है कि चीजें नीचे भेजी गई हैं और लड़ाई होती है (जिहाद, एक पवित्र लड़ाई अल्लाह के उद्देश्य हेतु) उसमें आप यह देखेंगे, कि जो पापी, पाखंडी हैं, वे मृत्यु के भय से तुम्हारी ओर देखेंगे। किन्तु उनके लिए पाखंड छोड़ कर अल्लाह की बात सुनना और उसे मानना बेहतर होगा। (सूरहः मुहम्मद 47:20)

Quran
Ignorance
difficulties
पवित्र कुरान
القرآن الكريم
Holy Quran
Luxuries
Heaven
Hell

Holy Quran: - A brief introduction

The holy Quran is a record of the exact words revealed by Allah to the Prophet (pbuh) through the Angel Jibraeil (Gabriel) over a period of approximately 23 years, starting when the Prophet Muhammad (pbuh) was of the age of 40 and continuing till the year of his departure from this world. Prophet Muhammad (pbuh) dictated these words to his companions who reduced them into written form and got it cross-checked. The letters in the holy Quran as reported by ibn Kathir in his Tafseer are 3, 20, 015, 77, 449 words and the verses are more than 6000 (according to some scholar they are 6236). Not a single word of its 114 Surahs (chapters),has been subjected to any alteration over the centuries.

In this way the holy Quran is, in every detail, a unique and miraculous text which was revealed to Prophet Muhammad (pbuh) 1437, years ago.

Consequently, the preservation of the Quran meant the preservation of Islam in its final form. The loss of the Gospel of Jesus means that Christians can never return to the true teaching of Prophet Jesus. The original Torah was lost when Solomon's temple in Jerusalem was destroyed by the Babylonians, thus the Jews cannot return to the pure teachings of Prophet Moses. It is only in Islam that the exact teachings of Prophet Muhammad (pbuh) have been preserved. That is why Allah says in holy Quran Surah al-Hijr "we have without doubt, sent down the messages; and we will assuredly guard it (from corruption). So it will remain a protected book till the last day. Thus, the holy Quran has been preserved in both, the oral as well as written form in a way no other religious book in history has been preserved.

It is the duty of every man, woman and child to read the holy Quran and try to understand it in their own capacity.

Allah said in holy Quran Surah 56: verses

77:- That this is indeed a Quran most honorable.

78:- In a book well guarded.

79:- Which none shall touch but those who are clean.

80:- A revelation from Allah to the world.

In another Surah; the holy Quran says "we have sent thee inspiration as we sent it to Noah and the messengers after him; we sent inspiration to Abraham, Ismail, Isaac, Jacob and their tribe, to Jesus and Solomon and to David we gave the Psalms.

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“यदि कोई जानबूझ कर सूद का एक भी दिरहम खाता है तो छत्तीस बार ज़िना (अवैध सेक्स) करने के अपराध से भी ख़राब है“

"A dirham of riba (Interest) which a person consumes knowingly is worse than committing zina thirty-six times"

The first copy of the holy Quran was compiled by Caliph Hazrat Abu Bakr in the year 632-634 C.E. Between 644-656 C.E Caliph Hazrat Usman sent its copies to important cities of the world :

1 – TO STRENGTHEN THE HEART OF THE MUSLIMS.

“And those who disbelieve say: Why is not the Quran revealed to him all at once? Thus (it is sent down in parts), that we may strengthen your heart thereby.And we have revealed it to you gradually, in stages.” (25:32).

2 – TO MAKE THE QURAN EASY FOR THE MUSLIMS TO MEMORIZE.

Each time the verses came down gradually, the Sahabas (companions) would memorize them easily. The holy Quran is a book for all of us to memorize. And we have indeed made the holy Quran easy to understand and remember. (Al-Qamar 54:17)

3 – TO MAKE THE QURAN EASY FOR THE MUSLIMS TO UNDERSTAND

Verily, we have sent it down in Arabic so that you may understand. (Yusuf 12:2)

4– TO MAKE THE QURAN EASY FOR THE MUSLIMS TO IMPLEMENT AND PRACTICE TO LEGISLATE THE SHARIA

They ask you (‘O’ Muhammad) concerning alcoholic drinks and gambling. Say: “In them is a great sin, and (some) benefit for men, but the sin of them is greater than their benefit.” And they ask you what they ought to spend. Say: “That which is beyond your needs.” Thus Allah makes clear to you His Laws in order that you may give thought.” (Al-Baqarah 2:219)

‘O’ you who believe! Approach not Namaaz (the prayer) when you are in a drunken state until you know (the meaning) of what you utter (An-Nisa 4:43)

5 – TO GUIDE THE HOLY PROPHET (pbuh)

In Makkah, the Prophet (pbuh) frowned and turned away because a blind man came to him while he was busy giving Dawah to the rich and powerful of Quresh.

Another, once the Prophet was praying over a hypocrite’s at his grave. Never (‘O’ Muhammad, pbuh) pray (funeral prayer) for any of the hypocrites, nor stand at his grave. Certainly they disbelieved in Allah and His Messenger, and died while they were Fasiqun (rebellious, – disobedient to Allah and His Messenger, pbuh). (At-Taubah 9:84)

"मानवता दिखा कर बच्चों को बचाना विश्वभर की तमाम राजनीति करने से ज्यादा बेहतर है। क्योंकि बच्चों को हम आज बचा पाते हैं तो हम भविष्य को बचा पाएंगे"

टिमोथी पीना

"Saving children in humanity should always weigh greater than all world politics. The children we save today is the future that we save tomorrow"

Timothy Pina

On another occasion the Prophet (Pbuh) made HONEY, to please his wives. However, Allah has made Honey a SHIFAA for mankind.

O Prophet! Why do you ban (for yourself) that which Allah has made lawful to you, seeking to please your wives? And Allah is Oft-Forgiving, Most Merciful. (At-Tahrim 66:1)

6–TO ANSWER THE QUESTION THAT PEOPLE POSED TO THE PROPHET (pbuh)

The people asked the Prophet about the SOUL And they ask you (‘O’ Muhammad (pbuh) concerning the Rooh (the Spirit); Say: “The Rooh : it is one of the things, the knowledge of which is only with my Allah. And of knowledge, you (mankind) have been given only a little.” (Al-Isra 17:85)

Then they asked the Prophet about GAMBLING They ask you (‘O’ Muhammad) concerning alcoholic drink and gambling. Say: “In them is a great sin, and (some) benefit for men, but the sin of them is greater than their benefit.” And they ask you what they ought to spend. Say: “That which is beyond your needs.” Thus Allah makes clear to you His Laws in order that you may give thought.” (Al-Baqarah 2:219)

7 – TO SOLVE THE DILEMMA , THE PROPHET (pbuh) SOME TIMES FACED

When the slander took place the Prophet (pbuh) did not know what to believe. He was cold toward Aisha. Then Allah revealed the above verse, to absolve Hazrat Aisha from the accusation the people put on her Verily! Those who brought forth the slander (against ‘Aishah’ the wife of the Prophet (pbuh) are a group among you. Consider it not a bad thing for you. Nay, it is good for you. Unto every man among them will be paid that which he had earned of the sin, and as for him among them who had the greater share therein, his will be a great torment. (An-Noor 24:11)

Some Sahaba (Companions) who were not hypocrites, procrastinated until the army left them behind and they could not catch up with the army. These Sahabas were Ka’b-ibn-Malik, Hilal-ibn-Umayyah & Maraarah-ibn-Rabi. The Prophet (pbuh) announced a boycott with them for around 50 days. Then Allah revealed the above verse to solve the dilemma posed by the three Sahabas, And (He did forgive also) the three , who did not join the Tabûk expedition (whom the Prophet, pbuh)] left (i.e. he did not give his judgment in their case, and their case was suspended for Allah’s Decision) till for them the earth, vast as it is, was straitened and their own selves were straitened to them, and they perceived that there is no fleeing from Allah, and no refuge but with Him. Then, He accepted their

"हम सोचते तो बहुत हैं पर बहुत ही कम उसका पालन कर पाते हैं। हमें मशीन बनाने की बजाय मानवता दिखाने की ज़रुरत है। चतुराई दिखाने की बजाय हमें दयालुता और सज्जनता दिखाने की ज़रुरत है"

चार्ली चैपलीन

"We think too much and feel too little. More than machinery, we need humanity. More then cleverness, we need kindness and gentleness"

Charlie Chaplin

repentance, that they might repent (unto Him). Verily, Allah is the One who accepts repentance, Most Merciful. (At-Taubah 9:118)

8 – TO ACQUAINT THE HOLY PROPHET (PBUH) WITH THE SCENARIO THAT IS IMMINENT

Those who lagged behind will say, when you set forth to take the spoils, "Allow us to follow you," They want to change Allah's Words. Say: "You shall not follow us; thus Allah has said before hand." Then they will say: "Nay, you envy us." Nay, but they understand not except a little. (Al-Fath 48:15)

Allah revealed the above verse to inform the Prophet (pbuh) that he was going to conquer Khaibar and earn the spoils of war and the Hypocrites are going to want to benefit from it as well. However, only the 1400 Sahabas who gave the Prophet (pbuh) the pledge under the tree are the one deserving the spoils of Khaibar.

9 – TO INFORM THE MUSLIMS ABOUT CERTAIN BEHAVIOURS THAT HURT THE HOLY PROPHET

When the Prophet (pbuh) got married to Zainab-bint-Jash, he invited guests and gave them food to eat, two men ended up overstaying their welcome and did not want to leave. The Prophet (pbuh) was shy to ask them to leave. Then Allah revealed the above Aayet to correct the behavior of the Believers towards the Prophet (pbuh) 'O' you who believe! Enter not the Prophet's houses, except when leave is given to you for a meal, (and then) not (so early as) to wait for its preparation. But when you are invited, enter, and when you have taken your meal, disperse, without sitting for a talk. Verily, such behavior annoys the Prophet (pbuh), and he is shy of asking you to go, but Allah is not shy of telling you the truth. And when you ask his wives for anything you want, ask them from behind a screen, that is purer for your hearts and for their hearts. And it is not right for you that you should annoy Allah's Messenger, nor that you should ever marry his wives after him (his death). Verily! With Allah that shall be an enormity. (Al-Ahzab 33:53)

10– TO CHALLENGE THE INFIDELS

And if you (Arab pagans, Jews, and Christians) are in doubt concerning that which We have sent down (the holy Quran) to Our slave (Muhammad, Pbuh), then produce a Surah (chapter) of the like thereof and call your witnesses (supporters and helpers) besides Allah,if you are truthful.(Al-Baqarah 2:23)

“इस्लाम हमें शिल्पकला की पूर्ण आकृति के सामान प्रतीत होता है। इसके सभी अंगों को एक तरह से इस तरह जोड़ा गया है कि वह एक दूसरे के पूरक बने और सहारा दें , इसमें कुछ भी अनावश्यक या कमी नहीं है और इसी लिए इसका स्वरूप पूरी तरह संतुलित और दृढ़ है”

मुहम्मद असद

"Islam appears to me like a perfect work of architecture. All its parts are harmoniously conceived to complement and support each other; nothing is superfluous and nothing lacking; and the result is a structure of absolute balance and solid composure"

Muhammad Asad

11– TO EXPOSE THE HYPOCRITES

Every time the holy Quran was revealed, the Hypocrites would buckle under pressure. Therefore Allah revealed the holy Quran in stages to expose the MUNAFIQS. The hypocrites could not keep up with the commandments of Allah, Those who believe say: “why is not a Surah (chapter of the Quran) sent down? But when a decisive Surah, explaining and ordering things is sent down, and fighting (Jihad holy fighting in Allah’s Cause is mentioned (i.e. ordained) therein, you will see those in whose hearts is a disease of hypocrisy looking at you with a look of one fainting to death. But it was better for them hypocrites, to listen to Allah and to obey Him). (Muhammad 47:20)

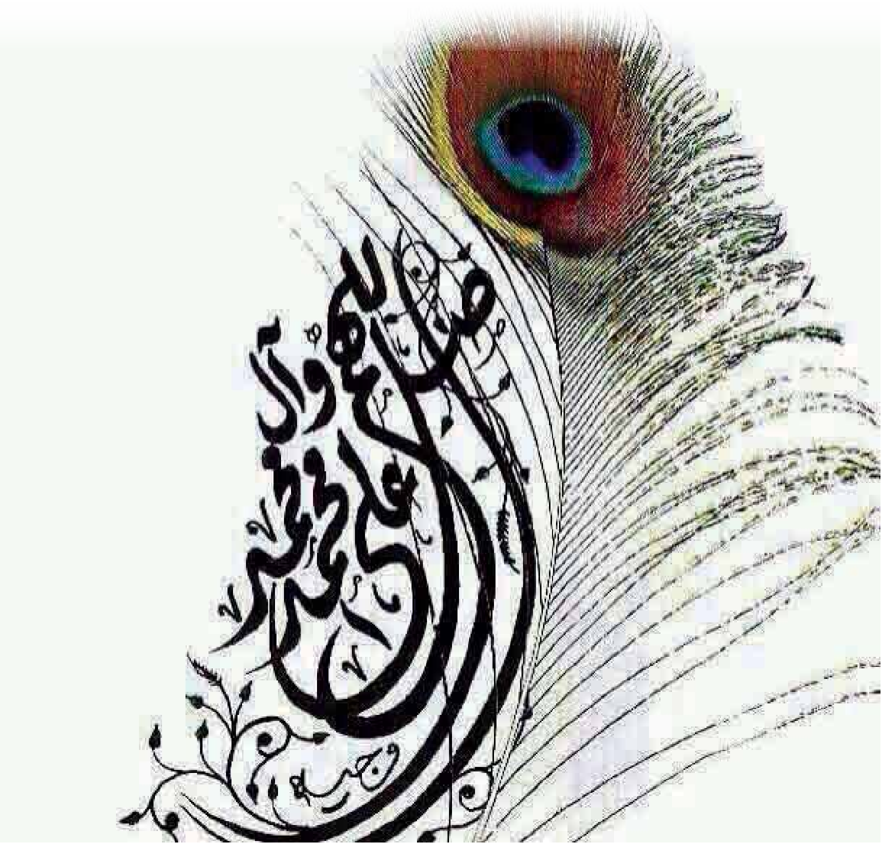

"जिसने तुम को कुछ सौंपा है उसके विश्वास को पूरा करो और उस व्यक्ति के साथ धोखा न करो जिसने तुम से धोखा किया हो"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"Fulfil the trust for the one who entrusted you and do not cheat the one who cheated you"

हदीस क्या है?

अरबी भाषा में हदीस का शाब्दिक अर्थ बयान या वार्ता है और यह शब्द कुरान में 28 बार प्रयोग किया गया है। हदीस पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की कथनों, उनकी परिपाटियों और जीवन दर्शन का संग्रह है इसे संसार भर के मुस्लिमों के लिए एक संहिता और दिशा निर्देश स्रोत कहा जाता है इससे वे इस संसार में एक सफ़ल और बाधा मुक्त जीवन जी सकते हैं। अब हम कुरान के कुछ पद उद्घाटित करते हैं जिनमें कई अवसरों पर हमें अल्लाह के संदेशवाहक पैग़म्बरों के पद चिह्नों पर चलने का आदेश दिया गया है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं का अनुगमन करना हमारे लिए बाध्यकारी है।

1) "ऐ मुसलमानों ! अल्लाह और उसके संदेशवाहक की आज्ञा का पालन करो और उसकी बात सुनकर अनदेखा न करो" (सूरह : अल – अनफ़ाल)

2) अल्लाह और उनके सन्देशवाहक की आज्ञा मानो और एक दूसरे से झगड़ा न करो। (सूरह : अल–अनफ़ाल)

हदीस की प्रमाणिकता

सहीह अल बुख़ारी	256 ए एच = 870 सी ई
सहीह अल मुस्लिम	261 ए एच = 875 सी ई
सुनन इब्ने माजह	273 ए एच = 887 सी ई
सुनन अबू दाऊद	275 ए एच = 888 सी ई
सुनन त्रिमिज़ी	279 ए एच = 892 सी ई
सुनन अल निसाई	303 ए एच = 915 सी ई

ए एच = हिजरी के बाद / सीई–ईसाई युग

पहली हदीस पैग़म्बर के प्रयाण के लगभग 248 वर्ष के बाद संकलित की गई।

"संग्रह करते समय संग्रहकर्ता ने यह निर्णय करने के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी प्रयोग किया कि क्या चीज़ शामिल की जाए और क्या न किया जाए। उदहारण के लिए सहीह बुख़ारी ने 600000 परम्पराओं की जांच करके सिर्फ़ 7397 को स्वीकार किया। इसका प्रयोजन उन परम्पराओं को एकत्र करना था जो मुस्लिमों को आज़माने के लिए जीवन नियम के रूप में कार्य कर सकें। इसका उद्देश्य उन परम्पराओं को चुनना था जिनसे स्पष्ट दिशा निर्देश मिल सके कि मुसलमानों की आस्था और क्या हो और क्या–क्या बातें अनुमेय और अनुमोदित होंगी।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

A Muslim has six rights on another Muslim.

- When you meet him greet him with salaam
- When he invites you, accept the invitation.
- When he seeks counseling from you, advise him.
- When he sneezes and says Alhamdulillah reply with Ya-rahmakumullah
- When he falls ill, visit him.
- When he dies, attend his funeral.

उपयुक्त पैरा से स्पष्ट है कि हदीस संकलन का काम इतना आसान नहीं था। अतः हदीस को निम्न अनुसार वर्गीकृत किया गया है –

1- हदीस–ए–सही (सटीक) :– ये प्रामाणिक परम्पराएं हैं जो हमेशा कसौटी पर खरी उतरी हैं।

2- हदीस–ए–हसन (अच्छी और भरोसेमंद) :– ये अच्छी परम्पराएं है यद्यपि सही के मुक़ाबले प्रमाणिकता के मामले में निम्न दर्जे की हैं।

3- हदीस–ए–ज़ईफ (इनका स्रोत कमज़ोर और संदेहपूर्ण है) :– ये कमज़ोर परम्पराएं हैं और अत्यंत भरोसेमंद नहीं मानते हैं।

इस्लाम का संरक्षण : पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पहले के युग के पूर्ववर्ती पैग़म्बरों के कथनों का वर्णन करने, संग्रह करने तथा आलोचनाओं का तरीक़ा संसार को अज्ञात है। वास्तव में इस प्रकार भरोसेमंद विज्ञान के अभाव के कारण ऐसा हुआ कि पहले के पैग़म्बरों के सन्देश खो गए अथवा ये सन्देश अगली पीढ़ी तक छिटपुट रूप से ही पहुँचे।

अतः यह कहा जा सकता है कि हदीस के विज्ञान के कारण ही बड़े पैमाने पर ऐसा हो सका कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के संदेशों को सभी कालों में क़ुरान के पद के रूप में अपनी मूल विशुद्ध अवस्था में संरक्षित रखा जा सका है। वास्तव में यह कहता हूँ कि इन्हें संरक्षित रखूँगा। (सूरह अल हिज्र)

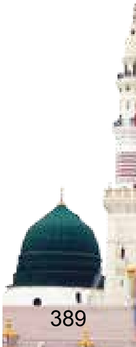

“अबू मूसा ने बताया कि अल्लाह के संदेशवाहक ने कहा था कि एक धर्म उपासक दूसरे धर्म उपासक का उसी तरह आदर करता है जिस तरह एक भवन के अलग–अलग हिस्से एक दूसरे को सहारा प्रदान करते हैं। और अंगुलियां एक दूसरे में गूंथ जाती हैं “

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल)
Prophet Muhammad (pbuh)

“Abu Musa reported that the Messenger of Allah, said “A believer in respect of another believer is like a building whose parts support one another.” And the intertwined his fingers”

What is the hadiths?

The Arabic word of Hadith literally means a Statement or a Talk and this word has been used in the holy Quran 28 times.

The Hadiths are a collection of the sayings of the Prophet Muhammad (pbuh), his practices and his (pbuh) way of life and are regarded as a manual and source of guidance for the Muslims all over the world to enable them to lead a successful and trouble free life in this world and the life hereafter.

Now we quote a few of the many verses from the holy Quran, in which on innumerable occasion, we have been commanded to follow the footstep of the Messenger of Allah, Prophet Muhammad (pbuh). It is obligatory upon us to follow the teachings of the Prophet Muhammad (pbuh).

1. "O" believers! Obey Allah and his messenger and turn not away from him after hearing him"……………………… … (Surah- Al-anfal).
2. "And obey Allah and his messenger and dispute not with one another, otherwise you will show timidity"……… (Surah-al- Anfal).

<u>Authenticity of Hadiths</u>

Sahih al Bukhari	D. 256 A.H = 870 C.E
Sahih Muslim	D. 261 A.H = 875 CE
Sunan Ibn Majah	D. 273 A.H = 887 CE
Sunan Abu Dawood	D.275 A.H = 888 CE
Jami al – Tirmidhi	D.279 A.H = 892 CE
Sunan al – Nisai	D.303 A.H = 915 CE

(A.H = After Hegira / C.E = Christian Era)

First Hadith was piled up about 248 years of Prophet's (pbuh) departure from this world.

"In preparing the collection, the compilers used a critical technique to decide what they should include and what they should reject. Sahih Bukhari, for example, examined about 600000 traditions of which he accepted only 7397. The purpose was to assemble a body of traditions which would serve as a rule of life for the practicing Muslims. The primary interest was to select such traditions as would give clear guidance concerning what a Muslim's belief and practice should be and what things are permissible and approved.

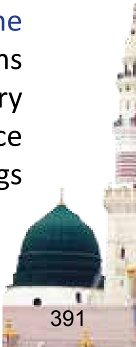

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

"अगर एक मक्खी आप के किसी पेय में गिर जाए, तो उस मक्खी को पूरी तरह उस पेय में डूबा देना चाहिए। क्योंकि उसके एक पंख में बीमारी और दूसरे में इलाज है"

"If a housefly falls in the drink of anyone of you, he should dip it, for one of its wings has a disease and the other has the cure for the disease"

It should be quite evident from the above cited paragraph that the task of compiling a Hadith was by no means simple. The Hadiths are therefore classified in the following manner.

1. **Hadith-e-Sahih (Accurate): -** These are the authentic traditions which stood all the tests of verification.
2. **Hadith-e-Hasan (Good and reliable):-** These are the fair traditions, though inferior in the matter of authencity to the Sahih.
3. **Hadith-e-Daeif (weak and of doubtful origin)**: - These are the weak traditions and not very reliable.

Preservation of Islam: The science of narration, collection and criticism of the sayings of the erstwhile Prophets was unknown to the world prior to the era of the prophet Muhammad (pbuh).

In fact it was due to the absence of such a reliable science that the messages of the former Prophets got lost or reached the following generations in a distorted form.

Therefore, it may be said that it is largely due to the science of Hadith, that the messages of Prophet Muhammad (pbuh) have been preserved in their original purity for all times as per the Quranic verse "Indeed I have revealed the reminder, I will, Indeed protect it". (Surah - al-Hijr).

एक उम्मा, एक शरीर, एकता

"विश्वासियों, उनके आपसी प्रेम, दया और करुणा, एक शरीर की तरह हैं: अगर एक अंग ने शिकायत की, तो पूरा शरीर दु:खमय हो जाता है"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

ONE UMMAH, ONE BODY, UNITY

"The believers, in their mutual love, mercy and compassion, are like one body: if one organ complains, the entire body becomes miserable"

प्रस्तावना
इस्लाम का प्रथम संवैधानिक दस्तावेज (मदीने का चार्टर)

इस्लाम धर्म में शांति, सुरक्षा और परस्पर विश्वास की महत्ता को समझने के लिए श्रेष्ठ उदहारणों में से एक मक्का से मदीना तक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की हिजरत है। मक्का में सभी मुसीबतों और परेशानियों, जिनकी वजह से पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को मदीना में विस्थापित होने के बावजूद, उन्होंने कभी भी उनके विरुद्ध कुछ नहीं कहा और न ही उनसे बदला लिया। बजाय इसके उन्होंने हमेशा ही प्यार, शांति और मानवता का प्रसार करने का प्रयास किया। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने 622 ई० में कई धर्मों को मानने वाले करीब दस हज़ार नागरिकों वाले मदीना के सभी व्यक्तियों (स्थानीय मुस्लिमों, यहूदियों और ग़ैर मुस्लिम जातियों) के लिए मदीना के प्रथम लिखित संविधान का प्रारूप तैयार किया और उसे लागू किया। मदीना का संविधान एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है, जो वर्ष 1215 में बनाए गए इंग्लिश मैग्ना और 1787 के अमरीकी संविधान से पहले बनाया गया था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने 'अकाबा' की प्रतिज्ञा लेते समय 12 अलग अलग जनजातियों का प्रतिनधित्व करने के लिए 12 मुस्लिमों को नियुक्त किया था जिससे सत्ता के विकेंद्रीयकरण की अवधारणा स्थापित हुई थी। मक्का से मदीना में विस्थापित होने के बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का ध्यान निम्नलिखित ओर आकृष्ट हुआ:

क) स्वयं के तथा स्थानीय निवासियों के लिए अधिकारों और बाध्यकारिताओं की परिभाषा।

ख) मक्का के विस्थापितों की बस्तियाँ बसाना और उनके जीवन यापन की प्रत्येक ज़रुरतों को पूरा करना।

ग) ग़ैर–मुस्लिमों, विशेषकर यहूदियों के साथ समझबूझ स्थापित करना।

घ) शहर का राजनीतिक संघटन और सैन्य रक्षण।

ड़) आम लोगों द्वारा पीड़ितों के जान और माल का हर्जाना।

इस्लाम का संवैधानिक दस्तावेज़ तैयार करके पुरुषों, महिलाओं, समाज, संस्कृति और अल्पसंख्यक वर्गों के अधिकारों की सुरक्षा की गई और उन्हें संरक्षित किया गया और उनको धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई। इस संविधान के माध्यम से मदीना को शांति और सुरक्षा वाले राज्य के रूप में स्थापित किया गया जो किसी भी प्रकार की हिंसा और आतंकवाद से मुक्त था और इस प्रकार मदीना प्रथम इस्लामिक राज्य बना। इस प्रकार से यह अतुल्य राजनीतिक संवैधानिक दस्तावेज है। वास्तव में यह मानवीय इतिहास में प्रजातंत्र का प्रथम लिखित संविधान है जिसके बाद सभी अन्य संविधान बने।

इस्लाम एक दया है

यदि आप देखते हैं कि यह दया के विपरीत है, क्रूरता है तो वह इस्लाम नहीं है।

इस्लाम ज्ञान है

यदि आप मूर्खता / मूढ़ता होते देखते हैं, तो वह इस्लाम नहीं है।

इस्लाम न्याय है

यदि आप दमन होते हुए देखते है, तो वह भी इस्लाम नहीं है।

इस्लाम
islam

Islam is a mercy

If you see it’s opposite, cruelty then know that it is not Islam.

Islam is wisdom

If you see that it is foolishness and stupidity, then know that it is not Islam.

Islam is justice

If you see it is oppression, then know that it is not Islam.

इस्लाम का प्रथम संवैधानिक दस्तावेज (मदीने का चार्टर)

इस्लाम के संवैधानिक दस्तावेज की मुख्य बातें इस प्रकार से हैं –

अनुच्छेद बताता है कि यह दस्तावेज पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा तैयार किया गया है।

यह अनुच्छेद राज्य के संवैधानिक विषयों के बारे में है । यह क़ुरैश के मुस्लिमों, मदीना के नागरिकों और उन व्यक्तियों के बीच करार है जो इसका पालन करेंगे । इस करार के अनुसार ये सभी समुदाय संवैधानिक होंगे।

- अनुच्छेद में कहा गया कि बनू अदफ़, बनू हारिस–इब्न–ख़ज़रज, बनू सैयदा, बनू जुशाम, बनू अन–नज़्ज़र, बनू इब्ने अदफ़, बनू अल–नबित, बनू–अल–अस से आए अप्रवासी अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदार होंगे और वे पहले से अनुमोदित अपनी परिपाटी के अनुसार परस्पर सहयोग से संयुक्त रूप से ब्लड मनी अदा करेंगे।
- अनुच्छेद बताता है कि कानून को लागू करने में कोई रियायत नहीं दी जाएगी।
- अनुच्छेद किसी अन्याय, भय या शरारत के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध के प्रवर्तन के बारे में बताता है।
- अनुच्छेद हमें सभी समुदायों के लिए भेदभाव रहित विधि सम्मत शासन और न्याय व्यवस्था के बारे में बताता है।
- अनुच्छेद सबसे दीनहीन मतावलंबी के भी अधिकारों की समान रूप से रक्षा करने की गारंटी देता है।
- यह अनुच्छेद जो आश्वस्त करता है कि गैर–मुस्लिमों को भी मुस्लिमों के समान जीवन के अधिकार प्राप्त होंगे।
- अनुच्छेद अन्य संवैधानिक समुदायों के मुक़ाबले मुस्लिमों को अलग पहचान देता है।
- अनुच्छेद जीवन की श्रेष्ठ संहिता को उजगार करता है।
- अनुच्छेद शत्रु को उसके जानमाल की सुरक्षा करने से मना करता है।
- अनुच्छेद किसी ऐसे व्यक्ति को जो कोई अनिष्टकारी कार्य करता है और संविधान की अवज्ञा करता है, किसी प्रकार का संरक्षण या रियायत देने की अनुमति नहीं देता है ।

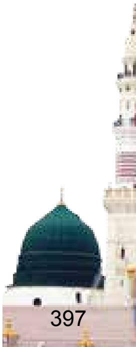

“यह संसार तुमहारे सम्मुख, तुमहारी छाया की तरह है। यदि तुम इसको पकड़ने के लिए पीछे भागोगे तो यह तुमसे दूर भागेगी। यदि तुम इससे दूर भागोगे तो यह तुमहारे पीछे भागेगी”

इब्ने क़य्यीम / Ibn Qayyim

“This dunya (world) is like a shadow, if you try to catch it , you will never be able to do so. But if you turn your back towards it, it has no choice but to follow you”

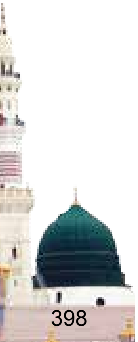

- अनुच्छेद युद्ध के ख़र्च को वहन करने के लिए गैर मुस्लिमों को अनुपाती आधार पर उत्तरदायी बनाता है।

- अनुच्छेद मुस्लिमों और गैर मुस्लिमों दोनों को धर्म अपनाने की स्वतंत्रता की गारंटी प्रदान करता है ।

- यह अनुच्छेद बनू नज़्ज़र, बनू हरिथ, बनू सैयदा, बनू जुशाम, बनू आवास, बनू थाल्बा जाफना (बनू थाल्बा की एक शाखा), बनू शूतयबा और यहूदियों के लिए समानता के अधिकार की गारंटी देता है।

- अनुच्छेद बदला लेने के कानून में किसी भी अपवाद की अनुमति नहीं देता है ।

- अनुच्छेद हत्या करने वाले को कानून के विरुद्ध हत्या के लिए उत्तरदायी ठहराता है ।

- अनुच्छेद युद्ध होने की स्थिति में एक दूसरे की मदद करना अनिवार्य बनाता है ।

- अनुच्छेद मित्रों के साथ परस्पर परामर्श करने और सम्मान पूर्वक कार्य व्यवहार करने का आदेश देता है।

- अनुच्छेद विश्वास–घात का निषेध और दलितों की सहायता करने वाले कानून का उल्लंघन करने से मना करता है ।

- अनुच्छेद राज्य की विभिन्न समुदायों के बीच लड़ाई और रक्तपात को निषेध करता है ।

- अनुच्छेद उन व्यक्तियों के समान अधिकारों को संरक्षण प्रदान करता है जिन्हें संविधान द्वारा आश्रय प्रदान किया गया है ।

- अनुच्छेद राज्य के दुश्मनों और उनके परिवारों को शरणार्थी बनाने से इंकार करता है । अनुच्छेद में कहा गया है कि हमले की स्थिति में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों संयुक्त रूप से ज़िम्मेदार हैं।

- अनुच्छेद में कहा गया है कि यह मुस्लिमों और ग़ैर–मुस्लिमों दोनों के लिए है कि वे किसी शांति संधि का पालन करें ।

- अनुच्छेद में कहा गया कि कोई भी संधि दीन (धर्म) के संरक्षण और उसके अनुयाइयों के संरक्षण के दायित्व को मदद नहीं करेगी।

“अल्लाह पर ईमान रखने वाला उस कोमल पौधे के समान होता है जो हवा की दिशा में स्वंय को ढ़ाल लेता है। और जब हवा शांत हो जाती है तो तन कर खड़ा हो जाता है”

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

“The example of believer is that of a fresh tender plant; from whatever direction the wind comes, it bends it, but when the winds quitrents down, the plant becomes straight again”

- इस अनुच्छेद में संधि के प्रत्येक पक्षकार से अपेक्षा की गई है कि वह रक्षा हेतु सभी उपायों और व्यवस्थाओं के प्रति जवाबदेह हो।
- अनुच्छेद में कहा गया कि इस्लाम के संवैधानिक दस्तावेज के मूल घटक सदस्य और उनके सहयोगकर्ताओं और मुस्लिम और ग़ैर–मुस्लिम को संविधान में समानता का दर्जा प्राप्त होगा ।
- अनुच्छेद किसी भी पक्षकार को संविधान का उल्लंघन करने से मना करता है।
- अनुच्छेद किसी द्रोही अथवा हमलावर को कोई संरक्षण करने से मना करता है।
- अनुच्छेद सभी शांतिप्रिय नागरिकों की सुरक्षा तथा उन्हें संरक्षण देने की गारंटी देता है।
- अनुच्छेद घोषणा करता है कि अल्लाह और उनके पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) अच्छे नागरिकों को संरक्षण देने की गारंटी देते हैं।

We Never
Know the
Love of
our
Parents
for
Us; till
We have
Become
parents
हम नहीं
जानते
हमारे
माता–पिता
के प्यार
को जब
तक हम
माता–पिता
न बन
जाए

Introduction
Maiden Constitutional Document of Islam
(Charter of Madina)

One of the best examples to comprehend the importance of peace, security and interfaith in the religion of Islam is the hijrat (migration) of Prophet Muhammad (pbuh) from Makkah to Madina (previously called Yathrib).

Despite Prophet Muhammad (pbuh) facing all the hardships and torments at Makkah which forced Prophet Muhammad (pbuh) to migrate to Madina, he never spoke anything against them and avenging them. Instead he (pbuh) always made efforts to spread love, peace and humanity.

The first written Constitution of Madina (also known as The Charter of Medina) was drafted and enforced by Prophet Muhammad (pbuh) in the year 622 AD for all the people of Madina (local Muslims, Jews and even non-Muslim tribal allies) comprising of around ten thousand strong multi religious citizens.

The Constitution of Madina is an authentic document which precedes the English Magna of the year 1215 and the American constitution of the year 1787.

The Holy Prophet had appointed twelve Muslims representing the twelve distinctive tribes at the time of Pledge of Aqaba, thereby establishing the concept of centralization of power. After the Hijrat (migration) from Makkah to Madina the following attributes required Prophet Muhammad (pbuh) utmost attention.

a) Definition of rights and obligations of himself and the local inhabitants.
b) Makkan refugees' settlement and everyday livelihood.
c) A tone of understanding with the non-Muslims especially the Jews.
d) Political organization and military defense of the city.
e) Compensation of life and property suffered by the common people.

The formulation of constitutional document of Islam safe guarded and protected the rights of the humans, women, society culture and minorities' and provided religious freedom. It established Madina as a state of peace and security, free from any kind of violence and terrorism and thereby making Madina as the first Islamic state.

It is thus an incredible political-constitutional document. In-fact it is the first written constitution of democracy in human history followed by all other constitutions.

"समय व्यर्थ करना मृत्यु से भी खराब है क्योंकि मृत्यु तुम्हें इस संसार से अलग करती है और समय बर्बाद करके तुम अल्लाह से दूर हो जाते हो"

इमाम इब्न कय्यिम / Imam Ibn Al-Qayyim

"Wasting time is worse than death, because death separates you from this world whereas wasting time separates you from Allah"

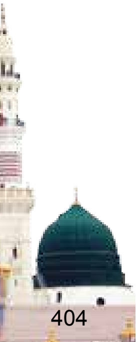

Maiden Constitutional Document of Islam

(Charter of Madina)

Highlights of the constitutional document of Islam as follows:

- **Article** says that this document is given by the Prophet Muhammad (pbuh).
- **Article** is about the constitutional subjects of the state. This is about a 'Pact' between the Muslims of Quresh, the citizens of Madina and those who shall follow them. According to this pact all these communities shall be the constitutional subjects of the state.
- **Article** says that the emigrants from Banu Awf, Banu Harith-ibn-Khazraj, Banu Sa'ida, Banu Jusham, Banu an-Najjar, Banu Amr-ibn-Awf, Banu al-Nabit and Banu al- Aws shall be responsible for their wards and they shall, according to their former approved practice jointly pay the blood money in mutual collaboration and every group shall secure the release of their prisoners by paying the ransom.
- **Article** tells us about indiscriminate rule of law and justice for all the communities.
- **Article** says that there shall be no relaxations in execution of law.
- **Article** tells us about enforces collective resistance against injustice, tyranny and mischief.
- **Article** guarantees equal right of life protection for even the humblest of the believers.
- **Article** describes distinctive identity of the Muslims against other constitutional communities.
- **Article** assures that non-Muslims shall have the same right of life protection (like Muslims).
- **Article** highlights the best code of life.
- **Article** forbids providing security of life and property to the enemy.
- **Article** does not allow any protection or concession for the doer of a mischief and Subversion against the constitution.
- **Article** makes non-Muslim citizens proportionately liable for bearing war expenses.
- **Article** guarantees freedom of religion for both Muslims and non-Muslims minorities.

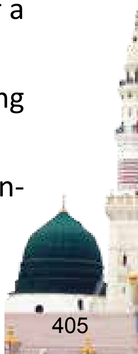

Allah Knows

The Words → You cannot say

The Pain → That no one Knows

The Sorrows → No one Sees

"अपने सिर को ऊपर रखो ....
अल्लाह (ईश्वर) की मदद यकीनन नजदीक है"

"So keep your head up high....
His help is indeed near"

- **Article** grant equality of rights for the Jews of Banu Najjar, Banu Harith, Banu Saida, Banu Jusham, Banu Aws, Banu Tha'laba, Jafna (a branch of Banu Tha'laba, Banu Shutayba with the Jews of Awf.
- **Article** does not allow exception from the law of retaliation.
- **Article** makes the killer responsible for an unlawful killing.
- **Article** makes mutual help compulsory in case of war.
- **Article** commands mutual consultation and honorable dealing among the allies.
- **Article** forbids violation of the law of prohibition of treachery and help of the oppressed.
- **Article** Prohibits fighting and bloodshed among the various communities of the state.
- **Article** grants equal right of protection to those who have been given shelter by the Constitution.
- **Article** denies refuge to the enemies of the state and their families.
- **Article** says Muslims and non-Muslims are jointly responsible for defense in case of an attack.
- **Article** says it is incumbent upon the non-Muslims and Muslims to observe and adhere to any peace treaty**.**
- **Article** says that no treaty shall suspend or negate the responsibility of the protection of the Deen (religion) and its postulates.
- **Article** requires every party of the treaty to be responsible for the measures and arrangements for the defense.
- **Article** says that the basic constitution members of the constitutional document of Islam and their associates (Muslims and non-Muslims) shall possess equal constitutional status.
- **Article** forbids violation of constitution by any party.
- **Article** denies the right of protection to any traitor or oppressor.
- **Article** guarantees safe and secure protection to all peaceful citizens**.**
- **Article** declares that Allah and His Prophet Muhammad (pbuh) are protectors of good Citizens.

"नमाज़ कोई पार्ट टाइम या कभी–कभी करने वाली इबादत नहीं है।यह एक इबादत है जो अपने वक्त पर अदा की जानी चाहिए। क्योंकि मौत कभी भी आ सकती है"

Namaz... is....Not......
a 'Part Time'
a 'Sometime'
a ' No Time'.
It is a Full Time
an On Time
And if you could do.....
Do Overtime.
Because Death.... is 'Anytime.'

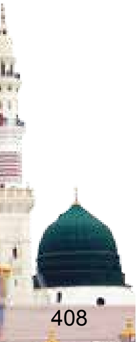

इस्लाम की पाँच मुख्य बातें क्या क्या हैं ?

इस्लाम के अनुसार अल्लाह के प्रति मनुष्य की पांच वचनबद्यता हैं जिन्हें पालन करना प्रत्येक मुस्लिम को इस संसार में तथा उसके बाद एक अच्छे और उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करना।

शहादाहः (विश्वास): अल्लाह पर विश्वास करना या विश्वास करने की उदघोषणा।
नमाज़ : (सलाह): प्रत्येक दिन निश्चित समय पर उपयुक्त तरीके से नमाज़ पढ़ना।
ज़कातः गरीब और ज़रुरतमंद लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए मदद करना।
रोज़ा (उपवास): रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना।
हजः मक्का की हज यात्रा करना।

1. शहादाह – अल्लाह पर विश्वास की उदघोषणा दृढ़ विश्वास के साथ यह कहना कि "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह" इस कथन का अर्थ है" अल्लाह के सिवा कोई और इबादत के लायक नही हैं और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के संदेशवाहक हैं। यह इस्लामिक विश्वास का मूल मंत्र हैः यदि कोई इसे सच्चे दिल से उच्चारण नहीं करता है तो वह मुस्लिम नहीं है।

2. नमाज़ (सलाह) – हर मुस्लिम मर्द और औरत के लिए समय पर पाँच बार नमाज़ अदा करना फ़र्ज है। मुस्लिम अल्लाह से अपने फायदे के लिए प्रार्थना करते है क्योंकि अल्लाह को मानव प्रार्थनाओं की आवयशकता नहीं है, उसे कतई इसकी ज़रुरत नहीं है। मुस्लिम इसलिए इबादत करते हैं क्योंकि अल्लाह ने उन्हें बताया है की उन्हें नमाज़ अदा करनी है और विश्वास है की ऐसा करने से उन्हें काफी लाभ होगा। इस्लाम में नमाज़, पढ़ने वाले और अल्लाह के बीच सीधा सम्पर्क स्थापित करने का काम करती है। नमाज़ अदा करने से पूर्व मुस्लिमों को साफ सुथरा होना चाहिए। वे धार्मिक तरीके से हाथ, मुँह, पैर धोकर, जिसे वुज़ू कहते हैं। नमाज़ एक अनुष्ठान है जो करीब 1438 वर्ष पुराना है इसे संसार भर में करोड़ो व्यक्तियों द्वारा पढ़ा जाता है।

- सलाह–अल–फ़ज्रः– सूर्य उदय से पूर्व (सुबह के समय)
- सलाह–अल–जुहरः– दोपहर के समय (सूर्य के चरम होने के बाद)
- सलाह–अल–अस्रः– दोपहर के अंतिम भाग में
- सलाह–अल–मग़रिबः– ठीक सूर्यास्त के समय
- सलाह–अल–इशाः– सूर्यास्त और मध्य रात्रि के बीच

लोगों को अज़ान की आवाज़ लगाकर नमाज़ अदा करने के लिए कहा जाता है। (अरबी में अज़ान अथवा कथन का अनुवाद इस प्रकार हैः अल्लाह–हु–अकबर (अल्लाह महान है)– चार बार
अश–हदु अल्लाह इल्लाह इल्लल्लाहु (मैं गवाही देता हूँ की अल्लाह के सिवा ऐसा नहीं जिसकी इबादत की जाए)– दो बार
व–अश–हदु अन्न मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह (मैं गवाही देता हूँ की कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के संदेशवाहक है)– दो बार
हय्या–अलस–सलाह (नमाज़ पढ़ने के लिए आए)– दो बार

"गुनाह अल्लाह (ईश्वर) से दूर ले जाता है और
नमाज़ अल्लाह (ईश्वर) के पास लाती है"

"Sins take you away from Allah
Namaz takes you back to Allah"

हय्या–अलल–फलह (सफल बनने के लिए आए)– दो बार

अल्लाह हो अकबर (अल्लाह महान है) – एक बार

ला इलाहा इल्ला अल्लाह (एक अल्लाह के सिवा दूसरा कोई अन्य ऐसा नहीं जिसकी इबादत की जाए)– एक बार।

फ़ज्र की अज़ान के लिए ऊपर अंत में पाँचवे भाग के बाद निम्नलिखित पद जोड़ा गयाः अस–सलातु खैरुन मिनान–नवं (सो जाने के बजाय नमाज़ पढ़ना बेहतर है)– दो बार।

इसके बाद नमाज़ की प्रक्रिया शुरु होती है और नमाज़ का अंत चेहरे को क्रमशः दाहिने कंधे और बायें कंधे की ओर मोड़ कर और अपने दाहिने ओर बाई ओर बैठे व्यक्तियो को शांति और शुभकामनाएं देकर नमाज़ समाप्त की जाती है।

3. ज़कातः ज़कात इस्लाम का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका अर्थ है की सभी कुछ अल्लाह का है । ज़कात शब्द का मूल अर्थ शुद्धिकरण और विकास दोनों है। यह स्वयं शुद्धिकरण का एक महत्वपूर्ण रूप है ज़कात अदा करने का अर्थ गरीबों और समय के ज़रुरतमंद व्यक्तियों को लाभ पहुँचाने के लिए प्रत्येक वर्ष अपने धन का 2.5% देना अनिवार्य है।

ईमानदार मुस्लिम इसे एक महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य मानते हैं। गरीब को मदद करने के इलावा ज़कात के निम्निलिखित लाभ है ।

- यह मानना की अमीर या गरीब होना अल्लाह की मर्ज़ी है।
- हमें उनकी मदद करनी चाहिए जिन्हें उसने ग़रीब बनाया है।
- अपने को किसी चीज़ के अधिग्रहण और लालच से मुक्त करना।
- अपने को धन के प्रति प्यार (मोह) से मुक्त करना।

2.5% की दर सिर्फ कैश, सोना, चाँदी और वाणिज्य मदों पर लागू होती है। कृषि, खनन उत्पादों और जानवरों के मामले में यह दर अलग है। इसके इलावा कोई व्यक्ति जितना चाहे वह उतना सदका के रूप में दे सकता है जिसे "स्वैछिक दान" कहते है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि दान प्रत्येक मुस्लिम के लिए अनिवार्य है। उनसे पूछा गया ! यदि दान देने के लिए कुछ न हो तो? पैगम्बर ने उत्तर दिया कि "स्वयं को कोई बुरा कार्य करने से रोकना भी एक दान है"

4. रोज़ा (उपवास)– सभी मुस्लिम महिलाओं और पुरुषों को इस्लामिक कैलेंडर के नौवें महीने रमज़ान के समय रोज़ा रखना आवश्यक है (ऐसे व्यक्ति जो बीमार है, वृद्ध है या यात्रा कर रहा है, और ऐसी महिलाए जो मासिक धर्म से है या गर्भवती है उन्हें रोज़ा स्थगित करने की अनुमति है किन्तु जब वे फिट हो जायें तो छूटा हुआ रोज़ा रखना अनिवार्य है। रमज़ान के 29/30 दिनों में रोज़दार को दिन के उजाले में निम्नलिखित को छोड़ना होता है। किसी भी प्रकार का भोजन और पेय पदार्थ, धूम्रपान इत्यादि। रोज़ा रखने के कई अच्छे कारण हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैः–

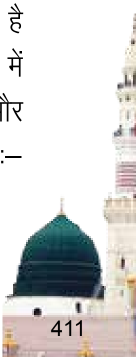

“अपने विचारो पर विराम लगाने की अति उचित विधि यह होगी कि मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह के उन शब्दों का पवित्र कुरान से उद्धरण करूँ जिनका उसने हमें आदेश दिया है ! ऐ लोगों हमने तुम्हे एक नर और मादा जोड़े से पैदा किया और तुम्हे कौमों (वर्गो) में विभाजित कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को जान सको। निसंदेह तुम में से वह अल्लाह के लिए सबसे अधिक मानवाला है जो अति पवित्र है। हाँ अल्लाह सब कुछ जानता है। उसे सब कुछ मालूम है। यह निसंदेह हमारा ध्येय है, यही हमारी कामना है, यही हमारा सन्देश है संसार के लिऐ”

शैख सबाह अल अहमद अल जाबिर, कुवैत

“The best way for me to end this statement before this gracious audience is to quote the words of Allah the Almighty as He command us in the Holy Quran:
“O mankind we created you from a single (pair) of male and female, and made you into nations and tribes, that you may know each other. Verily the most honored among you in the sight of Allah is the most righteous of you. And Allah is All-knowing, All aware”
This is our course, this is our objective and ambition, this is our message to the world”

Sheikh Sabah Al –Ahmad Al- Jaber, Kuwait

- अल्लाह के आदेश को मानना
- स्वयं अनुशासन सीखना
- धार्मिक तौर पर सदृढ़ होना
- दान और उदारता के मूल्यों को महसूस करना।
- कुरान को धन्यवाद देना जिसने सबसे पहले रमज़ान महीने का खुलासा किया।
- अन्य मुस्लिमों के साथ दोस्ती साझा करना।

रमज़ान के समय मुस्लिम सूर्य निकलने से पूर्व जिसे "सहरी" और सूर्य के अस्त होने के बाद "इफ्तार" भोजन लेते हैं। मुस्लिम खजूर या जल ग्रहण करके रोज़ा तोड़ते हैं और मुहम्मद (सल्ल०) की सुन्ना के बाद उपयुक्त भोजन करते हैं।

रमज़ान महीने के अंत में ईद–उल–फितर का त्यौहार होता है। चूँकि मुस्लिम चन्द्रमा आधारित कैलेंडर प्रयोग करते है अतः प्रत्येक उत्तरोत्तर वर्ष रमजान का महीना 11 दिन पहले आता है।

5. हज (मक्का की तीर्थ यात्रा):– उन व्यक्तिओं के लिए जीवन में एक बार मक्का की वार्षिक हज यात्रा करना अनिवार्य है जो शारीरिक और वित्तीय रूप से यह यात्रा कर सकते हैं। यह यात्रा इस बात पर बल देने के लिए उसी निष्ठा से की जाती है कि अल्लाह के समक्ष सभी एक समान है।

इस अनुष्ठान में काबा (जिसे बैतुल्लाह भी कहा जाता है) का सात बार तवाफ (फेरे) करना शामिल है। यह इस समय 60 फीट ऊँचा, पूरब से पश्चिम तक 60 फीट चौड़ा और उत्तर से दक्षिण तक 60 फीट लम्बा है। उत्तर पूरब की ओर ज़मीन से लगभग 7 फीट ऊँचा एक दरवाजा लगा है। इसके पूर्वी कोने पर एक काला पत्थर जिसे 'हज्र अस्वद' कहा जाता है लगा है। यहाँ पर सभी हाजी ज़मज़म का पानी का सेवन करते हैं और सफ़ा और मरवा पहड़ियों का सात बार (दौड़कर) चक्कर लगाते हैं। क्योंकि पैगम्बर इब्राहिम की पत्नी हज़रत हाजरा ने इस पानी और चमत्कारी कुएँ की खोज करते समय ऐसा किया था। इसके बाद हाजी दोपहर से सूर्यास्त तक अराफात में एकत्र होते हैं और शांतिपूर्वक प्रार्थना करते है और अल्लाह से वह सब मांगते हैं जिसकी उनकों इच्छा होती है। और उससे निर्णय के दिन के बारे में सोच कर अल्लाह से माफी मांगते है। इसके बाद मुजदलीफह नामक जगह पर रात व्यतीत करते है और मीना में शैतान को पत्थर मारने के लिए 49 या 70 पत्थर इकट्ठे करते है। ऐसा शैतान द्वारा पैग़म्बर इब्राहिम की प्रार्थना के समय ध्यान भंग करने के कारण इब्राहीम द्वारा उसे पत्थर मारने के प्रतीक के रूप में किया जाता है। दसवें दिन, जानवरों की बलि दी जाती है। अंत में हाजी एक बार फिर काबा का सात बार तवाफ (फेरे) करते है और इसी के साथ हज की प्रक्रिया समाप्त होती है। हज यात्रा का अंत ईद–उल–अज़हा या बलिदान के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार पैग़म्बर इब्राहिम के प्रति आज्ञा पालन का प्रतीक है। जब उन्होंने अल्लाह द्वारा अपनी सबसे प्रिय चीज़ को उसके लिए बलिदान करने के लिए दिए गए आदेश का पालन करते हुए अपने पुत्र इस्माइल का बलिदान करने के लिए तैयार हुए थे।

हम मांगते हैं; वह देता है।
हम पाप करते हैं; वह माफ करता है।
हम पश्चाताप करते हैं; वह स्वीकार करता है।
हम सवाल करते हैं; वह हल करता है।
सब कुछ हम करते हैं अपने लिए; सब कुछ वह करता है हमारे लिए।
तो अल्लाह का एहसान है जो कर सकते हैं करें हम इंकार क्यों करते हैं?

We ask; He gives.
We sin;   He forgives.
We repent; He accepts.
We attend; He welcomes.
We questions; He solves.
We insist; He grants....
Everything we do, is about us; and
Everything He does, is about us...
So “ which of Allah’s favours can
We deny?”

हज का इतिहासः करीब 4000 वर्ष पूर्व मक्का की घाटी शुष्क थी और रहने योग्य नहीं थीं। मुस्लिमों को विश्वास है कि पैग़म्बर इब्राहिम अपनी पत्नी हज़रत हाजरा और अपने बेटे इस्माइल को अपनी पहली पत्नी साराह की जलन से बचाने के लिए फिलिस्तीन से अरब में आये। अल्लाह ने पैग़म्बर इब्राहिम से उन्हें उनके हाल पर छोड़ने के लिए कहा तो उन्होंने ऐसा किया और उनके लिए कुछ खाने व पीने की व्यवस्था कर दी। किन्तु पानी और भोजन की आपूर्ति कुछ दिनों बाद ख़तम हो गई और हज़रत हाजरा ने सफा और मरवा पहाड़ियों के बीच दौड़ लगा कर यह देखने का प्रयास किया कि शायद वह दूर किसी ऐसे स्थान को देख पाए जहाँ से कुछ मदद मिल सके। अंत में वह इस्माइल के करीब गिर पड़ी और अल्लाह से मदद की गुहार की, उन्होंने देखा की इस्माइल ने धरती पर पैर पटका जिससे पानी का एक फव्वारा निकलकर उस सुखी धरती पर बिखरने लगा। इस प्रकार उन्हें जल की प्राप्ति होने लगी और वे अपने भोजन के लिए वहाँ से गुजरने वाले व्यक्तियों के साथ पानी का व्यापार करने लगी। कुछ समय बाद इब्राहिम अपने परिवार के बारे में जानने के लिए फिलिस्तीन से अरब (मक्का) लौटे तो लाभकारी कुँए को देखकर चकित रह गए। तब अल्लाह ने इब्राहिम को आदेश दिया कि वह उनको समर्पित एक घर बनाए। पैग़म्बर इब्राहिम और इस्माइल ने पत्थरों का छोटा ढाँचा तैयार किया जिसे काबा कहते हैं। कई शताब्दियों बाद मक्का भव्य शहर बन गया, इस भरोसेमंद जल स्रोत ज़मज़म के कुँए को इसके लिए धन्यवाद दिया।

कुछ समय बाद विज्ञान ने ज़मज़म के पानी के बारे में नए रहस्य का खुलासा किया है। गौरवशाली कुरान की आयत द्वारा जिस प्रकार यह प्रभावित हुई वह आपको चकित कर देगी। वैज्ञानिक तौर पर यह सिद्ध हो चूका है कि इस जल पर जो मंत्र पढ़ा जाता है वह उससे प्रभावित होता है। जापान के वैज्ञानिक डॉ. मसरु इमोरे का इसके बारे में अनूठा अनुभव हुआ है। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि आसमान से गिरने वाले प्रत्येक हिमलव अनूठे होते हैं। उन्होंने बताया कि उनका वैज्ञानिक मन उन्हें बताता है की यह सच नहीं है। हिमलव का विभित्स्य आकार उसके रसायनिक संधरन पर निर्भर करता है। सभी को जल के संधरन के बारे में पता है इसमें हाइड्रोजन के दो अणु और ऑक्सीजन का एक अणु होता है। तो आसमान से गिरते हुए हिमलव आपस में अलग–अलग क्यों होते हैं उन्होंने बताया ! मैं यह सिद्ध करने के लिए दृढ़ निश्चय था की यह सिद्धांत गलत साबित हुआ। एक जापानी अनुसंधानकर्ता डॉ मसरु इमोरे ने अपने अनुंसधान के लगभग 15 वर्ष बाद पांच खंडो में एक पुस्तक "मैसेज फ्रॉम वाटर" प्रकाशित की जिसमे उन्होंने लिखा है!

- ज़मज़म के पानी की गुणवता, शुद्धता इस पृथ्वी पर पाए जाने वाले किसी भी जल में नहीं है।
- उन्होंने नैनो नामक तकनीक प्रयोग करके ज़मज़म पानी की एक बूँद को नियमित पानी की 1000 बूँदो में मिलाया जाए तो नियमित जल अनूठा बन जायेगा और उसमे ज़मज़म पानी की गुणवता आ जाएगी।
- उन्होंने यह भी पाया कि ज़मज़म पानी की एक बूंद में खनिज की उतनी ही महत्ता है जो इस पृथ्वी पर पाए जाने वाले किसी भी पानी में नहीं पाई जाती।

"अल्लाह ने अपनी सौ (100) रहमतों (दया) में से सिर्फ एक रहमत इंसानों, जिनों, जानवरों और कीड़े मकोड़े को दुनिया में दी है। जो उनके दिलों में एक दूसरे के लिए प्यार और हमदर्दी उत्पन्न करती है। अल्लाह ने (99) रहमतें अपने पास रखी हैं, जिसका उपयोग वह अपने सेवकों के लिए क़्यामत (प्रलय) के दिन करेगा"

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)
Prophet Muhammad (pbuh)

" Allah has hundred (100) mercies, out of which He has sent down only one (01) for jins, mankind, animals and insects, through which they love one another and have compassion for one another; and through it, wild animals care for their young. Allah has retained ninety nine (99) mercies to deal kindly with His slaves on the day of resurrection "

- कुछ प्रयोगों के बाद उन्होंने पाया की ज़मज़म पानी की गुणवता और अवभव परिवर्तित नहीं हो सकते ,ऐसा क्यों होता है विज्ञानं इसका कारण नहीं जानती है।
- यदि इसका पुनःचक्रण भी किया जाए तो भी पानी नहीं बदलता वह शुद्ध ही रहता है।
- ज़मज़म जल का स्तर तल से करीब 10.6 फीट नीचे है। यह अल्लाह का चमत्कार है कि जब 8000 ली प्रति सेकंड की दर से 24 घंटे से अधिक घंटो तक जल निकालने के बाद जलस्तर लगभग 44 फीट तक गिर गया, किन्तु जब जल निकालना बंद किया तो 11 मिनट बाद जलस्तर तत्काल अपने पुराने स्तर तक बढ़ आता है।

  8000 x 60 = 480000 लीटर प्रति मिनट
  480000 की प्रति मिनट का अर्थ
  480000 x 60 = 28.8 मिलियन लीटर प्रति घंटा
  और 28.8 मि. लीटर प्रति घंटा का अर्ध
  28800000 x 24 = 691.2 मिलियन लीटर प्रतिदिन
  इस प्रकार 24 घंटो में 690 मिलियन लीटर ज़मज़म पानी निकाला गया किन्तु केवल 11 मिनट में इसका स्तर पहले जितना हो गया।

यहाँ पर दो चमत्कार हुए ,पहला यह की ज़मज़म ने अपना पुराना स्तर तत्काल ही प्राप्त कर लिया और दूसरा यह की अल्लाह असाधारण शक्तिशाली जलभ्रत के अतिरिक्त जल को कुँए के बाहर जाने से सिर्फ रोका अन्यथा संसार डूब जायेगा।

अल्लाह पवित्र कुरान में कहते हैं कि हम इस संसार में शीघ्र ही अपने प्रतीक तब तक दिखायगें जब तक उनको स्पष्ट रूप से यह विश्वास न हो जाए की यह सच है। जहाँ तक तुम्हारे ईश्वर का संबंध है क्या यह पर्याप्त नहीं है कि वह इस सभी बातों का साक्षी है। (पवित्र कुरान 41:53)

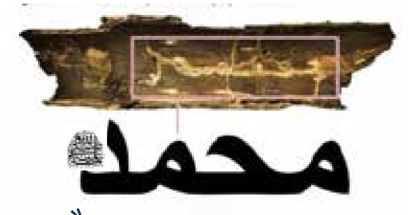

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०)

Prophet Muhammad (pbuh)

"एक सवार एक पैदल यात्री को सलाम (नमस्कार) करना चाहिए; एक पैदल यात्री जो बैठा है उनको सलाम करना चाहिए; और एक छोटे से समूह (लोगों) को एक बड़े समूह को सलाम करना चाहिए “

“A rider should greet a pedestrian; a pedestrian should greet one who is sitting; and a small group should greet a large group (of people)”

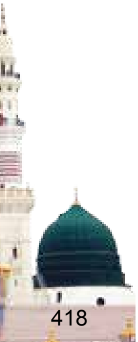

What Are the Five Foundations of Islam?

The Five foundations of Islam are the five obligations to Allah that every Muslim satisfies in order to live a good and responsible life here and hereafter according to Islam.

1. **Shahadah** (Faith) :- The testimony of faith or Declaration of faith in Allah.
2. **Namaz** (Salat) : - Performing prayers in the proper way five time a day.
3. **Zakat** (Compulsary Charity) : Support to the needy or an alms tax to benefit the poor and needy.
4. **Roza** (Fasting) :- Fasting during the month of Ramazan.
5. **Hajj:**- The pilgrimage to Makkah.

1. Shahadah : The testimony of faith is saying with conviction **" La ilaha illa Allah, Muhammadur rasulu Allah".** This saying means "**there is no true Allah but Allah, and Muhammad is the messenger (Prophet) of Allah.**" This is the basic statement of the Islamic faith: anyone who cannot recite this wholeheartedly is not a Muslim.

2. Namaz (Salat) : Namaz is the obligatory for all Muslim men and women. Muslims do not pray for the benefit of Allah's as Allah does not need human prayers because He has no need at all. Muslims pray because Allah has told them that they are to perform Namaz, and because they believe that they obtain great benefit in doing so. Namaz in Islam is a direct link between the worshipper and Allah. Before making Namaz Muslims must be clean. They make sure of this by performing ritual washing called "Waju".

Allah ordered Muslims to perform Namaz five times a day, the Namaz ritual, which is over 1438 years old, is repeated by hundreds of millions of people all over the world:

- ✓ **Salat al- Fajr** : Dawn but before sunrise
- ✓ **Salat al Zuhar** : Mid day, after the sun passes its highest
- ✓ **Salat al Asr** : The late part of the afternoon
- ✓ **Salat al Maghrib**: Just after sunset
- ✓ **Salat al Isha** : Between sunset and midnight

People are called for Namaz by saying Azaan (A translation of the Arabic Azaan or call for prayer is):

Allahu Akbar (Allah is great) 4 times.

Ashhadu an la ilaha illa Allah (I testify that there is none worthy of Worship except Allah) 2 times.

''सबसे अच्छा घोड़ा अर–रहमान का घोड़ा है क्योंकि यह जिहाद (अल्लाह के रास्ते में लड़ रहा है) को समर्पित है, इसलिए इसे खिलाना, इसे साफ करना और इसका ध्यान रखना अच्छे कर्मों के रूप में गिना जाता है''

"The best horse is the horse of Ar-Rahman because it is dedicated to Jihad (fighting in the way of Allah), so feeding it, cleaning it andtaking care of it counts as good deeds"

Ashadu anna Muhammadar Rasool Allah (I testify that Muhammad (pbuh) is the messenger of Allah) 2 times.
Hayya 'ala-s-Salah (Come to Namaz!) 2 times.
Hayya 'ala-l-Falah (Come to success!) 2 times.
Allahu Akbar (Allah is great) 2 times.
La ilaha illa Allah (There is no Allah except the One Allah) 1 time. For the **Fajr Azaan**, the following phrase is inserted after the fifth part above, towards the end:
As-salatu Khayrun Minan-nawm (Prayer is better than sleep) 2 times.
Each Namaz involves different bowing positions or Rakats. Next, he recites the first verse of the holy Quran (Al humdu lil lah…………). The Namaz continues. The Namaz concludes by turning faces over the right and left shoulders respectively and wishing the people in the right & left side peace and blessings.

3. Zakat : Zakat is an important principle of Islam is that everything belongs to Allah. The original meaning of the word Zakat is both 'purification' and 'growth'. This is also a very important form for self- purification. Giving Zakat means giving a specified percentage i.e 2.5% of one's wealth each year to benefit the poor and needy persons of the society. Sincere Muslims regard it as an important religious duty. In fact the holy Quran addresses almsgiving as an essential quality of an honest Muslim.

The benefits of Zakat, apart from helping the poor are as under:

- ✓ Acknowledging that being rich or poor is Allah's choice.
- ✓ We should help those he has chosen to make poor.
- ✓ Freeing ourselves from the love of possessions and greed.
- ✓ Freeing ourselves from the love of money.

The 2.5% rate only applies to cash, gold and silver and commercial items. There are other rates for farming and mining produce and for animals.
An Individual may also give as much as he or she pleases as called 'Sadaqa' and does so preferably in secret word of Sadaqa can be translated as "voluntary charity".

The Prophet Muhammad (pbuh) said "Charity is a necessity for every Muslim". He was asked" what if a person has nothing to give in charity" The Prophet (pbuh) replied: checking our self from doing evil is also an act of charity.

4. Roza (Fasting): All Muslims men and women are required to observe Roza (fast) during the month of Ramazan, the ninth month of the Islamic calendar (person who are sick, elderly or on a journey, and women who are menstruating, pregnant or nursing, are permitted to postpone Roza but make it when they are fit to observe it).
During the 29/30 days of Ramazan all adult Muslims must give up the following things during the hours of daylight: Food and drink of any sort,

"अल्लाह से प्रेरित पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को इतिहास में सर्वप्रथम वास्तविक नियम विनियामक माना जाता है। उन्होंने 1437 वर्ष पूर्व नियम और आचरण प्रणाली की नींव रखी थी। उन्होंने घोर अज्ञानी देश को अंधकार की गहराई से निकाल कर ऊँचाई पर खड़ा किया। जो बात इन नियमों को अन्य नियमों से अलग करती है वह यह कि ये नियम हर काल में उपयुक्त साबित हुए हैं"

अज्ञात / Anonymous

"Prophet Muhammad (Pbuh) inspired by Allah, can be considered the first real lawgiver in history. The laws and the ethical system he laid 1437 years ago, raised a pagan ignorant nation from the mire of darkness to fly high. What makes these law unequal is that its suitability to all the ages"

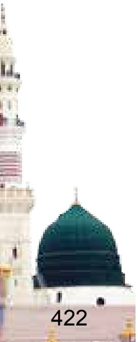

Smoking and sexual activity.

There are many good reasons for the fast, including:

- ✓ Obeying the commands of Allah.
- ✓ Learning self- discipline.
- ✓ Becoming spiritually stronger.
- ✓ Realizing the value of charity and generosity
- ✓ Giving thanks to the holy Quran , which was first revealed in the month of Ramazan.
- ✓ Sharing fellowship with other Muslims.

During Ramazan Muslims will eat meals called ‘Suhar’ and Iftar just before the dawn and when daylight is over, Muslims break the fast preferably with dates or water, following the Sunnah of Muhammad (pbuh) before having a proper meal later.

The month of Ramazan ends with the festival of Eid-ul-Fitr. Because Islam uses a lunar calendar, the month of Ramazan comes around 11 days earlier each successive year. This is the reason why Muslim festivals or the month of Muslim calendar are not associated with one particular reason.

5. Hajj (Pilgrimage to Makkah): The annual pilgrimage to Makkah is an obligation once in a life time for those who are physically and financially able to perform it. It is performed in similar attire all the pilgrims to emphasize that all are equal for Allah.

The rites of Hajj include circling the Kaaba (called Baitullah also), It is now about 60 feet high, 60 feet wide from east to west and 60 feet from north to south. A door is fixed about 7 feet above ground level facing North East. A Black stone, Hajar al Aswad, was fixed into its eastern corner. Here they sip some Zamzam water, and their run seven times between the hillocks of SAFA and MARWA, as Hazrat Hajira (Hager) w/o Prophet Ibrahim did during her search for water and the miracle of the well called ZAMZAM. Then pilgrims stand together in ARAFAAT (from noon to sun set, they pray quietly) and ask Allah for what they wish and for His forgiveness, in what is often thought of a preview of the day of judgment.

Next they spend the night at a place called MUZDALIFAH. and pick up 49 or 70 pebbles for “STONING THE DEVIL”at Mina. This is symbolic of Prophet Ibrahim throwing stones at the devil who had disturbed his prayers. On the tenth day, animal sacrifices are carried out. Finally the pilgrims again goes seven times around the Kaabah. The end of the Hajj is marked by a festival Eid al-Adha or festival of sacrifice. This festival commemorates the obedience of the Prophet Ibrahim when he got ready to sacrifice his son Ismail to fulfill the command of Allah to sacrifice his dearest thing for Him.

History of the Hajj : Around 4000 years ago the valley of Makkah was a dry and uninhabited place. Muslims believe the Prophet Ibrahim was instructed to bring his wife Hazrat Hajira and their child Ismail to Arabia from Palestine to protect them from the jealousy of Prophet Ibrahim’s first

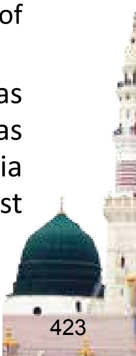

"कुरान दुनिया में अकेली किताब है जिसमें लिखा है कि तुम एक भी गलती ढूंढ़कर बताओ और तुम ऐसा हरगिज नहीं कर पाओगे"

डाक्टर गैरी मिलर

"The holy Quran is the only book in the world with the challenge that one can not find even a single mistake in it; and this challenge has stood the test of time"

Dr. Gairy Miller

wife Sarah. Allah told Prophet Ibrahim to leave them on their own, and he did so, with some food and water. However, supplies food and water finished within a few days and Hazrat Hajira and Ismail were suffering from hunger. In her desperation Hazrat Hajira ran up and down in between two hills called SAFA and MARWA and trying to see if she could spot any help in the distance. Finally she collapsed beside Ismail and prayed to Allah for deliverance and saw Ismail stuck his foot on the ground and this caused a spring of water to gush forth from the dry earth. Now they had a secure water supply they were able to trade water with passing nomads for food and supplies. After a while Prophet Ibrahim return from Palestine to check on his family and was amazed to see them running a profitable well. Then Prophet Ibrahim was told by Allah to build a shrine dedicated to him. Prophet Ibrahim and Ismail constructed a small stone structure - The Kaabah – which was to be the gathering place for all who wished to strengthen their faith in Allah. After many centuries, Makkah became a thriving city, thanks to its reliable water source, the well of ZAMZAM.

Science, at a very later stage, has revealed new secrets about Zam zam water. The way it is influenced by the verses of the Glorious Quran will stun you. We have recently realized the value of the use of amulets. It has been scientifically proven that water is affected by what is recited over it. Japanese scientist Dr. Masaru Emoto has had a unique experience. He said that he had read in a book that each snowflake falling from the sky is unique. He said that his scientific instincts told him that this was not true. The geometric shape of the snowflake is determined by its chemical composition. The composition of water is well known – two hydrogen atoms and one oxygen atom. So how come snowflakes that fall from the sky are different from one another? He said: “I was determined to prove that this theory was false.” A Japanese researcher Dr. Masaru Emoto after his research / experiment of almost 15 years, he published a five-volume book called “Messages from Water“ where he wrote: “I have proven that water, that peculiar liquid, is capable of thinking, fathoming, feeling, getting excited, and expressing itself.”

The quality/purity of Zam zam water has, will not found anywhere else in the water on this earth.

He used the technology named NANO, and researched a lot on Zam zam water. He found that if one drop of Zam zam water is mixed in 1000 drops of regular water, the regular water will acquire the quality of Zam zam water.

He also found that a mineral in one drop of Zam zam water has its own importance that will not be found in any other water on this earth.

He also found in some tests that the quality or ingredients of Zam zam water cannot be changed, why, science does not know the reason.

Even if re-cycled, the Zam zam water will not changed. It will remain pure.

"ज़मज़म पानी की गुणवत्ता/पवित्रता, इस धरती पर किसी और पानी में नहीं पाया गया है"

डॉ. मसारू इमोटो

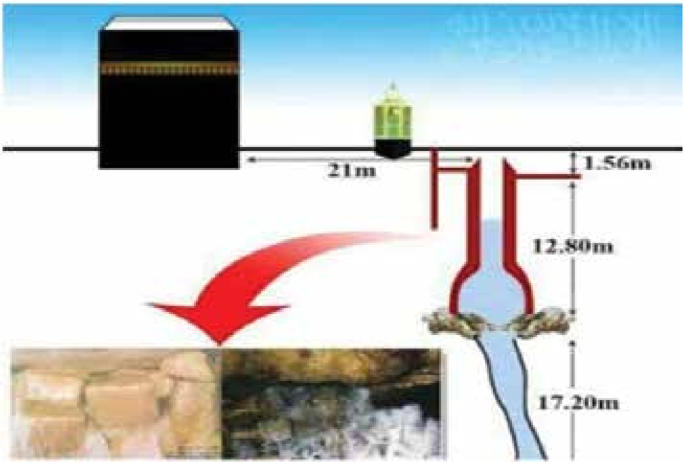

"The Quality / Purity of Zam zam water has, will not found anywhere else in the water on this earth"

Dr. Masaru Emoto

Zam Zam water level is around 10.6 feet below the surface. It is the miracle of Allah that when Zam Zam was pumped continuously for more than 24 hours with a pumping rate of 8,000 liters per second, water level dropped to almost 44 feet below the surface, BUT WHEN THE PUMPING WAS STOPPED, the level immediately elevated again to original level after 11 minutes.

8,000 liters per second means that
8,000 x 60 = 480,000 liters per minute
480,000 liters per minutes means
that 480,000 x 60 = 28.8 Million liters per hour
And 28.8 Million liters per hour
means that 28,800,000 x 24 = 691.2 Million liters per day

So they pumped 690 Million liters of Zamzam in 24 hours, but it regained its previous level in 11 minutes only.

There are 2 miracles here, the first is that Zamzam regained its previous level immediately, & the second is that Allah controls the extra-ordinarily powerful Aquifer for not throwing extra Zam zam out of the well, otherwise the world will SINK. Allah says in the Holy Quran; "We will soon show them Our signs in the Universe and in their own souls, until it will become quite clear to them that it is the truth. Is it not sufficient as regards your Lord that He is a witness over all things?" (Holy Quran 41:53)

विभिन्न प्रकार के इस्लामिक धर्मार्थ कार्य

Type of Islamic charitable deeds

ज़कातः एक धर्मार्थ बाध्य काटिता है जो प्रत्येक वर्ष के अंत में अदा किया जाता है, इसकी कुछ श्रेणी के धन पर 2.5% की दर पर गणना की जाती है। जकात बाध्य काटिता की गणना करने का विस्तृत नियम है।

Zakat: A charitable obligation, generally calculated @2.5% wealth of certain categories, paid at the end of every year. These are elaborate rules of calculating zakat obligations.

सदकाः ये स्वच्छ्पूर्ण दिया गया दान है जो आवश्यक नहीं की वह धन के रूप में हो। यह भी आवश्यक नहीं है की इसके पाने वाले सिर्फ मुस्लिम ही हो।

Sadaqa: Voluntary or discretionary charity, not necessarily monetary in nature. Recipients need not be Muslims.

कफ़्फ़ारा (परायश्चित): यह बाध्यकारी दान है जो शपथ तोड़ने की एवज में दंडस्वरूप होता है।

Kaffara: Is an obligatory charity as it is a punishment for breaking the oath.

खुमः यह शिया मुस्लिमों का धर्मार्थ दान है। इसकी गणना वार्षिक लाभ की राशि के 20% अथवा जीवन यापन की आवश्यकता से अधिक के 20% के रूप में की जाती है।

Khums: A charitable obligation of Shia Muslims, calculated at @20% of annual profit or 20% of income above and beyond living requirements.

अशरः अरबी भाषा में इसका अर्थ दसवां हिस्सा है। मुस्लिम देशों में एक धार्मिक कर है। अक्सर यह वस्तु के रूप में दिया जाता है किन्तु कभी कभी धन के रूप में दिया जाता है। कृषि, पशु पालन, मत्स्य पालन और व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों पर प्रतिवर्ष अशर लगाया जाता है।

Ushr: Ushr (Arabic means one-tenth), a religious tax in Muslims countries; usually payable in kind, but sometimes in cash. The Ushr was levied annually on people engaged in agriculture, livestock raising, fishing and crafts.

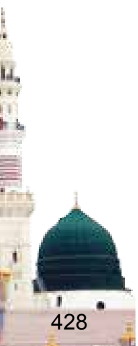

हिलफुल-फुज़ूल का समझौता

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) सहित विभिन्न मक्का निवासियों ने सातवीं सदी में गठबंधन किया था, और उस गठबंधन को तैयार करने तथा उचित कारोबार स्थापित करने में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी भूमिका निभाई थी। इस समझौते के पहले कुरैश के लोग अंतनिर्हित संघर्षो में लिप्त थे। जिनके युद्व के बाद कुरैश के लोगों ने महसूस किया कि असहमत मुद्दों को नहीं सुलझा पाने से तथा आपस में आंतरिक विभाजन होने से उनके राज्य की हानि हुई, और अरब जगत की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। गलत कार्य करने वाले यह जानते थे कि उनके द्वारा पीड़ित व्यक्तियों का मक्का में संघ या राजा नहीं था जो मदद के लिए आगे आता। अन्याय का शिकार हुए व्यक्तियों ने इसे भूल जाने के बजाए कुरैश के लोगों से इस बात पर ध्यान देने की गुज़ारिश की कि उनके साथ न्याय किया जाए।

इसके प्रत्युत्तर में अब्दुल्ला इब्न ज़दान के घर पर एक बैठक बुलाई गई। इस बैठक में सभी क़बीले के प्रमुख मुखिया और उनके लोगों ने यह अह्वाहन किया कि –

1–न्याय के सिद्वांतो का आदर किया जाए,

2–न्याय व्यवस्था स्थापित करने के लिए संघर्ष होने की अवस्था में सामूहिक तौर पर हस्तक्षेप किया जाए, यह समझौता लिखा गया, फिर उसे काबा में रखा गया। काबा वह स्थान है जिसके बारे में वहां भाग लेने वाले व्यक्तियों को यह विश्वास था कि यह स्थान अल्लाह के संरक्षण में रहेगा।

जो सदस्य इस समझौते की शर्तों से सहमत थे उनमें पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) भी शामिल थे। बाद में इस्लाम की उद्घोष्णा के बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को इस समझौते की वैधता के बारे में पता था यद्धपि उन्होनें इस तथ्य की अनदेखी की कि इस समझौते में शामिल अधिकांश सदस्य ग़ैर मुस्लिम व्यक्ति थे। इस समझाौते से मक्का में न्याय की कुछ धारणाओं की शुरूआत हुई। जिन्हें बाद में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम की शिक्षा देते वक्त दोहराया।

इस समझौते की इस्लाम के आचार में महत्व है। इस समझौते में मानवधिकार में इस्लाम के हितो और एसे अधिकारों को संरक्षण देने की झलक मिलती है। इस समझौते से तीन सिद्वांत प्राप्त किए जा सकते है।

इस्लाम मानवीय अंतराआत्मा से निकले उन मूल्यों को आत्मभात करता है जो इस्लामिक परम्परा में नहीं है, ऐसा इसलिये क्योकि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम से पूर्व के युग में इस्लाम के प्रकरण से पहले एक समझौते का अभिज्ञान किया था।

इस्लाम ग़ैर इस्लामिक व्यक्तियों के न्याय परायणता को स्वीकार करता है। इस मामले में गैर मुस्लिम व्यक्तियों ने न्याय और दलितों की रक्षा की थी।

इस्लाम किसी धनिष्ठ समुदाय के साथ गठबंधन करने के बजाय वैश्विक सिद्वांतों से जुड़ना चाहता है। इस्लाम का संदेश कोई सीमित मूल्यों वाली कोई प्रणाली नहीं है और ना ही अन्य मूल्यों वाली प्रणालियों से अलग है।

”इतिहास गवाह है कि कोई दुश्मन हमेशा दुश्मन नहीं होता न ही दोस्त हमेशा दोस्ती निभाते हैं। यही वजह है कि हम सबसे विधिवत रिश्ते बनाये रखना चाहते हैं“

हमद बिन – इसा अल ख़लीफ़ा, बहरीन

“History shows that no enemy remains hostile forever, nor do friends remain friendly forever. For that reason we intend to have normal relations with all”

Hamad Bin Isa- Al- Khalifa, Emir of Bahrain

इस युवा प्रभावशाली मुहम्मद (सल्ल०) सक्रिय युवक ने बनु हाशिम, बनु असद, बनु ज़ोहरा, बनु कय्यूम जैसे युवाओं को इकठ्ठा किया और एक संगठन तैयार किया जिसमें प्रत्येक युवा से यह शपथ लिया गया कि वह मक्का में प्रत्येक दलित की तथा उन दलितों की जो अन्य स्थानों से मक्का में आए मदद करेंगे।

एक पश्चिमी इतिहासकार विशेषज्ञ ने लिखा हैः हिलफुल–फुजूल संगठन एक सेना की तरह का संगठन था जिसे बहादुर और हिम्मत वाले न्याय प्रिय युवाओं के एक दल ने तैयार किया था। यह संगठन यह सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया था कि प्रत्येक दलित के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार हो। यह युवा किसी से कोई परितोषिक नहीं लेते थे। बल्कि वह अपनी मर्जी से इस काम में लगे थे। यदि बाहर का कोई क़बीला मक्का के किसी क़बीले के साथ युद्व करने आता तो कुरैश के क़बीले और मक्का के सभी क़बीले एक साथ मिलकर उसके खिलाफ युद्व करते थे। इसलिए शायद ही कोई बाहरी क़बीला मक्का के क़बीलों के साथ युद्व करने की हिम्मत करता। इसलिए यह स्वयं सेवक दलितों की मदद करने में आगे आगे रहते थे चाहे वह दलित मक्का के बाहर का रहने वालों या अरब जगत के किसी अन्य भाग से। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने एक बार कहा कि मेरे पिछले जीवन का सबसे अच्छा भाग हिलफुल–फुजूल के कार्य कलापों में बीता था।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के युवा जीवन की मुख्य उपलब्धि हिलफुल–फुजूल का प्रभावशाली निर्माण करना थी। यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक व्यक्ति को न्याय प्रदान करने का विचार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को उस समय आया जब किसी ने भी किसी भी प्रकार के मानवाधिकार के बारे में नहीं सोचा था। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के उपयुक्त नैतिक मूल्यों के अलावा उनमें प्रत्येक संभावित, व्यक्तिगत या राजनीतिक समस्या के समय अत्यन्त उपयुक्त निर्णय लेने की क्षमता अत्यंन्त अदभुत थी।

उकाज़ नाम के एक स्थान पर ज़ीकादा के महीने में एक बड़े वार्षिक मेले का आयोजन होता था जिसमें युद्व करने और रक्तपात करने की मनाही थी। एक बार उस मेले में एक युद्व भड़क गया जिसमें एक तरफ कुरैश तो दूसरी तरफ बनू किना के लोग थे। यह युद्व कई वर्षो तक चला जिसमें काफी लोग मारे गए। बनू कुरैश के लोग अन्ततरू जीतने वाले थे, कि तभी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के चचा ज़ुबैर के सुझाव पर एक लीग बनाई गई ताकि भंग हुई शांति की स्थिति को रोका जा सके। और इस युद्व के पीड़ित व्यक्तियों की मदद की जा सके। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह लीग बनाने में अत्यन्त सक्रिय
उत्साह दिखाया जो हिलफुल–फुजूल नाम से ज्ञात समझौते में परिवर्तित हुआ।

लगभग 605 ई में जब पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) 35 साल के हुए तो मक्का में भयंकर बाढ़ आई और काबा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया तब कुरैश के लोग काबा का पुनरू निर्माण करना चाहते थे। जब दीवारें कुछ उंची हुई तो विभिन्न पक्षों में विवाद हो गया कि कौन काला पत्थर (हजरे असवद) को अपनी जगह पर लगाएगा। यह विवाद गंभीर रूप लेने लगा किन्तु पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा हस्तक्षेप करने से यह विवाद शांति पूर्वक और सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझ गया।

“इस्लामी शरिया क़ानून के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक जीवन की रक्षा करना है और हत्या करने में कोई सम्मान नहीं है– इस्लाम शांति और सहिष्णुता का धर्म है, एक निर्दोष आत्मा को मारना समस्त मानवता को मारने के समान है”

मलिक सलमान बिन अब्दुल अ़ज़ीज अल–सऊद, सऊदी

“One of the most important goals of Islamic sharia is protecting life and as there is no honor in committing murder- Islam is the religion of peace and tolerance, killing an innocent soul tantamounts to killing all of humanity”

Malick Salman bin Abdul Aziz al Saud, Saudi

The pact of Hilful Fuzul
(The Covenant of the youths)

The Hilful Fuzul was a 7th century alliance created by various Maccans including the Prophet Muhammad (pbuh) and his role in its formation, to establish fair commercial dealing. In the year preceding the pact, the Quraish were involved in intermittent conflict.

Following the Fijar war, the Quraish realized that the deterioration of their state and the loss of Makkah's prestige in Arabia were the result of their inability to solve disagreement, creating internal division. The wrong doers knew very well that their victims had no confederate or Kinsman in Makkah who they could count upon for help. The victims of injustice, instead of letting it pass, appealed to the Quraish to see the justice was done.

In response a meeting was hosted at the house of Abdullah ibn Jadaan. At the meeting, various chiefs and member of tribes pledged to: 1) respect the principles of justice, 2) and collectively intervene in conflicts to establish justice. The pact was written and placed inside the Kaaba, the place where the participants believed it would be under the protection of Allah.

Among the members who agreed to the terms of the pact was Prophet Muhammad (pbuh). Later on, after proclaiming Islam, Muhammad (pbuh) still acknowledged the validity of the pact, ignoring the fact that most of the members were non-Muslim. That pact also marked the beginning of some notion of justice in Makkah, which would be later repeated by Muhammad (pbuh) when he would preach Islam.

The pact holds significance in Islam ethics. It represents Islam's interest in human rights and protection of such rights. Three principles can be drawn from this pact:

- Islam embraces values derived from the human conscience, that are outside of the Islamic tradition. This is because Muhammad (pbuh) had acknowledged a pact before revelation, in the pre Islamic era.
- Islam acknowledges the righteousness of non-Muslim. In this case, the non-Muslims had defended justice and the oppressed.
- Islam, instead of building allegiance to a close community, requires allegiance to a set of universal principles. The message of Islam is not a closed value system, or at variance or conflict with other value systems.

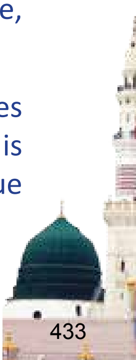

"मैं पूरी ज़िंदगी दो आदमियों को तलाश करने पर भी तलाश ना कर सका, एक वह जिसने अल्लाह के नाम पर किसी को कुछ दिया हो और गरीब हो गया हो और दूसरा वह जिसने किसी पर ज़ुल्म किया हो और अल्लाह की पकड़ से बच गया हो"

शेख़ सआदी / Shaikh Saadi

"All through my search for two persons, one who showed charity in the name of Allah and suffered poverty and one who indulged in cruelty and escaped His wrath went in vain"

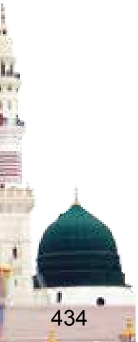

This young nobly active youth gathered the youths of the tribes like Banu Hashim, Banu Asad, Banu Zuhra, Banu Qaiyum and formed an organization in which oath was taken from every youth that he would help every oppressed person in Makkah or who came to Makkah from another place.

An expert western historian has written : The Hilful Fuzul organization was like an army formed by a group of brave and courageous justice loving youths. It was constituted to ensure that each and every oppressed person gets justice and his or her dues. These soldiers were not taking any remuneration from anyone but were serving the society voluntarily. If any tribe from outside arrived to fight with any Maccan tribe , the tribe of Quraish and all the Maccan tribes would jointly fight with the outsiders. Therefore, hardly any tribe from out of Makkah ever dared to wage a war with Makkan. That is why these volunteers used to rush to help even if the oppressed one did not belong to Makkah, even if he came from another part of the country. The Prophet Muhammad (pbuh) once said: The best part of my past life was spent in the activities of Hilful Fuzul.

The noble formation of Hilful Fuzul was the main achievement of the youthful days of Muhammad (pbuh). It is noteworthy that the idea of providing justice to everyone came to Muhammad (pbuh) at a time when nobody there even thought of any kind of human rights.

In addition to the aforesaid moral virtues of Muhammad (pbuh) his power of making the most appropriate decisions in every social, personal or political problem was extremely wonderful.

At a place known as ‘ Ukaz’ a great annual fair used to be held during the month of ‘Darul Qada’ during which war and bloodshed were forbidden. At one of the fairs, war broke out between the Quraish and the Banu Kinanah on one side and the Qais-Aylan on the other. This war continued for a number of years with a considerable loss of life and varying fortunes. When the Quraish were ultimately victorious, a league was formed, on the suggestion of Zubair, an uncle of the Prophet (pbuh) , to prevent disturbances of peace, to help victims of oppression. Prophet Muhammad (pbuh) took a very active interest in the functioning of this league which came into being as a result of a settlement known as Hilful Fuzul.

In about 605 A.D, when the Prophet Muhammad (pbuh) was 35 years old, a flood swept Makkah and the building of the Kaabah was badly damaged. The Quraish decided to rebuild it. When the walls reached a certain height, a dispute arose between various clans as to whom should the honor of placing the Black stone (Hijre Aswad) in its place go. This dispute threatened to assume serious proportions but the intervention of Prophet Muhammad (pbuh) settled everything amicably and peacefully.

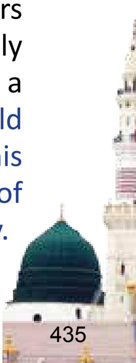

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का
ईसाइयों के लिए विशेषाधिकार का चार्टर

628 ई० को सेंटकेथारीन मोनस्टेरी के एक प्रतिनिधिमंडल ने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से मुलाक़ात की और संरक्षण प्रदान करने की मांग की। पैग़म्बर (सल्ल०) ने उन्हें निम्नलिखित अधिकारों का चार्टर प्रदान किया। मुहम्मद (सल्ल०) इब्न अब्दुल्लाह की ओर से उन व्यक्तियों के लिए संदेश है जो ईसाई धर्म का पालन करते हैं।

✓वह घोषणा करता है कि वह और उसके अनुयायी उनकी रक्षा करेंगे क्योंकि वे उनके नागरिक है; और अल्लाह की कसम वह उन बातों को छोड़ देते हैं जो उनके ईश्वर को पसंद नहीं हैं।

✓उन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं होगा। न तो उनके न्यायाधीशों को उनके काम से हटाया जाएगा और न ही उनके भिक्षुओं को उनके मठ से। और कोई भी व्यक्ति उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाएगा। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करेगा तो वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की अवज्ञा करेगा।

✓कोई भी व्यक्ति न तो उन्हें जाने के लिए बाध्य करेगा और न ही उन्हें युद्ध करने के लिए मज़बूर करेगा। मुस्लिम ही उनकी ओर से युद्ध करेंगे ।

✓यदि कोई भी ईसाई महिला किसी मुस्लिम से विवाह करती है तो ऐसा उस महिला के अनुमोदन के बगैर नहीं किया जाएगा। उस महिला को चर्च जाकर प्रार्थना करने से नहीं रोका जाएगा। उनके चर्च को आदर किया जाएगा। मुस्लिम व्यक्ति निर्णय के अंतिम दिन तक (संसार खत्म होने तक) उनकी अवज्ञा नहीं करेंगे। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के इस वचन का निर्णय के दिन तक पालन किया जाएगा। यह चार्टर इस विशेषाधिकार को प्राप्त करने के लिए ईसाइयों पर कोई शर्त नहीं लगाता है। यह पर्याप्त है कि वे ईसाई हैं। उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वे अपना धर्म परिवर्तन करें, उनको किसी प्रकार की राशि का भुगतान नहीं करना होगा और उन पर कोई पाबंदी नहीं है। यह अधिकारों का चार्टर है जिसमें कोई कर्तव्य शामिल नहीं किया गया है।

✓यद्यपि यह चार्टर 628 ई० में लिखा गया परन्तु यह ईसाइयों की संपत्ति के अधिकार, धर्म के अधिकार, कार्य करने के अधिकार की इस संसार के खत्म होने तक सुरक्षा करेगा।

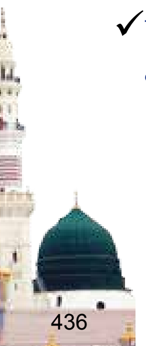

Prophet Muhammad's (pbuh)
Charter of Privilage to Christians

In 628 AD, a delegation from St. Catherine's Monastery came to the Prophet Muhammad (pbuh) and requested his protection. He responed by granting them the following charter of rights.

- ✓This is a message from Muhammad-ibn-Abdullah, to those who adopt Christianity. He declares that he and his followers would defend them, because they are his citizen; and by Allah! He holds out against anything that displeases them.
- ✓No compulsion is to be on them. Neither are their judges to be removed from their jobs nor their monks from their monasteries, and no one will cause any harm to them in any way. If any one does so he would disobey His Prophet.
- ✓No one is to force them to travel or to oblige them to fight. The Muslims are to fight for them. If a female Christian is married to a Muslim, it is not to take place without her approval. She is not to be prevented from visiting her church to pray.
- ✓Their churches are to be respected. Muslims are not to disobey them till the last Day of Judgment (end of the world).
- ✓This promise of Prophet Muhammad (pbuh) has to be observed until the day of Judgment. The charter imposes no conditions on Christians for enjoying its privileges. It is enough that they are Christians. They are not required to alter their beliefs; they do not have to make any payments and they do not have any obligations. This is a charter of rights without any duties.
- ✓The documents are not a modern human treaty. Though it was penned down in 628 AD, it will protect the right to property, freedom of religion, freedom of work, and security of the person till the world comes to an end.

खुत्बा ए हज्जतुल विदा

अपनी अंतिम हज यात्रा के समय विदाई सन्देश के रूप में
अल्लाह के संदेशवाहक का अंतिम उपदेशः

अल्लाह की प्रशंसा करने और उनको धन्यवाद देने के बाद पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहाः

"ऐ लोगों ! ध्यान लगाकर सुनो क्योंकि में जानता हूँ कि इस वर्ष के बाद मैं आप लोगों के बीच नहीं रहूँगा। अतः ध्यानपूर्वक सुनो जो मैं कह रहा हूँ और यह उन लोगों को भी बताओं जो आज यहाँ उपस्थित नहीं हैं।

"अल्लाह ने तुम्हें ब्याज लेने से मना किया है अतः आज से ब्याज माफ़ होगा। आपकी पूंजी आपकी होगी उसे संभाल कर रखो। आप न तो असमानता की भावना में लिप्त रहोगे, और न ही असमानता की भावना से पीड़ित होगे। अल्लाह ने निर्णय लिया है कि कोई ब्याज नहीं लेगा और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (पैग़म्बर के चाचा) को देय सभी ब्याज मुक्त होंगे।

"इस्लाम से पूर्व के दिनों में की गई मानव हत्याओं के पाप से अब माफ़ किया जाता है और ऐसा पहला अधिकार जिसे मैंने माफ़ किया वह "राबिया बिन अल हारसा" का कत्ल है।

"ऐ लोगों ! इस्लाम में विश्वास नहीं करने वाले लोग समय को नहीं पह्चान रहे है और समय के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं ताकि वे उस कृत्य को अनुभव बना सकें जिसे करने से अल्लाह ने मना किया है और उस कृत्य को निषिद्ध किया हैं जिसे अल्लाह ने बनाया है। अल्लाह की मर्ज़ी से 12 महीने बनाए गए हैं इनमें से 4 महीने पवित्र हैं इनमें से तीन महीने उत्तरवर्ती हैं और "जुमादा" और "शाबान" के महीनों के बीच में एक एक करके आते हैं।

ऐ लोगों ! यह सच है की आपको अपनी औरतों के प्रति कुछ अधिकार प्रदान किये गए हैं किन्तु उनका भी आप पर कुछ अधिकार हैं। याद रखो की आपने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण किया है वह भी अल्लाह के विश्वास पर तथा उनकी अनुभूति से। तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर एक समान अधिकार है। औरतों के मामले में मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि उनके साथ भलाई का रवैया अपनाओ।

अंत में ऐ लोगों ! सही कारण ढूढों, तुम समझ जाओगे जो मैंने कहा है। मैं अपने पीछे दो बातें छोड़ रहा हूँ वह हैं—कुरान और सुन्नाह (अर्थात पैग़म्बर की बातें और उनके कार्य) यदि तुम इनका पालन करोगे तो तुम कभी अकेले नहीं रहोगे।

ऐ लोगों ! ध्यानपूर्वक सुनो। अल्लाह की प्रार्थना करो, हर रोज पांच बार नमाज पढ़ना, रमजान के महीने में रोजे (उपवास) रखना, अपने धन में से ज़कात में खर्च करना, यदि तुम हज कर सकते हो हज करना।

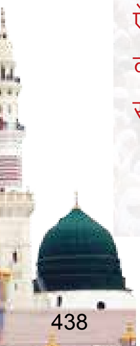

Last Sermon of the Messenger of Allah, as his farewell message on the occasion of his last pilgrimage (Haj)

After praising and thanking Allah, Prophet (pbuh) began with the words:

"O people! lend me an attentive ear, for I know not whether after this year I shall ever be amongst you again. Therefore, listen carefully to what I am saying and take these words to those who could not be present here today.

"Allah has forbidden you to take usury (interest) obligations shall hence forth be waived. Your capital is yours to keep. You will neither inflict nor suffer any inequity. Allah has judged that there shall be no interest and that all the interest due to Abbas bin Abd al-Muttalib (Prophet's Uncle) be waived.

"Every night arising out of homicide in pre-Islamic days is henceforth waived and the first such right that I waived is that arising from the murder of Rabiah bin al-Harithah.

"O Men! The unbelievers indulge in tampering with the calendar in order to make permissible that which Allah forbade, and to prohibit which Allah has made permissible. With Allah the months are twelve in number. Four of them are holy, three of these are successive and one occurs singly between the months of Jumada and Sha'ban.

"O people! It is true that you have certain rights with regard to your women but they also have rights over you. Remember that you have taken them as your wives only under Allah's trust and with his permission. If they abide by your right them to them belongs the right to be fed and clothed in kindness. If they abideyour women well and be kind to them for they are your partners and committed helpers. And it is your right that they do not make friends with anyone of whom you do not approve, as well as never to be unchaste.

"Reason well, therefore, O people! And understand words which I convey to you. I leave behind me twothings, THE QURAN AND MY SUNNAH (I.E.PROPHET'S SAYINGS AND DEEDS) AND IF YOU FOLLOW THESE YOU WILL NEVER GO ASTRAY.

"O people! Listen to me in earnest, WORSHIP ALLAH, SAY YOUR FIVE DAILY PRAYERS, FAST DURING MONTH OF RAMAZAN, and GIVE YOUR WEALTH IN ZAKAT (obligatory charity), PERFORM HAJJ if you can afford to.

Learn that every Muslim is a brother to every Muslim and that the Muslims constitute one brotherhood. Nothing shall be legitimate to a Muslim which belongs to a fellow Muslim unless it was given freely and willingly. Do not therefore do injustice to yourselves.

Then the Last, Prophet (pbuh) concluded his last message by raising his finger to heavens; "Be my witness O Allah, that I have conveyed your message to your people."

Peace be upon him.

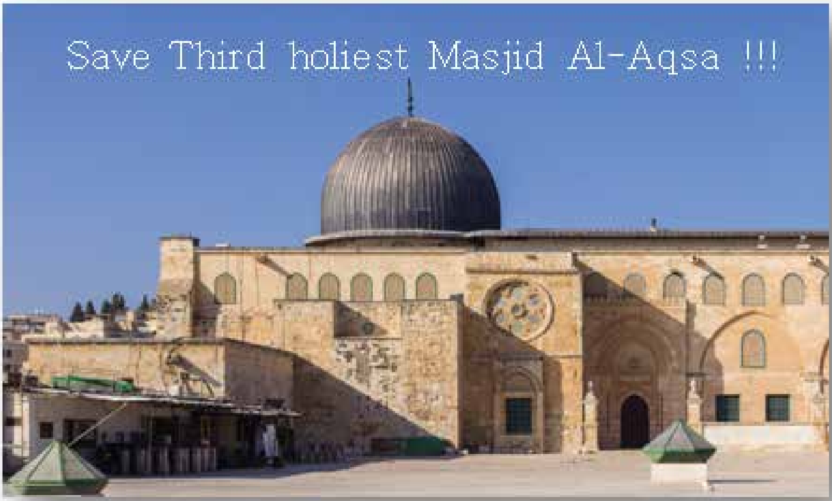

घर में पढ़ी गई नमाज़ के मुकाबले में मसाजिद में अदा की गई एक नमाज़ का सवाब सत्ताइस गुणा ज्यादा होता है, जिस मस्जिद में जुमा की नमाज़ भी पढ़ी जाती है उस मस्जिद में नमाज का सवाब पांच सौ गुणा ज्यादा हो जाता है। ठीक उसी तरह मस्जिद अल–अकसा में एक नमाज पढ़ने का सवाब पांच हजार नमाज़ों के सवाब के बराबर होता है। जबकि मदीना की मस्जिद–ए–नबवी (सल्ल०) में एक नमाज पचास हजार नमाज पढ़ने तो षहर मक्का के काबा की मस्जिद में एक नमाज एक लाख नमाज पढ़ने के बराबर सवाब मिलता है।

"The prayer of a person in his house is a single prayer; his prayer in the Masjid of his people has the reward of 27 prayers; his prayer in the Masjid in which the Friday prayer is observed has the reward of 500 prayers; his prayer in Masjid Al-Aqsa (i.e. Al-Aqsa Sanctuary) has a reward of 5,000 prayers; his prayer in my Masjid (the Prophet's Masjid in Madinah) has a reward of 50,000 prayers, and the prayer in the Sacred Masjid (Ka'bah) has the reward of 100,000 prayers".

मुसलमानों के लिए मस्जिद-ए-अक़्सा का महत्व

- मुसलमानों का पहला किबला जिसकी ओर मुंह करके नमाज़ अदा की जाती थी।
- अल–इसरा तथा मेराज का स्टेशन मुहम्मद (सल्ल०) के चमत्कारी यात्रा।
- मस्जिद–ए–अक़्सा ज़मीन पर अल्लाह का दूसरा घर।
- वह जगह जहां अल्लाह के दर्जनों पैग़म्बर दफन है।
- वह जगह जिसे अल्लाह खुद बड़ा पवित्र मानता है।
- वह जगह जिसका ज़िक्र कुरान में बार बार आया है।
- ज़मीन पर एक मात्र वह जगह है जहां अल्लाह के समस्त संदेशवाहक मुहम्मद (सल्ल०) की अगुवाई में सभी नबियों ने एक साथ नमाज पढ़ी थी।
- सिर्फ वही एक मुस्जिद है जिसका ज़िक्र कुरान में (हरमैन–शरीफ़ैन यानी मक्का–मदीना) के अलावा आया है।

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا
الَّذِیْ بٰرَکْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۱

वो (अल्लाह) है जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिद–अल–हराम से मस्जिद–अल–अक्सा तक ले गया,जिसके चारो ओर हमने बरकतें राखी हैं,ताकि हम उन्हें अपनी कुदरत की निशानियां दिखायें , बेशक वो सुनने वाला (और) देखने वाला है

अल–कुरान 17/1 / Al -Quran 17/1

Glory to (Allah) who did take his servant for a journey by night from the sacred Masjid to the farthest Masjid, whose precincts we did bless, in order that we might show him some of our signs: for he is the one who hearth and seethe (all things).

Value of Masjid-e-Aqsa for the Muslims

- The first Qibla of the Muslim
- The station of Al-Isra and Al- Miraj (the miraculous journey) of Prophet Muhammad (pbuh)
- The second house of Allah built on earth
- The place where dozens of messenger of Allah are buried
- The place where many companions are buried
- A place which Allah himself calls a " blessed place"
- The place referred to several times in Quran
- The place where angels have descended with Allah's message
- The only place on earth where all the messenger of Allah prayed at the same time led by Prophet Muhammad (pbuh)

The only Masjid mentioned by name in the Quran apart from Kaaba

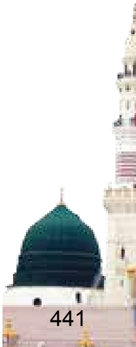

क्या आप जानते हैं ?

- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म 571 ई० में हुआ था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पिता का नाम हज़रत अब्दुल्लाह था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की माता का नाम हज़रत आमिना था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के नाना का नाम हज़रत वहाब इब्न अब्दुल मनाफ़ था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की नानी का नाम हज़रत बराह बिन्त अब्दुल उज्जाह था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के दादा का नाम हज़रत अब्दुल मुत्तलिब था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दादी का नाम हज़रत फ़ातिमा बिन्त अम्र था।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के चाचा और बुआ 10 और 6।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने 25 वर्ष की आयु में हज़रत ख़दीजा बिंत ख्वालिद से पहला निकाह किया।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अंतिम निकाह हज़रत मारिया किब्तिया से किया।
- इस्लाम ग्रहण करबे वाली प्रथम महिला हज़रत ख़दीज़ा थी।
- बच्चों में इस्लाम ग्रहण करने वाले प्रथम बालक हज़रत अली थे।
- इस्लाम ग्रहण करने वाले प्रथम दास हज़रत बिलाल हब्शी थे।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की 4 बेटियां और 3 बेटे थे।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने प्रथम 'वही' 40 वर्ष की उम्र में प्राप्त की।
- सन 622 ई० में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) मदीने के लिए विस्थापित हुए।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पालन करने वाली माँ हज़रत हलीमा सादिया थी जिन्होंने 6 वर्ष तक उनकी देखभाल की। इसके अलावा उम्मे अयमन, हज़रत सुऐबा और हज़रत हौला भी लालन पोषण करने वाली मा थी।
- हज़रत आमिना का देहान्त पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को जन्म देने के छह साल बाद हुआ।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दूध शरीक बहन हज़रत शाइमा थी।
- मेराज़ के सफर में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को पहले आसमान पर हज़रत आदम, दूसरे आसमान पर हज़रत ईसा और हज़रत याह्या, तीसरे आसमान पर हज़रत याक़ूब, चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस, पांचवे आसमान पर हज़रत हारुन, छठें आसमान पर हज़रत मूसा और सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहिम (बैतूल मामूर) जहाँ सत्तर हजार देवदूत स्वर्ग में रहते हैं।
- अल–कसवा–उस ऊंट का नाम है जिस पर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) सवारी करते थे।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीना में मस्जिद के लिए दो अनाथों (सहल और सुहैल) से ज़मीन खरीदी थी।
- हदीस संग्रह करने हेतु प्रथम व्यक्ति इमाम जुहरी थे।
- पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की कब्रगाह के ऊपर गुम्बद को गुम्बदे ख़िज़रा कहा जाता है।
- मुहम्मद (सल्ल०) नाम को उनके दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने रखा था जबकि अहमद नाम हज़रत आमिना ने रखा था।
- मृत्यु के समय पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की आयु 63 वर्ष थी।

Do you know

- Prophet Muhammad (pbuh) was born in 571 A.D.
- Preophet's (pbuh)Father : Hazrat Abdullah.
- Prophet's (pbuh) Mother: Hazrat Aamina.
- Prophet's (pbuh) Maternal Grand Father: Wahab ibn Abdul Manaaf.
- Prophet's (pbuh) Maternal Grandmother: Barrah bint -Uzza.
- Prophet's paternal Grandfather: Abdul Muttalib
- Prophet's (pbuh) Grandmother : Fatima bint Amr.
- Prophet's (pbuh) numbers of Uncle & Aunts: 10 & 6.
- Prophet (pbuh) first married to: Hazrat Khadija at the age of 25.
- Prophet (pbuh) last married to: Hazrat Maria Qibtiyya
- Hazrat Khadija was first women to accept Islam.
- Hazrat Abu Bakar was first Man to accept Islam.
- Hazrat Ali was first to accept Islam among the Children.
- Hazrat Bilal Habashi was the first slave to accept Islam.
- Prophet (pbuh) had 4 daughters and 3 sons.
- Prophet (pbuh) received first Wahi At the age of 40.
- Prophet (pbuh) migrated to Madina In 622 A.D.
- Prophet's (pbuh) foster mother Hazrat Halima who looked after the Prophet for four years. Besides Hazrat Halima, the Prophet (pbuh) said, Umme-e-Aimon, Hazrat Suaiba and Hazrat Houla were also his foster mothers.
- Hazrat Aamina died after the birth of Prophet (pbuh): Six years
- Prophet (pbuh) foster sister was Hazrat Shaima.
- During the Miraj (The ascent of Prophet Muhammad (pbuh) Hazrat **Adam** met the Prophet (pbuh) on the **first firmament,** Hazrat **Isa** (Jesus) and Hazrat **Yahiya** (John) on 2nd, Hazrat **Yusuf** (Joseph) on 3rd, Hazrat **Younus** (Jonah) on 4th, Hazrat **Haroon** (Aaron) on 5th, Hazrat **Musa** (Moses) on 6th, Hazrat **Ibrahim** (Abraham) on 7th (Baitul Mamoor) where **seventy thousand angles were circumambulation during the Holy Ascension.**
- **Al-Qaswa** is the name of Camel on which prophet (pbuh) traveled.
- Prophet (pbuh) purchased the land for the mosque at **medina from two orphans** (Sahl & Suhail).
- Imam Zuhri became the **first to consolidate hadith.**
- The name **Muhamammad** was proposed by **Abdul Muttalib** while the name **Ahmed** was proposed by Hazrat Aaminah.
- Prophet Muhammad's (pbuh) age at his **demise 63 years.**

The Walima of Prophet Muhammad (pbuh) & Hazrat Khadijah(ra)

❖ **Venue:**

- The house of Hazrat Khadijah(ra)

❖ **Guests:**

- Uncles Hamza, Abbas, & Abu Talib
Abu Bakr Siddiq(ra) Waraqah- ibn- Nawfal, Amr- ibn- Asad,
Amr- Ibn- Hazzam, their wives & other ladies.

❖ **Speech:**

- Abu Talib praised Allah for placing him and his family among the descendants of Ibrahim (as) and praised his nephew Muhammad (pbuh)
- Waraqah-ibn-Nawfal acknowledged the merit and nobility of the Muhammad (pbuh) and his family, and announced them husband and wife.

❖ **Mahr (Dowry)**

Twenty camels

❖ **Feast:**

- A camel was slaughtered for the guests and distributed for the needy in society.
- The foster mother of the prophet, Halima-al-Sadia also attended. The newlyweds gave her 40 goats to support and feed her clan.

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) और हज़रत खदीजा (रजि0) का वलीमा

स्थान :

हज़रत खदीजा (रज़ि) का निवास स्थान

अतिथि :

चचा हज़रत हमज़ा, हज़रत अब्बास, अबु तालिब, और सहाबि–ए–रसूल हज़रत अबु बक्र, वर्क़ा बिन नौफल, अम्र इब्ने असद, अम्र इब्ने हज्ज़ाम (रज़ि) और उनकी पत्नियां, और बहुत सारी औरतें।

तक़रीर :

हज़रत अबु तालिब ने ईश्वर की प्रशंसा के साथ ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0), उनके परिवार और उनके पूर्वजो विशेषकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए दुआयें की।

मेहर :

20 उॅटों और 500 दिरहम

समोहिक भोजन :

एक उॅट सभी अतिथियों के लिए ज़बह किया गया और फिर उसका गोश्त सभी में बॅाट दिया गया। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) की दूद्ध शरीक मॉ हज़रत हलीमा सादिया भी इस वलीमे में शामिल थीं, जिनको 40 दुम्बे (भेड़) उनके जीवन के पालन पोषण के लिए दिए गए।

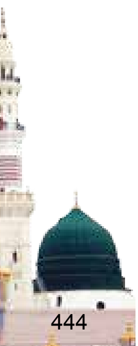

"मैंने बेहतर दिन देखा है, लेकिन मैंने बुरा दिन भी देखा है। मेरे पास सब कुछ नहीं है लेकिन सभी ज़रुरत की चीज़ है। मैं दर्द के साथ उठता हूँ लेकिन उठता हूँ, मेरा जीवन सही नहीं है लेकिन मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार हूँ"

मुहम्मद टी. कैफी

"I have seen better days, but I have also seen worse. I don't have everything that I want, but I do have all I need. I woke up with some aches and pains, but I woke up. My life may not be perfect but I am blessed"

Muhammad T. Kaifi

Comments of Eminent about the book
Know your Rahmatul lil Aalamin

It was an eye opening experience to go through Mr. Kaifi's compilation" **Know your Rahmatul lil Aalamin"**(Mercy for universe). I am sure it will dispel many myths about Islam and promote global brotherhood and motivate us to proceed forward with hand in hand in the interest of humanity.

Acharya Dr. Lokesh Muni
Founder, Ahimsa vishwa Bharti

श्री मुहम्मद टी कैफी द्वारा संकलित "जनिये – ब्राहमांड के परोपकारक को" पढ़ना एक आंख खोलने जैसा अनुभव है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक इस्लाम के बारे में कई मिथकों को दूर करेगा और वैश्विक भाईचारे को बढ़ावा देगा और हमें मानवता के हित में हाथ से हाथ मिला कर आगे बढ़ने के लिए प्ररित करेगा।

आचार्य डा० लोकेश मुनी,
संस्थापक– अहिम्सा विश्व भारती

Going through Mr. Kaifi's book"Know your Rahmatul-lil- Aalamin" was an enlightening experience. I am sure it will go a long way in dispelling various misconceptions of the non-Muslims, associated with Islam. I felt like reciting a' Granth 'while going through this book. My best wishes to the compilator once again.

Goswami Shushil Maharaj
National Convener, Bhartiya Sarva Dharm Sansad

श्री मुहम्मद टी कैफी की लिखी किताब ''जनिये–ब्राहमांड के परोपकारक को'' पढ़ी। कैफी साहब ने अपनी किताब में गागर में सागर भर दिया है। लेखक ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी के माध्यम से उस वास्तविक इस्लाम को बताया है जिसमें दया है, करूणा है, गुस्से का बदला प्यार है, बुराई का बदला भलाई है, माफी है। लेखक ने दिखाया है कि आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने का रास्ता वास्तविक इस्लाम है।

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

Going through Mr. Muhammad T Kaifi's composition "Rahmatul–lil-Aalamin" was an enlightening experience. Through the medium of Prophet Muhammad (pbuh) life he has brought out the real image of Islam. Which embodies charity, benevolence, forgiveness mercy and magnamunity? The writer has shown how effective Islam is in uprooting terrorism. I extend my good wishes to him with congratulation.

Swami Laxmi Shankaracharya

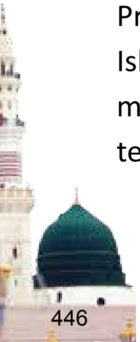

"An excellent insight into the life and times of Prophet Muhammad (pbuh) while also throwing light on the fundamentals of Islam. The book available in bilingual format makes it easy to understand some of the Islamic concepts incorporated in the book. The book is simply reverting, hoping that it succeeds to propagate its message across the globe."

Pradeep Tamta (Member of Parliament, Rajya Sabha)

In the age of resurgent bigotry and Islamophobia, the present book by Mr. Mohammad T. Kaifi not only allays the misconceptions associated with Islam that we encounter in our mundane lives, but also provides an enlightening account of the prophet's life. The book is also a timely addition in the body of work on the life of the prophet of Islam which is written in such a lucid manner that even a common man can understand an appreciate. This book will clear many of the doubts and misinformation of non- Muslims who have been Influenced by propaganda of Islamophobes. My best wishes to Mr. Mohammad T.Kaifi with the hope that the message of peace, love and brotherhood will overcome the hatred and bigotry.

Santosh Bhartiya (Editor-in – Chief, Chouthi Duniya)

The efforts of Mr. Kaifi to bring out the essence of true Islamic way of life, which promotes nothing else other than peace, global harmony and brotherhood, are commendable.
The recognition of a few gems of Islamic manual of life, as represented by Prophet Muhammad (pbuh), by the intellectuals from the various aspects of life bear testimony to the glory of Islam.

Syed Ahmad Bukhari (Shahi Imam, Jama Masjid, Delhi)

I would like to extend my felicitations to Muhammad T Kaifi for compiling a book on the life of Prophet Muhammad (pbuh). It is undoubtedly the result of his efforts and research on a very important subject of all time.
The book not only answers the questions raised by some critics but also provides a comprehensive account of thoughts of eminent non-Muslim leaders and scholars about the Prophet (pbuh). I particularly appreciate his efforts to highlight various aspects of the life of Holy Prophet (pbuh) in the light of contemporary issues. This also reminds me of renowned author Dr. Michael H. Hart who ranked Prophet Muhammad (pbuh) at the top of the world's most influential persons in his book "The 100: A Ranking Of The Most Influential Persons In History".
Even after more than 1400 years, Prophet Muhammad (pbuh) continues to serve as the unmatchable beacon for every human being. The whole persona of Prophet Muhammad (pbuh) exemplifies the significance of tolerance towards other religions and faiths. It is, therefore, important to study the life of Holy Prophet to understand the true spirit of Islam. I commend Kaifi Sahab for this remarkable book.

Abdul Basit (High Commission of Pakistan)

इस्लामी ज्ञान के अनेक विख्यात विद्वानों की रचनाओं के अध्ययन के बाद मुहम्मद तश्कील कैफी ने इस पुस्तक जानिए अपने रहमतुल–लील–आलमीन को का संकलन किया है। यह पुस्तक काफ़ी हद तक इस्लामी समाजिक संस्कृति, धर्म तथा राजनीति से जुड़े मिथ्य विचारों का निदान करेगी तथा इन मिथ्य विचारधाराओं पर अनेक धर्मो के अनुयाइयों तथा जीवन से जुड़े अनेक क्षेत्रों के अपूर्व बुद्धिजीवियों की इन विचारधाराओं पर टिप्पणी इनकी मिथ्यता की पुष्टि करने में सफ़ल होगी। अल्लाह इन पुस्तक के संकलनकर्ता को अपनी दया से धन्य करे, आमीन।

एम एस यु खान

Mr. Kaifi has compiled this book “ Know your Rahmatul lil Aalamin” after going through the works of many renowned scholars of Islamic knowledge. It will go a long way in dispelling the misconceptions associated with Islamic socio-cultural, religious , political values, and views of luminaries of various faiths from different walks of life. May Allah bless him with His bounteousness.

M.S.U.Khan, Retd Principal, JMI, New Delhi

यह संकलन रहमतुल–लील–आलमीन , हमारी पीढ़ियों के लिए गर्व का विषय है और वरदान साबित होगा। हम अपनी सफ़लताओं का विश्लेषण अपने धर्म और प्राप्त की गई अपनी योग्यताओं के आधार पर करते हैं परन्तु संकलनकर्ता का यह कोशिश हम सबके लिए पैग़म्बर साहेब के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक अच्छा स्रोत साबित होगा। अल्लाह संकलनकर्ता को इस कोशिश के लिए धन्य करे, आमीन

भाईजान, संकलनकर्ता के बड़े भाई

Your Compilation on our Rahmatul-lil-Aalamin namely “Know your Rahamatul-lil-Aalamin” will remain a matter of pride of our generations. We many keep on analyzing our success in terms of wealth & qualification but this effort of yours will also prove a source of reference for all of us to know a bit more about our Prophet (pbuh).   May Allah bless you for This.

Bhaijan, Elder brother of compilator

Graves of

Prophet Muhammad (pbuh) | Hazrat Abu Bakr (ra) | Hazrat Umar-bin-Khattab (ra)

- वह पूरे संसार के लिए रहमतुल्लिल आलमीन हैं। (21:107)
- यदि आप अल्लाह के प्यारे और उसके महबूब बंदे बनना चाहते हैं तो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयायी बने (3:31)
- अल्लाह ने कुरान को उनके दिल में उतारा है (26:192.197)
- वह अपने अनुयाइयों के गुलामों की तुलना में, अपने पैरोंकारों की अधिक देख–भाल और परवाह करते हैं (33:6)

- Mercy for all the world(21:107)
- If you want to gain the love of Allah, follow him (3:31)
- Allah revealed the Quran on his blessed heart (26:192-197)
- He is closer to the believer than their own slaves (33:6)

मैं आपको रामचंद्र जी और कृष्ण जी के संदर्भ में तो नहीं बता सकता क्योंकि वह ऐतिहासिक आकृतियां नहीं थे। मेरे पास हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर फ़ारूक़ को प्रस्तुत करने के अलावा कोई चारा नहीं। उन दोनों का जीवन एक विशाल साम्राज्य के मार्गदर्शक होने के बावजूद अति आत्मसंयम का था।

महात्मा गाँधी / Mahatma Gandhi

"I cannot give you the reference of Ram Chandra or Krishna, because they were not historical figures. I cannot help it but to present to you the names of Hazrat Abu Bakr & Hazrat Umar Farooq. They were leaders of a vast empire, yet they lived a life of austerity"

पाठकों का पुस्तक को अध्ययन करने के लिए 24 सुनहरे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के शब्दों के साथ धन्यवाद

तीन व्यक्तियों का आदर करो
माता, शिक्षक, बुजुर्ग

तीन चीज़ों को साथ रखो
सच, सच्चाई, गुण

तीन बातों के लिए संघर्ष करो
मातृभूमि, सम्मान, अधिकार

तीन बातों पर नियंत्रण रखो
ज़ुबान, ग़ुस्सा, इच्छा

तीन बातों से बचो
कुविचार, चुग़ली, ईष्या करना

तीन बातों को धारण करो
शिक्षा, नेकनीयत, अच्छाई

तीन बातें याद रखो
मौत, बाध्यता, सलाह

तीन चीज़ें साफ़ रखो
शरीर, पहनावा, विचार

हमारा विश्वास है कि हम कभी भी अकेले नहीं हैं

या अल्लाह! हमें धर्य और सहिष्णुता बख़्स दे। हे अल्लाह! हमारे संकट के समय हमारा निर्देशन कर! हे अल्लाह! बदले में हमें कुछ अच्छा प्रदान कर। और यह कभी मत भूलो कि हमारे दुःख के समय, खुशी के समय हमारी आत्मा को इतना बोझल नहीं बनाता कि हम उस बोझ को वहन न कर पाएं। हे अल्लाह! इस पुस्तक "जानिये – ब्रम्हांड के परोपकारक को" को पढ़ने के लिए बहुमूल्य समय प्रदान करने के लिए आपको कुछ इनाम दे। और इस पुस्तक को लिखने के लिए मेरे द्वारा किए गए प्रयासों के लिए मुझे भी कुछ इनाम दे। हे अल्लाह तू भविष्य में भी ऐसे अवसर हमें प्रदान करता रहे।

एक बार पूणः धन्यवाद

मुहम्मद टी कैफ़ी

Thanks to the readers with the following 24 Golden Words of Prophet Muhammad (pbuh)

Respect 3 Persons

Parents, Teacher, Elderly

Be with 3 Things

Faith, Truthfulness, Virtue

Fight For 3 Things

Motherland, Honour, Right

Be in Control of 3 Things

Tongue, Anger, Desire

Avoid 3 Things

Ill Will, Backbiting, Jealousy

Possess 3 Things

Education, Nobility, Decency

Remember 3 Things

Death, Obligation, Advice

Keep 3 Things Clean

Physic, Attire, Thoughts

Our faith is that we are never alone

May Allah (glorified and exalted be He) bless us with patience and forbearance. May He bestow His guidance on us throughout tests we are facing, and may He give us something for better in return. And never forget that through sadness and grief, happiness and peace, He will never burden our soul more than we can bear.

May Allah reward you for devoting your invaluable time in going through the book "Know your Rahmatul-lil-Aalamin" and me also for this effort. May He continue to provide such opportunity to us in future also.

Thank you once again

Muhammad T Kaifi

अरबी भाषा के शब्द अल्लाह से एक–एक करके एक वर्ण हटाऐं, बचे हुए वर्णों से जो शब्द बनेगा उससे शब्द अल्लाह का ही मतलब निकलेगा।
यह किसी चमत्कार से कम नहीं है !

Take out one letter, One by One , from the word Allah the formation of the words with the remaining letters will contain the essence of the word Allah.

This is no less than a miracle !
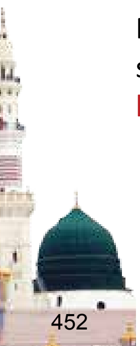
The name of Allah consists of four letters. Alif, Lam, Lam, Hey. Take the Alif out and you are left with Lam Lam Hey. The word Lillah means every thing belongs to Allah.
From the remaining letters Take out the first Lam, the remaining Lam, Hey forms the Arabic word Lahu which means every thing is for Allah.
Further take out the second Lam and you are left with letter Hey which stands for Hu which means the One Whose identity is hidden and no one but Allah knows it.